सिपाही की बीबी

जी० डब्लू० एम० रीनाल्ड्स् की "सोल्जर्स वाइफ़" का भावानुवाद

अनुवादक

कुँवर राजेन्द्रसिंह

ग्रन्थ-संख्या—६१

प्रकाशक तथा विक्रेता

भारती-भण्डार

लीडर प्रेस, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण

वि० '९६,

मूल्य २)

मुद्रक—

कृष्णाराम मेहता

लीडर प्रेस, इलाहाबाद

प्रस्तावना

अंग्रेजी भाषा जाननेवालों में से बहुत कम ऐसे मिलेंगे जिन्होंने जार्ज डब्लू० एम० रीनाल्ड्स् के उपन्यास न पढ़े हों। १९ वीं शताब्दी के अन्त तक इसकी पुस्तकों की बड़ी धूम रही। यह वही रीनाल्ड्स् है जिसने "मिस्ट्रीज़ आफ़ दि कोर्ट आफ़ लन्दन" लिखी थी। इस पुस्तक की भाषा शिष्ट और संयत नहीं है और यही हाल उसके और उपन्यासों का भी है।

रीनाल्ड्स् का न तो कोई जीवनचरित मिलता है, न उसका नाम अंग्रेजी भाषा के लेखकों की सूची में मिलता है और न कहीं उसका जिक्र अंग्रेजी भाषा के साहित्य के इतिहास में आया है। यह एक केवल सुनी सुनाई बात है कि वह पोस्टमास्टर जनरल था और लोगों के खत खोलकर पढ़ लिया करता था तथा उनका दुरुपयोग अपने उपन्यासों में किया करता था। चाहे यह सच हो या न हो परन्तु उसके सम्बन्ध में हम बस यही जानते हैं। यह भी एक किम्वदन्ती है कि रानी विक्टोरिया की आज्ञा से उसका नाम हर एक जगह से निकाल दिया गया था, पर नाम निकल जाने पर भी वह जीवित है।

इसमें सन्देह नहीं कि रीनाल्ड्स् की गणना अच्छे लेखकों में है। उसकी भाषा में प्रवाह, मधुरता और सजीवता है; निरूपण और निरीक्षण की तो उसमें अद्भुत शक्ति थी। उसके उपन्यासों में "सिपाही की बीवी" ही एक ऐसा उपन्यास है जिसकी भाषा में कोई दोष नहीं लगाया जा सका है। इसमें उस प्रेम का वर्णन है जो वास्तविक संसार में कम देखने में आता है। यह उपन्यास दुःखान्त है और संसार के शायद सभी बड़े उपन्यास और नाटक दुःखान्त हैं—जीवन ही दुःखान्त है। अंग्रेजी की एक कविता का भावार्थ यह है कि संसार की प्रत्येक वस्तु का आदि

और अन्त कष्टपूर्ण होता है क्योंकि हम दूसरों के कष्टों में पैदा होते हैं और अपने कष्टों में हमारा निधन होता है।

किसी किसी का यह कहना है कि इस उपन्यास के अधिकांश पात्रों की मृत्यु हो जाने से वीभत्स रस की अधिकता हो गई है। कुछ अवसर ऐसे होते हैं जब लेखक वीभत्स रस की अधिकता को बचा नहीं सकता। अन्यायियों का दण्ड पाना किस तरह प्रकट किया जा सकता है सिवा इसके कि वह गरीब हो गया और हर तरह की मुसीबतों और आफतों का उसे सामना करना पड़ा या प्रतिकूल परिस्थिति में उसकी मृत्यु हो गई? अगर यह दोष "सिपाही की बीवी" में है तो उसकी कमी शेक्सपियर के जगद्विख्यात नाटक "हैमलेट" में भी नहीं है। शेक्सपियर के नाटकों में यह दोष सब से ज्यादा है। इसकी आलोचना करने में एक अंग्रेजी विद्वान् ने लिखा है कि इसके खेलने में नाट्यशाला वध स्थान बन जाती है। इसके भी सब मुख्य पात्रों की मृत्यु हुई है।

"सिपाही की बीवी" का अनुवाद करने में बहुत काट-छाँट करनी पड़ी है परन्तु मूल सूत्र विच्छिन्न नहीं होने पाया है। अनुवाद योंही रूखा तथा फीका होता है और उस भाषा से अनुवाद करना और भी कठिन है जो अपने देश की न हो। प्रत्येक देश के निवासियों के रहन-सहन में भिन्नता होती है, आमोद-प्रमोदों में भिन्नता होती है और साहित्यिक रुचि में तो जमीन और आसमान का फर्क होता है। अस्तु। जहाँ भाषा की कला की झलक दिखलाई दे उसका श्रेय लेखक को है और जहाँ भद्दापन नजर आए वह मेरी करतूत है।

टिकरा हाउस
लखनऊ
२८-७-१९३७

(कुँवर) राजेन्द्रसिंह

१

भरती करने वाला अफसर

ओकले एक छोटा-सा गाँव था। इसमें सौ से कुछ ही ज्यादा मकान थे। इन मामूली मकानों में खेतों में अथक परिश्रम करने वाले मजदूर रहते थे। चार-छः दूकानें गाँव के बीच वाली गली में सब एक ही जगह पर बनी थीं। उन्हीं में एक अत्तार की दूकान थी। उसकी खिड़की में तीन रंगीन पानी से भरी हुई बोतलें रक्खी रहती थीं। यह डाक्टर कालीसिथ के नाम से मशहूर था। नजदीक के गावों में इसका काम अच्छा चलता था। इसकी स्त्री और तीनों लड़कियां अपने को बहुत कुछ समझती थीं और अच्छे कपड़े पहिनती थीं—खास कर मिस किटी, जो मँझली थी और सूरत-शकल की भी अच्छी थी। इसके मकान से दो-तीन घरों के बाद गाँव के नाई वेट्स का मकान था। इसके मामूली मकान के दरवाजे पर टँगी हुई तख्ती पर लिखा हुआ था, "बाल सँवारने वाला, इत्र बेचनेवाला और नकली बाल बनाने वाला।" मरहम रखने के दो एक मैले बरतनों पर लिखा हुआ था "वेट्स को बनाई हुई बहुत बढ़िया रीछ की चर्बी।" यही उसका मुख्य रोजगार था। इश्तिहार में लिखा गया था कि यह चर्बी असली है। बाहर से बहुत अच्छे रीछ मँगा कर यह बनाई

गई है, यद्यपि वहां के बुड्ढे से भी बुड्ढे आदमी ने कभी उस गांव में रीछ नहीं देखा था। खैर किसी ने वेट्स के इश्तिहार के सम्बन्ध में कभी कोई आपत्ति नहीं की।

इस दूकान के बाद गाँव के रोटी बनाने वाले की एक दूकान थी। वहां दो चार बोरे आटे के रक्खे हुए हमेशा दिखाई देते थे। उसके बाद गोश्त बेचनेवाले की दूकान थी। इसके सामने अक्सर गोश्त लटका रहता था। पास में ही वह दूकान थी जहां रोज की जरूरत वाली चीजें मिलती थीं। उसके बाद दर्ज़ी की दूकान थी और उसके बाद मोची की। आख़िरी दूकान एक ग़रीब विधवा की थी। वह सेब और बच्चों की मिठाइयां बेचती थी।

इस दूकान के नज़दीक ही एक झोपड़ा था। कुछ साल पहिले आग लगने से जल कर वह काला हो गया था। उसमें एक बुड्ढी औरत जल कर मर गई थी। गांव में दूकानों के अलावा एक सार्वजनिक चौपाल भी थी। चौपाल का नाम रोआवल ओक था। एक बुड्ढा सा आदमी, जिसका नाम बुशेल था, एक शराब की दूकान खोले हुये था। उसकी स्त्री वहां की देख रेख करती थी। यह मशहूर था कि उस ज़िले में सब से अच्छी शराब वहीं खिंचती थी। चौपाल में शाम को जमाव हो जाता था। बुशेल की इस बात पर निगाह रहती थी कि शराब पीने वाले मतवाले न होने पावें और इसी वजह से उस जगह का अच्छा नाम था। बुशेल के सावधान रहने का एक कारण यह भी था कि वह जगह गांव के मालिक की थी। वह गाँव के मा

भी थे। गांव से थोड़ी दूर हट कर एक गिरजा था। इसके चारों तरफ पुराने दरख़्त थे। इनके नीचे इस गांव में रहने वालों के बाप दादे अटूट निद्रा में पड़े सो रहे थे। गिरजे के हाते के एक हिस्से में वहां के पादरी मिस्टर आर्डन का एक मकान था।

जो कोई पहिले दफ़े इस गाँव में आता तो उसकी निगाह उस मकान पर पड़ने से नहीं बच सकती थी जो वहां से दो तीन मील की दूरी पर एक पहाड़ी पर बना हुआ था। यद्यपि मकान पुराने ढंग का था परन्तु नौकरों के रहने के मकान और खूबसूरत बाग़ दौलत का परिचय दे रहे थे। यह मकान सर आर्कीबाल्ड रेडवर्न का था। उन्हें गांव वाले सर आर्की कहते थे। वही इस गांव के मालिक थे। उनके लिये कहा जाता था कि गुस्सा आने पर वह अत्यन्त कठोर हृदय हो जाते थे। पचास साल के क़रीब इनकी उम्र थी। उनके एक लड़का था—करीब इक्कीस वर्ष का। सर आर्कीबाल्ड की उनसे दस ग्यारह साल छोटी एक बहिन थी। वह इन्हीं के यहां रहती थी। इसने अपनी शादी नहीं की थी।

१८२८ के मई के महीने में एक रोज़ शाम को डाक लाने और ले जाने वाली गाड़ी रोआयल ओक के दरवाजे पर आकर ठहरी। गाड़ी वाला गांव के नजदीक आकर घंटी बजाने लगता था कि घोड़ों का दाना पानी तैयार मिले और जिनको अपने खतों या पार्सलों का इन्तज़ार हो वह चौपाल के पास जमा हो जाँय। डाक वाली गाड़ी आज डाक के साथ एक मुसाफिर भी

लाई जिसे देख कर बेचारे गाँव वाले चकित हो गये। यह फ़ौजी पोशाक पहने हुये था। हाथ में उसके तलवार थी। लंबे क़द और शरीर की गठन से उसके चेहरे पर एक तरह का रोब था। देखने में वह फौज के बड़े दरजे का अफ़सर मालूम होता था। जो लोग अपने ख़त और पार्सल लेने आये थे, उन्होंने झुक कर उसे सलाम किया। सलाम का जवाब उसने फौजी ढंग से दिया। उसने अपना किराया दिया और आज्ञा दी कि उसका असबाब गाड़ी पर से उतारा जाय और वह खुद चौपाल के अन्दर चला गया।

गांव के लोग आश्चर्य्य से मुँह फैलाये इसकी ओर देखते रहे। जब वह चौपाल में जाकर कुर्सी पर बैठ गया तब तमाशा देखने वालों ने सड़क की तरफ निगाह फेरी। उन्हें उम्मीद थी कि जिस फ़ौज का यह अफ़सर है वह फ़ौज आ रही होगी लेकिन फ़ौज कहाँ? असबाब देख कर लोगों को और भी नाउम्मेदी हुई। क्योंकि उनका ख्याल था कि कम से कम एक दर्जन बक्स साथ होंगे। असबाब की कमी की वजह से लोगों की निगाह में इसकी इज्जत में भी कमी हो गई। डाकिये ने इन देहातियों को समझाया कि यह केवल एक फ़ौज का हवलदार है। मिडल्टन में ठहरा हुआ था। वहाँ से यहाँ आया है। बहस हर एक बात पर हो सकती है और फिर वहां जहां कोई भी अपने को किसी से कम बुद्धिमान न समझे। रोटी बेचने वाले ने कहा कि जनरल से दफ़ादार का दर्जा ऊंचा है। मोची ने कहा कि इनका दर्जा

कप्तान से नीचा है। लेकिन वेट्स, नाई, जो समझता था कि वह सब जानता है, कैसे चुप रहता! उसने भी अपनी राय बतलाई।

"हाँ," डाकिये ने कहा, "अगर तुम लोग मेरी राय मानो तो मैं तुमसे कहूंगा कि अपने गांव के जवान आदमियों को सचेत कर दो कि इस हवलदार से होशियार रहें। मैं इसके खिलाफ़ अधिक कुछ नहीं कहना चाहता। इसने मेरा किराया बेबाक कर दिया है और रास्ते में मुझे शराब भी पिलाई है। फिर भी अपनी राय देने में क्या हर्ज है।"

"मैं समझता हूँ," यह कहता हुआ एक हाथ में छुरी और दूसरे में उसे तेज़ करने वाला पत्थर लिये हुये गांव का कस्साव आ गया। छुरी को पत्थर पर दो चार दफे घिस कर बोला, 'हाँ, मैं अब समझा, यह भरती करने वाला हवलदार है"।

यह सुनते ही सब लोग सन्नाटे में आ गये। लोगों को अपने रिश्तेदारों और दोस्तों की याद आई, लेकिन गांव में ऐसा कोई न था जिसके भरती हो जाने से उन्हें दुख होता। गांव भर में यह खबर फैल गई कि फौज़ का एक अफ़सर आया हुआ है। इसको देखने के लिये सब चले आ रहे थे। जो देख चुके थे, वह फिर देखना चाहते थे। चौपाल के सामने के मैदान में एक भीड़ लग गई। सब की निगाहें उस खिड़की की ओर उठी हुई थीं जिसके सामने हवलदार तीर की तरह सीधा कुरसी पर बैठा था। वह चुरुट पी रहा था। मेज़ पर सामने शराब का गिलास रक्खा था। उसने तिरछी निगाहों से देखा कि भीड़ लगी हुई है,

लेकिन वह उसी तरह बैठा रहा। थोड़ी-थोड़ी देर में गिलास उठा कर शराब पी लेता था।

"अच्छा," गोश्त बेचने वाले ने कहा, "अगर इतना ही ज्यादा वह गोश्त भी खाय जितनी कि शराब पीता है तो अच्छा खरीददार साबित होगा। आदमी बुरा नहीं है।"

अब लोगों का ध्यान अपने रोजगारों पर गया।

रोटी वाली बोली, "अगर गोश्त वह खायेगा तो उसे रोटी की भी तो जरूरत होगी।"

"जो फौजी पोशाक पहिनता है, उसे दाढ़ी साफ़ रखनी ही चाहिये।" नाई ने कहा, "और यह कोई जरूरी बात नहीं है कि जो तलवार से अच्छा काम ले सके वह उस्तरे से भी वैसा ही अच्छा काम ले सकेगा। कुछ हो, हम लोगों को उसके साथ बे-अदबी का बर्ताव नहीं करना चाहिये। शायद वह रीछ की चरबी का भी इस्तेमाल करता हो, कौन जाने!"

डाक वाली गाड़ी आगे चली गई। जब उसके पहियों की भी आवाज़ सुनाई देना बन्द हो गई तो लोगों ने धीरे धीरे अपने घरों का रास्ता लिया। गाँव में फिर सन्नाटा फैल गया। हाँ, दो चार गांव के पड़ोसी नाई की दूकान में बैठे आज की घटना के बारे में उसकी राय पूछ रहे थे। वही उस गाँव में सबसे होशियार समझा जाता था।

२

प्रेमी

इसी समय एक जवान आदमी मज़दूरों के ऐसे कपड़े पहिने एक छोटी दरिया के किनारे-किनारे टहलता हुआ जंगल की तरफ जा रहा था। यद्यपि कपड़े मामूली थे परन्तु साफ और सुथरे थे। मालूम होता था कि जैसे वह कोई साधारण श्रेणी का मज़दूर नहीं है। फ्रेडरिक लॉस्डेल खूबसूरत था। उसके चेहरे पर ओछे-पन या गंवारपन की झलक तक भी नहीं थी। धूप में काम करने की वजह से चेहरे पर ज़रा कालापन आ गया था। यह इस यथार्थता का प्रमाण था कि मेहनत मज़दूरी करके ईमानदारी की रोटियां कमा कर यह ज़िन्दगी बसर करता है। उसके बाल और आखें काली थीं। दाँत इतने खूबसूरत थे कि उन पर किसी को भी गर्व हो सकता था। उसकी भाषा शुद्ध थी जिसकी आशा इस दर्जे के लोगों में नहीं की जा सकती थी। उसकी पैदायश के सम्बंध में कुछ मत-भेद था। उसे एक ग़रीब विधवा ने पाला था। उसका नाम मिसेस ग्रान्ट था। एक छोटी-सी दूकान वह खोले हुये थी। दूकान से उसे इतनी आमदनी नहीं थी कि उसका गुज़र-बसर अच्छी तरह हो पाता। इधर-उधर से कभी कभी कुछ मदद मिल जाती थी। गांव वालों को इसका कुछ पता नहीं

था। यह लड़का जब बड़ा हुआ तो उस बुड्ढी ने उसे गांव के स्कूल में भेजा। तेज़ होने की वजेह से स्कूल के मास्टर खुश थे और उसको दिल लगा कर पढ़ाते थे। स्कूल की सब परीक्षायें पास करने और आगे पढ़ने का कोई प्रबन्ध न हो सकने पर वह वहीं मेहनत मजदूरी करने लगा। पढ़ने का उसे शौक था। स्कूल के पुस्तकालय अथवा और जहां कहीं से भी उसे पुस्तकें मिल जातीं, उन्हें वह पढ़ा करता था। उसकी इस तरह से अब अट्ठारह वर्ष की उमर हो गई थी। मिसेस ग्रान्ट अपने लड़के की तरह इसे प्यार करती थी। एक रोज़ जब उसी के कहने से यह मिडल्टन को सौदा लेने गया था झोपड़े में आग लग गई। बुड्ढी उसी में जल कर मर गई। उसी के साथ फ्रेडरिक का जन्म सम्बन्धी भेद भी दफन सा हो गया। जब लॉस्डेल सौदा लेकर लौटा तो उसने देखा कि वह दुनिया में अकेला है। जिसे वह समस्त संसार भर में अपना कह सकता था उसने भी दुनिया से प्रस्थान कर दिया—न अब कहीं घर था और न कोई दोस्त। गाँव वालों को उससे सहानुभूति थी और उन्होंने मदद भी की। लेकिन वे खुद ही ग़रीब आदमी थे। बराबर मदद करते रहने से मजबूर थे। फ्रेडरिक की भी यह इच्छा नहीं थी कि वह किसी के सर का बोझ बने—उसने यह स्थिर कर लिया कि वह किसी न किसी तरह अपने पेट भरने का प्रबंध करेगा। अब दो प्रश्न उसके सामने थे—या तो कहीं बाहर जाकर रोटियां कमावे या गांव ही में रह कर मेहनत मजदूरी करे। रोज़ी

की खोज में वह कहीं बाहर चला भी जाता, लेकिन ओकले से उसे प्रेम था। इसी वजह से वहीं रह कर खेतों में मजदूरी करने का इरादा उसने कर लिया। मिसेस ग्रायट की झोपड़ी जल जाने के बाद से वह मिस्टर वेट्स, नाई, के मकान में एक छोटा कमरा किराये पर लेकर रहता था। जीविका के लिए सर आर्कीवाल्ड रेडवर्न के खेतों में मजदूरी करता था। उसमें सब बातें भले आदमियों की सी थीं और यदि कोई दोष था तो केवल यह कि वह न तो सर आर्की की और न वहाँ के पादरी की गुलामों की तरह खुशामद और चापलूसी कर पाता था। जब कि यह दोनों गांव वालों की निगाह में देवताओं के समान थे।

फ्रेडरिक नदी के किनारे टहलता हुआ अब जंगल में पुल के पास पहुँच गया। थोड़ी ही देर बाद वहां एक सुन्दर युवती आई। इसका नाम लूसी था। यह सर आर्कीवाल्ड रेडवर्न के मुख्तार की इकलौती लड़की थी। बहुत दिन हुये तब इसकी मां मर गई थी। यह अत्यन्त रूपवती थी। फ्रेडरिक के गांव छोड़ कर बाहर न जाने में मुख्य कारण यही था। दोनों एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते थे। बचपन में दोनों एक साथ खेले थे। अवस्था के साथ प्रेम भी बढ़ता गया। इन दोनों का प्रेम अभी छिपा हुआ था। फ्रेडरिक ने इसे अभी लूसी के पिता से प्रकट नहीं किया था। लूसी के पिता मिस्टर डेविस की हैसियत अच्छी थी। उसकी बड़ी इच्छा थी कि उसके लड़की की शादी कहीं बड़े खानदान में हो। वह कभी कभी यह भी सोचता

था कि शायद लूसी की खूबसूरती सर आर्कीवाल्ड के इकलौते पुत्र, जिराल्ड रेडवर्न को, मोहित कर ले। यह जानते हुए भी कि यदि और सब बातें उसके इच्छानुसार हो गईं, तब भी इस सम्बन्ध के लिए सर आर्कीवाल्ड अपनी अनुमति नहीं देंगें। आशा ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। एक बात और भी थी। सर आर्कीवाल्ड अपनी जायदाद किसी दूसरे को न दे सकेंगे और जिराल्ड बालिग होने पर जो चाहेगा कर सकेगा।

संध्या के समय दोनो प्रेमी मिले। फ्रेडरिक को लूसी को गले लगाकर जो प्रसन्नता हुई वह क्षणिक थी। उसका दुखी हृदय इस समय उस सुख का बाधक हो रहा था। हाथ में हाथ मिलाये दोनों टहलने लगे। अभी वे बहुत दूर नहीं गये थे कि लूसी ने लॉंस्डेल की तरफ देखा। दुखी चेहरा देख कर वह रुक गई। कहा, "फ्रेडरिक, प्यारे फ्रेडरिक, कोई बात अवश्य है। तुम दुखी हो।"

"मैं तुमसे छिपा नहीं सकता" फ्रेडरिक ने उत्तर दिया, "मैं अपमानित किया गया हूँ। मेरे साथ बड़ी कठोरता का व्यवहार किया गया है। वाह री दुनिया! संयोगवश जो मुझसे अनुकूल परिस्थिति में पैदा हुए हैं, वह ऊँचे समझे जाते हैं और आज संसार उनका पूजन करने को तैयार है।"

"किसने अपमानित किया?" लूसी ने पूछा और उसकी आँखें भर आईं।

" जिराल्ड रेडवर्न ने " फ्रेडरिक ने उत्तर दिया, " अब जब सोचता हूँ तो मुझे ताज्जुब होता है कि मैं उसे घोड़े पर से नीचे घसीट लेने और पैरों से ठुकराने से कैसे रुक गया ! शायद इस-लिए कि एक दुबले-पतले लड़के पर हाथ उठाना बुज़दिली है। गुस्सा मुझे बुरी तरह से दिलाया गया था।"

" हाँ, प्यारे फ्रेडरिक, जब तुम इतने दुखी हो तो अवश्य तुम्हारे साथ अनुचित व्यवहार किया गया होगा।" लूसी ने कहा, "आह, मैं क्या कह सकती हूँ—मैं तुम्हें सान्त्वना देने के लिये क्या कर सकती हूँ। मैं ख्याल करती हूँ कि यदि मुझे ऐसा गुस्सा दिलाया गया होता तब भी तुम्हारे साथ मुझे शान्ति रहती—"

यह कह कर वह चुप हो गई। लज्जा से उसने अपनी आखें नीची कर लीं।

"आह, हजारों धन्यवाद, लूसी, तुम्हारे मधुर शब्द सच्चे प्रेम के सूचक हैं!" उत्तर में फ्रेडरिक ने उसके हाथ का चुंबन करते हुए कहा, "हां, प्रिये, तुम्हारे साथ मुझे हमेशा शान्ति रहती है—तुम्हारी सहानुभूति मेरे गहरे से गहरे जख्म को भर देती है ; परन्तु इस समय मुझे अपमानित किये जाने का नहीं; बल्कि इस बात का दुःख है कि इससे मेरी अवस्था में एक बड़ा दुखद परिवर्तन हो जायगा—जब कि मेरी परिस्थिति पहले ही से प्रतिकूल है।"

" प्यारे फ्रेडरिक, तुम्हारा क्या अभिप्राय है ? " भयभीत होकर लूसी ने पूछा।

"मेरा मतलब यह है प्रिये," फ्रेडरिक ने व्याकुल होकर कहा, "जिराल्ड ने केवल मुझे अपमानित ही नहीं किया है, परन्तु यह धमकी भी दी है कि वह मुझे अपने बाप के यहाँ ही नहीं, बल्कि गाँव में और कहीं भी नौकरी करने लायक़ नहीं रहने देगा। इसका मतलब यह होगा कि मुझे गांव छोड़ना पड़ेगा।"

यह सुनकर लूसी के चेहरे पर उदासी छा गई। थोड़ी देर दोनों चुपचाप टहलते रहे। आखीर में लूसी ने कहा, प्यारे फ्रेडरिक़ तुमने यह नहीं बतलाया कि मिस्टर रेडवर्न से किस बात पर तुम्हारा झगड़ा हुआ था?"

"प्रिये, तुम जानती हो," फ्रेडरिक ने उत्तर दिया, "कि न सर आर्कीवाल्ड और न उनका लड़का, और न पादरी मिस्टर आर्डेन—कोई भी मुझसे खुश नहीं हैं। मैंने अच्छी शिक्षा पाई है। ग़रीब आदमियों का शिक्षित होना बड़े आदमी पसन्द नहीं करते। उनका यह ख्याल होता है कि शिक्षा उनकी आखें खोल देगी और फिर यह लोग वह अत्याचार नहीं सहन कर सकेंगे जो अब सहन कर रहे हैं। मुझे यह कहते लोगों ने सुन लिया है। सर आर्कीबाल्ड और पादरी साहब अब मुझ पर यह दोष लगाते हैं कि मैं गांव में अराजकता फैलाता हूँ। परन्तु ईश्वर जानता है कि मैं अपनी राय बाँटता नहीं घूमता, मैं कभी चौपाल में नहीं जाता और न कभी अपने गाँव वालों के विचारों और विश्वासों की आलोचना ही करता हूँ। लगभग दो साल से सर

आर्कीबाल्ड और पादरी मुझे गाँव से निकाल देने की कोशिश में लगे हैं।

"तुमसे और तो सब गाँव वाले ख़ुश हैं?" लूसी ने प्रेमपूर्ण निगाह से फ्रेडरिक की तरफ़ देख कर पूछा।

"ख़ुश तो हैं, लेकिन वह लोग मेरी क्या मदद कर पायेंगे, प्यारी लूसी?" फ्रेडरिक ने कहा, "जिस मौक़े का इन्तज़ार सर आर्कीबाल्ड और पादरी कर रहे थे, वह आ गया है। मैं तुम्हें सब बताता हूँ कि कैसे क्या हुआ है। आज तीसरे पहर मैं खेत में काम कर रहा था कि मिस्टर रेडवर्न उधर से घोड़े पर निकले। मैंने सलाम किया। उन्होंने कुछ जवाब न दिया। जब से वे पढ़ कर घर वापस आये हैं, तब से उनमें अभिमान बहुत बढ़ गया है। मैं हमेशा से यह बचाता रहा हूँ कि कहीं कोई ऐसी बात न हो जाय कि उन्हें अपना ग़ुस्सा मुझ पर उतारने का मौक़ा मिले।

वह अकेले घोड़े पर जा रहे थे। दूर से मैंने उनकी आवाज़ सुनी, "ऐ लाँस्डेल, इधर आ!" इस तरह हुकुम दिये जाने पर मुझे बुरा तो बहुत मालूम हुआ, लेकिन उसे छिपाकर मैं वहाँ गया। रेडवर्न ने फिर डाँट कर कहा, "यह चाबुक उठा!" कोई कुत्ते को भी इस तरह नहीं डाँटता है। ग़ुस्से से मेरा चेहरा लाल हो गया। मैंने ऐसी निगाह से उन्हें देखा कि मेरे क्रोध का पूरा पता उनको लग गया होगा। मुझे ग़ुस्से में देख कर उन्हें और भी ज्यादा ग़ुस्सा आ गया। कहने लगे, "फ़ौरन इस चाबुक को उठा, नहीं तो घोड़े पर से उतर कर अभी तेरा मिज़ाज दुरुस्त

कर दूँगा ! मैंने अपने गुस्से को दबा कर कहा, " मैं आपकी सब सेवायें करने को तैयार हूँ, यदि आप शिष्टता से काम लें "। फिर उसने उन्हीं शब्दों में वही हुक्म दोहराया। लूसी, यह सब मुझसे अब बरदाश्त नहीं होता।"

" फ्रेडरिक," लूसी ने कहा, " अगर यह सब बरदाश्त कर लेते तो हिम्मत की कमी मालूम होती। हाँ, फिर क्या हुआ " ।

फ्रेडरिक ने फिर कहना शुरू किया, " मिस्टर रेडबर्न अब गुस्से से बौखला गये और वह बात कही कि जिसे सुन कर तुम्हारे हृदय को बहुत दुख पहुँचेगा। वह कहने लगे कि तू कौन है जो ऐसा ग़ुरूर करता है। यह भी तो पता नहीं है कि तू किसका लड़का है और कौन तुझे विधवा ग्रान्ट के झोपड़े के दरवाजे पर छोड़ गया था।

जब तक बकते रहे, मैं चुप रहा और जब वह कुछ चुप हुए तब मैंने उनसे अपने साथ अनुचित बरताव करने की शिकायत की। मैंने चाबुक नहीं उठाया। वह मुझे फौरन निकाल देने की धमकी देकर चले गये। प्रिये, तुम्हारे ही पिता मेरे निकाले जाने का हुक्म देंगे।"

"आह फ्रेडरिक, बेशक यह बुरी खबर है। अब मैं क्या करूँ ? मैं अपने पिता के पैरों पर पड़ जाऊंगी और उनसे साफ़ तौर से कह दूँगी कि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। साथ ही यह विनय करूँगी कि मेरी प्रार्थना वे स्वीकार करें, यदि उन्हें मुझे दुखी नहीं बनाना है।"

फ्रेडरिक ने कहा, परम प्रिय लूसी, तुम्हें कभी भी ऐसा नहीं करने दूँगा। तुम्हारे पिता का गुस्सा तुम्हारे सर नहीं उतरने दूँगा। अपनी आफतों को खुद ही झेल लूँगा। आज मेरी आँखें खुली हैं। मैं यह समझता था कि मेरे भी कभी अच्छे दिन आवेंगे। तभी तुमसे विवाह का प्रस्ताव करूंगा। आज मुझे मालूम हुआ कि मैं पागल था। मेरा ऐसा ख्याल करने का कारण तुम्हारा प्रेम था। आह! प्रेम स्वयं आशा है। लूसी, तुम्हें नहीं मालूम कि तुमसे मुझे कितना प्रेम है। तुम कभी नहीं जान पाईं कि मेरे हृदय के क्या भाव थे। इस जगह दरिया का पानी बिल्कुल चुप है। यहीं यह सब से ज्यादा गहरी है। ऐसा ही मेरा प्रेम है। जब जब मुझे कोई कष्ट हुआ, जब जब मुझे कोई कठिनाई पड़ी, जब जब मैं दुखी हुआ, तब तब तुम्हारी मनोहारी मूर्ति मेरी आखों के सामने आ गई। उसने मुझे सान्त्वना दी और उत्साहित किया। ओह लूसी, तुम्हारे प्रेम के सहारे ही ...

लूसी अब फूट फूट कर रो रही थी। फ्रेडरिक के हाथ के सहारे टिकी हुई वह अपने प्रवाहित नेत्रों से उसके मुँह की तरफ देख रही थी।

फ्रेडरिक ने कहा, "रोओ नहीं प्रिय लूसी, रोओ नहीं," अपनी भीगी आँखों पर हाथ फेरते हुए उसने कहा, "मुझे मालूम होता है कि वह वक्त आ गया है जब हम लोगों को पूर्ण सहनशीलता से काम लेना पड़ेगा। मै वह हूँ जिसे कोई आशा नहीं है। मैं ग़रीब हूँ और शायद मैं वह हूँ जिसे भाग्य ने कुचले जाने

के लिये चुना है। मैं तुम्हें अपने साथ कष्टों के उठाने के लिये कभी नहीं कहूँगा। मेरा प्रेम मुझे बड़ा से बड़ा स्वार्थत्याग करने के लिये परामर्श देता है। वह स्वार्थ रहित है। तुम्हारे सुख को मैं अपने सुख से कहीं ऊँचा समझता हूँ।"

"तुम्हारा मतलब क्या है फ्रेडरिक ?" लूसी ने चकित और भयभीत होकर पूछा, "तुम्हारे शब्दों से मैं डर रही हूँ।"

"प्रिय. मतलब साफ़ है" फ्रेडरिक ने उत्तर दिया, "यह नीचता है कि मैं तुम्हें उन वादों में फँसाये रखने की कोशिश करूँ जिन्हें तुमने कृपा कर मुझसे प्रेम वश किये थे। लूसी, यही अच्छा होगा कि अब हम तुम अलग हो जाएँ। अब तुम मुझे भूलने की कोशिश करना और यह समझना कि मैं अब इस संसार में नहीं हूँ।"

"बस, फ्रेडरिक, बस—बहुत हुआ, मैं अब नहीं बरदाश्त कर सकती हूँ," लूसी ने रोते हुए कहा, "मैं तुम्हें यह कह कर अपमानित नहीं करूँगी कि तुम उन वादों को पूरा नहीं किया चाहते। हम एक दूसरे को जानते हैं। मुझे तुम्हारी सच्चाई का पता है। अब जो मैं कहती हूँ, वह सुनो—हे ईश्वर, तुम साक्षी हो—चाहे जितनी बुराई तुम्हारे साथ तुम्हारे दुश्मन करें, चाहे जितनी दूर तुमको मुझसे तुम्हारी परिस्थिति ले जाय, चाहे जो कुछ मेरे बाप की राय हो और चाहे जो कोई मेरे साथ शादी करने का प्रस्ताव करे, परन्तु मेरे प्रेम में परिवर्तन नहीं होगा। मैं तुम्हारी हूँ और जीवन पर्यन्त तुम्हारी ही रहूँगी। फ्रेडरिक,

जो मुझे कहना था मैं कह चुकी। अब मेरा दिल हल्का हो गया है।"

"प्रिय लूसी," लॉँस्डेल ने कहा, "इस अटल और अमर प्रेम के लिये शब्दों में कृतज्ञता प्रकट नहीं की जा सकती। अब आशा पुनर्जीवित होती मालूम होती है। तुम्हारी प्रतिज्ञा स्वीकार करता हूं और तुमसे प्रार्थना करता हूं कि वैसी ही मेरी सच्ची प्रतिज्ञा तुम स्वीकार करो।"

अब दोनों प्रेमियों के दिल हलके थे—दोनों ने अटल प्रतिज्ञायें कर ली थीं और दोनों एक दूसरे से गले मिल रहे थे। लेकिन पूर्ण सुख अल्प-जीवी होता है। इतने ही में एक आवाज़ सुनाई दी। दोनों ने मुड़ कर देखा। लूसी के पिता मिस्टर डेविस के बिकराल नेत्र दिखलाई दिये। उसका मुँह कठोर शब्दों से भरा था। उसने गरज कर कहा, "ऐ धोका देने वाली जालसाज़ लड़की, शाम को टहलना क्या इन्हीं मुलाकातों के लिये होता था। लेकिन तू शैतान!" लॉँस्डेल की तरफ़ देख कर वह बोला, "क्या तू मेरी लड़की का अपहरण किया चाहता है"।

फ्रेडरिक ने कहा, "मिस्टर डेविस, यह शुद्ध प्रेम है। दोनों के हृदय में एक दूसरे के लिये यह बचपन ही से प्रवाहित हो रहा है।"

"बस, डेविस ने चिल्ला करके कहा, "इस विषय में अब एक भी शब्द नहीं। लूसी, इधर आ"।

लूसी का हाथ पकड़ कर उसने अपनी तरफ घसीट लिया।

फिर कहा, "लॉस्डेल, तुमसे दो ही चार शब्द मुझे कहना है। मैं तुम्हारे ही मकान की तरफ़ जा रहा था। सर आर्कीबाल्ड का हुक्म है कि अपनी नौकरी का कहीं और इंतज़ाम करो और जितना शीघ्र हो सके यह गाँव छोड़ दो।" यह कह कर डेविस ने पंद्रह दिन की मज़दूरी के पैसे लॉस्डेल के सामने फेंक दिये और अपनी लड़की को घसीटता हुआ चल दिया। लूसी ने मुड़ कर लॉस्डेल की तरफ देखा। उस समय उसके नेत्रों की भाषा मूक थी। उनमें भाषित शब्दों से भी अधिक स्पष्टता थी। लॉस्डेल के व्यथित और व्याकुल चेहरे पर मुस्कराहट की एक हल्की बाह्य रेखा भर थी। लूसी जब तक दिखलाई दी, तब तक एकटक देखता रहा। जब वह दरख्तों के पीछे छिप गई, तब वह वहां से चल दिया। मजदूरी के पैसे वहीं पड़े रह गये।

३

मयखाने में

आज चौपाल के शराब पीने वाले कमरे में रोज से ज्यादा आदमी बैठे हुये थे। वुशेल की बनाई हुई शराब का दौर चल रहा था। हवलदार लैंगले भी वहां था। उमर उसको पैंतालीस बर्ष की होगी, लेकिन देखने से कम का मालूम होता था। लैंगले की बातों का सिलसिला ख़त्म नहीं हो रहा था और वेट्स नाई एक भी बात न कर पाने की वजह से बड़ा व्याकुल था। गाँव के सभी "नेता" वहां मौजूद थे—कस्साव, मोची, दरजी, रोटी बेचने वाला, गिरजे का मुन्शी इत्यादि, इत्यादि। सब आश्चर्य से लैंगले की बातें सुन रहे थे। लैंगले का इस गाँव में आने का मतलब यह था कि फौज में भरती होने के खिलाफ़ लोगों की प्रवृत्ति को बदल दे। वह इस काम को बड़ी योग्यता से कर रहा था। सिपाहियों के जीवन के खटकों को देश प्रेम से रँगता था, तकलीफों को बहादुरों की दृढ़ता की परीक्षा कहता था। संक्षेप में, वह फ़ौजी जीवन का एक मनोहारी दृश्य उपस्थित कर रहा था। गाँव वालों पर उसकी निगाह नहीं थी—कोई ठिंगना था, कोई मोटा था, किसी के पैर बेडौल थे, किसी की पीठ पर कूबड़ था। फिर भी वह सब के साथ घुलमिल गया था, सब की खातिर तवाज़ा कर रहा था।

"सिपाही के जीवन की कठिनाइयाँ—खूब !" लँगले ने कहना आरम्भ किया, "इससे अधिक जीवन कहीं सुखमय हो ही नहीं सकता। मालदार आदमी हज़ारों और लाखों रुपया ख़र्च करके दूसरे मुल्कों का सफ़र करते हैं, लेकिन फ़ौज के सिपाहियों के सफ़र करने का खर्चा सरकार देती है। मैं तीस साल से फ़ौज में हूँ और संसार का कोई ऐसा हिस्सा नहीं है, जहाँ मैं न गया होऊँ और जहाँ का खर्चा मेरे बादशाह और मेरे मुल्क ने न उठाया हो। क्या यह एक बड़ी बात नहीं है ? अगर किसी को फ़ौज में नौकरी करने के खिलाफ़ एक शब्द भी कहना है तो मैं कहूँगा कि यह उसे मालूम ही नहीं है कि इज्ज़त किसे कहते हैं।"

लँगले चुप होने भी नहीं पाया था कि नाई ने कहना शुरू किया, "लेकिन मैं कहता हूँ कि......"

लँगले कब मौक़ा देने वाला था ! वह फिर कहने लगा, "जो मैंने कहा है, वह एकदम सत्य है। फ़ौजी कभी झूठ नहीं बोलता। लोग कहते हैं कि सिपाही को बहुत सी तकलीफ़ें उठानी पड़ती हैं। मैं यह पूछता हूँ कि तकलीफ़ें आखिर उठानी किसे नहीं पड़तीं। फौजी बहादुर होता है। कोई औरत ऐसी नहीं है जिसका दिल फौजी पोशाक पहिनने वाले की तरफ न खिंच जाता हो। यह तो मैं कह ही चुका हूँ कि सिपाही को सफ़र करने में और सांसारिक आमोदों और प्रमोदों का आनन्द उठाने में एक पैसे का भी खर्च नहीं करना पड़ता। उसे खेतों में काम नहीं करना पड़ता, न किसी तरह की मेहनत और न किसी तरह की फ़िक्र। दोनों वक्त

ठीक वक्त पर खाना मिलता है। तन्दुरुस्ती के लिये यह बहुत जरूरी है। सिपाही को कभी अजीर्ण नहीं होता। हमेशा अच्छे साथियों के साथ रहना होता है। दिल हमेशा उसका खुश रहता है।" लँगले का जोश और बढ़ा। वह कहता गया, "लोग कहते हैं कि फ़ौज में बेंत लगाये जाने की सज़ा दी जाती है। हाँ, मैं यह मानता हूँ, लेकिन मैं कहूंगा कि इसमें कोई तकलीफ़ नहीं होती। आप ताज्जुब करेंगे, अगर मैं यह कहूँ कि इसमें बड़ा आनन्द आता है। इससे फ़ायदा यह होता है कि मनुष्य कभी भी यह नहीं भूल सकता कि वह मनुष्य है। बेंतों से हृदय और आत्मा दोनों शुद्ध होती हैं। मुझे उम्मीद है कि आप लोग इस बात को मानेंगे कि जीवन में कभी कभी इस शुद्धता की भी ज़रूरत होती है।"

नाई बेचारा बातें न कर पाने की वजह से चुप था। क्या करता, हवलदार की ज़बान थकती ही नहीं थी। एक दफ़े वह सिर्फ़ "लेकिन" कह पाया था कि लँगले की जबान फिर चली, "मैं जानता हूँ, तुम क्या पूछोगे। मैं बतलाता हूँ। तुम फलों के बारे में पूछने वाले थे। मैं उन मुल्कों में गया हूँ जहाँ दरख्त फलों के बोझ से झुके रहते हैं। भीख माँगने वाले भी उन्हें खाते खाते ऊब जाते हैं।"

नाई से न रहा गया। उसने कहा "मेरी एक बात तो सुन लीजिये।"

वहाँ कौन किसकी सुनता! लँगले को इस वक्त बातें करने की

धुन थी और यही दिखलाने की वह कोशिश कर रहा था कि संसार के समस्त सुख केवल सिपाहियों को ही प्राप्त हो सकते हैं।

जैसे ही वह कुछ चुप हुआ कि नाई को मौका मिल गया उसने पूछा, "जो कुछ हम लोगों को आपने बतलाया, उसके लिये हम आपके बहुत कृतज्ञ हैं, लेकिन हमने सुना है कि फ़ौज में तनख्वाह कम मिलती है और कभी कभी वह भी रोक दी जाती है।"

लँगले ने कहा, "तनख्वाह का रोका जाना एक खयाली बात है। मैंने तो कभी ऐसा नहीं सुना। तेरह आने रोज़ सिपाहियों की तनख्वाह होती है। और यह तो तुम लोग देख ही रहे हो कि मैं किस बेफिक्री से अपना रुपया खर्च करता हूँ!" यह कह कर उसने शराब की दूसरी बोतल लाने का हुक्म दिया।

लँगले की प्रशंसा से वह कमरा गूँज उठा।

लँगले ने पूछा, "क्या मुझे गांव के बाल सवाँरने और रीछ की चर्बी बेचने वाले से बातें करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।"

नाई ने नम्रता से कहा, "जी हाँ, यही मेरा पेशा है। मेरे उस्तरों की तेज़ी, उम्दा गरम पानी, अच्छे साबुन तथा साफ तौलियों का कोई नाई मुक़ाबिला नहीं कर सकता। रीछ की चरबी के लिये तो मेरी दूकान सबसे बढ़ कर मशहूर है।"

"निश्चय," लँगले ने उत्तर दिया, "जब तक मैं इस गाँव में रहूँगा, मुझे आशा है कि रोज़ सबेरे आप मेरी दाढ़ी पर कृपा किया करेंगे। जब मैं किसी को भरती करता हूँ तो दाढ़ी साफ़

रखने पर बहुत जोर देता हूँ और उस नाई को भी इनाम देता हूँ जिसकी शिफारिश से लोग भरती होते हैं"

गाँव वालों पर लैंगले की बातों का अच्छा प्रभाव पड़ रहा था। नाई तो जैसे फूला नहीं समाता था। देर हो जाने से जब सब घर जाने लगे तो लैंगले ने उठकर सबसे हाथ मिलाकर विदा ली।

४

पिता और पुत्री

डेविस रास्ते में एक शब्द भी नहीं बोला। अपने मकान के पास वाली फुलवाड़ी में पहुँच कर उसने लूसी से पूछा, "लूसी, तो तुम फ्रेडरिक लॉंस्डेल से छिप छिप कर मिला करती थीं। तुम्हीं ने उसे इतना आगे बढ़ने की हिम्मत दिलाई होगी, और आपस में तुम दोनों की प्रतिज्ञायें भी हुई होंगी ?"

"पिता," लूसी ने उस दृढ़ता से उत्तर दिया जो केवल विचारों की पवित्रता और आत्मा की सत्यता से उत्पन्न हो सकती है, "मैं अब आप से एक मिनट के लिये भी न छिपाऊँगी कि मैं फ्रेडरिक लॉंस्डेल को पूर्ण हृदय से चाहती हूँ। मैं अब दूसरे से प्रेम नहीं कर सकती। मैंने उनसे प्रतिज्ञा करली है कि हमेशा उन्हीं की रहूँगी।"

"मुझे यही भय था," डेविड के मुँह से सहसा निकल पड़ा, "लूसी, मेरे साथ तुम्हें क्या ऐसा ही बरताव करना था ? तुमने मुझे धोखा दिया। आखिर क्यों ? क्या मैं तुम्हारा पिता नहीं हूँ ? क्या मैंने पिता होने के कर्तव्य का पालन नहीं किया है ?"

"ईश्वर जानता है कि मैंने हमेशा यही कोशिश की है कि आप की आज्ञा का पालन करूँ," लूसी ने धीमे स्वर में बजवा

दिया, " परन्तु हृदय के भावों पर अधिकार रखना असम्भव है। मानव में इतनी शक्ति नहीं कि...।"

" तब भी समझ से काम लेकर इन भावों को अपने क़ाबू में रखना चाहिये," उसके पिता ने कहा, " लूसी, जो कुछ तुमने किया है, वह इतना अनुचित है कि उसका समर्थन नहीं किया जा सकता।"

" मैं उसे उचित प्रमाणित करने का उद्योग कर भी तो नहीं रही हूँ!" लूसी ने दृढ़ता से उत्तर दिया, " मैं केवल उसकी निर्दोषता सिद्ध कर रही हूँ। मैं यह मानती हूँ कि फ्रेडरिक से यों छिप कर मिलना ठीक नहीं था, परन्तु आह! मैं जानती थी कि जिस परिस्थिति में वह है......यह जानते हुए भी कि आप अपनी मंजूरी नहीं देंगे, मैं अक्सर यह सोचती रही कि आप के पैरों पर गिर कर दया की भीख माँगू।"

" लूसी, यह महज़ पागलपन है। मेरे ग़ुस्से की आग भड़का देने को काफ़ी है कि तुम अपने को उसके लिये बरबाद कर रही हो।"

" पिता," लूसी ने कहा, " आप फ्रेडरिक लॉन्डेल को बचपन से अच्छी तरह जानते हैं। आप समझ सकते हैं कि कैसे उदार उनके विचार और कैसा निर्दोष उनका चरित्र है।"

"बस, बस," पिता कठोर स्वर में बोला, "यह सब उपन्यासों की बातें हैं कि एक ऐसे मज़दूर से प्रेम करना, जिसके पास न एक पैसा है और न कहीं नौकर। यह सिर्फ पागलपन है।"

"वह काम से क्यों हटा दिये गये ?" लूसी ने पूछा, "क्या आप सब हाल जानते हैं। आपकी आत्मा उदार है। मैं आप से विनय करती हूँ कि आप सर आर्कीबाल्ड रेडवर्न से फ्रेडरिक के साथ न्याय पूर्ण व्यवहार करने की प्रार्थना कीजिये।"

डेविस उत्तेजित होकर बोला, "देखो, मेरी सहन शीलता की परीक्षा न लो। मेरा इरादा था कि तुम्हें समझा कर इस मामले को खत्म कर दूँ, परन्तु तुम्हारी ज़िद उसे और बिगाड़ रही है। लूसी, मैं तेरा पिता हूँ। मेरा कर्तव्य है कि देखूँ कि तू जीवन में सुखी रहे। तुझ पर मुझे अभिमान रहा है। कहीं ऐसा न हो कि मुझे अब लज्जित होना पड़े।"

"नहीं, पिता, कभी नहीं।" लूसी ने उत्तर दिया।

"लेकिन तुम मेरा कहना समझ नहीं रही हो। मुझे इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि तुम्हारी आत्मा निर्दोष है, परन्तु लॉस्डेल ने तुम्हें धोखा दिया है।"

"पिता, फ्रेडरिक के खिलाफ कुछ न कहिये," लूसी के चेहरे पर सच्चे गुस्से की झलक आ गई। वह बोली, "उनके चरित्र में स्वार्थ तथा कपट का अभाव है।"

डेविस के स्वर में अब तिरस्कार और उपहास था। उसने कहा, "उसके मान और मर्य्यादा का यह अच्छा नमूना है कि उसने तुमको छिप कर मिलने के लिये राज़ी कर लिया। ईश्वर ने तुम्हें सौंदर्य्य दिया है और इस योग्य तुम हो कि ऊंची जगह पर पहुँच सको। इससे बड़ा अभाग्य किसी युवती का नहीं हो

सकता कि अपने से नीचे दर्जे के आदमी के साथ वह शादी करे। मुझे तुमसे बड़ी आशायें हैं। ऐसा न हो कि तुम ही उन्हें चौपट कर दो।"

लूसी ने इन बातों पर ध्यान नहीं दिया और चुप रही। वह घर पहुँचते ही अपने कमरे में चली गई और वहाँ जाकर खूब फूट फूट कर रोई। इससे दिल की कुछ जलन कम हुई। थोड़ी देर में दासी मार्था ने आकर सूचित किया कि भोजन तैयार है। बाप के साथ लूसी नित्यानुसार खाना खाने गई। डेविस ने तो थोड़ा बहुत खाया, परन्तु लूसी आज कुछ भी न खा सकी।

खाना खत्म हो जाने पर डेविस ने कहा, "यद्यपि प्रसंग असुखकर है तो भी, यह उचित है कि सब बातें कह डाली जांय।"

"निश्चय," लूसी ने विस्मित निगाहों से अपने पिता की ओर देखा।

डेविस ने कहना शुरू किया, "मैं फिर कहता हूँ कि ईश्वर ने तुम्हें सौन्दर्य्य दिया है और तुमको किसी बड़ी जगह पर निगाह रखनी चाहिये।"

"पिता, मैं आप का अभिप्राय समझ नहीं रही हूँ।" लूसी ने डरते हुये जवाब दिया।

"समझने की बात यही है कि तुम्हारी जो स्थिति है, उसे देखते हुए तुम्हारी शादी किसी बड़ी जगह में होनी चाहिए और उसी के लिए तुम्हें प्रयत्न करना चाहिए। तुम्हारी जगह अगर और कोई होती तो क्या करती, कुछ जानती हो ?"

" पिता, मैं नहीं जानती कि वह क्या करती।" यह वाक्य लूसी के मुँह से बिल्कुल स्वाभाविक ढंग से निकल गया।

डेविस ने कहा, " तो फिर मैं बिल्कुल साफ ही कहूँ। कोई भी औरत जो तुम्हारी जगह में होती तो वह क्या चाहती—किसी मजदूर से शादी करके एक टूटे फूटे मकान में रहना या किसी बड़े आदमी से शादी करके महलों में राज करना? अब शायद मुझे इससे ज्यादा साफ़ तौर से कहने की जरूरत नहीं है। अगर तुम चाहो तो एक महल की रानी बन सकती हो।"

लूसी मूर्तिवत बैठी चकित नेत्रों से अपने पिता की ओर देखती रही।

डेविस बोला, "लूसी, क्या मेरा कहना तुम अब भी नहीं समझीं। अगर तुम्हारे अब भी वही विचार हैं तो मैं उनको तुम्हारे दिमाग से निकाल देने की तरकीब जानता हूँ। लॉन्स्डेल को अब गाँव में कहीं नौकरी नहीं मिलेगी और उसे गाँव छोड़ना पड़ेगा। इस पर मैं निगाह रक्खूँगा कि तुम और वह छिप कर पत्र व्यवहार न कर सको। साथ ही यह भी समझ लो कि बड़ी से बड़ी चीज तुम्हारे हाथ के नजदीक है। मैंने सब सोच लिया है, अच्छी तरह से विचार लिया है और मेरी सारी आशा-अभिलाषाओं का वह केन्द्र बन गया है। अब समय आ गया है कि काम शुरू हो।"

लूसी के मुँह से एक आह निकल पड़ी। उसे अपने बाप के

असली रंग का पता उसी दिन चला कि वह कितना स्वार्थी और सिद्धान्त हीन है।

डेविस ने फिर शुरू किया, "लूसी, जो कुछ मुझे कहना था, कह चुका। जब तुम विचार करोगी तो मुझसे सहमत होगी कि इसमें तुम्हारा ही भला है। देखना, मेरे अनुसंधान में गड़बड़ न हो और मछली काँटे में फँस जाय।"

लूसी ने दृढ़ता से उत्तर दिया, "बस, पिता जी, बस। यदि मैं अपना हृदय फ्रेडरिक को न भी दे चुकी होती, तब भी मैं यह न करती।"

डेविस ने क्रुद्ध होकर कहा, "तुम्हें करना पड़ेगा। जब नरमी से काम नहीं चलता तब मैं सख्ती से करना जानता हूँ। यह तुम अच्छी तरह समझती हो।"

"खूब समझती हूँ," कह कर लूसी उठ पड़ी और कमरे से बाहर चली गई।

यही पहला अवसर था जब रात को बिना अभिवादन किये हुए लूसी सोने चली गई।

५

रेडवर्न का खान्दान

गाँव के मालिक के खान्दान से अब कुछ और अधिक परिचित होने की आवश्यकता है। यह पहले ही कहा जा चुका है कि सर आर्कीबाल्ड रेडवर्न की उमर क़रीब पचास साल की थी। आप गठीले बदन के सुडौल लम्बे आदमी थे। अपनी सामाजिक स्थिति के अनुसार आप ठाट-बाट से रहते थे। लेडी रेडवर्न आप से क़रीब दस वर्ष छोटी थीं। यद्यपि उनके शरीर में कुछ स्थूलता आने लगी थी, तब भी सौंदर्य्य की कमी नहीं थी। उनकी प्रशंसा दूर दूर तक थी। यों न तो सब में गुण ही गुण होते हैं और न सब में अवगुण ही अवगुण—दोनों का संमिश्रण होता है। वही यहाँ भी था। कहाँ यह व्यापक सौंदर्य्य और कहाँ ऐसे संकीर्ण विचार कि ग़रीब आदमी केवल बड़े आदमियों की ग़ुलामी करने और उनका हुक्म मानने के लिये पैदा होते हैं और यदि कोई स्वतंत्रता से अपना विचार प्रकट करता है तो तुरंत उसे दुष्ट और राजद्रोही समझना चाहिये।

मिस रेडवर्ड सर रेडवर्न की बहिन थीं। आपकी उमर क़रीब क़रीब आपकी भावज जितनी थी। अन्य बातों में आप उनसे बिल्कुल प्रतिकूल थीं—जितनी उनमें ख़ूबसूरती थी, उतना ही

उसका अभाव इनमें था। अपने भाई की तरह लम्बी, बहुत दुबली, पीला चेहरा तथा पतले और छोटे ओंठ, जो पूरी तरह दाँतों को ढक नहीं पाते थे। प्रत्यक्षतः आपका प्रभाव लोगों पर बहुत बुरा पड़ता था और शायद इसी वजह से अभी तक आप की शादी नहीं हुई थी। समाज के तिरस्कार का पहला असर यह होता है कि लोग शर्माने और झेंपने लगते हैं। यही हाल मिस रेडवर्न का हुआ। वह कहीं भी जाते शर्माती थीं और अन्त में सिवा गिर्जे के और सब जगह उन्होंने आना-जाना छोड़ दिया था।

जिराल्ड रेडवर्न की, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, अवस्था करीब २१ वर्ष की थी। यह सर आर्कीबाल्ड रेडवर्न के लड़के थे। इसी उमर में आप ढील ढाले थे—कमजोर आवाज, उजड़ा हुआ चेहरा, पीला बदन और निस्तेज आँखें घोषित कर रहीं थीं कि जवानी आकर बिदा हो चुकी थी। बचपन में माँ बाप को इनसे बहुत उम्मीदें थीं। सोलह वर्ष की उमर में आक्सफोर्ड भेजे गये थे, लेकिन वहाँ पहुँच कर दो ही साल में दीवानी जवानी ने उनका वह रंग बदला कि तन्दुरुस्ती बिल्कुल चौपट हो गई। बिल्कुल चौपट हो गई। अगर यही चाल ढाल थोड़े दिन और रहती तो शायद जिन्दगी से भी हाथ धोना पड़ता। कुशल यह हुई कि वहाँ के डाक्टरों ने आपके बाप को सब हाल लिख भेजा और यह राय दी कि आप इन्हें घर बुला लीजिये। देहात के

जल और वायु से इनको बहुत लाभ हुआ, परन्तु चेहरे पर वह आब लौट कर न आई। अब यह घर ही पर रहते थे।

एक रोज शाम को घर के सब लोग एक ही कमरे में बैठे हुये थे। सर आर्कीबाल्ड अखबार पढ़ रहे थे, जिराल्ड एक नाविल को सामने रखे जम्हाइयाँ ले रहा था, और मिस रेडवर्न (जो फूफी जेन कहलाती थीं) बिलकुल चुप बैठी अपनी भावज की बढ़ी-चढ़ी बातें सुन रही थी। उनके होठों पर तिरस्कार युक्त हल्की मुस्कराहट खेल रही थी।

"अच्छा, तुम्हारे कालेज के परम मित्र फ्रैंकडैशउड को फौज में कमीशन मिला है।" सर आर्कीबाल्ड ने अखबार नीचा करके जिराल्ड की तरफ देखते हुए कहा।

"तो क्या उसने अपना गिरजे से सम्बन्ध तोड़ लिया है? मैं भी यही समझता था कि वह गिरजे के योग्य नहीं है। छ फुट का लम्बा आदमी पुरोहितासन पर कैसा अच्छा दिखलाई देता और उसे वहाँ देखकर उपदेश सुनने वाले क्यों न हँसते?" जिराल्ड ने उत्तर में कहा।

"हाँ, अगर वहाँ लोग तुम्हारा अनुकरण करते।" जेन ने कहा।

"ओह यदि मैं जवान होता," बैरोनेट ने कहा "तो निश्चय ही फ़ौज में नौकरी करता।"

"ऐसी बातें जिराल्ड के सामने न कीजिए," लेडी रेडवर्न बोल उठीं, "मैं नहीं चाहती कि यह वहाँ जाय। फौजी वर्दी से बदन

की उठान मारी जाती है। भारी टोपी पहिनने से सर के बाल गिर जाते हैं। आप जानते हैं कि मेरा एक भाई कर्नल था। २१ वर्ष की उमर में वह इतना ख़ूबसूरत था कि...... ।"

"शायद उतना ही जितना कि जिराल्ड है !" जेन ने कहा ।

इस पर बैरोनेट ने एक तीव्र दृष्टि से अपनी बहिन जेन की ओर देखा, परन्तु इन पर इसका कुछ भी असर न पड़ा ।

"मैं समझता हूँ कि आपने अपना रंग जमाने का पेटेन्ट तरीका शुरू कर दिया है !" जिराल्ड ने उत्तर दिया "लेकिन आपको यह ख़याल न करना चाहिये कि आप सौंदर्य्य की मूर्ति हैं। वास्तव में, खेतों में अनाज पकने पर अगर आप वहाँ कठपुतली की तरह खड़ी कर दी जाया करें तो एक भी कौवा पास न फटके !"

"नहीं, यह काम तुम अच्छी तरह कर पाओगे," जेन ने चुटकी ली, "क्योंकि कौवे उड़ाने का काम वे अच्छी तरह कर सकते हैं जो केवल देखने भर के आदमी हैं।"

" जहन्नुम में जाए सौन्दर्य " जिराल्ड ने गुस्से से कहा, "आपने जब यह बात छेड़ दी है तो मुझे कहने दीजिए कि मैं वाक़ई में फ़ौज में नौकरी करना चाहता हूँ।"

"हे भगवान !" लेडी रेडवर्न ने भयभीत होकर कहा, " मेरा इकलौता लाल गोली खाने का जोखिम उठाये। अगर कहीं लड़ाई छिड़ गई तो...... ?

"उसे कौन जोखिम जो पीछे ही रहेगा ? " जेन ने कहा।

" कृपया बात न काटिए ", लेडी रेडवर्न ने नाखुश होकर

कहा, "सर आर्की, देखिये, आपने लड़के के दिमाग़ में कैसा विचार भर दिया है।"

"नहीं, उन्होंने यह विचार मेरे दिमाग़ में नहीं भरा है," जिराल्ड ने उत्तर दिया, "यह मैं खुद सोच रहा था।"

"बड़े भाग्य की बात है" जेन बीच में बोल उठी, "नहीं तो तुम्हारे दिमाग़ को यह जरूरत थी कि उसमें दूसरा कोई कुछ भरता।"

"इस बात को मैं बहुत दिनों से सोच रहा था," जिराल्ड कहता गया, "मैं घुड़सवारों में नौकरी नहीं किया चाहता हूँ। उनकी वर्दी मुझे पसन्द नहीं है। मैं पैदल चलने वाले सिपाहियों की सेना पसन्द करता हूँ। आपके प्रभाव से (बाप को सम्बोधित करके) मुझे भरती होते ही फौज में कमीशन मिल जायगा और आप जिस पल्टन को पसन्द करेंगे उसी में मैं हो जाऊँगा। आप चाहें तो उस पल्टन में भी हो सकता हूँ जो बाहर से अभी लौटी है और दो चार बरस अभी यहीं रहेगी।"

"हाँ, अगर ऐसा हो सके" लेडी रेडबर्न ने कहा, "देखो, अपनी वर्दी में सोनहली लैस लगवाना। रुपहली मुझे पसन्द नहीं आती है। लोगों को ताज्जुब होगा जब वर्दी पहिन कर तुम आया करोगे। अड़ोस-पड़ोस की लड़कियाँ ललचाई हुई निगाहों से तुम्हारी तरफ देखा करेंगी!"

"जब इस विषय पर बातचीत शुरू हुई है तो मैं कहता हूँ"

बैरोनेट ने कहा, "तीन चार साल फ़ौज में नौकरी करके कमीशन पाना जिराल्ड के लिए अच्छा ही होगा।"

जिराल्ड ने कहा "मुझे खुशी हुई कि आपने मेरी राय को पसन्द किया। फ़ौज की नौकरी मेरे लिए बहुत ठीक रहेगी। रुपया कब दाखिल कीजियेगा ?"

सर आर्की ने उत्तर दिया, "मुझे और अपनी माँ को इस विषय पर ज़रा और सोच लेने दो। मैं दो एक दिन में लंदन को लिखूँगा।"

"जिराल्ड, हाँ खूब याद आई," सर आर्की ने फिर कहा, "जैसा कि तुमने कहा था, हमने डेविस को हुक्म दे दिया है कि उस बदमाश को निकाल दे। उसका नाम क्या है ?"

"उसका नाम फ्रेडरिक लाँस्डेल है," जिराल्ड ने उत्तर दिया, "ऐसा दुष्ट मैंने कभी नहीं देखा।"

"तुम्हारे कान तो उसने नहीं उखाड़े थे !" जेन ने चिढ़ कर कहा।

"यह खूब कही !" जिराल्ड ने उत्तर दिया, "अगर थोड़ी देर वह और ठहर जाता तो अपने चाबुक से उसकी ऐसी मरम्मत करता कि वह जन्म भर न भूलता। जब उसने देखा कि घोड़े से उतर कर चाबुक उठाने पर मेरी मंशा क्या थी, तब चलता बना। सभी देहाती बड़े डरपोक होते हैं।"

"और उसी तरह सभ्य कहलाने वाले भी !" जेन ने बात पर बात जड़ दी।

जिराल्ड ने जेन की बातों की परवाह नहीं की और अपने पिता की ओर देख कर कहा, "तो आपने उस बदमाश को निकाल देने के लिये डेविस को हुक्म दे दिया है।"

"हाँ, मैं हुक्म दे चुका हूँ," पिता ने उत्तर दिया, "ऐसों को नौकर रखना ठीक नहीं। इन लोगों की बातों से दूसरे मजदूरों पर बहुत बुरा असर पड़ता है। मजदूरों का अधिकार! वाह, कैसी बेतुकी बात है"।

"बेशक," जेन ने कहा, "उनके अधिकार कैसे? उनके अधिकार उनकी ग़ल्तियाँ हैं।"

"मैं बहुत दिनों से इस फिक्र में था," सर आर्की ने कहना जारी रक्खा, "कि किस तरह इस हरामजादे को निकाल दूँ, लेकिन कोई मौक़ा हाथ नहीं आता था। अब सिवा गाँव छोड़ने के और क्या करेगा?"

बातें ख़त्म न होने पाई थीं कि कमरे का दरवाजा खुला और नौकर ने पादरी मिस्टर आर्डेन के आने की खबर दी। पादरी ने कमरे में पदार्पण किया। वृद्ध होने पर भी आपके चेहरे से यह भलीभाँति पता लगाया जा सकता था कि जवानी में आप खूब-सूरत रहे होंगे। आपके जवान लड़के वैरोनेट की कृपा से अच्छी अच्छी जगहों पर नौकर थे। वैरोनेट में और आप में दोस्ती थी, लोकाचार नहीं था। आप आये और कुर्सी पर बैठ गये। इधर-उधर की बातें करने लगे। बातें करते करते आपने बतलाया कि आज इस गाँव में फौज में भरती करने वाला हवलदार आया है।

"बहुत अच्छा है," बैरोनेट ने कहा, "सारा कूड़ा करकट वह साफ कर ले जायगा। इस गाँव में बहुतेरे ऐसे हैं जिनके पास कुछ काम करने को नहीं है। अच्छा है, गाँव को उनसे छुटकारा मिल जायगा।"

"हाँ, जब मैं यहाँ आ रहा था, तब रास्ते में फ्रेडरिक लाँस्डेल से मुलाक़ात हो गई।" मिस्टर आर्डेन कहने लगे, "मैंने उससे पूछा कि तुमने अपनी बेवकूफ़ी छोड़ी या नहीं। उसने अपनी आँखें चढ़ा कर कहा कि उसे अब और भी दृढ़ विश्वास हो गया है कि अमीर आदमियों का व्यवहार ग़रीब आदमियों के साथ बहुत कठोर और अन्याययुक्त होता है। मैंने उस दुष्ट को इसके लिये अच्छी तरह फटकारा। उसने अभिवादन तक नहीं किया और नाराज़ होकर चला गया।"

"न मालूम अब क्या होने वाला है?" लेडी रेडवर्न ने कहा।

"बस यही कि लोग घुटने टेक कर सलाम नहीं करेंगे!" जेन बीच में बोल उठी।

जिराल्ड ने पादरी को नमक मिर्च लगा कर कह सुनाया कि लाँस्डेल ने उनके साथ क्या बरताव किया था। लाँस्डेल को लेकर बहुत कुछ भला बुरा कहा गया और उसके नाम लानत और फटकार देकर आख़िर में मान लिया गया कि उसके लिये यही अच्छा है कि फ़ौज में नौकरी कर वह यहाँ से रफ़ा हो।

९

रंगरूट

दूसरे रोज़ सुबह बेट्स नाई को दाढ़ी बनाने के लिये हवलदार लैंगले ने बुला भेजा। दाढ़ी बन जाने पर लैंगले ने एक रुपया उसके सामने फेंक दिया। बेट्स बाकी पैसे लौटाने के लिये जेब टटोलने लगा। सिवाय दो चार पैसों और कुंजियों के गुच्छा के वहाँ और कुछ नहीं था। लैंगले ने मुस्करा कर कहा कि पैसे वापस करने की कोई जरूरत नहीं। बेट्स ने धन्यवाद दिया, बहुत झुक कर सलाम किया और यह विश्वास दिलाया कि वह उसकी हर तरह से सेवा और मदद करेगा। बेट्स को अब यह उम्मीद हो गई थी कि हर रोज़ इसी तरह उसकी जेब गरम हो जाया करेगी। रुपया पत्थर को भी पिघला देता है। अपनी दूकान पर वापस आकर बेट्स ने लैंगले और फौजी जीवन की तारीफ के पुल बाँधने शुरू किए। दूकान पर बहुत से आदमी दाढ़ी बनवाने के लिए आये हुये थे। उनमें लॉरडेल भी था। वह एक कोने में बैठा हुआ किताब पढ़ रहा था। जब दाढ़ी बनवा चुका तब फिर अपनी किताब उठाई और पढ़ने लगा। थोड़ी देर बाद वह उसके हाथ से गिर गई। यह बात नहीं थी कि बेट्स की बातें उसे मुग्ध किये हुए

थीं—वह उन्हें बिलकुल नहीं सुन रहा था। इस समय उसके मस्तिष्क की सारी शक्तियाँ अपनी दुखद परिस्थिति के सोचने में लगी हुई थीं। काम करके जो पैसे पहले कमाये थे, वह सब खत्म हो आये थे। काम मिलने की कहीं कोई उम्मीद नहीं थी। उसके स्वाभिमान को यह सोचते ही एक गहरी चोट लगती थी कि कोई अपराध न करने पर भी जिराल्ड और बैरोनेट से जाकर वह क्षमा की याचना करे। अपराध करने पर क्षमा न न माँगने में जितनी उद्दंडता है, उससे अधिक बिना अपराध किये क्षमा प्रार्थी होने में आत्म दुर्बलता है। दूसरे लॉन्सडेल को यह भी ख़याल था कि क्षमा माँगने पर भी नहीं मिलेगी। अब उसके सामने सवाल यह था कि किस तरह से गुजर बसर होगी। थोड़ी देर के लिये इससे उसे कुछ खुशी हो जाती थी कि वह अब दूसरे जिमींदारों की रियासतों में काम करेगा, लेकिन यह ख्याल आते ही फिर दिल बैठ जाता था कि मजदूरों की कमी नहीं है— काम से काम करने वाले ज्यादा हैं।

वह इस इंतजार में बैठा हुआ था कि काफी तैयार हो जाय। जब वह तैयार हो गई तब उसे पीकर वह अपने कोठे पर के कमरे में जाने लगा कि जो कुछ रूखा सूखा वहाँ रक्खा था उसे खा कर पानी पी ले। जब वह जाने लगा तब वहाँ बैठे हुये लोगों में से एक ने पूछा "क्या काम पर से हटा दिये गये हो?" लॉन्सडेल ठहर गया और उसने दस पाँच शब्दों में अपना हाल बतला दिया।

"तुम्हारे काम पर से हटाये जाने की बात सुन कर मुझे बड़ा दुख हुआ था।"

वेट्स ने एक लम्बी साँस लेकर कहा, "लेकिन तुम्हारे लिये एक मौक़ा आ गया है।"

"क्या मतलब ?" लाँस्डेल ने पूछा

"क्या मतलब !" वेट्स ने उसी के शब्द दुहराते हुए कहा, "मेरा मतलब यह है कि अब मौक़ा आ गया है कि तुम जमींदार, मुख्तार, काश्तकार—इन सब के झगड़ों से फ़ुर्सत पा जाओ और कमा कर आराम से ज़िन्दगी बसर करो। अगर क़िस्मत ने साथ दिया तो बुढ़ापे में कर्नल या जनरल हो जाओगे।"

लाँस्डेल ने सुन कर कुछ जवाब नहीं दिया। उसके चेहरे से मालूम होता था कि जैसे वह एक भारी सोच में पड़ गया हो। कुछ देर ठिठक कर वह अपने कमरे में चला गया।

लाँस्डेल के चले जाने पर भी वेट्स ने अपनी बातों का सिलसिला खत्म नहीं किया—वह बराबर लैंगले और फ़ौजी जीवन की तारीफ़ें करता रहा। वहाँ बैठे देहातियों पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ रहा था। उनमें से बहुतों ने सुख-स्वप्न देखना शुरू कर दिया था। आखिर में क़रीब क़रीब सभों ने यह तय किया कि भरती करने वाले हवलदार से मिला जाय और देखा जाय कि वह क्या कहता है।

चार पाँच आदमी वेट्स की दूकान से निकल कर मज़दूरी करने के लिये खेतों को जा रहे थे। रास्ते में चौपाल पड़ती थी

जहाँ लैंगले ठहरा था। उस वक्त वह अपनी पूरी फौजी पोशाक पहने बाहर खड़ा था। उसे देख कर ये गँवार भयभीत हो गये। उसकी निगाह जैसे कह रही थी कि मैं तुम पर दया करता हूँ और मुस्कराहट यह सूचित कर रही थी कि देखो मैं कितना सुखी हूँ।

इधर उधर की दो एक मामूली बातें होने के बाद लैंगले ने कहा, "तुम सब काम करने जा रहे हो। बड़ा सुहावना प्रातः काल है, खेतों में काम करने के लिये अच्छा समय है, परन्तु खेतों की मेहनत बड़ी कड़ी मेहनत है। ईश्वर की दया से मैं इससे बचा हूँ। मैं बादशाह की सेवा में हूँ—अच्छा खाना खाने को मिलता है, अच्छी जगह रहने को मिलती है, अच्छे कपड़े पहनता हूँ और ईश्वर की कृपा से अच्छी तनख्वाह से जेब गर्म रहती है"।

देहातियों ने ईर्षापूर्ण दृष्टि से लैंगले की ओर देखा। उसका मोटा ताजा बदन उसकी बातों की सत्यता को प्रमाणित कर रहा था।

उसने फिर कहा, "मेरे मित्रो, फौजी जीवन ही एक ऐसा जीवन है जिसमें काम कम और आराम ज्यादा है। बस थोड़ी क़वायद करनी पड़ती है और तमाम दिन रात चैन रहती है— उम्दा खाना और उम्दा शराब!"

देहातियों के मुँह में पानी भर आया। ललचाई हुई निगाहों से वे शराब खाने के दरवाज़े की तरफ़ देखने लगे। लैंगले समझ गया। उसने उन लोगों से कहा, "दोस्तो, फौज का सिपाही ही जी भर कर खर्च कर सकता है। रुपये की कमी उसके

पास नहीं होती। वह अपने बादशाह की सेवा करता है और बादशाह दिल खोल कर उसे रुपया देता है। आओ, हम सब लोग साथ बैठ कर शराब पियें।"

ऐसे निमंत्रण को वे गरीब लोग कब अस्वीकार करते। उसके साथ शराब पीने वाले कमरे में गये—बोतलें खुलने लगीं और देखते-देखते गिलास खाली होने लगे। खाने का भी इंतजाम हो गया। लैंगले बराबर अपने काम में लगा हुआ था। फौजी जीवन की वह ऐसी तारीफें कर रहा था कि उन देहातियों की नजरों में चकाचौंध पैदा हो गई थी। शराब और भी मदद कर रही थी और मज़ेदार खाना आँखों पर परदा डाले हुए था।

दूकानदार से लैंगले ने कहा, "अच्छी से अच्छी तेज़ शराब लाओ। जल्दी करो, क्यों देर कर रहे हो।"

बुशेल ने कहा, "मिस्टर लैंगले, मैं यह नहीं चाहता कि लोग कहें कि ग़रीब और सीधे सादे आदमियों के फँसाने में मेरा भी हाथ......।"

बात पूरी खत्म भी न होने पाई थी कि लैंगले ने सख्त आवाज़ में कहा, "मिस्टर बुशेल, मुझे मालूम होता है कि तुम बाग़ियों में से हो जो बादशाह की मर्जी की खिलाफत कर रहे हो। मैं तुम्हें धमकी नहीं दे रहा हूँ, बल्कि यह याद दिला रहा हूँ कि हम लोग जो भरती करने के काम के लिये बाहर भेजे जाते हैं, उनको बहुत अधिकार दिये जाते हैं।"

बुशेल डर गया। घबरा कर गिड़गिड़ाने लगा, "मेरा

यह मतलब नहीं था, सरकार, मेरा मतलब था कि—कि—कि—मैं क्षमा माँगता हूँ।"

"अच्छा, मेरे दोस्त, मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ," लैंगले ने मुस्करा कर जवाब दिया, "शराब जल्दी ले आओ"।

शराब आते ही फिर दौर शुरु हुआ। लैंगले की जबान फिर खुली। जब उसने देखा कि प्रभाव पूर्ण रूप से पड़ गया है, तब उसने जेब से निकाल कर रुपया मेज़ पर रक्खा और कहा, "मैं ख़याल करता हूँ कि तुम लोगों में से हर एक तीन तीन पौंड लेना पसन्द करेगा। ले सकते हो, यह तुम्हारे हैं, लेकिन जल्दी खर्च कर डालोगे इस वजह से अभी सिर्फ़ दस शिलिङ्ग ले लो।"

रुपये की झन्कार से बड़ों बड़ों के क़दम डिग जाते हैं। फिर उनको कौन सँभालता जिन्होंने कभी पेट भर कर खाया तक न हो! देहाती लालच में आ गये और उन्होंने दस शिलिंग उठा कर अपनी जेबों में रख लिए। अब लैंगले ने बहुत खुश होकर कहा, "आओ दोस्तो, हाथ मिलाओ। अब तुम बादशाह की सेवा में हो। तुम्हारा जीवन कितना सुखी होगा!"

इसके बाद उसने सबके नाम लिखे और पहिचान करवाई। फिर उन लोगों से कहा कि दूसरे कमरे में जाकर शराब पियो और आराम करो। साथ ही शराब खाने के मालिक को हुक्म दिया कि इन लोगों को किसी तरह की तकलीफ़ न होने पावे।

यहाँ का इन्तज़ाम करके लैंगले उन लोगों के घर पर गया, जिनको अभी उसने भरती किया था। वहाँ उनकी माँ और

बहनों ने बहुत हाथ पैर जोड़े, भाइयों ने धमकियाँ दीं, लेकिन लैंगले का यह दृश्य देखने का पहिला मौक़ा नहीं था। उसने ज़रा भी परवाह न कर कहा कि जो लोग भरती हुये हैं, अगर उनको बहकाने की कोशिश की गई तो बहकाने वालों के साथ कड़ा से कड़ा व्यवहार किया जायगा। मजबूरी का नाम सब्र है—घर वाले रो-धो करके चुप हो गये।

७

फ्रेडरिक लॉंस्डेल

लँगले को गाँव में आये एक हफ्ता हो गया था। अभी तक उसने पाँच छ आदमियों को भरती किया था। इस काम में उसकी मदद बहुत कुछ बेट्स नाई ने की थी। इस हफ्ते फ्रेडरिक लॉंस्डेल अत्यन्त विषाद और चिन्ता युक्त रहा। काम मिलने की कहीं कोई आशा नहीं थी। नौकरी छूटने के पहले जो पैसे मिले थे, वह सब खर्च हो आये थे। भविष्य अन्धकार मय था। गरीबी से भी अधिक तकलीफ़ देता था, लूसी का प्रेम। रोज शाम को वह जंगल के नजदीक वाले नाले पर इस उम्मीद से जाता था कि कहीं उसकी झलक ही दिखलाई दे जाय, लेकिन रोज दिल पर पत्थर रख कर घर लौट आता था। उसके प्रेम में निरी स्वार्थता नहीं थी—उसका यह विचार उसे चैन नहीं लेने देता था कि उसी की वजह से वह बाहर आने-जाने से रोक दी गई होगी। इन तकलीफों और उलझनों में फ्रेडरिक लॉंस्डेल ने यह सात दिन काटे।

एक रोज शाम को लॉंस्डेल चिन्तित और व्यथित बैठा हुआ यह सोच रहा था कि अब फाका करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं रह गया है। इसी समय बेट्स ने दरवाजा खोल कर

अन्दर देखा और कहा, "कैसे दुखी दिखलाई देते हो। इस हालत में मैं तुम्हे नहीं देख सकता हूँ। क्या दुःख है। जरा तबियत सँभालो।"

"क्या तबियत सँभालूँ !" लाँस्डेल ने कातर स्वर में उत्तर दिया, "जिस बुरी हालत में मैं हूँ वह तुमसे छिपी नहीं है। कहीं काम नहीं मिलता कि मेहनत और मजदूरी करके रोटी कमाऊँ। कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करूँ।"

"वाह, क्या करूँ, यह खूब कहा !" वेट्स ने उत्तर दिया, "यदि तुम्हारे ऐसा खूबसूरत और जवान आदमी मैं होता तो दिखला देता कि मैं क्या कर सकता था।"

यह सुनते ही लाँस्डेल चौंक पड़ा। वह समझ गया कि नाई अब क्या कहना चाहता है।

वेट्स ने कहा, "मैं देखता हूँ कि मैं जो कहना चाहता था, वह तुम समझ गये हो। तुम्हें ईश्वर ने मजदूरी करने के लिये नहीं पैदा किया है। अगर तुम चाहो तो फौज के एक अच्छे अफसर हो सकते हो।"

"फौज का एक अफसर !" लाँस्डेल ने आश्चर्य से पूछा, तुम्हारा मतलब क्या है ?"

"आज कल फौज में बहुत जल्दी तरक्की करने का मौक़ा रहता है," नाई ने जवाब दिया, "भरती करने वाला हवलदार गाँव में ठहरा है। उससे और मुझसे अक्सर इस बारे में बातें हुई

हैं। अगर फौज में भरती हो जाओ तो चार छ सालों में ही तुम बिल्ले और तमगे लगा करके यहाँ आओगे।"

डूबते हुए को तिनके का सहारा बहुत होता है। लॉस्डेल भी सुख स्वप्न देखने लगा। यह ख्याल बार बार आता था कि कम से कम भर पेट खाने को तो मिल जायगा। इस ख्याल से ज्यादा वह यह सोचता था कि लूसी ने उससे शादी करने का वायदा तो कर ही लिया है। लूसी के वायदे पर लॉस्डेल को पूर्ण विश्वास था। इसी पर उसकी सब आशायें केन्द्रित हो गई थीं। दिन-रात वह यही सोचा करता था कि इस ग़रीबी में उससे शादी करके उसे क्या खिलावेगा। उसकी यह प्रबल इच्छा थी कि कुछ काम करके चार पैसे कमावे। थोड़ी देर सोच कर लॉस्डेल ने कहा, "मिस्टर बेट्स, मैंने तय कर लिया है कि मैं फौज में भरती होऊँगा। मेरे पास अब एक भी पैसा नहीं रह गया है। अगर मैं यहाँ तुम्हारे मकान में और ठहरा तो किराया भी नहीं दे पाऊँगा। कहीं से भी चार पैसे कमाने की उम्मीद नहीं है। मैं यह चाहता नहीं हूँ कि किसी की उदारता पर जीवित रहूँ। इस वजह से मैं कल ही सुबह भरती करने वाले हवलदार से मिलूँगा।"

"तो आज ही क्यों नहीं मिल लेते?" बेट्स ने बतलाया, "मैं उधर कुछ लोगों से मिलने जा रहा हूँ। वहाँ चौपाल में हवलदार जरूर होगा। मेरे साथ चलो और मिल लो। बड़ा अच्छा आदमी है।"

"नहीं, शराब की दूकान में तो मैं नहीं जाऊँगा," लॉस्डेल

बोला, "मैंने पक्का इरादा कर लिया है। अब मैं उनसे मिलूँगा।"

"अगर वहाँ नहीं जाया चाहते हो तो लैंगले को मैं दूकान के बाहर बुला लाऊँगा। मेरे साथ चलो।"

लॉन्स्डेल वेट्स के साथ चौपाल तक गया। वह बाहर ही खड़ा रहा। दूसरे कमरे में शराब पी जा रही थी। वेट्स ने अंदर जा कर लैंगले के कान में मुस्कराते हुये कहा कि लॉन्स्डेल भरती होगा। लैंगले वेट्स के साथ बाहर निकल आया। वेट्स ने दोनों को एक दूसरे से मिलवा दिया।

"मिस्टर लॉन्स्डेल, मुझे आपसे मिल कर बड़ी खुशी हुई।" लैंगले ने कहा, "मैंने सुना है कि आपने अपने बादशाह की सेवा करने का इरादा कर लिया है। आप ऐसे बहादुरों के लिए यही होना भी चाहिए। जिस रेजीमेन्ट में आप होंगे, उसमें आप जैसा सुडौल आदमी दूसरा नहीं दिखलाई देगा।" फिर कन्धे पर हाथ रख कर कहा, "अगर मैं ग़लती पर नहीं हूँ तो बहुत ही जल्द इस जगह कोई बिल्ला टँका हुआ दिखलाई देगा।"

आदर-सत्कार और मीठी मीठी बातों पर लॉन्स्डेल को विश्वास नहीं होता था। लॉन्स्डेल ने घृणा से लैंगले की तरफ अपना मुँह फेर लिया, परन्तु रोटियों की याद आते ही दिल बैठ गया। कहा, "मिस्टर लैंगले, अगर सात साल के लिये*

*:—पहले तमाम उमर के लिये नहीं वरन् नियत समय के लिये लोग भरती होते थे। सन् १८२९ से यह कानून तोड़ दिया गया।

आप भरती कर रहे हैं तो मैं फौज में नौकरी करने के लिये तैयार हूँ।"

"ठीक है," लैंगले ने कहा, "मैं बादशाह के नाम पर आपको भर्ती करता हूँ। लीजिये यह दस शिलिंग।"

लॉस्डेल ने पूछा, "मुझे अब और क्या करना है।"

"अभी कुछ नहीं," लैंगेले ने उत्तर दिया, "अगर तुम पसन्द करो तो अन्दर चल कर मेरे साथ एक गिलास शराब पी लो।"

"क्षमा कीजिये," लॉस्डेल ने कुछ रुखाई से जवाब दिया, "लेकिन यह न समझियेगा कि जो कुछ इरादा कर लिया है, उससे मैं हटूँगा। नहीं, इसका कोई भय नहीं है।"

"आप वाक़ई बहादुर हैं!" लैंगले कहने लगा, "अभी दो दिन जिस तरह आप चाहें अपना दिल बहलायें। अगले शनिवार को आपके पास नोटिस आयेगा कि आप भरती हो गये हैं और सोमवार को साढ़े नौ बजे सुबह कृपा करके मेरे साथ किसी मजिस्ट्रेट के पास चले चलियेगा। तब जरूरी लिखा पढ़ी हो जायगी।

"जरूर चलूँगा," लॉस्डेल ने उत्तर दिया, "मैं अब जा रहा हूँ मेरा सलाम लीजिये।"

शनिवार को नोटिस लेकर खुद लैंगले आया। वेट्स के सामने लॉस्डेल ने कहा कि अपनी मर्ज़ी से वह फौज में भरती हुआ है। उस पर किसी तरह का दबाव नहीं डाला गया है।

उस रोज भी शाम को लॉस्डेल दरिया के किनारे टहलने

गया। लेकिन लूसी नहीं दिखलाई दी। उसके हृदय में तरह तरह की दुःखद शङ्काएँ उठने लगीं। वह सोचता था कि क्या लूसी मकान में बन्द कर रक्खी गई है—बाहर आने जाने नहीं पाती ? क्या उसे मालूम है कि मैं फौज में भरती हो गया हूँ ? क्या मेरे यहाँ से जाने के पहले वह मुझसे मिलने की कोशिश नहीं करेगी ? लांस्डेल के सामने यह सब प्रश्न थे, परन्तु इनमें से किसी का उत्तर नहीं मिलता था। उसका यह सोच कर दिल बैठता जाता था कि चलने का समय निकट आता जा रहा है। वह कैसे बग़ैर लूसी से मिले जा सकेगा। यह मुनासिब नहीं मालूम होता था कि वह लूसी के बाप के मकान पर जाय। अगर वह अपमान सहन भी करे तो क्या लाभ होगा—लूसी तो घर के बाहर आने नहीं पायेगी। इस रविवार को लूसी गिरजे में भी नहीं आई थी। यह ख्याल आते ही उसके दिल को एक गहरी चोट लगी कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि वह बीमार हो गई हो। इस खयाल से उसे जो तकलीफ़ हुई, उससे वह तड़फड़ा गया।

दूसरे रविवार को भी वह शाम को नदी के पास गया। पर लूसी नहीं मिली ! गिरजे में भी वह नहीं आई थी। वह बराबर सोच रहा था कि क्या लूसी को देखने की उसकी अन्तिम इच्छा नहीं पूरी होगी। उसका इस गाँव में यही आखिरी दिन था। वह यह सोच ही रहा था कि नदी की दूसरी ओर झाड़ियों में एक आकार की धुँधली रेखायें देख पड़ी। उसका दिल धड़क उठा। आँखों में खुशी के आँसू भर आये और उसके मुँह से निकल

पड़ा, "प्यारी लूसी !" लूसी पुल पर से हो कर लाँस्डेल की ओर दौड़ती चली आ रही थी। नज़दीक आ कर वह उससे लिपट गई।

"फ्रेडरिक, पहले यह कहो कि क्या यह सही है कि तुमने...?" लूसी ने घबरा कर पूछा।

"हाँ, सही है" लाँस्डेल ने उत्तर दिया।

दोनों एक दूसरे के भावों को समझ गये। जवाब सुन कर लूसी के चेहरे का : ंग उड़ गया। उसने लाँस्डेल के कंधे पर सर रख दिया। मालूम होता था कि जैसे शब्दों ने उसका साथ छोड़ दिया हो।

"प्यारी लूसी।" लाँस्डेल ने कहा, सिवा इसके और क्या करता। कहीं से और कोई उम्मीद नहीं रह गई थी।"

"फ्रेडरिक," लूसी ने सशंक नेत्रों से चारों तरफ देखते हुये कहा, जब मेरा बाप मुझे घर पर नहीं पायेगा तब सीधा यहाँ आयेगा।"

"तो चलो, इस बाग में और आगे बढ़ चलें," लाँस्डेल ने कहा, "उस बड़े से दरख्त को याद करो, वहाँ......।"

"हाँ, हाँ, याद है। इसके नीचे तुमने पहली दफे कहा था कि तुम मुझसे प्रेम करते हो। वह हम लोगों का पवित्र स्थान है।" लूसी ने रोते हुए उत्तर दिया।

पेड़ के नीचे बैठने के लिये तिपाई पड़ी हुई थी। यहीं दोनों ने एक दूसरे से तमाम उम्र प्रेम करने की प्रतिज्ञा की थी।

"तुम्हें शायद मालूम न हो कि मेरा बाप मुझे घर से बाहर निकलने नहीं देता था" लूसी ने सिसकते हुये कहा, "जब वह कहीं बाहर जाते थे तो अपने कमरे में मुझे बन्द कर जाते थे। नहीं तो यह कैसे सम्भव था कि अभी तक मैं तुम से न मिलती।"

"तुमसे मिलने के लिये मैं रोज़ शाम को यहाँ आता था" दुखी होकर लाँस्डेल ने कहा, "गिरजे में तुम्हारी तलाश करता था। ईश्वर को धन्यवाद है कि आज तुमसे मुलाक़ात हो गई।"

"प्यारे फ्रेडरिक," लूसी ने कहा, "मेरी दासी ने आज मुझे यह खबर सुनाई कि तुम फ़ौज में भरती हो गये हो। नहीं तो मुझे कुछ पता भी न मिलता। बहुत दिनों की कोशिशों के बाद आज घर से निकल पाई। मैंने जो खबर सुनी है क्या वह ठीक है? क्या अब और कुछ नहीं हो सकता?"

"यह किस लिये पूछती हो प्यारी लूसी?" लाँस्डेल ने उत्तर दिया, "मेरे लिये दुनिया अन्धकारमय है। किसी तरह की कोई आशा नहीं रह गई है। सब तरफ़ मज़दूरी की खोज में घूम चुका हूँ और कहीं न मिली। मैं तुम्हीं से पूछता हूँ कि सिवाय इसके मैं और क्या कर सकता था।"

"क्या मेरे प्रेम पर तुमको विश्वास नहीं था?" लूसी ने प्रश्न किया।

"आह! पूर्ण शान्ति देने वाला विश्वास! यह क्या पूछती हो, प्यारी लूसी!" फ्रेडरिक के इस जवाब से उसे विश्वास हो गया कि जितना वह उसे चाहती है, उससे कम वह उसे नहीं चाहता।

"मैंने यहा सोचा था कि अभी हम और तुम जवान हैं। और थोड़े दिन ठहर सकते हैं—जब तक कि अच्छे दिन न आ जायँ।"

"हाँ फ्रेडरिक," लूसी ने अत्यन्त कातर स्वर में कहा, "किन्तु इस आशा से मुझे सन्तोष नहीं होता। वियोग में न मालूम कौनसी बात उठ खड़ी हो। तुम्हारा रेजीमेन्ट न मालूम कहाँ भेज दिया जाय और तुम्हें किन किन मुसीबतों और आफतों का सामना करना पड़े। यह सब सोच कर मेरा दिल बैठ जाता है!" यह कह कर लूसी फूट फूट कर रोने लगी।

"प्रिये, शान्त हो," लॉस्डेल ने उसके प्रवाहित नेत्रों का चुम्बन करके कहा, "वैसे ही क्या कम दुखी हूँ जो मुझे और दुखी बना रही हो। मैं तुमसे विदा होने के लिये आया हूँ। मुझ पर दया कर अपनी तबियत सँभालो।"

"सँभालूँगी, सँभालूँगी!" लूसी आँसू पोछते हुए बोली।

उस समय उसकी भीगी आँखों में करुणा और प्रेम का अलौकिक सम्मिश्रण था।

"लेकिन यह तो बताओ कि क्या अब और कोई तरकीब नहीं हो सकती।"

"फिर वही सवाल?" लॉस्डेल ने प्रश्न किया, अगर कोई तरकीब हो भी सकती है तो उसके बाद फिर वही भूखों मरना!"

"सुनो, फ्रेडरिक," लूसी ने आवाज सँभाल कर उत्तर दिया, "यह न समझना कि जो मैं कहने जा रही हूँ, वह मेरी लज्जा विहीनता है। जरूरत सब कुछ करा लेती है। इसलिये

कहूँगी जरूर। मैं तुम्हें अपना दिल दे चुकी हूँ और कह चुकी हूँ कि सिवा तुम्हारे मैं किसी और की नहीं हो सकती। मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। ईश्वर इसका साक्षी है। मैं तुम्हें उसी निगाह से देखती हूँ जिस निगाह से कोई पत्नी अपने पति को देखती है। मैं हमेशा के लिये तुम्हारी हो चुकी हूँ। अगर कोई तरकीब हो सकती है तो करो। मैं तुमसे शादी करने के लिये तैयार हूँ।"

लूसी के ये शब्द गम्भीरता पूर्ण थे। उसकी आवाज़ थर्रा रही थी और गला भर आया था।

लॉंस्डेल ने लूसी को गले से लगा कर कहा, "प्रिये, किन शब्दों में तुम्हें धन्यवाद दूँ। अगर कोई तरकीब निकल भी आए तो क्या तुम साक्षात दरिद्रता के साथ शादी करोगी—एक बेकार मज़दूर के लिये अपने अमीर घर के आरामों को छोड़ सकोगी? जितना मैं तुम्हें चाहता हूँ, वह ईश्वर जानता है; परन्तु इतना स्वार्थी मैं नहीं हो सकता कि तुम मेरे लिये इतना बड़ा त्याग करो।"

"यह न ख्याल करना," लूसी ने उत्तर दिया, "कि जो कुछ मैंने कहा है वह केवल एक बकवाद है। मैंने इस पर अच्छी तरह सोच लिया है। मेरा बाप मुझे ख़र्चा देने में बड़ी उदारता से काम लेता है। उनकी हमेशा यह इच्छा रहती है कि मैं अच्छे से अच्छे कपड़े पहनूँ, परन्तु मुझे बेकार के ख़र्चे अच्छे नहीं मालूम होते। मैंने कुछ रुपया बचा लिया है। मेरे पास दस बारह पौंड हैं। इन्हें ले लो और काम में लाओ। मेरी इस लज्जा विहीनता के लिये क्षमा करना।"

"ईश्वर, ऐसे अद्वितीय प्रेम के लिये लज्जा विहीनता का बहाना !" लॉस्डेल ने सन्तोष-पूर्ण आवाज़ से कहा ।

"फ्रेडरिक, सुनो," लूसी मुस्करा कर बोली । उसे अब आशा हो चली थी कि उसकी सोची हुई बातों को लॉस्डेल मान लेगा । उसने कहा, "मेरे पास जो रुपया है, उससे हम थोड़े दिन तो काम चला सकेंगे । यह भी ठीक है कि इस गाँव में तुम्हें काम नहीं मिलेगा । लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि कहीं भी नहीं मिलेगा । तुमने अच्छी शिक्षा प्राप्त की है । अगर किसी शहर में चले जाते तो वहाँ अच्छा रुपया कमाते । यह मुझसे छिपा नहीं है कि मेरे साथ देने की इच्छा से ही तुम यहाँ रहे और सब तरह की तकलीफें उठाईं । जिस तरह तुम मुझसे प्रेम करते हो, उसके ऊपर संसार का कोई ऐसा स्वार्थ नहीं है जो निछावर न किया जा सकता हो । फिर जो कुछ मैं कह रही हूँ, वह तो कोई त्याग भी नहीं है ।"

" लूसी, तुमने तो सुख की वह तसवीर आँखों के सामने खींच दी जो हम जैसों के स्वप्न से भी परे मालूम होती है । "

लूसी ने कहा, "मुझसे यह न कहो कि मैं उम्मीद छोड़ दूँ । अब भी तुम्हारे हाथ में तरकीब है । तुमने बग़ैर सोचे जो क़दम आगे बढ़ाया है, वह पीछे हटा सकते हो ।

"हाँ, अब भी कुछ न कुछ किया जा सकता है ।" लॉस्डेल ने उत्तर दिया ।

"तो फिर बताओ कि कैसे भरती करने वाले हवलदार के फन्दे से छूटा जा सकता है ?" लूसी उत्सुकता पूर्वक पूछने लगी।

"प्रिये, कल साढ़े नौ बजे मुझे सर आर्कीवाल्ड रेडवर्न के सामने हाज़िर होना होगा," लॉस्डेल ने उत्तर दिया, "वह मुझसे पूछेंगे कि क्या मैं फ़ौज में भरती होने के लिये राज़ी हूँ ? मैं इनकार कर सकता हूँ। तब वह मुझसे कहेंगे कि २४ घन्टे में, यानी परसों दस बजे तक, जो रुपया मुझे हवलदार ने दिया है, वह वापस कर दूँ और उसी के साथ उसका खर्चा भी। यह सब मिला कर करीब दो पाउण्ड के होगा। इसके दे देने पर मैं फिर आज़ाद हो जाऊँगा।"

"ईश्वर करें कि ऐसा ही हो," कह कर लूसी बहुत खुश हुई और लॉस्डेल के गले से लिपट गई। फिर बोली, "मैं देखती हूँ कि तुम मेरी राय को पसन्द करते हो। मैं जानती हूँ कि जब मैं अपने बाप के घर से भागूँगी तब मुझ पर यह आक्षेप होंगे कि मैंने उनकी आज्ञा नहीं मानी। लेकिन, प्यारे लॉस्डेल, यह न समझना कि तुम्हारे लिए भी मैं आज्ञा न मानने वाली ही साबित हूँगी।"

"ईश्वर न करें कि कभी ऐसा ख़याल मेरे दिल में आए," लॉस्डेल ने कहा, "तुम्हारी सच्ची मुहब्बत के सैकड़ों सबूत मिल चुके हैं। तुम्हें पाकर मैं अपने को धन्य समझूँगा।"

"मुझे माफ़ करना फ्रेडरिक, अगर मैं अब दूसरी बातें शुरू करूँ। तुम कहते थे कि परसों तक अगर तुम रुपया जमा कर दो तो तुम्हें छुटकारा मिल जायगा। मैं यह इन्तिज़ाम करूँगी कि

कल ही शाम तक रुपया तुम्हें मिल जाय। यह भी संभव है कि मैं तुमसे कल मिल सकूँ, लेकिन अगर न मिल पाई तो मेरी विश्वासपात्री दासी यह काम कर लेगी। अगर यह काम कल न हो पाया तो परसों आठ बजे तक जरूर ही तुम्हारे पास रुपया पहुँच जायेगा। तुम्हें तो दस बजे उसकी जरूरत होगी। कल हम लोग पुल के पास न मिलें। अगर मेरे बाप को किसी तरह से शक भी हुआ तो वह सीधा वहीं पहुँचेगा। कल हम लोग यहीं मिलेंगे। हाँ, क्या मेरी दासी एक बन्द लिफाफे में रुपया ले जा कर वेट्स की दूकान पर नहीं दे आ सकती है ?

"हाँ, उन्हें दे आये," लॉस्डेल ने जवाब दिया, "वह मेरा बड़ा ख्याल करते हैं। लूसी, मैं तुम्हारा कितना कृतज्ञ हूँ।"

लूसी ने प्रेम पूर्ण अनखनाहट से कहा, "किसके कृतज्ञ हो—मैं तो तुम्हारी ही हूँ।"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं," लॉस्डेल उसे गले से लगा कर बोला, "और मैं भी तो तुम्हारा ही हूँ।"

"दो दिनों में प्रिय फ्रेडरिक, तुम स्वतंत्र हो जाओगे," लूसी ने कहा, "और तब... ..."

"हाँ, देखो, तब मेरी इच्छा पूरी करने में देर न करना। यहाँ कहीं दूर चले चलेंगे। वहाँ किसी का डर न होगा और वहीं से शादी कर हमेशा के लिये एक दूसरे के हम साथी बन जायँगे।"

दोनों एक दूसरे के गले मिल कर बिदा हुए और अपने अपने रास्तों पर चल दिये।

८

बंधक द्रव्य

लॉस्डेल ने न तो नाई और न लैंगले ही से कहा कि उसका इरादा बदल गया है। सोमवार को नियत समय पर वह हवलदार के साथ मजिस्ट्रेट के पास जाने के लिये चौपाल गया। उसे देखकर लैंगले ने कहा, "ठीक वक्त पर आए। वायदे के मुताबिक ठीक दस बजे हमें उनके मकान पर पहुँच जाना चाहिये।"

थोड़ी देर में दोनों रवाना हुए। लॉस्डेल चुप था—वह नहीं चाहता था कि अपने आन्तरिक भावों को वह किसी से कहे। लैंगले फौजी जीवन की तारीफें करने में लगा था। रास्ते में लूसी के बाप का घर पड़ा। लॉस्डेल की ललचाई हुई आँखें खिड़की की तरफ उठ गईं कि उस चेहरे की एक झलक ही देखने को मिल जाय! इस उम्मीद में नाउम्मीदी नहीं हुई—कोठे पर की खिड़की के बाहर किसी ने रूमाल हिलाया, फिर पट बन्द हुआ और परदों के पीछे लूसी का धुँधला आकार दिखलाई दिया। इससे लॉस्डेल को जो प्रसन्नता हुई उसे प्रेमी ही अनुभव कर सकते हैं।

थोड़ी दूर चलने के बाद दोनों स्थानीय मजिस्ट्रेट सर आर्कीवाल्ड रेडवर्न के फाटक पर पहुँचे। सर आर्कीवाल्ड जब अपने कमरे में आये तब वे दोनों बुलाये गये। लैंगले ने फौजी सलाम

और लॉस्डेल ने झुक कर अभिवादन किया, पर सर आर्कीवाल्ड ने ध्यान तक नहीं दिया। उन्हें आन्तरिक प्रसन्नता थी कि बग़ैर लाठी टूटे साँप मर रहा है—लॉस्डेल लैंगले के पंजे में फँस गया था। कागजों को उलट-पलट कर उन्होंने कहा, "क्या कोई फौज में भरती होने के लिये आया है।"

"अच्छा," सर आर्कीवाल्ड ने लॉन्स्डेल की तरफ देख कर कहना शुरू किया, "हाँ, फौज के कानून की कुछ धारायें नियमानुसार पढ़ कर सुना दूँ।" सुनाने के बाद सर आर्कीवाल्ड ने कहा, "मुझे तुम्हारे नाम पूछने की जरूरत नहीं है। मैं तुम्हें अच्छी तरह से जानता हूँ। सिर्फ पूछना यह है कि क्या तुम अपनी खुशी से भरती हुए हो।"

"हाँ, अपनी खुशी से," लॉस्डेल ने उत्तर दिया, "लेकिन, अगर आपकी आज्ञा हो तो कहूँ.................।"

"बात मत काटो," मजिस्ट्रेट ने डाँट कर कहा, "जब तक तुम से सवालात न किये जायँ, चुप रहो। अब लड़ाई के क़ानून की कुछ धारायें तुम्हें सुनाई जायँगी। इसके बाद तुम्हें मेरे सामने राजभक्ति की कसम खानी होगी।"

"यदि आप कृपा करके वह सुन लें जो मुझे कहना है तो आपका बहुत समय नष्ट होने से बच जायगा।" लॉस्डेल ने कहा।

"मैं यह नहीं समझता था!" सर आर्कीवाल्ड ने चकित हो कर कहा कि "तुम्हारे क्रान्तिकारी सिद्धान्त यहाँ तक बढ़ गए हैं कि तुम राजभक्ति की क़सम खाने से भी इनकार करोगे।"

लैंगले कहने लगा, "लॉंस्डेल, आज तुम्हारी यह द्विविधा देख कर ताज्जुब हो रहा है।"

सर आर्कीवाल्ड की तरफ देख कर लॉंस्डेल ने पूछा कि क्या कानून की और कोई धारा बाकी नहीं है जिससे उसे सूचित किया जाना आवश्यक हो।

"हाँ, पैंतीसवीं धारा है," सर आर्कीवाल्ड ने कहा, "लेकिन उसमें कुछ नहीं है। उसमें सिर्फ यह बतलाया गया है कि किस तरह भरती करने की कारवाई करनी चाहिये।"

"खैर, कुछ भी हो," लॉंस्डेल ने दृढ़ता पूर्वक उत्तर दिया, "मैं उसे सुनना चाहता हूँ।"

"अच्छा, मैं उसका खुलासा बतलाये देता हूँ," सर आर्कीवाल्ड नाक-भौंह सिकोड़ कर बोले, "इसका मतलब यह है कि जो कोई बंधक द्रव्य लेने के बाद भरती होने से इनकार करे तो उसे वह द्रव्य वापस कर देना होगा और उसी के साथ बीस शिलिंग और देने होंगे जो खर्चे में पड़ते हैं। यह सब देने पर वह फिर स्वतंत्र हो सकता है।"

लॉंस्डेल ने प्रश्न किया कि यह सब रुपया देने के लिये क्या कोई समय नियत नहीं है?

"क्यों, क्या भरती नहीं हुआ चाहते हो?" लैंगले ने डाँट कर पूछा।

"अगर भरती नहीं हुआ चाहता है तो इसकी बदमाशी है।" सर आर्कीवाल्ड ने बिगड़ कर जवाब दिया, "बस, यह सब वाहियात बातें काफी हो चुकीं। मैं पढ़ रहा हूँ, सुनो।"

"मैं यह कहने के लिये क्षमा चाहता हूँ कि मैं अब भरती नहीं हो सकूँगा," लॉंस्डेल ने उत्तर दिया, "रुपया लौटा देने के लिये मुझे चौबीस घन्टे की मुहलत दी जाय।"

लैंगले ने लॉंस्डेल को डाँट फटकार बताई और हर तरह की धमकी दी। मगर लॉंस्डेल ने कहा, "अगर मेरी वजह से आपको कोई तकलीफ़ हुई हो तो माफ कीजिये, लेकिन अब भरती होने का मेरा इरादा क़तई नहीं है।"

"बस, बस," सर आर्कीबाल्ड ने कुरसी से उठते हुए कहा, "बाहर जाओ। अगर कल सुबह तक सब रुपया दो गवाहों के सामने तुमने वापस न कर दिया तो तुमको फिर मेरे सामने आना पड़ेगा और तब भी अगर तुमने राजभक्ति की कसम खाने से इन्कार किया तो मैं तुम्हें जेलखाने भेजवा दूँगा। जब तक होश ठीक न हो जायँगे वहीं सड़ना पड़ेगा।"

लॉंस्डेल ने इन बातों का कोई जवाब नहीं दिया। वह और लैंगले दोनों कमरे के बाहर निकल आये।

बाहर आते ही लैंगले ने सख़्त-सुख़्त कहना शुरू कर दिया। जब बरदाश्त न हुआ तब लॉंस्डेल बोला, "बस, अब ज़बान रोकिये। बहुत हो गया।"

लॉंस्डेल के दिल में यह बराबर आता था कि वह लैंगले की अच्छी खबर ले, लेकिन यह ख्याल करके हाथ रुक जाता था कि ऐसा करने से वह जेल भेज दिया जायगा और उसकी और लूसी की आशाओं पर पानी फिर जायगा।

रास्ते भर लँगले की जबान नहीं रुकी—बुरा भला बकता रहा। लॉस्डेल चुप था। वह जानता था कि जब तक रुपया न लौटा दिया जाय, तब तक वह स्वतन्त्र नहीं है। जब वह लूसी के बाप के मकान के पास पहुँचा तो आशा पूर्ण नेत्रों से उसने खिड़की की ओर देखा। इस बार भी उसकी आशा निराशा में परिणत नहीं हुई—लूसी के चेहरे की झलक दिखलाई दी। वह उसकी आशाओं और अभिलाषाओं का केन्द्र थी। इससे लॉस्डेल को पूर्ण सन्तोष हुआ।

लॉस्डेल के घर के समीप पहुँच कर लँगले ने उससे कहा, "सुनो, यह मेरा हुक्म है कि जब तक रुपया न अदा हो जाय, तब तक अपने को कैदी समझो—अपने कमरे के बाहर न निकलो। यहाँ तक कि मिस्टर बेट्स (नाई) की दूकान पर भी ऊपर से उतर कर नीचे न आना। खबरदार, मेरे कहने के खिलाफ न हो। मैं तुम पर निगाह रक्खूँगा।"

यह सुनते ही लॉस्डेल के होश उड़ गये। ख्याल आ गया कि आज शाम को जंगल में वह लूसी या उसकी दासी से नहीं मिल पावेगा जैसा कि दोनों ने वादा किया था। इससे उसे बड़ा दुख हुआ।

लँगले ने फिर गरज कर कहा, "अपने कमरे में जाओ और वहीं रहो। हर घन्टे बाद मैं तुम्हारा पता लेता रहूँगा। अगर कहीं कमरे के बाहर निकले तो अच्छा नहीं होगा।"

यह कह कर बड़ी शान से वह वहाँ से चला गया।

"लॉस्डेल, देखो वही करो जो हवलदार ने हुक्म दिया है,"

बेट्स ने सलाह दी। लॉंस्डेल अपने कमरे में चला गया और सोचने लगा कि नाई ने सलाह तो अच्छी दी है। इसमें उसी का फायदा है, पर यह सोच कर दिल बैठा जाता था कि शाम को लूसी या उसकी भेजी हुई दासी से नियत समय पर जंगल में नहीं मिल सकेगा। फिर यह सोच कर कि अगर मैं वहाँ कहीं न मिला तो दासी यहाँ आकर दूकान पर रुपया दे जायगी उसका मुरझाया हुआ चेहरा जरा खिल गया। इन दुखद और सुखद विचारों की प्रगति को बेट्स के आगमन ने रोक दिया। सहानुभूति प्रकट करते हुये वह कह रहा था, "लॉंस्डेल, आखिर यह मामला क्या है ?"

दुखी होकर लॉंस्डेल ने उत्तर दिया, "मैंने अपना इरादा अब बदल दिया है। भरती नहीं हुआ चाहता हूँ। इस पर लाल कोट पहने हुये उस बदमाश ने मुझे गंदी से गंदी गालियाँ दीं और अब इस कमरे में बन्द रहने का हुक्म दिया है"।

"क्या तुमने बंधक द्रव्य लौटा दिया है ?" बेट्स ने उत्सुकता से पूछा।

"नहीं, अभी नहीं," लॉंस्डेल ने जवाब दिया, "मेरे मित्र अगर चाहो तो तुम एक काम आ सकते हो।"

"हाँ, कहो," बेट्स जल्दी से बोल उठा, "वह कौनसा काम है ? मैं करने को तैयार हूँ।"

कृतज्ञता पूर्ण नेत्रों से लॉंस्डेल ने उसकी तरफ देखते हुए कहा, "आज रात को या कल सवेरे मेरे नाम एक खत या

छोटा पार्सल तुम्हें कोई दे जायगा। उसे तुम ले लेना और फौरन मुझे दे जाना। मैं उसके इंतज़ार में रहूँगा।"

"अच्छा, मैं समझा," बेट्स ने जवाब दिया, "उसमें बंधक द्रव्य लौटा देने के लिये रुपया होगा। मुझे बड़ी खुशी है कि तुम्हें कोई ऐसा आदमी मिल गया है जो तुम्हारी मदद किया चाहता है। विश्वास करो, जैसे ही खत या पार्सल आयेगा मैं खुद तुम्हारे पास फौरन लेकर आऊँगा। आज मैं दूकान छोड़ कर कहीं नहीं जाऊँगा।"

लॉस्डेल ने कहा, "मित्र, मैं सच कहता हूँ कि मैं तुम्हारा अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।"

"अभी समय है," बेट्स ने पूर्ण मित्रता और सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा, "अगर इंतिजाम बिलकुल पक्का न हो तो मैं रुपया कहीं से उधार ला दूँ।"

"हजारों धन्यवाद, इंतिज़ाम ठीक है," लॉस्डेल ने विश्वास दिलाया।

"यदि प्रबन्ध पक्का है तो कोई ज़रूरत नहीं। अब शान्ति पूर्वक रहो। देखो, अब कोई ऐसी बात न कर बैठना कि फिर लैंगले के क़ब्जे में फँस जाओ।"

यह कह कर बेट्स नीचे चला गया और बजाय अपनी दूकान पर ठहरने के सीधा लैंगले से मिलने चला गया। थोड़ी देर उससे कनफुस्कियाँ करने के बाद कुछ जेब गर्म हो गई और फिर वह अपनी दूकान पर वापस चला आया।

लॉन्सडेल का समय काटे नहीं कटता था। दो चार किताबें जो उसके पास थीं, कभी उन्हें उठा कर पढ़ने लगता मगर उनमें भी तबियत नहीं लगती थी। कभी लेटता और कभी बैठता था। थोड़ी थोड़ी देर में बेट्स आकर कह जाता था कि लैंगले यह देखने आया था कि तुम अपने कमरे के बाहर तो नहीं निकले हो। जैसे तैसे दिन बीता और सूर्य्यास्त हो गया। लॉन्सडेल ने कमरे की बत्ती जलाई और फिर पढ़ने की कोशिश करने लगा। गिरजे की घड़ी ने दस बजाये और उसी समय बेट्स ने आकर कहा कि अभी तक पार्सल नहीं आया है। इस खबर से दुःख तो उसे बहुत हुआ, लेकिन लूसी पर पूरा भरोसा होने की वजह से उसने कहा, "अगर पार्सल आज रात को नहीं आया तो कल ज़रूर आएगा।"

"यह सुन कर मुझे बड़ी खुशी हुई," बेट्स ने उत्तर दिया, "कल दस बजे तक तुम आज़ाद हो जाओगे। अब आराम से सोओ।"

लॉन्सडेल ने धन्यवाद दिया और अपने फटे पुराने बिस्तर पर पड़ गया। वह लूसी का स्वप्न देखने लगा। उसकी तसवीर आँखों के सामने खिंची हुई थी। दिल में भी वह बोल रही थी।

जब वह सबेरे सो कर उठा तो उसका चित्त प्रसन्न था। अपने भावी सुखों की उसे पूर्ण आशा थी। एक तो इसलिए कि आज वह स्वतन्त्र हो जाएगा और दूसरे इसलिए कि बहुत जल्द लूसी उसकी हो जायगी और मेह-

नत मजदूरी करके जो रूखी सूखी रोटी कमायेगा उसे किस सन्तोष और आनन्द से वह उसके साथ खायेगा। यह भी आशा थी कि शायद लूसी का बाप उसे शादी हो जाने के बाद माफ कर दे। आज वह अत्यन्त सुखी था। उसने जल्दी से खाना खाया और फिर वही सुख स्वप्न देखने लगा। घड़ी ने आठ बजाये। उसने परवाह न की और सिर्फ यही सोचता रहा कि लूसी की दासी रुपया लिये आती ही होगी।

विचार चाहे किसी के सुखद हों या दुखद और चाहे जिस परिस्थिति में कोई हो, परन्तु समय ने कब और किसके लिये अपनी गति को मन्द या तीव्र किया है? घड़ी ने अब ९ बजाये। लूसी की दासी अभी तक नहीं पहुँची थी। इतने में किसी के पैरों की आवाज जीने पर सुनाई दी। कुछ आशा बँधी। लॉंस्डेल ने पहचान लिया कि यह बेट्स के पैरों की आवाज है। जैसे ही वह कमरे में पहुँचा, लॉंस्डेल ने पार्सल की उम्मीद में हाथ बढ़ाया। बेट्स का हाथ खाली था। लॉंस्डेल ने चकित होकर पछा, "क्या अभी तक पार्सल नहीं आया?"

"नहीं, अभी नहीं आया," बेट्स ने दुख प्रकट करते हुये उत्तर दिया, "अगर आता तो क्या मैं फौरन तुम्हारे पास न ले आता। उसी की इन्तजार में एक मिनट के लिये भी मैं दूकान पर से नहीं हटा कि वह कहीं किसी दूसरे के हाथ में न पड़ जाय।"

"तो आप नीचे दूकान पर ही रहिए," लॉंस्डेल ने विनीत

भाव से कहा, " और वहाँ से हटियेगा नहीं। मित्र, जानते ही हो कि इस पार्सल पर मेरे भाग्य का फैसला निर्भर करता है।"

"मैं अभी दूकान पर जाता हूँ," बेट्स ने उत्तर दिया, "और खुद इसी के इन्तिजार में रहूँगा, लेकिन तुम कमरे के अंदर ही रहना। बदमाश लैंगले ने कुछ नये भरती किये हुए आदमियों को दरवाजे पर खड़ा कर दिया है कि तुम कहीं बाहर न जाने पाओ।"

" उहँ, अब उसका क्या डर!" लॉंस्डेल ने विश्वास और आशापूर्ण स्वर में उत्तर दिया, " थोड़ी देर बाद तो मैं स्वतंत्र हो ही जाऊँगा। अच्छा, अब आप दूकान पर चले जायँ।"

बातूनी बेट्स के चले जाने पर लॉंस्डेल उत्तेजित होकर अपने कमरे में टहलने लगा। समय बीतता जाता था, परन्तु आशा नहीं घट रही थी। वह यही सोचता था कि दो चार मिनट में ही पार्सल उसके हाथ में आ जायेगा। अगर कमरे के सामने खिड़की होती तो वह देख पाता कि सड़क पर लूसी की दासी आ रही है कि नहीं; परन्तु जिधर खिड़की थी उधर से सिर्फ खेत दिखलाई देते थे। घड़ी की सुइयाँ चलती रहीं और साढ़े नौ बज गये। पर न लूसी की दासी आई, न पार्सल और न कोई खबर। कहीं लूसी के पिता ने तो दासी को आने से नहीं रोक दिया है? या कोई और धोखा उसके साथ किया गया है? हजारों तरह के ख्याल उसे पागल बनाये दे रहे थे।

कमरे के दरवाजे पर आकर वह मूर्तिवत् खड़ा हो गया।

उस समय न उससे आशा छोड़ते बनती थी और न कुछ आशा सी आशा रह ही गई थी। इतने में उसे कुछ ख्याल आया। मेज के पास आ कर उसने तीन खत पड़ोस वालों को लिखे कि दो पाउन्ड तीन चार घंटे के लिये उधार दे दें। खतों को लिख कर वह बेट्स को पुकारने लगा। वह नीचे से कोठे पर आया। लॉस्डेल ने उससे प्रार्थना की कि वह कृपा कर दौड़ता हुआ जाय और जिन आदमियों के नाम खत हैं, उन्हें दे आए।

"मैं अभी जाता हूँ," बेट्स ने कहा, "लेकिन तुम दरवाजा न खोलना। लैंगले नीचे खड़ा है।"

"जल्दी जाओ, मित्र, जल्दी जाओ," लॉस्डेल ने वेदनापूर्ण स्वर में विनय की।"

समय तेजी से बीतता जा रहा था, पर खतों का कोई जवाब नहीं था। वह दरवाजे के सहारे खड़ा सोच रहा था कि कैसे क्या होगा? क्या मेरा बलिदान होना बदा ही है? क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ या यह एक भयानक सत्य है? हाथों से अपना सर पकड़ कर वह बैठ गया। घड़ी ने दस बजाए। लॉस्डेल निराश हो हाथ मलने लगा।

इतने में नीचे से लैंगले ने गरज कर कहा, "फ्रेडरिक लॉस्डेल, नीचे आओ।"

६

प्रस्थान

लॉस्डेल चुपचाप नीचे आया। लैंगले दूकान पर मौजूद था। उसके चेहरे पर पूर्ण निर्दयता झलक रही थी।

"भाई, मुझे बड़ा दुख है," बेट्स ने लॉस्डेल के कान में कहा, "कल रात ही मैंने तुमसे कहा था कि अगर पक्का इन्तजाम न हुआ हो तो तुम्हारे लिये कहीं से कर्ज ले आऊँ।"

"हाँ भाई, किन शब्दों में मैं तुम्हारी तारीफ करूँ!" यह कह कर लॉस्डेल ने कृतज्ञता पूर्वक हाथ मिलाया।

"बस, चलो, काफी बेवकूफी हो चुकी है," लैंगले ने डाँट कर कहा, "मेरे पास खराब करने के लिये वक्त नहीं है।"

गुस्सा तो बहुत आया लेकिन उसे दबा कर लॉस्डेल बेकसी की निगाह से अपने चारों ओर देखता हुआ उसके साथ चल दिया। जब रास्ते में लूसी के बाप के मकान के पास पहुँचा तो उस तरफ़ देखने का उसे साहस नहीं हुआ।

वह आगे बढ़ ही रहा था कि इतने में मकान का दरवाज़ा खुला और लूसी दौड़ती हुई पास आकर कहने लगी, "फ्रेडरिक, यह क्या? क्या लैंगले ने अब भी तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ा है?"

"प्यारी लूसी," लॉंस्डेल ने कहा, "तुमने रुपया भेजा ही नहीं।"

"हे ईश्वर!" लूसी के मुँह से एक आह निकल पड़ी, "ऐसा धोखा! इतना बड़ा विश्वासघात! कल शाम को तुम मिलने की जगह नहीं आये।"

"कैसे आता?" लॉंस्डेल ने जवाब दिया, "मैं अपने कमरे में गिरफ़ार था।"

"लेकिन मेरी दासी अपने हाथ से तुम्हारे रहने की जगह पार्सल दे आई थी।"

"आह, बेट्स!" केवल यही लॉंस्डेल कह पाया।

"हाँ, उसी के हाथ में मेरी दासी ने पार्सल दिया था," सिस-कते हुए लूसी ने उत्तर दिया, "मैं अपनी दासी पर पूरा विश्वास करती हूँ। यह तय है कि उसने मुझे धोखा नहीं दिया है।"

"ईश्वर इस अन्याय का उसे अवश्य दंड देगा," लॉंस्डेल ने धीमे स्वर में लूसी को गोद में सँभालते हुए कहा।

"ख़त्म करो यह नाटक" लैंगले ने पीछे से पुकार कर कहा, "मैं और इंतिज़ार नहीं कर सकता। यह मेरी कृपा थी कि मैंने अभी तक कुछ नहीं कहा।"

पर दर असल बात यह थी कि लूसी के अनुपम सौंदर्य्य पर लैंगले इतना मुग्ध हो गया था कि अभी तक उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकल सका था।

मुसीबत पर मुसीबत। लूसी का पिता, डेविस, दौड़ता हुआ

मकान के बाहर आया और गरज कर कहने लगा, "दुष्ट !" और लॉस्डेल की तरफ़ विकराल नेत्रों से देखते हुए अपनी लड़की को मकान की तरफ़ खींचता हुआ ले गया।

लॉस्डेल के जी में तो यही आया कि वह भी साथ जाय और अन्तिम बार अपनी प्रियतमा से मिल आवे। लेकिन यही सोच-कर रह गया कि कहीं उसकी वजह से लूसी के साथ उसका पिता और भी कठोर व्यवहार न करे। आखिर हाथ मल कर वह रह गया और चुपचाप लैंगले के साथ हो लिया।

सर आर्कीवाल्ड रेडवर्न अपने कमरे में बैठे हुए थे। लॉस्डेल को देखते ही सर आर्कीवाल्ड ने दो चार आवाजें कसीं। उसने कुछ उतर नहीं दिया। उसे फिर आवश्यक कानून की दो धाराएँ सुना दी गईं और बायबिल उठा कर राजभक्ति की क़सम खाने को कहा गया। वह इस समय कुछ ऐसी दशा में था कि कठपुतली की तरह सब काम करता जाता था। जब यह सब कार्रवाई हो गई तब सर आर्कीवाल्ड ने कहा, "ईश्वर को धन्यवाद है कि ऐसे दुष्ट से गाँव को छुटकारा मिला।"

जब लॉस्डेल कमरे के बाहर जा रहा था तब रास्ते में मिस रेडवर्न (सर आर्कीवाल्ड की बहिन) मिलीं। बोलीं तो कुछ नहीं, पर ऐसी निगाह से देखा कि लॉस्डेल ठिठक गया। इस निगाह में न तो गुस्सा था, न चिढ़ थी और न इसमें दया ही थी। उसकी निगाह में क्या भाव था, यह उसकी समझ में नहीं आया। यह निगाह उसे प्रायः रह रह कर याद आती रही।

बाहर आते ही लँगले की जबान फिर खुली और बकने झकने लगा, बुरा भला कहा, धमकियाँ दीं, यहाँ तक कि जो मुँह में आया सो कह डाला। वह बड़बड़ाता जाता था और लाँस्डेल चुप था। अब दोनों लूसी के बाप के मकान के पास से फिर निकले। लाँस्डेल सोच रहा था कि क्या उसे किसी तरह लूसी के दर्शन या अन्तिम विदा के समय का सहानुभूति प्रकाशक कोई चिन्ह दिखलाई देगा। इस दफे भी उसे नाउम्मीदी नहीं हुई—मकान के नीचे दरजे की एक खिड़की का शीशा हटा और एक अत्यन्त कोमल हाथ ने बाहर इस तरह से रूमाल हिलाया जिससे उसके हृदय की वेदना प्रकट होती थी। जवाब में लाँस्डेल ने भी रूमाल हिलाया, परन्तु यह सोच कर अत्यन्त दुखी हो गया कि कहीं लूसी को उसके पिता ने मकान में बन्द न कर रक्खा हो। आखें अश्रुपूर्ण हो गईं और वह लँगले के पीछे-पीछे चलता गया।

गुस्से में जली कटी सुना लेने से कुछ शान्ति मिल जाती है। लाँस्डेल की भी यही इच्छा थी कि वेट्स की दूकान पर लौटते ही वह उसको आड़े हाथों ले, लेकिन जैसे ही वह गाँव में पहुँचा और दूकान की तरफ चला कि लँगले ने पीछे से डाँटा और चौपाल की तरफ चलने का हुक्म दिया। लाँस्डेल जो बात चाहता था वह दिल की दिल ही में रह गई—इससे वह और दुखी हो रहा था। वहाँ पहुँचने पर उसे हुक्म मिला कि फौज का फीता अपनी टोपी में लगावे और एक कमरा बतला दिया गया।

कि उसमें बैठे और कहीं बाहर न जाय। वहाँ पहुँचते ही उसने अपने हाथों पर सर रख लिया और ऐसे विचारों में डूब गया कि जिसका वर्णन करना भाषा की शक्ति के बहुत बाहर है।

थोड़ी देर में कमरे का दरवाज़ा खुला। लैंगले एक पार्सल खोलता हुआ कमरे में आया और बोला, "यह लो। यह तुम्हारी चीज़ें बेट्स ने भेजी हैं। और फिर हँसी उड़ाने के ढंग से कहा, "यह पार्सल तुमको कल देने को कहा गया था, मगर दिया न जा सका।"

यह कह कर उसने पार्सल लॉस्डेल के सामने फेंक दिया। रुपये के लालच से नहीं, क्योंकि वह उसके लिये अब कंकड़ पत्थर के बराबर थे, वरन् लूसी के खत के लिये उसने लपक कर पार्सल उठाया और लिफाफा खोला। कुछ रुपये जमीन पर गिर पड़े और वह खत पढ़ने लगा। पत्र इस प्रकार था :—

सोमवार, सन्ध्या

परम प्रिय फ्रेडरिक,

तुम्हें यह जान कर खुशी होगी कि तुम्हारे हमारे मिलने का पता मेरे बाप को नहीं लगा। लेकिन फिर भी आज उसी जगह मिलने की उम्मीद नहीं है। मैं बड़ी कड़ी देख भाल में हूँ। मैं अपनी दासी को भेज रही हूँ। वह तुमसे वहीं मिलेगी। आधा घंटा इन्तज़ार करने के बाद अगर तुम वहाँ नहीं आये तो वह अपने हाथ से यह खत मिस्टर बेट्स को दे आयेगी। हर एक इंतजाम अच्छी तरह से सोच लिया गया है जिसमें कोई गड़बड़ न हो।

तुम फौरन रुपया दे देना और आज़ाद हो जाना। प्यारे फ्रेडरिक, मेरे पूर्ण रूप से सुखी होने में कितनी कम देर है। कल सुबह नौ बजे मैं अपने दिल में कहूँगी कि तुम आजाद हो और अब मेरे हो। मैं कह नहीं सकती हूँ कि इन विचारों से मेरे हृदय को कितनी प्रसन्नता होगी। इस झगड़े से छुट्टी पा कर रोज़ मिलने वाली जगह पर आया करना। जिस रोज़ मुझे मौक़ा मिलेगा, तुम्हारे पास आ जाऊँगी। यह वह मिलन होगा जिसमें फिर वियोग का सवाल नहीं होगा। मेरे फ्रेडरिक, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे। यह लिखने की शायद जरूरत नहीं है कि अगर किसी स्त्री का सच्चा प्रेम किसी पुरुष को सुखी बना सकता है तो मेरे उस प्रेम पर तुम्हें पूर्ण अधिकार है।

तुम्हारी

लूसी

इस खत के पढ़ने के बाद लॉन्स्डेल की आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई। बार बार यही ख्याल आता था कि लूसी कितनी दुखी होगी। कोई आ कर मेज़ पर खाना रख गया लेकिन लॉन्स्डेल ने उसकी तरफ देखा भी नहीं और वह योंही रक्खा रहा। फिर किसी ने आ कर कहा कि थोड़ी ही देर में चलने के लिये तैयार हो जाओ। इस कहने से वह जग सा पड़ा और सोचने लगा कि किसी तरह अपने हृदय की वेदना लिख कर वह लूसी से प्रकट कर दे। भोजन लाने वाले से कागज़ कलम मँगवा कर उसने एक खत लिखा। लूसी ने जो रुपये भेजे थे उनमें से एक उसे

देकर कहा कि यह खत किसी तरह से मिस डेविस (लूसी) के पास पहुँचा देना।

इसके बाद एक बंद गाड़ी चौपाल के दरवाजे पर आई और उसी में लॉस्डेल और वह सब लोग जो भरती हुए थे बिठलाये गये। गाड़ी रवाना हो गयी। खिड़की की झिलमिलिओं से लॉस्डेल देख रहा था। वही गाँव, जहाँ पैदा हुआ था, परवरिश पाई थी, जहाँ की गलियों में वह खेला था, जहाँ मेहनत मजदूरी करके उसने रोटियाँ कमाई थीं और जहाँ की हर एक चीज़ से उसका घना प्रेम हो गया था, अब निगाह से ओझल हो रहा था।

कावेन्ट्री में सफर खत्म हुआ। यह स्थान उसके गाँव ओकले से तीस मील पर था। दूसरे दिन वहाँ परीक्षा हुई और डाक्टरों की रिपोर्ट पर भर्ती होने की कारवाई पक्की कर दी गई। तीसरे दिन उसकी पल्टन पोर्टस्मिथ भेज दी गई।

१०

अन्यायी पिता

लॉंस्डेल को अपना गाँव छोड़े एक महीना हो गया था। लूसी के लिये यह आशा अत्यन्त संन्तोष देने वाली थी कि वह केवल सात साल के लिये भरती हुए हैं और समय बीतते ही वह आ जायँगे। तब दोनों अखण्ड सुख से रहेंगे। प्रेमियों का हृदय कौन कौन से सुख स्वप्न नहीं देखता है। ठीक है, संसार आशा पर अवलम्बित है। लॉंस्डेल का अन्तिम पत्र लूसी को मिल गया था। उससे उसे जो सन्तोष हुआ होगा, उसका आनन्द केवल वही हृदय ले सकता है जो किसी से पूर्ण रूप से प्रेम करता हो। यह नहीं कि लूसी को इस बात की ज़रूरत थी कि लॉंस्डेल उससे यह कहता कि "यह दाग़ भी न होगा तेरे सिवा किसी का" लेकिन यह कुछ मानुषी प्रकृति है कि हमेशा यह ख्वाहिश बनी रहती है कि जिससे हम प्रेम करते हैं, उससे हम कहें कि हम उससे प्रेम करते हैं और यह सुनें कि वह हमसे प्रेम करता है। वास्तव में लूसी को कितना आनन्द और सन्तोष हुआ होगा, जब पत्र से मालूम हुआ होगा, कि लॉंस्डेल उसका है और सदैव उसी का रहेगा। संसार का कौन ऐसा दुख है जिसकी सख्ती समय मुलायम नहीं कर सकता है।

अब वह बाहर घूमने जाने लगी थी; अब वह पिता की कड़ी देख रेख में नहीं थीं और जहाँ वह दरिया के नजदीक लॉस्डेल से मिलती थी, वहाँ भी कभी चली जाती थी। लेकिन वहाँ जाते ही पुरानी बातें याद आ जाती थीं और वह फूट फूट कर रोने लगती थी। ऐसे ही अवसरों पर अपना दिल अपना कहना नहीं करता है – जितना समझाओ उतना ही वह मचलता है।

लॉस्डेल के चले जाने के पाँच दस रोज बाद तक लूसी के पिता का वही खिंचाव रहा। उसके बाद धीरे धीरे फिर प्राकृतिक प्रेम ने रुखाई की जगह लेना शुरू कर दिया। इसी के साथ वह बहलाई और फुसलाई भी जाने लगी। उसके पिता के इरादे कुछ और थे। लूसी यह सब समझती थी और इसी वजह से उसका अपने पिता से दिल नहीं खुलता था।

एक रोज सुबह लूसी का पिता डेविस खेतों में घूम रहा था। जिराल्ड रेडबर्न कहीं उधर से आ निकला, ऐसे मौके का डेविस को बहुत दिनों से इन्तजार था। सलाम करके उसने कहा, "खबर है कि थोड़े दिनों में आप फौज में भरती होंगे।" इसका और इसी तरह के और कई प्रश्नों का हाँ, हूँ में रेडबर्न ने जवाब दिया। फिर डेविस ने कहा, "आप के बालिग़ होने का भी तो दिन आ गया है—"इक्कीसवाँ साल अब आप पूरा करने जा रहे हैं।"

"पिता उत्सव मनाया चाहते थे—रियाया और मजदूरों की दावत किया चाहते थे, लेकिन मैंने रोक दिया है।"

"ठीक है," डेविस ने हाँ में हाँ मिलाई।

" माँ की भी यही राय थी। मुझसे यह नहीं होता कि मैं किसी मैले कुचैले कपड़े पहने देहाती लड़की के साथ नाचता। उत्सव की प्रथा ही ऐसी है।"

दो एक और मामूली बातें करने के बाद डेविस ने अपना जाल बिछाया और कहा, "जिस तरह की शराब आप को पसन्द है, वह इस समय मेरे यहाँ मौजूद है। बड़ी कृपा होती यदि घर पधार कर थोड़ी पीते।"

जिराल्ड इनकार ही करने वाला था कि इतने में उसे याद हो आई कि डेविस की एक खूबसूरत लड़की है। उसने अपनी राय बदल दी और उसके साथ हो लिया। जिस कमरे में डेविस ले गया उसमें लूसी बैठी कुछ सिलाई कर रही थी। उसे देखते ही वह उठ खड़ी हुई और कमरे के बाहर जाने लगी। जिराल्ड ने फौरन कहा, " मेरे आने से शायद आप के काम में बाधा पड़ी है।"

"नहीं, नहीं लूसी, जाओ नहीं," पिता ने कहा, " यह अपने मालिक के लड़के हैं। इनका स्वागत करो।"

लूसी का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। वह समझ गई कि जिराल्ड के वहाँ ले आने का उसके पिता का क्या मतलब है।

"अगर आप चली गईं तो सच मैं यही समझूँगा कि मेरे आने से आप के काम में बाधा पड़ी है," जिराल्ड ने कहा, "और मैं भी फिर चला जाऊँगा।"

लूसी अब क्या करती ! फिर बैठ गई । डेविस शराब लाने के बहाने कमरे के बाहर चला गया ।

दोनों तरफ भिन्न भिन्न विचार थे—जिराल्ड लूसी के सौंदर्य्य का प्रशंसक था और लूसी जिराल्ड के तरीकों की निन्दक । जब से वह कालेज से घर आया था, तब से जहाँ तक हो सकता था, वह उससे रास्ते में भी मिलना पसन्द नहीं करती थी और हर ऐसे मौके को बचा जाती थी ।

"तुम्हारा वक्त कैसे कटता है ?" जिराल्ड ने पूछा, "तुम बाहर भी कम आती जाती हो । बहुत दिनों के बाद आज यहाँ आया हूँ—यह तब की बात है जब हम तुम दोनों बहुत छोटी उमर के थे । फौज में भरती होने से पहले जितने दिन भी यहाँ हूँ, मैं खैरियत पूछने के लिये आ जाया करूँगा ।"

लूसी को उसकी कब परवाह थी ! खैरियत पूछने आने वाले यह महाशय चाहे चूल्हे में जाँय या भाड़ में, लेकिन फ़ौज में भरती होने वाले शब्दों को सुन कर उसे अपने लॉस्डेल की याद आगई, चेहरे का रंग उड़ गया और बहुत मुश्किल से मुँह से निकलती आह को वह रोक सकी ।

फिर जिराल्ड ने कहा, "बचपन में हम तुम्हें लूसी कहते थे, और तुम हमें जिराल्ड ।"

"लेकिन अब तो हमने उन दिनों को बहुत पीछे छोड़ दिया है ।" लूसी ने उत्तर दिया ।

जिराल्ड ज्यों ज्यों मीठी मीठी बातें करता था त्यों त्यों लूसी

चिढ़ती जाती थी और उसका हर एक जवाब खिंचा-तना ही होता था। जिराल्ड को भी गुस्सा आता था, लेकिन इस वक्त उसकी निगाह स्वार्थ साधन पर थी। उसने फिर कहा, "मुझे ताज्जुब होता है कि आप आज की ऐसी सुहावनी संध्या में भी बाहर नहीं निकलीं। मेरे साथ चलिये। हम लोग खेतों में टहलें। बड़ी सुहावनी संध्या है।"

"नहीं, मुझे कहीं नहीं जाना है!" लूसी ने नाराज़ होकर कहा और बाहर जाने के लिये दरवाजे की तरफ़ बढ़ी।

"आप तो बुरा मान गईं?" जिराल्ड ने यह कह कर उसका हाथ पकड़ लिया, "मेरी आप को नाराज करने की मंशा नहीं थी।"

"छोड़िये मेरा हाथ!" लूसी क्रोधित होकर बोली और इस कड़ी निगाह से जिराल्ड की तरफ देखा कि वह अवाक् हो गया। उसने हाथ छोड़ दिया। वह दरवाजे से बाहर चली गई। बाहर उसका पिता मिला। वापस आने में उसने जान बूझ कर देर कर दी थी। पूछा कि क्या बात है। लूसी ने कहा, "अगर फिर कभी आप इनको घर ले आये तो मैं अपने कमरे को बन्द करके बैठी रहा करूँगी।"

"तो तुम यहाँ तक बढ़ गई हो!" डेविस ने बहुत गुस्से में आ कर कहा।

इसका कुछ जवाब न देकर लूसी अपने कमरे में चली गई। वहाँ वह बहुत देर तक सिसक सिसक कर रोती रही।

डेविस कमरे में फिर आया और मेज पर बोतल और गिलास रख कर पूछने लगा, " क्या लूसी चली गई ? "

" बात यह है, " जिराल्ड ने उत्तर दिया, " मुझे याद नहीं कि मैंने क्या कहा जिससे वह नाखुश हो गई। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि उसे नाखुश करने की मेरी मंशा हरगिज़ नहीं थी। "

"इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। " चापलूस डेविस ने कहा।

" मैंने केवल उसके सौंदर्य्य की प्रशंसा की थी, " जिराल्ड ने जवाब दिया, " और यह कहा था कि अगर वह चाहे तो मैं उसको हवा खिलाने के लिये ले चल सकता हूँ। बड़ी सुहावनी संध्या है। "

" आप ने इस कृपा से उसे सम्मानित किया है। " डेविस कहने लगा, " आप तो उसे बचपन से जानते हैं। "

" इधर कई सालों से मैं मकान पर कम रहा। आज उसे बहुत दिनों के बाद देखा ;" जिराल्ड ने कहा, "मुझे यह जान कर बड़ी खुशी हुई कि वह इतनी सुन्दर और सुशील होगई है। "

"मैं उसके इस अभिमान के लिये क्षमा की प्रार्थना करता हूँ। मैंने उसे बड़े आदमियों की तरह पाला पोसा है और अच्छी शिक्षा दी है। आप खुद देखें कि उसमें और गांव की मामूली लड़कियों में कितना बड़ा अन्तर है। "

"बेशक, आप ठीक कहते हैं, " जिराल्ड ने कहा।

" आप को शराब कैसी पसन्द आई ? " डेविस ने पूछा।

"अच्छी तो बहुत है," जिराल्ड ने जवाब दिया, "लेकिन ज़रा तेज़ होने की वजह से सर पकड़ती है।"

"आप के स्वागत से मुझे यहाँ आने जाने का साहस हो गया है। निस्संदेह, लूसी की अच्छी तालीम हुई है। उसकी शादी आप किसी अच्छे घराने में ही करें, और उसका ध्यान भी इधर आकर्षित करते रहा करें।"

दोनों इसी विषय पर बहुत देर तक बातें करते रहे—डेविस फँसाने की कोशिश कर रहा था और जिराल्ड फँसने पर राजी था। अन्त में जिराल्ड ने पूछा, "क्या यह सही है, मैंने सुना है कि जब वह बदमाश लॉरडेल मेरे बाप की अदालत में जा रहा था तब लूसी मकान से बाहर निकल कर उसके गले से लिपट गई थी।"

"सरासर झूठ!" डेविस ने फौरन बात बनाई, "ऐसों को तो लूसी देख भी नहीं सकती। यह तो उसकी नौकरानी का क़िस्सा है। ईश्वर को धन्यवाद है कि ऐसे निकम्मे आदमी से गाँव को छुटकारा मिल गया। बड़ा पक्का शराबी था।"

"छोटे आदमियों में यह अवगुण होता ही है।" जिराल्ड ने डेविस का अनुमोदन करते हुए कहा, "हाँ, अच्छा हुआ जो गाँव को उससे छुटकारा मिला।"

शराब का तीसरा दौर ख़त्म करते ही जिराल्ड की आँखों में लूसी नाचने लगी और अब सिवा लूसी के और कोई ख्याल उसके दिमाग़ में नहीं था। थोड़ी देर चुप रह कर उसने फिर

कहा, "मेरे साथ आपने ऐसा बरताव किया है कि मेरा जी चाहता है कि कभी कभी यहाँ आया करूँ। अच्छा, कल आ कर मिस लूसो से बातें करूँगा।"

"आप की बड़ी कृपा होगी यदि आप इसी तरह हम लोगों को सम्मानित किया करेंगे।" डेविस ने धन्यवाद देते हुए उत्तर दिया, "लेकिन आप के बूढ़े माता पिता को आप का यहाँ आना शायद पसन्द न हो।"

"उँह, उनकी कौन परवाह करता है!" जिराल्ड ने जवाब दिया, "यह मैं फिर कहूँगा कि उसकी शादी का किसी अच्छी जगह इन्तज़ाम होना चाहिये। आप की लड़की बहुत खूबसूरत है।"

डेविस ने फिर कृतज्ञता प्रकट की और जिराल्ड विदा हुआ। उसके चले जाने पर डेविस मारे खुशी के उछल पड़ा और सोचने लगा बाज़ी अब अपने हाथ है। मछली अच्छी तरह फँस गई है—वाह रे डेविस!

पूर्ण संतोष के साथ वह फिर अपने काम पर चला गया। जब शाम को खाने के वक्त लौटा तो लूसी आज और दिनों से ज्यादा चिंतित थी। उतरा हुआ चेहरा आज और भी मुरझाया हुआ था। डेविस खूब समझता था कि वजह क्या थी, लेकिन उसका ख्याल था कि डाँट-डपट से वह लूसी को अपनी इच्छा के अनुकूल बना लेगा। उसने कहा, "तुम्हें याद होगा कि एक दफे मैंने तुमसे क्या कहा था।"

"पिता जी, मुझे उम्मीद है कि आप फिर वही बातें नहीं छेड़ेंगे जिनसे कि मुझे दुःख होता है।" यह कह कर वह रोने लगी।

"अब यह वाहियात बातें खत्म करो!" डेविस ने डाँट कर कहा, "अगर तुम्हारी माँ जिन्दा होती तो वह भी यही पसन्द करती जो मैं कह रहा हूँ। जिस तरह से तुमने जिराल्ड रेडवर्न के साथ बर्ताव किया है, उससे मुझे ऐसा बुरा मालूम हुआ है कि मैं पागल सा हो रहा हूँ।"

लूसी चौंक सी पड़ी और कहा, "पिता, क्या आपके लिये यही उचित है कि मुझसे इस तरह की बातें करें। जिराल्ड ने मुझे अपमानित किया है और बजाय इसके कि आप उनसे नाखुश हों आप मुझे ही डाँट फटकार बतला रहे हैं।

"सुनो लूसी," डेविस गुस्से में लाल होकर बोला, "मैंने अपना इरादा पक्का कर लिया है। अगर मेरा कहना तुमने नहीं माना तो इस घर को अपना घर न समझना। मैं तुम्हें इस घर से निकाल दूँगा और फिर इस घर का तुम मुँह न देखने पाओगी।"

यह कह कर डेविस कमरे के बाहर चला गया और लूसी अपनी कुर्सी पर मूर्छित सी होकर गिर गई।

११

गुदाम

जिस पलटन में लॉन्स्डेल भरती हुआ था, उसके कप्तान का नाम कर्टनी था। यह एक खूबसूरत और बहुत अभिमानी मनुष्य था। उससे दर्जे में जो नीचे थे उनसे वह बहुत सख्ती का बर्ताव करता था और उनको बहुत नीची निगाह से देखता था। अन्य फौजी अफसर पुराने सिपाहियों से कुछ कह न पाते थे। वह लोग नये भरती हुए सिपाहियों पर अपना गुस्सा उतारते थे—सख्ती ज़ीने-ज़ीने नीचे उतरती आती थी। कप्तान की शादी नहीं हुई थी और वह अत्यन्त दुश्चरित्र था। साथ ही जुवारी होने की वजह से उसके पास पैसे की हमेशा कमी रहती थी। जब हाथ खाली होता था तो वह किसी तरह रुपया हाथ में लाने की तरकीबें सोचा करता था। ऐसी हालत में स्वभावतः चिड़चिड़ाहट पैदा हो जाती है। रिश्तेदार कभी कभी मदद कर देते थे, परन्तु मदद की भी तो एक हद होती है। कहाँ तक कोई मदद करता।

इस पलटन में दो लेफ्टीनेन्ट भी थे। एक का नाम हार्थकाट था। इसकी उमर पचास साल के करीब थी। इसको कोई आशा नहीं थी कि उसकी तरक्की होगी। जो तनख्वाह मिलती थी, उसी का सहारा था। सीधा सादा आदमी था कभी कर्ज नहीं लेता था।

बेवकूफ नहीं था, जितना तुम समझते थे !" फिर हँसते हुए कहा, "बेट्स और मैंने कितनी होशियारी से काम किया। वे खत मैंने देखे थे जो तुमने कई दूकानदारों को लिखे थे और जिनमें थोड़ी देर के लिये रुपया कर्ज देने की प्रार्थना की गई थी। बेट्स इतना बेवकूफ नहीं था कि उसे भेज देता। उसकी मदद से कई रंगरूट मुझे वहाँ मिले थे। हाँ, यह तो बताओ कि उसका क्या हुआ जिस पर तुम इतने मोहित थे, और जो तुम से रास्ते में गले मिल रही थी। मेरा ख्याल है कि उसने कोई दूसरा चाहने वाला खोज लिया होगा।"

गुस्से के मारे लॉन्स्डेल खड़ा न रह सका और बिना कुछ उत्तर दिये वहां से चला गया। लैंगले को तो चिढ़ाना और सताना मंजूर ही था। उसने डाँटा और जली कटी सुना कर कहा, "कैसे बदतमीज़ और बेहूदा हो कि तुम्हारा अफ़सर तुमसे बातें कर रहा है और तुम चल दिये।"

लॉन्स्डेल ने उसकी तरफ अमित तिरस्कर की दृष्टि से देखा और चुप रहा। लैंगले ने और भी बुरा भला कहा। लॉन्स्डेल को जो दुख हुआ होगा उसका केवल अनुमान किया जा सकता है—उसे शब्द नहीं प्रकट कर सकते। उस वक्त वह न मालूम क्या कर डालता यदि लूसी की तस्वीर उसकी आखों के सामने न आ गई होती !

१२

मुख़्तार की चालबाज़ी

दस-पंद्रह रोज़ बाद एक रोज़ जिराल्ड फिर मुख़्तार के मकान की तरफ शाम को जा रहा था। उसकी चाल तेज़ नहीं थी। वह अपने विचारों की उलझन में उलझा हुआ था। वह अपने दिल में कह रहा था, "मुझे थोड़े दिनों से न मालूम क्या हो गया है। यह बात तो कुछ निश्चित सी मालूम पड़ती है कि मैं लूसी से प्रेम करता हूँ, कम से कम यह तो ज़रूर है कि इसकी तरफ से वह अशुद्ध भावनायें मेरी नहीं हैं जो और स्त्रियों की तरफ़ थीं। मैं चाहता हूँ कि वह बिल्कुल मेरी हो जाय। ज्यों ज्यों मैं उसे देखता हूँ, त्यों त्यों मुझे उसकी ख़ूब-सूरती का पता चलता है—मैंने इतनी ख़ूबसूरत औरत पहले और कभी नहीं देखी थी। लेकिन वह इतनी चुप है और इतना कम बोलती है कि कुछ कहा नहीं जाता है। डेविस का तो यह कहना है कि यह सब बातें उसकी शर्म की वजह से हैं।" यही सोचते सोचते जिराल्ड डेविस के मकान के दरवाज़े पर पहुँच गया, लेकिन वह अन्दर जाते कुछ ठिठक गया। फिर दिल में कहने लगा, "इस लड़की से मेरी शादी हो ही नहीं सकती है। मेरे पिता और माता यह मंजूर नहीं करेंगे कि मैं उनके

मुख़्तार की लड़की से शादी करूँ। मैं यही सोचता हूँ कि मुझे एक शरीफ आदमी की तरह हट जाना चाहिये। इस रास्ते पर और आगे बढ़ना अपने को दुखी करना है।" यह सोच कर वह ठहर गया और हिम्मत करके लौट पड़ा। थोड़ी दूर जाने के बाद उसके कदम नहीं उठे और उसने ठहर कर लूसी के मकान की ओर ललचाई आखों से देखा। वह फिर सोचने लगा, "चल कर मिल क्यों न लूँ। इच्छा बड़ी प्रबल होती है और उससे युद्ध करना कोई सहज काम नहीं है। लेकिन अगर मैं इससे शादी किया चाहूँ तो कौन मुझे रोकने वाला है। यह तो पिता जी कर ही नहीं सकते कि मुझे अपनी जायदाद न दें। थोड़े ही दिनों में मैं इक्कीस साल का हो जाऊँगा—फिर क्या डर! अच्छे कपड़े पहनने पर कौन कह सकेगा कि यह लूसी एक मामूली मुख़्तार की लड़की है। फौज में सभी लोग इसकी खूबसूरती की तारीफ करेंगे और मेरे भाग्य पर रश्क करेंगे। चलूँ, आज और मिल आऊँ।"

बरामदे में पहुँचने पर लूसी की दासी मार्था ने कमरे का दरवाजा खोला और इन्हें देख कर वह चिढ़ सी गई। डेविस कमरे में बैठा शराब पी रहा था। थोड़ी दूर हट कर लूसी बैठी हुई कुछ बिनाई का काम कर रही थी। कमरे में पहुँच कर डेविस से जिराल्ड ने बड़ी बेतकल्लुफ़ी से हाथ मिलाया जैसे उसका यहाँ आना सभी को पसन्द है। लूसी से हाथ मिलाना तो दूर रहा, उसकी तरफ हाथ बढ़ाने तक की भी उसकी हिम्मत न पड़ी। जिराल्ड ने कई दफे यह प्रकट किया था कि अगर उसे पसन्द हो

तो वह हाथ मिलाने के लिये बढ़ावे, लेकिन लूसी ने कोई आशा नहीं दिलाई। अतः आज भी दूर ही से सलाम की रस्म अदा हो गई। जिराल्ड ने डेविस से कहा, "लाओ, मैं भी आप का साथ दूँ।"

"मैं लज्जित हूँ," डेविस ने कहा, "किस मुँह से आप से यह शराब पीने के लिये कहूँ। आप के योग्य यह बिल्कुल नहीं है। यह आप की कृपा है कि आप मुझे सम्मानित किया चाहते हैं।"

"नहीं, नहीं, यह कोई बात नहीं है," जिराल्ड ने उत्तर दिया, "एक तरह की शराब पीते पीते तबियत घबरा गई है।"

डेविस ने लूसी से कहा, "अलमारी से एक साफ गिलास तो उठा दो।"

जिराल्ड खुद उठ पड़ा और बोला, "मिस डेविस को नाहक क्यों तकलीफ़ दी जाए!"

फिर वह लूसी के पास बैठ गया। यह सोच कर लूसी के मुँह से एक आह निकल पड़ी कि उसकी इच्छायें और भावनायें क्या होतीं, यदि उसके पास इस समय लॉन्स्डेल बैठा होता।

डेविस ने पूछा, "कुछ पता चला कि आप को कब कमीशन मिलेगा?"

"कम से कम एक महीने से पहले गजट नहीं होगा," जिराल्ड ने उत्तर दिया, "और मैं यहाँ से अभी जल्दी जाना भी नहीं चाहता हूँ।"

यह कह कर उसने लूसी की तरफ देखा, लेकिन वह ऐसी बैठी रही कि जैसे उसने सुना तक न हो।

जिराल्ड ने विषय बदल दिया और दूसरी बात छेड़ी। पूछा, "क्या आज कल नाई बेट्स तकलीफ में है?"

"हाँ," डेविस ने जवाब दिया, "उस पर कर्ज बहुत हो गया है और उसे अदा करने का कोई रास्ता नहीं है। लोग इस बात से और चिढ़े हुए हैं कि वह जो कुछ दिन भर में पैदा कर पाता है, उसकी रात को शराब पी डालता है।"

"यह भी तो कहा जाता है कि लोग इस वजह से नाखुश हैं कि उसने धोखा देकर गाँव के कई जवान आदमियों को फौज में भर्ती करवा दिया।" जिराल्ड ने सवाल किया।

"हाँ, लोग कहते यह भी हैं," डेविस ने उत्तर दिया।

जिराल्ड ने फिर कहना शुरू किया, "और चाहे जो हो, उसने यह काम तो बहुत अच्छा किया कि बदमाश लॉस्डेल से इस गाँव का पीछा छुड़ा दिया।"

यह सुनते ही लूसी चौंक सी पड़ी और उस का चेहरा लाल हो गया। इसे छिपाने के लिये वह फौरन कमरे के बाहर चली गई। उसका पिता ताड़ गया कि क्या बात हुई। उसके चले जाने पर जिराल्ड ने पूछा, "आप तो कहते थे कि लॉस्डेल और लूसी के बीच में कोई बात नहीं है।"

"ठीक ही मैंने कहा था," चलते हुए डेविस ने उत्तर दिया, "मार्था अपने प्रेमी के बिछुड़ने की वजह से बहुत दुखी है। उसकी

सहानुभूति में लूसी भी शायद यह समझने लगी है कि लाँस्डेल अच्छा आदमी है। इतने कड़े शब्दों में उसकी बुराई करना शायद लूसी को अच्छा नहीं लगा।"

"मेरा भी यही ख्याल है," जिराल्ड ने कहा, "अब ऐसी ग़लती नहीं होने पायेगी। हाँ, यह तो बतलाइये कि लूसी का यह सङ्कोच आख़िर कब तक चलेगा ? वह कभी मेरा ज़िक्र भी करती है ?"

डेविस को और अच्छी तरह से अपना जाल बिछाने का मौका मिल गया। और वह कहने लगा, "आपके आने से वह अपने को सम्मानित ही नहीं समझती, वरन जब कभी आपका ज़िक्र आता है तो वह आपको बड़े ही घनिष्ट और सद्भावना पूर्ण शब्दों में सम्बोधित करती है।"

यह सुन कर जिराल्ड की प्रसन्नता की सीमा नहीं रही। नब्ज़ को और अच्छी तरह पहचानने के लिए डेविस ने कहा कि वह जल्दी ही छुट्टी लेकर लूसी को कहीं बाहर ले जायगा। जलवायु के परिवर्तन से लूसी को बहुत लाभ होने की आशा है और वहीं शायद लूसी के लिये योग्य वर भी मिल जाय।

जिराल्ड ने उत्तर दिया कि ऐसी क्या जल्दी है; पंद्रह बीस रोज ठहर जाओ। लेकिन डेविस यही दिखला रहा था कि लूसी की शादी करने में देर हो रही है। अन्त में जिराल्ड ने पूछा कि क्या लूसी अब यहाँ नहीं आयेगी ?

डेविस ने तुरन्त उत्तर दिया, "अगर आपकी इच्छा है तो

जरूर आयेगी" कह कर लूसी को बुलाने के लिये डेविस कमरे के बाहर चला गया।

लूसी ने अपने कमरे में जाकर अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया था। दरवाज़ा खटखटाने पर लूसी ने पूछा, "कौन है?"

डेविस ने कहा, "लूसी, दरवाजा खोल दो और नीचे कमरे में आओ।"

उसने कहा, "मेरी तबियत अच्छी नहीं है।"

एक तरफ़ से इसरार था और दूसरी तरफ़ से इन्कार। आखीर डेविस झुँझला उठा। जी में आया कि लूसी की इसी वक्त अच्छी खबर ले, मगर जिराल्ड के नीचे बैठे रहने का खयाल कर रुक गया। नीचे आकर उसने जिराल्ड से खेद प्रकट करते हुए कहा कि लूसी की तबियत खराब हो गई है। जिराल्ड थोड़ी देर और बैठा फिर यह कह कर चला गया कि कल शाम को कुशल पूछने फिर आएगा।

वह अपने घर पहुँचा। कमरे में उसके माता पिता और फूफी जेन बैठी हुई थीं। उसकी माँ ने कहा, "आजकल रोज रात को देर में लौटते हो।"

ज्यों ज्यों जिराल्ड से प्रश्न होते जाते थे त्यों त्यों वह बिगड़ता था और यही कहता जाता था कि अब वह लड़का नहीं है जो इस तरह दबा कर रक्खा जाय! पिता ने कहा, "कहीं ऐसा तो नहीं है कि जनाब को शराब की दूकान का चस्का पड़ गया है!

जेन की सच्ची और स्वभावतः कड़ुई बातों से जिराल्ड और चिढ़ गया। उसकी माता ने सँभालते हुए कहा, "फूफी की बातों का बुरा न मानना।"

जेन ने दूसरी शह दी, "बातें चाहे सख़्त हों, पर निशाना ठीक लगता है।"

दस पंद्रह रोज गुज़र गये और जिराल्ड पहले की तरह रोज शाम को डेविस के मकान पर जाता रहा। लूसी, जहाँ तक हो सकता था, उससे मिलना बचाती थी। डेविस अब खुद परेशान होने लगा कि अभी तक कुछ तय नहीं हुआ। एक रोज उसने अपनी लड़की को उठ जाने का इशारा किया। जिराल्ड वहीं बैठा था। इधर उधर की कुछ बातें करने के बाद डेविस ने कहा कि बहुत जल्दी छुट्टी लेकर वह लूसी को कहीं बाहर ले जायगा। इस पर जिराल्ड ने फिर वही सलाह दी कि उसे इतनी जल्दी नहीं करनी चाहिये।

इस वक्त उसके मन में संकल्प विकल्प की लहरें उठ रही थीं। अन्त में उसने कह ही डाला कि बात यह है कि वह स्वयं लूसी से शादी करना चाहता है।

डेविस को मुँह माँगी मुराद मिली लेकिन प्रसन्नता को वह दबा गया बोला, "इस सम्मान के लिये धन्यवाद, पर शायद आपके पिता स्वीकृति नहीं देंगे।"

जिराल्ड ने कहा, "उनकी मंजूरी की कोई ज़रूरत नहीं है।

दो सप्ताह बाद मैं इक्कीस साल का हो जाऊँगा। मैं यह जानना चाहता हूँ कि लूसी मुझे स्वीकार करेगी ?"

बिलकुल झूठ बोलते हुए डेविस ने कहा, "मैं इसका ख्याल तक नहीं कर सकता था कि मुझे कभी यह सम्मान प्राप्त होगा कि मेरी लड़की आपके साथ ब्याही जाय, परन्तु मैं फिर भी यही कहूँगा कि मुझे भय है इसे आपके माता पिता कभी स्वीकार नहीं करेंगे।"

"मैं कह चुका हूँ कि मुझे उनके स्वीकार या अस्वीकार करने की परवाह नहीं है।" जिराल्ड ने नाखुश होकर जवाब दिया, "मेरे फौज में जाने के लिये पिता ने कुछ रुपया बैंक में रख दिया है। उससे थोड़े दिनों तक काम चल सकता है। तब तक कुछ और प्रबंध भी हो ही जायगा। अच्छा, यह कैसा होगा कि लूसी के साथ अगर मैं कहीं और चला जाऊँ।"

डेविस कब चूकने वाला था। उसने कहा, "अगर आप लूसी से प्रेम करते हैं तो विधि पूर्वक शादी होनी चाहिये।"

"अच्छा, जैसा आप पसन्द करें" जिराल्ड ने उत्तर दिया, "परन्तु आज मैं अपने सवाल का जवाब चाहता हूँ।"

डेविस ने पूछा, "अगर मैं आपका प्रस्ताव मान लूँ तो आप क्या करने का विचार करते हैं।"

"बस तभी तक ठहरना चाहता हूँ जब तक कि बैंक में मेरे नाम से रुपया जमा न हो जाय।" जिराल्ड ने उत्तर दिया।

बहुत कहने सुनने पर डेविस ने जिराल्ड की शादी लूसी

से होना स्वीकार कर लिया। जिराल्ड ने बहुत धन्यवाद दिया और कहा कि वह कल फिर आएगा। आशा है कि लूसी उससे प्रसन्न चित्त मिलेगी। पर डेविस जानता था कि लूसी को तैयार करना कितना मुश्किल काम है। उसने कहा, "अगर आप मेरी सलाह मानें तो लूसी से इस बात के कहने की कोई जरूरत नहीं है। आप उसे सिर्फ एक खत लिख दें। उसे मेरे खत के साथ बन्द कर दीजियेगा। उसके खत में आप जो चाहें लिखें। परन्तु मुझे मेरे खत में सिर्फ यह लिख दीजियेगा कि कहाँ और किस दिन आप हम लोगों को चाहते हैं। आप शादी का लाइसेंस ले रखियेगा। फिर चुपके से शादी हो जायगी।"

जिराल्ड के चले जाने के बाद लूसी अपने बाप के कमरे में आई। बाप की शक्ल देखते ही वह समझ गई कि दाल में कुछ काला है। जिराल्ड रोज शाम को आता था और उसी विषय पर बातें हुआ करती थीं। एक रोज़ बड़ी खुशी में उसने कहा, लूसी भी वहीं बैठी हुई थी, कि उसे अमुक पलटन में जगह मिल गई है। उसी पलटन में लॉस्डेल भी था। लूसी के चेहरे का रंग उड़ गया। वह सोचने लगी कि कहीं वह जिराल्ड द्वारा और न सताया जाय। लूसी अपने भावों को अप्रकट रखने के लिये कमरे से चली गई। डेविस इसे ताड़ गया। तुरंत ही उसने कहा, आपने देखा कि लूसी का आपसे कितना प्रेम है। जैसे ही आप ने कहा कि आप यहाँ से फौज में भर्ती होने के लिये चले जाइयेगा तो वह कितनी दुखी हो गई।"

यह सुनकर जिराल्ड अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने बताया कि कल वह लंदन अपना सामान खरीदने के लिये जायगा। वहीं से वह डेविस को खत लिखेगा। जिराल्ड ने जाने के पहिले यह इच्छा प्रकट की कि वह लूसी से मिलना चाहता है, लेकिन डेविस ने कहा, "अच्छा यही होगा कि अभी न मिलिए; क्योंकि उसके हृदय में इस समय एक आनन्द की लहर उठ रही होगी और आँखें छलकी पड़ती होंगी।"

जिराल्ड ने कहा, "अच्छा, जैसी आप की राय हो।"

यह कह कर वह चला गया।

१३

ओकले का डाकखाना

जिराल्ड के माता, पिता और फूफी एक कमरे में बैठे बात चीत कर रहे थे। आज ही जिराल्ड का नाम गज़ट में निकला था। उसी को लेकर बात चीत हो रही थी। सर आर्कीवाल्ड रेडवर्न गुरूर में चूर थे। शायद ही दुनियाँ में कोई ऐसा पिता हो जिसको अपने पुत्र के लिये मिथ्याभिमान न हो। इतने में नौकर ने आकर यह निवेदन किया कि बेट्स (नाई) आया है। सलाम करने के लिये अन्दर आने की प्रार्थना करता है। सर आर्कीवाल्ड के मिलने का यह समय नहीं था और वह इनकार ही करने वाले थे, परन्तु फिर कुछ सोच कर उन्होंने कहा, "इस ने निकम्मे लॉस्डेल को फौज में भरती करा कर गाँव के लोगों के साथ बड़ा उपकार किया है। अच्छा बुला लो मिल लेंगे।"

जेन ने कहा, "अगर यह फालतू मज़दूरों को मरवा डालता तो शायद इसे तुम पेंशन दे देते।"

नौकर थोड़ी देर में बेट्स को लेकर आया। बेट्स ने बहुत झुक कर सलाम किया। जरूरत सब को झुका देती है।

सर आर्कीवाल्ड ने पूछा, "क्या बात है?"

बेट्स ने नम्रता पूर्वक कहा, "अभी एक नौकर से मालूम

हुआ है कि सरकार कल लंदन जाने वाले हैं। इसलिये मैंने इस समय सेवा में उपस्थित होने का साहस किया है।"

"कहो तो क्या बात है ?" सर आर्कीवाल्ड ने पूछा।

वेट्स ने कहना शुरू किया, "सरकार गांव के डाकखाने में जो स्त्री काम करती थी वह कल मर गई।"

"तो यह कहो कि तुम उस जगह को चाहते हो।" सर आर्कीवाल्ड ने कहा।

वेट्स ने फिर झुक कर सलाम किया और उनकी तारीफों के पुल बांध दिये। आर्कीवाल्ड भी अपनी प्रशंसा सुन कर खिले जाते थे। बेट्स ने कहा कि गाँव में लोगों ने यह उड़ा दिया है कि मैंने बहुत से लोगों को फौज में भर्ती करा दिया है। इस से सब मेरे खिलाफ हो गये हैं।

"असन्तुष्ट और अकृतज्ञ कुत्ते!" सर अर्कीवाल्ड ने नाखुश हो कर उसके विरोधियों के लिए कहा।

वेट्स समझ गया कि किधर की हवा चल रही है। उसने कहना शुरू किया, "सरकार, गाँव भर के लोगों ने मिल कर मेरे खिलाफ एक प्रस्ताव पास किया है। उन लोगों का विश्वास अब मुझ पर नहीं है। सरकार, उस प्रस्ताव में लोगों को मेरे तथा मेरी दूकान का वायकाट करने को उकसाया गया है। लोग मुझसे अब दाढ़ी बनवाने और बाल कटवाने का काम नहीं लेंगे।"

इसके बाद वेट्स ने वह प्रस्ताव पढ़ कर सुनाया और फिर

बोला, "सरकार, अगर बादशाह के खिलाफ यह बगावत नहीं है तो और क्या है।"

सर आर्कीवाल्ड बोले, " खैर, चाहे जो हो, मगर यह तय है कि लोगों ने तुम्हारे खिलाफ एक पार्टी बना ली है। मैं तुम्हारी तरफ हूँ। बतलाओ, तुम्हारे लिये क्या करूँ।"

वेट्स ने खूब झुक कर सलाम करते हुए यह निवेदन किया कि वह एक दरख्वास्त पोस्ट मास्टर जेनरल के नाम लिख लाया है। उसमें यह प्रार्थना की गई है कि डाकखाने का काम अब उसे करने को दिया जाय।

सर अर्कीवाल्ड ने कहा, "दरख्वास्त को मेरे पास छोड़ दो। मैं उस पर अपनी शिफारिश लिख कर कल भेजवा दूँगा। तुमको यह जगह जरूर मिल जायगी।"

इसके बाद सर अर्कीवाल्ड उठ खड़े हुए और वेट्स सलाम करके चला आया।

दूसरे रोज सर आर्कीवाल्ड और जिराल्ड लंदन गये। वहाँ सर आर्कीवाल्ड ने वेट्स की दरख्वास्त पर सिफारिश लिख कर भेजवा दी। इसका जवाब जल्दी ही आ गया। वेट्स को ओकले का पोस्ट मास्टर बना दिया गया। सब ठीक हो जाने पर जिराल्ड अपने पिता से पोर्टस्मिथ के लिये रुखसत हुआ। वहाँ उसकी पलटन थी। उसे बिदा करके सर आर्कीवाल्ड घर वापस आये। थोड़ी ही दूर जाकर जिराल्ड ने गाड़ी हाँकने वाले को हुक्म दिया कि वह उसे लंदन वापस ले चले। एक जरूरी

काम करने को रह गया है। लंदन पहुँचने पर वह एक दूसरे होटल में ठहरा। जिस पलटन में भरती होने जा रहा था, उसके अफसर से पंद्रह दिन की छुट्टी माँगी कि उसकी माँ बीमार है। फिर अपने नौकर जैकब जोंस को पोर्टस्मिथ खत लिखा कि वह पंद्रह रोज़ नहीं आएगा। साथ ही यह भी मना कर दिया कि अगर वह अपने किसी मिलने वाले को ओकले खत लिखे तो यह न लिखे कि वह वहाँ अभी तक नहीं पहुँचा है। फिर एक खत उसने लन्दन के बैंक के नाम भेजा कि पंद्रह सौ रुपया जल्दी उसके पास भेज दिया जाय।

इन सब खतों को लिखने के बाद उसने एक खत लूसी को लिखा। यह तप्त हृदय के उद्गारों से भरपूर था। अन्त में यह भी लिखा कि तुम्हारी और मेरी शादी तय हो चुकी है। इसका पूरा हाल तुमको अपने पिता से मालूम हो गया होगा।

दूसरा खत उसने डेविस को लिखा कि सब इन्तिजाम ठीक हो गया है और २५ तारीख को शादी करने के लिये खास लायसेंस मिल जायगा। अगर आप २६ तारीख को वहाँ से रवाना हो जाँय तो दोपहर तक आप कावेन्ट्री पहुँच जायँगे। जार्ज होटल में आप ठहरिये और उसके थोड़ी ही देर बाद लूसी से मेरी शादी हो जायगी। जवाब मिस्टर स्मिथ, हैचेट होटल के पते से भेजियेगा। मुझे मिल जायगा। इसी खत में लूसी का भी खत बन्द है।

जब से बेट्स पोस्ट मास्टर हो गया था, तब से उसका वही

हाल था कि "प्यादा से फर्जी भयो टेढ़ो टेढ़ो जाय।" वह अक्सर अपने दिल में कहा करता कि गाँव को दिखला दूँगा कि मैं इतनी आसानी से हार मानने वाला नहीं हूँ। अब किसी का भेद मुझसे छिपा नहीं रहेगा। इतने में डाक का थैला आया, उसे लेकर वह दूकान के अन्दर चला गया। दूकान ही में डाकखाने का काम होता था। सबके खत उलट पुलट कर उसने अच्छी तरह से देखे। डेविस का खत उसने खूब ग़ौर से देखा और सोचा कि यह बहुत भारी है। उसे कुछ शक हुआ। उसे खोल कर पढ़ा और अपने दिल में कहने लगा, "कौन कह सकता था कि यह खत इतना रहस्य पूर्ण होगा। चालाक बुड्ढे, तेरी यह चालें!"

खत को फिर अच्छी तरह से बन्द कर दिया और डाक बाँटने वाले को और खतों के साथ इसे भी दे दिया।

१४

ख़त

पलटन में लॉंस्डेल को बहुत तकलीफ रही। एक तो वह दुखी था ही, दूसरे लैंगले और उसके साथी अफसर उसके साथ अत्यन्त कठोर बर्ताव करते थे। फूँक फूँक कर वह कदम रखता था। वह जानता था कि एक मामूली सी ग़लती भी इन लोगों के लिए सख़्ती करने का बहाना बन जायगी। अपना गाँव छोड़े उसे अब तीन महीने हो गये थे। इस बीच में लूसी के कई खत इसके पास आए थे। इनमें दृढ़ और विश्वास पूर्ण प्रेम का वर्णन था। उसके अलौकिक स्नेह से इसे बड़ा धैर्य होता था। खत पर पता मार्था द्वारा लिखा हुआ होता था जिससे डाकखाने वालों को शक न हो। हर खत में लूसी यही लिखती थी कि वह उसे खत न लिखे। उसे इसका विश्वास नहीं है कि खत उसके पास सही-सलामत पहुँच सकेगा। मार्था के नाम यदि खत आवेगा तो मेरे बाप को तुरंत संदेह हो जायगा।

लूसी ने किसी खत में यह नहीं लिखा कि जिराल्ड रोज़ शाम को आता है। वह समझती थी कि इस खबर को पा कर लॉंस्डेल और दुखी होगा। एक दूसरी वजह यह भी थी कि उसे अपने ऊपर विश्वास था कि उसका बाप चाहे जैसा जाल

बिछावे या धमकी दे, वह अपने रास्ते से नहीं हटेगी। और भी एक बात थी। लूसी यह समझती थी कि अगर लॉस्डेल को मालूम हो गया कि वह अपने पिता द्वारा कितनी सताई जा रही है तो लॉस्डेल को असह्य दुख होगा। लॉस्डेल को कुछ भी पता नहीं था कि लूसी का पिता क्या षड़यन्त्र रच रहा है।

जैसे ही समाचार पत्रों द्वारा यह विदित हुआ कि जिराल्ड रेडवर्न भी उसी पल्टन में आ रहा है तो लॉस्डेल बहुत उदास हो गया। रह-रह कर उसे यही ख्याल आता था कि एक ऐसे अफसर की संख्या और बढ़ी जो उसको सताने में क़सर नहीं उठा रक्खेगा। उसी दिन लूसी का भी एक खत मिला था। उसमें उसने प्रेम पूर्वक यह प्रार्थना की थी कि वह कोई ऐसी बात न करे, जिससे जिराल्ड को उसके साथ बुरा बर्ताव करने का मौक़ा मिले। लॉस्डेल इस उपदेश के लिये कृतज्ञ हुआ और उसने इरादा कर लिया कि वह ऐसे मौके नहीं आने देने की पूरी कोशिश करेगा।

एक रोज़ जिराल्ड के नौकर जैकबजोंस से लॉस्डेल की भेंट हो गई। उससे मालूम हुआ कि पहले उसके मालिक का फौरन भर्ती होकर यहाँ आ जाने का इरादा था, लेकिन अब वह पंद्रह दिन के बाद आएगा। नौकर मालिक का विश्वास पात्र था, इस वजह से उसने और कुछ नहीं कहा। जो कुछ उसने कहा, उसके कहने से वह यह नहीं समझ पाया कि वह कोई भेद बता रहा है।

उपरोक्त खबर के दो तीन दिन बाद लैंगले नये रंगरूटों की बैरक में आया। उस समय लॉस्डेल अकेला उस बैरक में था। लैंगले के आने का अभिप्राय यह था कि कोई नुक्स निकाल कर दो चार भली बुरी उसे सुना दे। कमरा साफ था और जो सामान था वह ठीक तौर से रक्खा हुआ था—जबान खोलने का मौक़ा नहीं मिला। जब कुछ नहीं मिला तो उसने पूछा, "अकेले यहाँ क्या करते हो और नये भरती होने वालों में से सब से ज्यादा तुम्हीं असन्तुष्ट क्यों दिखलाई देते हो ?"

"मैं आशा करता हूँ," लॉस्डेल ने उत्तर दिया, "कि मेरा दुखी होना कोई अपराध नहीं है।"

लैंगले ने कहा, "मुझे लटके हुए चेहरे देखने से कुछ चिढ़ है। सिपाही को प्रसन्नचित्त रहना चाहिये। अच्छा, यह तो बतलाओ कि क्या ओकले से कभी कोई खत आता है।" यह कहते ही उसके ओंठों पर ईर्षापूर्ण मुस्कराहट छा गई। कहने लगा, "तुम इस सवाल का जवाब क्यों नहीं देते। शायद तुम यह समझते होगे कि मुख़्तार की लड़की तुम्हारे लिये आहें भर रही होगी! लेकिन मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि तुम बड़े धोखे में हो।"

यह सुनते ही लॉस्डेल चौंक कर लैंगले की तरफ घूरने लगा।

उसने फिर कहना शुरू किया, "मेरी ओर चाहे जिस निगाह से देखो, लेकिन मैं जानता हूँ कि ओकले में क्या हो रहा है। मैं ऐसा आदमी नहीं हूँ कि किसी का भेद प्रकट करूँ लेकिन यह समझ लो कि तुम्हारा यह ख़ास खयाल है कि लूसी-ऐसी खूबसूरत

लड़की तुम ऐसे छोटे दर्जे के आदमियों के हाथ लगेगी—वह तुम से ऊँचे दर्जे वालों के लिये है।"

यह कह कर लैंगले चला गया। रूमाल निकालने में उसकी जेब से एक खत गिर पड़ा था। लॉन्स्डेल को किसी प्रकार का संदेह लूसी के प्रेम पर न था। उसे यह ख्याल हो रहा था कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि उसके पिता ने कोई कपट जाल बिछाया हो और जिसका पता लूसी को न हो। उसे धोखे में रख कर किसी दूसरी जगह वह शादी कर देना चाहते हों। वह यह सोच ही रहा था कि उसकी निगाह उस खुले खत पर पड़ी जो लैंगले की जेब से बाहर गिर पड़ा था।

उसने ख़त उठाया। पहला शब्द जिस पर उसकी निगाह पड़ी वह 'लूसी' था। बरबस वह पढ़ने लगा। यह ओकले से बेट्स ने लिखा था कि डेविस ने अपनी लड़की की शादी जिराल्ड के साथ तय की है। जिराल्ड लंदन में है। २४ तारीख को वह शादी का ख़ास लायसेंस लेगा। २६ को मुख़्तार और उसकी लड़की रवाना होंगे। कावेन्ट्री में जार्ज होटल में ठहरेंगे और उसी रोज उनकी शादी हो जायगी।

यह पढ़ कर लॉन्स्डेल पागल सा हो गया। उसे बार बार यही ख्याल आता था कि बेचारी लूसी को धोखा दिया गया है। किस तरह वह उसकी मदद कर सकता है।

दो दिन बाद ही लूसी की शादी होने वाली थी। एक सौ बासठ मील की दूरी और जेब में दो ही चार रुपये थे। पहले ये

सब बातें सोच कर दिल बैठ गया पर फिर हिम्मत ने सहारा दिया और जोश में आकर उसने कहा कि अगर ईश्वर ने चाहा तो वह लूसी की अवश्य मदद कर सकेगा।

लाँस्डेल को इसमें संदेह नहीं था कि लूसी निर्दोष है। उसे धोखा दिया जा रहा है। लाँस्डेल ने फौज से भागने के परिणामों पर भी ध्यान दिया। लेकिन चाहे जो कुछ हो उसके सामने लूसी की सहायता का प्रश्न पहले है। उसका यह विचार हुआ कि जैकबजोंस से कपड़े माँग ले, परन्तु वह बाहर गया हुआ था। इधर एक एक मिनट अमूल्य था। ऐसे ही अवसरों पर समय का मूल्य मालूम होता है। जेब में जो दो चार रुपये थे, अगर वह कहीं पुराने कपड़ों की खरीदारी में खर्च हो जाते तो किराया देने को भी पैसे नहीं रह जाते। वह यों ही चल खड़ा हुआ। शहर के बाहर आकर वह और तेजी से चलने लगा। रास्ते में एक कस्साब की गाड़ी मिली जो पड़ोस के गाँवों में गोश्त बेचने जा रही थी। क़स्साब का लड़का इसे पहले से पहचानता था। उसने कहा, "कहाँ जा रहे हो? आओ, गाड़ी पर बैठ लो। क्या कहीं बाहर छुट्टी मनाने जा रहे हो?"

लाँस्डेल चुप रहा। उसने अपने दिल में सोचा कि बेकार झूठ क्यों बोले। जब गाड़ी दूसरी तरफ जाने लगी तब वह उतर पड़ा और पैसे देने लगा। लड़के ने पैसे लेने से इनकार किया और कहा, "मुझे तो इधर आना ही था। पैसे रहने दीजिए।"

लाँस्डेल ने धन्यवाद देकर अपना रास्ता लिया।

१५

कावेन्ट्री

विवाह से एक दिन पहले जब लूसी अपने कमरे में जाने लगी तो उसके पिता ने कहा, "देखो, मैं तुम से कहना भूल गया था कि कल कावेन्ट्री चलना है। हमें कुछ चीजें खरीदना है। तुम भी बहुत दिनों से बाहर नहीं गई हो। तुमको भी चीजों के खरीदने की जरूरत होगी।"

लूसी को पहले कुछ शक हुआ कि कहीं उसको किसी जाल में फँसाने के लिये तो यह तैयारियाँ नहीं हो रही हैं, परन्तु उसके पिता ने कुछ इस ढंग से बातें की थीं कि संदेह जाता रहा।

डेविस ने कहा, "बुशल की गाड़ी माँग ली है। मिडलूटन तक वह पहुँचा देगी। वहाँ से किराये की गाड़ी मिल जायगी। सुबह जल्दी उठना। आठ बजे तक रवाना हो जाना है।

जब लूसी अपने कमरे में अकेली हुई तो उसे फिर संदेह होने लगा कि कहीं जिराल्ड का रोज़ आना कुछ गुल खिलाने तो नहीं जा रहा है। जितना ही वह सोचती थी, उतना ही भय-भीत होती जाती थी। उसने यह भी खयाल किया कि वह घर से कहीं भाग जाय—फिर यह सोच कर रह गई कि हो सकता है,

उसका भय निर्मूल हो। इसी तरह के विचारों में डूबती-उतराती वह सो गई। जब सवेरे उठी तो फिर वही सन्देह उभर आया। न मालूम क्यों उसे यह भय हो रहा था कि उसका इस घर से यह अन्तिम प्रस्थान है। बहुत मुश्किल से वह नहा धोकर तैयार हो पाई। जब बाप के साथ खाना खाने गई तो कुछ भी नहीं खा पाई और बाप से कहने लगी, "मेरी तबियत आज ठीक नहीं है। अच्छा होता, अगर आज मैं आपके साथ न चलती।"

उसके पिता ने कहा, "बाहर निकलने से तबियत ठीक हो जायगी। अब चलने में देर न करो। इस वक्त तक हम लोगों को चल देना चाहिये था।"

लूसी का सन्देह बढ़ता ही जाता था। वह कुछ भी निश्चय नहीं कर पाती थी। लूसी की दासी मार्था ने पूछा कि इतने दुखी होने का क्या कारण है। लूसी आँखों में आँसू भर कर कहने लगी, "नहीं जानती कि इसका मैं क्या उत्तर दूँ। न मालूम दिल क्यों बैठा जाता है और रह-रह कर यही ख्याल आता है कि आज मैं तुमसे और घर से अन्तिम विदा ले रही हूँ।"

"तो फिर न जाओ" मार्था ने रोते हुए कहा।

इतने में नीचे से बाप ने पुकारा कि अब ज्यादा देर न करो।

लूसी ने कहा, "पिता जी, अभी आती हूँ।"

लूसी अपनी दासी से गले मिलकर विदा हुई। दोनों की आँखें भीगी हुई थीं।

पिता और पुत्री गाँव की तरफ रवाना हुए। डेविस अपने

प्रेम का नमूना बना हुआ था और बड़ी ही प्रेम पूर्ण बातें कर रहा था। लूसी चुप थी। वह अपने दुखद विचारों में उलझी थी। आखिर डेविस ने लूसी से कहा, "आज कैसी उदास हो; तबियत खुश करो। लोग क्या कहेंगे। जा तो हम लोग रहे हैं छुट्टी मनाने, लेकिन शकल से मालूम होता है कि कहीं मातम पुर्सी करने जा रहे हैं।"

लूसी का सोया हुआ संदेह फिर जाग उठा। चकित होकर उसने पिता की ओर देखा। दोनों सँभल कर बैठ गये।

गाड़ी रवाना हुई। अपनी दूकान के सामने वेट्स खड़ा दिखलाई दिया—लूसी ने उस पर तिरस्कार की दृष्टि डाली; उसके मुँह पर उस समय भी पूर्ण दुष्टता की छाप लगी हुई थी।

गाड़ी आगे बढ़ती जाती थी, पिता अधिक मधुरभाषी होता जाता था और लूसी की व्याकुलता बढ़ती जाती थी। दिन के बारह बजे गाड़ी कावेन्ट्री में जार्ज होटल के पास पहुँची। वहाँ के एक खानसामा से डेविस ने कुछ बातचीत की। फिर प्रकट में आज्ञा दी कि उन लोगों को एक कमरे में ठहरावे, और जा कर वह रेडबर्न को सलाम दे कर कहे कि दस मिनट में वह उनसे मिलने आएगा।

यह सुनते ही लूसी के सब संदेह और भय पुष्ट हो गये। विस्मित होकर वह अपने पिता की ओर देखने लगी।

डेविस ने कहा, "लूसी, अब समय आ गया है कि तुमसे अपना निश्चित विचार प्रकट करूँ। यह पहले ही कहे देता हूँ

कि तुम्हारे पुराने अभिनय के लिये मैं इस वक्त बिलकुल तैयार नहीं हूँ। उसका मुझ पर असर नहीं पड़ेगा। इतना ही जान लेना तुम्हारे लिए काफी है कि अभी घन्टे भर में तुम्हारी शादी जिराल्ड रेडवर्न से हो जायगी।"

"ऐसा कभी नहीं हो सकता!" लूसी ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

"क्या तुम अपने बाप की आज्ञा और इच्छा के विरुद्ध जाने की हिम्मत रखती हो?" डेविस ने झल्ला कर कहा, "मैंने अपना विचार स्थिर कर लिया है और वही होगा। जिराल्ड ने खुद शादी की याचना की थी और मैंने स्वीकार कर लिया है। इस मामले में अब "नहीं" का कोई स्थान नहीं है। देखो, जिराल्ड का यह खत है इसे पढ़ो।

लूसी ने सर हिला कर खत लेने से इनकार कर दिया। डेविस और भी बिगड़ गया। बोला, "क्या तू मेरे जीवन के सबसे मधुर सुखद स्वप्न को यों ही नष्ट किया चाहती है। यह मेरी प्रतिष्ठा का सवाल है। इसके नष्ट होने से पहले मैं अपने को नष्ट कर डालना कहीं अच्छा समझता हूँ। अगर तू यही चाहती है त...?

लूसी रो पड़ी और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करने लगी कि ऐसा न कहिये।

लूसी के रोने-चिल्लाने तथा अनुनय-विनय का डेविस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। डेविस दृढ़ था और वैसा ही दृढ़ बना रहा।

लूसी ने फिर विनय की "यदि आपकी आज्ञा मान लूँ तो

मेरा जीवन तो नष्ट हो जायगा। मेरी ही नहीं, एक और प्राणी की भी जान पर आ बनेगी। आप फिर सोचिए और...?

"उस कमीने का मेरे सामने जिक्र तक न करो। उसका नाम मैं नहीं सुनना चाहता।

जब जान छुड़ाने की कोई तरकीब न दिखलाई दी तो लूसी ने अन्त में सिसकते हुए अपनी स्वीकृति दे दी।

यह सुनते ही डेविस मारे खुशी के उछल पड़ा। जिराल्ड से मिलने के लिये वह तुरंत चल दिया। उसके चले जाने के बाद लूसी की आँखों के सामने लॉंस्डेल की तस्वीर खिंच गई। उसे अब कुछ साहस हुआ। उसने दृढ़ निश्चय किया कि चाहे जो हो, वह उसकी है और हमेशा उसी की रहेगी।

लूसी होटल से निकल कर शहर की निर्जन बस्ती की ओर बढ़ चली। वहाँ पहुँचते ही जरा दम लेने के लिये ठिठक गई और सामने से किसी के दौड़ते हुये आने की आवाज सुनकर जो सर उठाया तो लॉंस्डेल आता दिखलाई दिया। दोनों एक दूसरे के गले से लिपट गये।

१६

भागे हुये प्रेमी

अप्रत्याशित मिलन के बाद जब आनन्द के आँसू रुके तो उन्होंने अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई, अपनी हालत और परिस्थिति का ध्यान कर यह तय किया कि कहीं एकान्त में चल कर एक-दूसरे को अपना दुख और अन्य लोगों के उपहास और अत्याचार की कथा सुनावें।

यद्यपि लॉस्डेल अत्यन्त दुखित, व्याकुल और श्रमित दिखलाई देता था, परन्तु उसके कपड़े देख कर लूसी को आश्चर्य हुआ। कपड़े मामूली से कहीं अच्छे थे और लॉस्डेल पर खूब खिल रहे थे। बातें करते करते दोनों एक बाग़ में पहुँचे और एक कटे हुये दरख़्त की पेड़ी पर बैठ कर बातें करने लगे। लूसी ने रोते हुये अपनी सब कथा कह सुनाई और बताया कि उसके पिता ने आत्महत्या कर लेने की धमकी तक दी थी।

लॉस्डेल ने देखा कि लूसी उससे मिल कर प्रसन्न तो अवश्य है, परन्तु उस पर पिता की इस धमकी का भी प्रभाव अधिक पड़ा है। लॉस्डेल ने कहा, "प्रिये, तुम्हारे पिता को मैं तुमसे अच्छी तरह जानता हूँ। स्वार्थी और संसार सेवी मनुष्य कभी अपना बलिदान नहीं कर सकते। वह हमेशा यही सोचते हैं कि उनके

अमुक कार्य का आर्थिक रूप से क्या परिणाम होगा। पहला काम तुम्हारा पिता यह करेगा कि वह तुम्हारा पता लगाने में कोई कोशिश नहीं उठा रक्खेगा और जब तुम मिल जाओगी तब तुमको दबाने और धमकाने में भी कोई कसर बाक़ी नहीं रक्खी जायगी।"

लॉंस्डेल के आश्वासन और सांत्वना देने से लूसी शान्त हो गई। सहानुभूति का एक भी शब्द उसके मुँह से सुनने से, जिस पर प्रेम और विश्वास हो, हृदय को बहुत सहारा मिल जाता है।

अब लॉंस्डेल ने अपने दुःख और दर्द की कहानी शुरू की। कभी कभी दोनों एक दूसरे के गले मिल कर रोने लगते और कभी कभी दोनों के चेहरों पर संतोष की झलक आ जाती। वास्तव में प्रेम वही है, जिसको पा कर फिर कुछ पाने की इच्छा न रह जाय। लॉंस्डेल ने फिर कहना शुरू किया, "आज सवेरे जब ९ बजे मैं गाड़ी से उतरा, तब भी यह स्थान मुझसे मीलों दूर था और यह ख़्याल तो मारे ही डालता था कि कहीं मुझे पहुँचने में देर न हो जाय। जो गाड़ियाँ इधर आती दिखलाई देतीं थी, उन सब पर मैं सवार हुआ। पैसे सब खर्च हो गये थे और भूख से पैर नहीं उठते थे। इस दशा में जब मैं चला आ रहा था तब मुझे एक गाड़ी की पीछे से आती हुई आवाज़ सुनाई पड़ी। मुड़ कर देखा तो मालूम हुआ कि एक गाड़ी को घोड़े बड़ी जोर से दौड़ाये लिये चले आ रहे हैं। उसमें बैठी स्त्रियाँ चिल्ला रही थीं। कोचवान के हाथ से लगाम छूट गई थी। सड़क

पर आगे पत्थरों के कई ढेर थे। यह तय था कि अगर गाड़ी उनमें से किसी पर चढ़ जाती तो वह उलट जाती और बैठने वालों में से एक भी न बचता। मैंने आकर सामने से घोड़े की लगाम थाम ली और बहुत दूर तक घिसटता चला गया। उस समय यही ख्याल हो रहा था कि जीवन के अन्त का समय आ गया है; लेकिन किसी तरह से घोड़े रुक गये और सब की जान बच गई। उन लोगों ने कृतज्ञता प्रकट करते हुए मुझे दस गिन्नियाँ दीं। मैंने फौज की वर्दी उतार डाली और यह कपड़े खरीद कर पहन लिये। यही शायद मुनासिब भी था। फिर एक गाड़ी पर सवार हुआ, जब वह इधर न आकर दूसरी ओर जाने लगी तो फिर पैदल भागा और फिर एक गाड़ी मिली। उस पर बैठा। उससे उतर कर फिर पैदल चलना पड़ा और यहाँ पहुँचा। धन्य भाग, तुमसे भेंट हो गई।"

लाँस्डेल का विचार था कि कहीं दूर जा कर बस जाय और फिर लूसी से शादी कर मेहनत-मजदूरी के सहारे रोटियाँ कमावें। लाँस्डेल की हर एक बात से लूसी सहमत थी। प्रेम में विरोध कहाँ। शादी की जब बात आई तो लूसी ने लज्जा से सर झुका लिया, लेकिन आँखें भेद कहे देती थीं। दोनों के पास कुल मिला कर सोलह पौउन्ड थे—छ लाँस्डेल के पास और दस लूसी के पास जो कि वह घर से अपने साथ लाई थी।

एक घन्टा आराम और बातें करने के बाद वे बाग के बाहर आये और एक तरफ का रास्ता लिया, यद्यपि यह मालूम नहीं

था कि वह कहाँ जायँगे। आखिर में दोनों एक गाड़ी पर बैठ गये और पार्क पहुँच कर दोनों अलग अलग मकानों में ठहरे। पार्क के पादरी से शादी कर देने की विनय की।

लूसी के पिता ने अखबारों में एक पत्र प्रकाशित करवाया जिसमें उसके घर वापस आने की सलाह दी थी और उसमें यह भी लिखा था कि उसके लौट आने पर अब वह ज़िद नहीं करेगा। जब लॉस्डेल ने लूसी को यह पत्र दिखलाया तो उसको विश्वास हुआ कि उसका पिता आत्महत्या नहीं करेगा और इससे उसे प्रसन्नता हुई। लूसी ने एक खत अपने पिता को लिखा कि जो व्यवहार आपने मेरे साथ किया है, उसको तुरंत भूल जाना तो असम्भव है, परन्तु यह मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि उसकी वजह से आपके प्रति मेरे हृदय में कोई द्वेष का भाव नहीं है। अगर आप चाहें तो मुझसे पत्र व्यवहार कर सकते हैं, परन्तु अभी मैं अपना पता बताने के लिये तैयार नहीं हूँ। ईश्वर आप का भला करे, यही मेरी प्रार्थना है।" यह खत बन्द करके एक गाड़ी वाले को दिया गया और उसे चार रुपया के क़रीब दिये गये कि इसे वह लंदन से डाक में भिजवा दे। थोड़े ही दिनों बाद उत्तर पत्रों में प्रकाशित हुआ। लिखा था, "लंदन से भेजा हुआ पत्र मिला। यह खबर मिली है कि एक आदमी फ़ौज से भाग गया है। देखो, उसके साथ शादी मत करना। उसे तुम अच्छी तरह नहीं जानती हो। अगर उसका पता

चल गया तो फौरन पकड़ लिया जायगा और उसको सख़्त सज़ा मिलेगी। ”

पहले लॉंस्डेल ने सोचा कि यह समाचार लूसी को न दिखलाए लेकिन, फिर सोचने पर उसने निश्चित किया कि कोई भी बात छिपानी उचित नहीं होगी। जब लूसी ने इसे पढ़ा तो बहुत दुखी हुई, परन्तु लॉंस्डेल ने समझाया कि चिंता की कोई बात नहीं है। उसका पता किसी को न लगे, इसकी उसने सब तैयारियाँ कर ली हैं। इससे लूसी को बड़ा सन्तोष हुआ।

शादी हो गई। लॉंस्डेल ने अपना नाम बदल कर मार्टीमर रक्खा। दोनों ने मिल कर एक स्कूल खोला जिसमें छोटे बच्चों को शिक्षा दी जाती थी। यह काम थोड़े ही दिनों में अच्छा चलने लगा और दोनों की अच्छी तरह गुजर बसर होने लगी। जिस विधवा (मिसेस हैरीसन) के मकान में यह लोग रहते थे, वह भी बड़ी कृपा इन लोगों पर रखती थी और उसकी वजह से इन लोगों को बहुत काम मिल जाता था।

सुख और सन्तोप के दिन बीतने लगे। दोनों एक दूसरे को देख कर जीते थे। उनके सुख की सीमा नहीं रही, जब लूसी के पुत्र का जन्म हुआ।

१७

बड़े दिन के पहले की संन्ध्या

लॉस्डेल को पल्दन से भागे हुए एक साल हो गया था। उसने अपने को परिस्थिति के इतना अनुकूल बना लिया था कि यह कोई शक भी नहीं कर सकता था कि वह मार्टीमर नहीं, बल्कि लॉस्डेल है। जब वह अपनी पत्नी और पुत्र फ्रेडी की ओर देखता तो उसे बड़ी प्रसन्नता होती थी। लूसी भी वैसी ही प्रसन्न थी परन्तु जब उसका पति उसके सामने नहीं होता था तब हठात् उसे कभी कभी यह ख्याल आ जाता था कि यदि दैव अनुकूल न हुआ और उनका पता चल गया तो........यह सोचते ही उसकी आँखों से आँसुओं की झड़ी लग जाती और एक अन्तर्दाहिनी आह उसके मुँह से निकल जाती थी। अपने पति को दुखी होने से बचाने के लिये वह कभी एक शब्द भी मुँह से नहीं निकालती थी।

बड़ा दिन आ गया था। उसे मनाने के लिये सब सामान इकट्ठा कर लिया गया था। बड़े दिन के पहिले वाली संध्या को लॉस्डेल और लूसी बैठे चाय पी रहे थे। लड़का पास ही की चारपाई पर सो रहा था। कमरे के परदे पड़े थे और अँगीठी में आग जल रही थी—दृश्य सुखमय और सादे घरेलू

ज़िन्दगी का नमूना था। इतने में मिसेस हेस्टिंग्ज ने कमरे में प्रवेश किया; वह कुछ घबराई हुई थी। उसने कहा कि एक आदमी गाड़ी पर से गिर पड़ा है। उसके चोट बहुत आई है। चाय पीने के बाद लॉस्डेल ने कहा कि अच्छा होगा कि मैं खुद जाकर उस आदमी को देख आऊँ और अगर कुछ सहायता की जा सकती हो तो कर दूँ। लूसी की भी यही राय थी।

बाहर पाला पड़ रहा था फिर भी लॉस्डेल तेजी से चला जा रहा था। जब वहाँ पहुँचा तो मालूम हुआ कि जितनी उससे बतलाई गई थी उससे कहीं कम चोट उस आदमी को आई थी और वह अपने पैरों अपने घर चला गया था। लॉस्डेल फौरन लौट पड़ा कि वह भी जल्दी अपने घर पहुँच जाय। सर्दी बहुत थी और काम अब वहाँ कुछ नहीं था। वह क़दम बढ़ाये चला जा रहा था। सड़क का एक मोड़ मुड़ते ही वह एक आदमी से टकरा गया—दोनों एक दूसरे से क्षमा माँगते हुये हट गये। फिर जो सर उठा करके देखा तो दोनों एक दूसरे को पहचान गये। उसने पहचान लिया कि यह लॉस्डेल है और इसने देखा कि वह वेट्स नाई है। दोनों के मुँह पर ताले पड़े हुए थे और दोनों एक दूसरे को चकित होकर देख रहे थे।

नाई की पहले ज़बान खुली और उसने मिलाने के लिये हाथ बढ़ाया और कहा, "आशा करता हूँ कि मेरी तरफ से आप के हृदय में कोई द्वेष नहीं है।"

"ज़रा भी नहीं," लॉंस्डेल ने उत्तर दिया

द्वेष तो नहीं था, लेकिन फिर भी मत्था ठनक गया और वह सोचने लगा कि उसके सुख अब स्वप्न होने जा रहे हैं।

"मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि तुम्हारा हृदय मेरी तरफ से साफ़ है।" वेट्स ने कहा।

अब भी दोनों एक दूसरे को गौर से देख रहे थे। संदेह अल्पजीवी नहीं होता। यह लॉंस्डेल की उदारता थी कि उसके हृदय में वेट्स के प्रति द्वेष नहीं था, परन्तु यह कहीं सम्भव था कि जिसकी बदौलत इतना दुख उठाया, उस पर संदेह न होता। लॉंस्डेल को अच्छे कपड़े पहने देख कर वेट्स समझ गया कि यह आर्थिक संकटों में नहीं है।

लॉंस्डेल ने पूछा, "यहाँ कालीयल कैसे आये हो।"

"मैं यहाँ कैसे आया हूँ।" वेट्स ने वही शब्द दोहरा दिये, "एक जरूरत ले आई है।"

"वह क्या ?" लॉंस्डेल ने पूछा।

"एक खत खो गया है। उसी के सम्बन्ध में यहाँ आया हूँ।" वेट्स ने जवाब दिया।

इस उत्तर से लॉंस्डेल को कुछ सन्तोष हुआ।

"यहाँ सर्दी बहुत है और मुझे तुमसे पाँच मिनट बातें करना है। क्या कहीं नजदीक ही रहते हो ? तुम इसी शहर में रहते हो न ?"

झूठ बोलने के लिये लॉंस्डेल मजबूर हो गया। उसने कहा,

"यहाँ मैं एक ही दो रोज़ के लिये आया हूँ। चलो, वहीं चलें जहाँ तुम ठहरे हो या इस शराब की दूकान में चलें।"

लाँस्डेल शराब की दूकान में कभी भी नहीं जाता था, लेकिन आज मजबूरी थी; वह इस धूर्त नाई को नाखुश नहीं किया चाहता था। शराब मँगाई गई। दोनों ने गिलास भरे और वेट्स ने कहा, "आओ, आज पुरानी दोस्ती की यादगार में साथ-साथ शराब पियें।"

यह कह कर उसने अपना गिलास ख़त्म कर दिया। फिर कहा, "अब मेरी मुसीबत का क़िस्सा सुनो। ओकले के ममरी को तो जानते हो। वह कहता है कि उसने अपने बहनोई के पास ख़त में बन्द करके पचास पाउण्ड के नोट भेजे थे। वह वहाँ नहीं पहुँचा। पंद्रह सोलह महीनों से मैं डाकखाने में काम करता हूँ। ख़त के खो जाने की जाँच हो रही है। लंदन से जाँच करने वाले आदमी आये हैं। न ख़त का पता चलता है और न मेरे पास इतना रुपया ही है कि उसे पूरा कर दूँ। तुम अच्छी हालत में दिखाई देते हो। बड़ी कृपा होगी, यदि इस मुसीबत में मेरी मदद करो और पचास पाउन्ड दे दो।"

लाँस्डेल और लूसी दोनों ने बड़ी मेहनत करके पचास पाउन्ड इकट्ठा किए थे और इसी पर इन दोनों और बच्चे का भविष्य निर्भर था, लेकिन बेचारा करता क्या। उसे खयाल आया कि अगर उसका पता चल गया और वह पकड़ लिया गया तो बीवी और बच्चा सिवा भीख माँगने के और क्या करेंगे। इस समय

लॉन्स्डेल के चेहरे से आत्म वेदना प्रकट हो रही थी। वह नाई के फन्दे से बचने का उपाय सोचने में डूबने उतारने लगा।

"तुम पी नहीं रहे हो ?" वेट्स ने पूछा। वह गिलास पर गिलास उड़ाता जा रहा था।

लॉन्स्डेल ने कहा, "मैं कभी कभी और बहुत कम पीता हूँ। पहले हम तुम ज़रूरी बातें कर लें—अगर मैं तुमको रुपया दूँ तो इसका मुझे कैसे विश्वास दिलाओगे कि मेरे साथ तुम्हारा फिर वही अकृतज्ञतापूर्ण व्यवहार नहीं होगा, जैसा कि तुम पहले कर चुके हो।"

"नहीं, अब ऐसा नहीं करूँगा।" वेट्स ने जवाब दिया।

"लेकिन......?" लॉन्स्डेल ने तीखे स्वर में कहा।

"अब उसे भूल जाओ," वेट्स नम्रता से कहने लगा, "ग़रीबी सब कुछ करा लेती है—तब मेरे लिये एक एक पैसा भी बड़ी रक़म थी। दो चार रुपये जो तुम्हें पल्टन में भरती कराके मुझे मिल गये थे, वह मेरे लिये एक संपत्ति थी।"

"यदि मुझे यह विश्वास हो जाय कि ओकले पहुँच कर मेरा भेद नहीं खोलोगे तो शायद मैं तुमको रुपया देने पर राज़ी हो जाऊँ।"

लॉन्स्डेल पर अपना विश्वास जमाने के लिए वेट्स ने सभी तरह के कपट जाल बिछाये, विनय की, प्रार्थना की, विश्वास दिलाया और मीठी बातें करके अपना काम बना लिया। लॉन्स्डेल राज़ी हो गया।

लॉन्सडेल ने घर पहुँच कर अपनी पत्नी को सब सुनाया। लूसी न रोई, न चिल्लाई और अपने दुख को दबा कर अपने पति का साहस बढ़ाने लगी। सब रुपया इकट्ठा करके उसने अपने पति के हाथ में दे दिया और कहा कि इसे दे कर उस नरपिशाच के फन्दे से अपने को छुड़ा लो। लॉन्सडेल इस सराहनीय त्याग की प्रशंसा करता हुआ शराब की दूकान की तरफ रवाना हुआ।

वेट्स दूकान में बैठा शराब उड़ा रहा था। लॉन्सडेल ने उसी के सामने मेज़ पर रुपया गिना और देते हुए कहा, "यह साल भर की गहरी कमाई है जो तुम्हें भेंट करता हूँ, अब अगर एक भी शब्द तुम्हारे मुँह से कहीं निकला तो हम सब मिट जाँयगे और मैं फिर उन नर पिशाचों के हाथ पड़ जाऊँगा।

वेट्स ने पूछा, "क्या तुम्हारी शादी मिस डेविस से हो गई है?" और जवाब का रास्ता न देख वह फिर कहने लगा, "मुख़्तार को इसका बहुत दुख है। प्रकट तो वह किसी पर करते नहीं हैं, परन्तु मिज़ाज चिड़चिड़ा हो गया है और सभी से कठोर व्यवहार करने लगे हैं।"

"बहुत देर हो गई, अब मैं घर जा रहा हूँ।" लॉन्सडेल ने कहा, "मैं फिर तुमसे यही कहता हूँ कि यह मुँह से न निकलने पाये कि तुम मुझे मिले थे।"

"कदापि नहीं, मैं इसे ऐसा भुला दूँगा कि जैसे मुझसे और तुमसे कभी मुलाक़ात ही नहीं हुई थी।" वेट्स ने विश्वास दिलाते

हुए कहा, "आओ, हाथ मिलाओ और हम लोग मित्रों की तरह विदा हों।"

दोनों ने हाथ मिलाया।

लॉस्डेल का पता बता देने के लिये दस पौंड का इनाम पत्रों में प्रकाशित हुआ था। वेट्स को इसका हाल मालूम था। लॉस्डेल और उसकी पत्नी के सामने अब यही सवाल था कि क्या वेट्स उनका भेद रख सकेगा या फिर दस पौंड पाने के लालच में उनका पता बता देगा। इन लोगों के सामने दो ही रास्ते थे—एक तो जहाँ थे, वहीं ठहरे रहें और जो कुछ भाग्य में हो, उसका सामना करें या कहीं दूसरी जगह चले जायँ और सदैव सशंकित जीवन व्यतीत करें। उन दिनों बड़े जोर का शीत पड़ रहा था और यह प्रश्न कि लड़के को लेकर कहीं बाहर जाना एक समस्या थी। पुत्र के प्रति जो माता और पिता का स्वाभाविक प्रेम होता है, वह इस पर राज़ी नहीं था कि उसका जीवन संकट में डाला जाय। अन्त में यही निश्चित हुआ कि यहीं रह कर जो भी होनहार हो; उसका मुक़ाबिला किया जाय।

उपरोक्त घटना को कई दिन हो गये। लॉस्डेल और उसकी पत्नी यद्यपि दुखी थे, परन्तु एक दूसरे पर अपना दुःख प्रकट न होने देते थे। जब ज़रा सर्दी की सख़्ती कम पड़ी तब दोनों ने अपनी राय बदली कि कहीं दूसरी ही जगह चल कर जिन्दगी बसर करें। रुपया जो कुछ था, वह वेट्स को भेंट कर दिया गया था; लेकिन इस जगह को छोड़ने का इरादा पक्का कर

लिया गया। गरीबी की तकलीफें झेलने की उन्होंने ठान ली थी। लॉस्डेल बार बार अपनी पत्नी से कहता था, "दुखी न हो, मेरे लिये ही तुम यह सब कष्ट उठा रही हो।"

लूसी अपने प्रेम पूर्ण शब्दों से अपने पति को उत्साहित करती जाती और उसे अपने कष्टों और क्लेशों का ज़रा भी अनुभव नहीं होने देती थी।

सफर का सब सामान ठीक हो गया और चलने का दिन आ गया। मिसेस हेस्टिंग्ज़, जिनके मकान में यह किराये पर ठहरे थे, उनसे विदा ली जा चुकी थी और कुली असबाब उठा रहे थे कि इतने में एक आदमी फौज की वर्दी पहने और साथ में स्थानीय पुलीस के दो कानिस्टेबिल लिए आता दिखलाई दिया। दोनों को अशुभ की शंका हुई और दोनों ने जो आँखें उठा कर देखा तो अनुमान यथार्थ हुआ—यह लैंगले था।

"प्रिये" लॉस्डेल ने कहा, "अपने को सँभालो।,"

"मेरे लिये चिन्ता न करो...लेकिन तुम ?" लूसी ने साहस पूर्ण शब्दों में उत्तर दिया।

"यदि तुम दुखी न हुई तो मैं सब सहन कर लूँगा।" कहते हुए प्रेमाश्रुपूर्ण नेत्रों से लॉस्डेल ने अपनी पत्नी की तरफ़ देखा।

लैंगले आ गया। लॉस्डेल ने उससे कहा, "मैं तुम्हारा कैदी हूँ।"

उसने पैशाचिक प्रसन्नता से हथकड़ियाँ निकालीं और कांस्टेबिल को आज्ञा दी कि गिरफ़ार कर लें।

लॉंस्डेल ने कहा, "ईश्वर के नाम पर आप मुझे अपमानित न करें—मैं भागने की कोशिश नहीं करूँगा।"

लूसी ने भी बच्चे को सामने करके अत्यन्त विनीत भाव से हथकड़ी न पहनाने की याचना की, पर लैंगले के ऊपर इसका कोई असर नहीं पड़ा। उसने कहा, "मुझे इन बेतुकी बातों से कोई सरोकार नहीं है। गाड़ी जा रही है, जल्दी चलो।"

लूसी ने कहा, "मैं भी अपने पति के साथ जाऊँगी।"

"अगर तुम्हारे पास किराया देने को पैसे हैं तो तुमको कौन रोक सकता है।" लैंगले ने निर्दयता से उत्तर दिया।

लॉंस्डेल ने अपनी पत्नी से कहा, "तुम दूसरी गाड़ी से चली आना।"

उसने नहीं माना और कहा, "लड़के को अच्छी तरह ओढ़ा दूँगी और मुझे सर्दी से क्या मौत से भी डर नहीं है—जब तक कि मैं तुम्हारे साथ हूँ।

मिसेज़ हेस्टिंग्ज़ गाड़ी तक पहुँचाने आईं और जब असबाब लद गया और गाड़ी चलने के करीब हुई तो एक छोटी सी पर्स लूसी के हाथ में देकर कहा, "इसे ले लो। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।"

इसमें पांच गिन्नियाँ थीं।

लूसी भी उसी गाड़ी से रवाना हुई। पहले लॉन्स्डेल के पास बाहर बैठने की जगह मिली—अन्दर जगह नहीं थी। थोड़ी दूर चल कर जब सर्दी से बच्चा रोने लगा और एक मुसाफिर के उतर जाने से जगह खाली हुई तो बहुत कहने सुनने के बाद वह अन्दर बैठ सकी।

१८

फ़ौज़ी अदालत

लॉस्डेल को गिरफ़्तार हुए एक हफ़्ता हो गया। वह कैदखाने में है और बीबी शहर में एक मामूली मकान किराये पर लेकर ठहरी है। यह कहना कि लूसी दुखी है, कुछ न कहने के बराबर है। उसके दुःख की तसवीर नहीं खींची जा सकती। उसे न खाने पीने का ख्याल है और न सोने जागने का—अगर कुछ ख्याल है तो अपने पति का। न उसको यह अफसोस था कि जो कुछ रुपया था, वह जाता रहा; न यह कि बसा बसाया घर उजड़ गया—इसका भी उसको अफसोस नहीं था कि वह अपने पति से बिछुड़ गई थी। अफसोस था तो यही कि जिसके लिये वह स्वयं बलिदान होने को तैयार थी, उसे कोड़ों की सजा मिलेगी। अगर लड़का गोद में न होता तो शायद वह अपना प्राण देकर इन तकलीफों से अपने को बचा लेती। पति के पास खत भेजने या उसके खत आने का कोई प्रबंध नहीं हो सकता था—हाँ, लॉस्डेल के एक साथी सिपाही की बीबी कभी कभी कृपा करके हाल बतला जाती थी।

जब दैव प्रतिकूल होता है तो सब बातें वैसी ही होती हैं—जजों में से एक जिराल्ड रेडवर्न भी थे; दुश्मन दुश्मन का फैसला

करने बैठे। लॉंडेल अदालत के सामने बुलाया गया। उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया और यह प्रार्थना की कि परिस्थिति पर ध्यान रख कर यदि देखा जाय तो वह बहुत हल्के दण्ड की याचना कर सकता है।

प्रार्थना और विनय सब व्यर्थ हुई। हुक्म हुआ कि उसे पाँच सौ कोड़े लगाये जायँ। कालकोठरी में उसे बन्द कर दिया गया। निश्चित यह किया गया कि जैसे ही लंदन से स्वीकृति आ जाय तुरंत सजा दी जाय।

रात को करीब नौ बजे होंगे कि कर्नल विंढम अपने कमरे में बैठे शराब पी रहे थे। इनकी अवस्था लगभग चालीस वर्ष की होगी। अभी तक विवाह नहीं हुआ था। इस समय इनके साथ एक दो स्त्रियाँ बैठी हुई थीं, जिनके सम्बन्ध में अपवाद की जबान चुप नहीं थी। इतने में नौकर ने आकर बाहर से दरवाजा खटखटाया। आज्ञा मिलने पर वह अन्दर आया और कहा कि एक जवान औरत कुछ बातें करने के लिये आई है।

" कौन ? " कर्नल ने जरा चिढ़ कर कहा।

"नाम तो उसने नहीं बतलाया," नौकर ने उत्तर दिया, "लेकिन मेरा ख्याल है कि वह लॉंस्डेल की बीवी है।"

"ओह, मैंने सुना है कि वह खूबसूरत भी बहुत है ! " कर्नल ने कहा, "अच्छा बुला लाओ; मैं उससे मिलूंगा।"

यह कह कर वह उठ खड़ा हुआ। इतने में साथ बैठी हुई

एक स्त्री ने कहा, "जल्दी आना, नहीं तो देखने आऊँगी कि क्या कर रहे हो।"

कर्नल दूसरे कमरे में गया और लूसी के असाधारण सौंदर्य्य को देख कर चकित हो गया। उसने नीचे से ऊपर तक देखा—शरीर की गठन, लावण्यता, कोमलता और सुकुमारता देख कर वह इस रूप राशि पर मोहित हो गया। अपने भावों को दबा कर उसने पूछा, "आप कौन हैं और क्या चाहती हैं?"

"मैं भाग्यहीन लॉस्डेल की पत्नी हूँ," लूसी ने कहा। आवाज़ दुखी होने पर भी अत्यन्त मधुर थी।

"तुम उसे भाग्यहीन कह रही हो," कर्नल ने उत्तर दिया, "जो जान बूझ कर अपराध करे, वह भाग्यहीन नहीं कहला सकता।"

लूसी ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से उसकी तरफ देख कर कहा, "यदि आप का परिस्थिति का ज्ञान होता तो आप ऐसा कभी न कहते।

कर्नल ने जवाब दिया, "तो क्या आप उसके अपराध की क्षमा की प्रार्थना करने आई हैं?"

लूसी घुटनों पर झुक कर, आत्म-वेदना से व्याकुल हो कर बोली, "कर्नल विंढम, मैंने सुना है कि मेरे पति को क्या सज़ा मिल रही है। प्रार्थना तो यही करती हूँ और यही आशा लेकर आई हूँ कि उन्हें माफी मिल जाय। यदि यह स्वीकार न हो तो कृपा कर यह तो कीजिये कि उनकी सज़ा कुछ घटा दी जाए।"

कर्नल ने हाथ पकड़ कर उठाया और कहा कि बैठ कर बातें करो।

बैठ जाने पर कर्नल ने कहा, "यह तो आप जानती हैं कि पाँच सौ कोड़े लगाये जाने की आज्ञा हुई है।"

लूसी के मुँह से एक आह निकल पड़ी और दुखित होकर उसने कहा, "दया कीजिये, दया कीजिये।"

"आप की बातों से मालूम होता है कि आप अपने पति की सज़ा घटवाने के लिये सब कुछ करने को तैयार हैं।" कर्नल ने कहा।

"सब कुछ!" लूसी ने उत्तर दिया, "उनकी तकलीफ घटाने के लिये मैं सब कुछ करने के लिये तैयार हूँ; चाहे जिन मुसीबतों का मुझे सामना करना पड़े।"

कर्नल ने गम्भीर स्वर में कहा, "यह ठीक है कि मैं सज़ा घटा सकता हूँ, लेकिन इसके लिये तुम्हें कुछ त्याग करना पड़ेगा। इसका फैसला तुम्हीं कर सकती हो।"

यह बातें कुछ ऐसे ढंग से कही गई थीं कि लूसी को कुछ संदेह हुआ कि दुराचारी कर्नल क्या चाहता है। लूसी झिड़क कर बोली, "इसकी आशा करना मुझसे व्यर्थ है।"

कर्नल ने कहा, "सुन तो लो।"

"बस, सब सुन चुकी। अब कुछ और नहीं कहिए।" उसकी रोने से हिचकियाँ बँध गई थीं।

कर्नल ने कहा, "तुम्हारा पति इतनी कड़ी सज़ा एक साथ

बरदाश्त नहीं कर पायेगा। जब बेहोश हो जायगा तब अस्पताल भेजा जायगा और जब अच्छा हो जायगा तब जितने कोड़े लगने को बाकी रह जायँगे वे लगाये जायंगे। हमेशा उस पर कड़ी निगाह रक्खी जायगी और जब कभी ज़रा भी संदेह होगा, उसे सज़ा मिलेगी।"

कर्नल की बातों से वह दुखित और व्याकुल तो हुई, परन्तु वह अपने निश्चय में दृढ़ थी। उसने कहा, "मेरा पति आपके कब्जे में है, जो चाहे सो कीजिए। मैं अपनी बातों से आपको और क्रोधित नहीं किया चाहती हूँ, परन्तु जो आप चाहते हैं, वह कभी नहीं हो सकता।"

यह कह कर वह उठ पड़ी और कर्नल को उसे रोकने का साहस नहीं हुआ।

जीने से नीचे उतरने में लूसी को थोड़ी देर के लिये बेहोशी सी आ गई और दीवार के सहारे वह खड़ी हो गई थी। उधर से जिराल्ड आ गया और कहने लगा, "क्या कर्नल के पास अपने पति की सज़ा घटवाने गई थीं।

"मुझे जाने दीजिये," लूसी ने कहा

"मेरी बात सुन लीजिये," जिराल्ड फिर खुशामद करने लगा, "कर्नल सजा नहीं घटाएगा। वह सख़्ती का प्रतिरूप है। अगर मैं बीच में पड़ूँ तो अवश्य कुछ काम चल सकता है।"

"बस हट जाइये और जाने की जगह दे दीजिये!" लूसी ज़ोर से बोली।

"लेकिन इस तरह नहीं!" जिराल्ड यह कहता हुआ आगे बढ़ा और लूसी के गले में उसने हाथ डाल दिया। लूसी ने इस ज़ोर से उसे ढकेला कि वह दीवार से जाकर टकराया। कराहते हुए वह उठा और कहा, "इसका बदला लॉन्स्डेल से लूँगा।"

लूसी लपक कर अपने घर पहुँच गई।

जैसा कि ख्याल था, लंदन से हुक्म आ गया कि लॉन्स्डेल को सजा दी जाए।

दो जवान और मजबूत रंगरूटों को लैंगले ने इस काम के लिये चुना। दो बोरों में बालू भरी गई और उन पर बेतों से अभ्यास करने की आज्ञा दी गई। दोनों में से एक जब थक गया तब कहने लगा, "मुझसे यह काम नहीं होगा, मैं हत्यारा नहीं बना चाहता हूँ। लॉन्स्डेल इस सजा के खत्म होने के पहले ही खत्म हो जायगा।"

"और मुझसे भी यह काम नहीं होगा।" दूसरे ने भी यही कहा।

लैंगले को आते देख दोनों डर गये और फिर बालू से भरे बोरों को पीटने लगे। लैंगले ने कहा, "ठीक है, जहाँ पर खाल फट जाय और गोश्त निकल आवे, उसी जगह बराबर कोड़े पड़ना चाहिये। हाथ हल्का न पड़ने पावे। उसकी अकड़ को निकालना है।"

लैंगले ने इन दोनों को दूकान में शराब पिलाई और कहा, "इससे तुम लोगों में हिम्मत आ जायगी।" जब वह शराब पी चुके तब कहा, "अब जा कर खाना खा लो।"

१६

कोड़ों की मार

आध घन्टे बाद पलटन मैदान मे आकर खड़ी हुई। तीन बाँस इस तरह से बाँधे गये कि त्रिकोण बन जाय और फिर उसके ऊपर तीन बाँस रक्खे गये। तीन कोने की चारपाई पर कोड़े रक्खे गये थे। नीचे एक घड़ा पानी और प्याला रक्खा गया था कि अगर पानी देने की जरूरत पड़े तो उसी जगह फौरन मिल जाय।

पलटन इस तरह से खड़ी की गई थी कि हर एक आदमी इस निर्दय दृश्य को देख सके। पलटन के अफसर घोड़ों पर सवार थे। लॉस्डेल काली कोठरी से बाहर लाया गया। दृढ़ पद, अपलक नेत्र और एक दूसरे से जुटे हुये ओंठ इस प्रतिज्ञा के सूचक थे कि साहस से सजा का मुकाबिला करने का उसने निश्चय किया है। बाँसों के त्रिकोण के पास लाकर उसकी कमर नंगी कर दी गई। अपने साथी सिपाहियों और अन्य देखने वालों के सामने इस तरह प्रदर्शित किये जाने पर लॉरडेल को बड़ी लज्जा आई। वह ऐसा कस कर बाँधा गया कि हाथ पैर हिला न सके। डाक्टर और दो कोड़े लगाने वाले सामने आये और उनमें से एक को लैंगले ने हुक्म दिया कि कोड़ा उठावे और अपना काम शुरू करे।

ढोल और ताशे बजाये जाने लगे कि रोने और चिल्लाने की आवाज़ न सुनाई दे।

कोड़े पड़ने लगे और लैंगले गिनने लगा। एक एक कोड़े से नौ नौ जगह पीठ पर चिह्न पड़ जाते थे। लॉन्सडेल के मुँह से कराहने या चिल्लाने का एक शब्द भी नहीं निकलता था। लैंगले कोड़े लगाने वालों को इशारा करता जाता था कि हाथ सख़्त पड़े। पच्चीस कोड़ों के बाद लैंगले ने ठहर जाने का हुक्म दिया। लॉन्सडेल की पीठ की खाल बिल्कुल उधड़ गई थी और मांस की धज्जियाँ उड़ गई थीं। ख़ून बह रहा था। डाक्टर ने नब्ज़ देखी। पानी पीने को दिया गया। परन्तु मुँह से एक भी आह नहीं निकली थी।

फिर मार पड़ने लगी। पच्चीस कोड़ों के बाद फिर हाथ रोका गया। डाक्टर ने नब्ज़ देखी और फिर पानी दिया गया। इस भयानक दृश्य को देख कर कई सिपाही बेहोश हो गये। कर्नल विंढम ने उनके पास जाकर डाँटा और कहा कि यह क्या तमाशा है। भय ने दया पर विजय पाई और फिर वह बेचारे मूर्तिवत खड़े हो गए।

तीन सौ कोड़े पड़ने के बाद पूछे जाने पर लॉन्सडेल ने कहा, "अब भी मुझमें सहनशक्ति है; जितने कोड़े पड़ने की सज़ा दी गई है, वह सब इसी वक्त लग जायँ।"

कर्नल विंढम अपने इरादों में विफल होने के कारण लूसी पर आया हुआ गुस्सा लॉन्सडेल पर उतारा चाहता था। गरज कर बोला, "लैंगले, कोड़े पड़ते जायँ।"

"यह दोनों थक गये हैं।" लँगले ने जवाब दिया।

कर्नल ने कहा, "तो दूसरे आदमी बुलाओ।"

फिर कोड़े पड़ने लगे। सिपाही बेहोश हो कर गिर पड़ते थे और डाँट डपट कर फिर खड़े किये जाते थे, पर अफसरों पर इसका कोई असर नहीं था।

हर एक चीज़ का अन्त है—पाँच सौ कोड़े पड़ गये और यह शोणित-तर्पण समाप्त हुआ। बेहोश लॉस्डेल अस्पताल पहुँचा दिया गया।

लूसी को मालूम था कि किस रोज और किस समय उसके पति को सज़ा दी जायगी। घुटनों पर झुक कर वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगी। सहानुभूति का दूसरा नाम समवेदना है। लूसी को भी पीठ पर कोड़े पड़ते मालूम होते थे और तकलीफ से तिलमिला उठती थी। दो घन्टे तक वह उसी हालत में रही। उसे समय का ज्ञान न था। शायद इसी हालत में और कितनी देर तक वह रहती यदि किसी ने बाहर से दरवाज़ा न खटखटाया होता। उठ कर दरवाज़ा खोला। सामने वह उस सिपाही की बीबी थी जो कभी कभी लॉस्डेल का हाल बतलाने आ जाती थी। उससे लूसी को मालूम हुआ कि कोड़े पड़ चुके हैं और उसका पति अब अस्पताल में है। लूसी ने उस औरत को रोका नहीं। वह एकान्त चाहती थी। उसके चले जाने के बाद लूसी ने अपने लड़के को गोद में उठा लिया और दुखी होकर रोने लगी।

शोक में जब कुछ साहस आ गया तो लूसी ने अस्पताल

जाकर अपने पति को देखने के लिये आज्ञा मांगी। पर उसे मिलने नहीं दिया गया। वह निराश हो कर अपने मकान को वापस आई।

लूसी अपने दुखी विचारों में इतनी निमग्न थी कि उसे यह पता नहीं चला कि किसने दरवाजा खटखटाया और कौन कमरे में आ गया। बहुत नज़दीक आने पर जब उसने सर उठा कर देखा तो वह उसका बाप डेविस था।

२०

सिपाही की बीवी

सत्रह महीनों के बाद लूसी ने अपने पिता को देखा। इस बीच में उनमें बड़ा परिवर्तन हो गया था। केवल समय ने ही नहीं, वरन् फिक्र और परेशानी ने भी उसे इस दशा में पहुँचाने में कोई कसर नहीं उठा रक्खी थी। वह कमरे में आ कर एक कुर्सी पर बैठ गया। लूसी अपने लड़के को गोद में लिये हुए थी। उसने उनकी तरफ देखा भी नहीं। लूसी के मातृ-प्रेम में गहरी ठेस लगी और वह रो पड़ी। डेविस ने कहा, लूसी, ज़रा सोचो तो कि तुमने अपनी क्या दशा कर ली है।"

"इन व्यंग्य-बाणों के बिना भी आपका काम चल सकता है। मुझे ग़रीबी की परवाह नहीं है। मैंने अभी तक कोई तकलीफ नहीं उठाई, न ईश्वर की कृपा से उठाऊँगी ही—जब तक कि काम करने की ताकत है।"

फिर उसी व्यंग्य स्वर में डेविस ने कहा, "तुम्हारे पति को आज . ..."

"बस, उनका जिक्र न कीजिये।" लूसी ने नम्रता से कहा, "मुझ पर दया कीजिये—मैं वैसे ही बहुत दुखी हूँ।"

डेविस फिर कहने लगा, "शायद तुम जानती न हो कि किस

लिए मैं तुमसे मिलने आया हूँ। तुमने देख लिया है कि मेरा कहना न मानने और उससे शादी करने का क्या परिणाम हुआ है। अगर चाहो तो अब भी घर चल कर आराम से रह सकती हो।"

"मेरा घर मेरे पति के साथ है।" लूसी ने दृढ़ता से उत्तर दिया. "आप के इस परामर्श के लिये आपको धन्यवाद देती हूँ।"

डेविस फिर भी चुप न रहा। उसने पूछा, "क्यों, अब भी वही सुख स्वप्न देख रही हो। तुमने उस आदमी से शादी की जो तुम्हारी रोटियों का भी इन्तजाम नहीं कर सकता है। अगर अब भी तुमने कहना न माना तो और न मालूम क्या क्या देखोगी!"

लूसी ने कहा, "पिता, इस तरह मेरा अपमान न कीजिये। मैं आपका आदर करती हूँ, इसलिए......"

"आदर" नाक-भौंह सिकोड़ कर डेविस ने जवाब दिया, "आदर की बातें न करो। मेरा कहना न मानने से तुमने मेरा दिल तोड़ दिया है। अगर मेरा कहना माना होता तो आज तुम महलों में होतीं।"

लूसी ने कहा, "महलों में रहना कोई सुख नहीं है। झोपड़े में भी उसके साथ रहने में सुख है जिससे हृदय को सच्चा प्रेम हो।"

डेविस ने कहा, "ख़ैर, यह बातें किस्सा और कहानियों के लिये अच्छी हैं। जो मैं कहा चाहता हूँ, वह सुन लो। मैंने एक वसीयत लिखी है। उसमें तुमको कुछ नहीं दिया गया है। अगर

मेरा कहना मानो और घर चलो तो वह बदल दूँगा। यह भी याद रखना कि अगर तुमने आज भी मेरा कहना न सुना तो फिर कभी उस घर का दरवाजा अपने लिये खुला न समझना। चौबीस घन्टे की अवधि तुम्हें सोचने के लिये देता हूँ।"

लूसी ने तुरंत उत्तर दिया, "मुझे चौबीस मिनट भी सोचने की ज़रूरत नहीं है। चाहे जो कुछ हो, मैं अपने पति का साथ नहीं छोड़ूंगी—फिर ऐसे पति का जिसने एक दफे भी कड़ी निगाह से मेरी ओर नहीं देखा और मेरे लिये जिसने क्या क्या मुसीबतें नहीं उठाई हैं। अगर आप मुझसे खफा हैं तो माफी माँगती हूँ और यह याचना करती हूँ कि एक भी तो शब्द अपने मुँह से सहानुभूति का निकाल दीजिये। अगर मेरी खातिर नहीं तो (बच्चे को सामने करके) इसकी खातिर से।"

डेविस सख़्ती से बोला, "यह उसका लड़का है जिसको मैं दुनिया भर में सब से ज्यादा नापसन्द करता हूँ।"

"लेकिन यह मेरा भी तो लड़का है, तुम्हारी लड़की का लड़का है, तुम्हारा नाती है।" लूसी ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखा।

उसी स्वर में डेविस ने फिर कहा, "घर चलो, तब यह रिश्ते मानूँगा, वैसे नहीं। आखिरी बार पूछ रहा हूँ कि घर चलोगी या नहीं।"

"नहीं चल सकती हूँ पिता।"

डेविस के मुँह में जो कुछ बुरा भला आया कहता हुआ उठ गया।

लूसी रोज बच्चे को लिये हुए अस्पताल जाती थी और यह जान कर उसे हार्दिक आनन्द होता था कि उसका पति धीरे धीरे अच्छा हो रहा था। पंद्रह दिनों के बाद उसे अपने पति को देखने की आज्ञा मिली। उसे देखते ही वह चिल्ला उठी। देखा कि वह पीला पड़ गया था, दुबला हो गया था और शक्ति विहीनता के सब चिन्ह थे। वह रोती हुई उसके गले से लिपट गई। लूसी ने ताड़ लिया कि व्याकुल और व्यथित होने के साथ ही वह चिंतित भी है। लूसी ने कुछ पूछना उचित नहीं समझा। उसके साथ जो लज्जाहीन बर्ताव कर्नल विंढम और जिराल्ड रेडवर्न ने किया था, उसे लूसी ने अपने पति से नहीं कहा। वह समझती थी कि इस अपमान को वह सहन नहीं कर पाएगा।

लॉंडेल छः हफ्ते अस्पताल में रहा। रोज लूसी उससे मिलने जाती थी। जिस रोज वह अस्पताल से बाहर आया, उसने लूसी से सलाह की कि क्या करना चाहिये। जो कुछ रुपया लूसी के पास था वह खत्म हो आया था। लूसी की रोटियों की उसे चिन्ता थी। साथ ही यह भी कि बच्चे का लालन पालन कैसे होगा। जिस दिन इन दोनों में सलाह हुई उसके दूसरे ही दिन लूसी ने अपनी मकान-मालकिन से कहा कि वह कहीं उसे हाथ से बीनने का काम दिलवा दे। उसने दो चार जगहों के नाम बतला दिये।

लूसी ने एक जगह जा कर अपने सब जेवर रेहन रख दिये। पांच पाउन्ड लेकर घर लौटी और उसी के साथ कुछ काम करने को भी ले आई। शाम को जब लॉरडेल मिला तो वह लूसी के इस प्रेम पर मुग्ध हो गया कि उसने अपने सब जेवर रेहन रख दिये थे और उसकी घड़ी अपने से अलग नहीं की थी। लूसी के काम से लोग प्रसन्न थे, काम मिलता था और दाम भी मिलते थे। अच्छी तरह दिन कटने लगे। लड़का बड़ा हो रहा था और उसे देख कर माँ बाप फूले नहीं समाते थे। लूसी अपने साथ पति के बिना मकान के बाहर नहीं जाती थी। रास्ते में दो एक बार कर्नल विढम और जिराल्ड रेडवर्न मिल चुके थे। उनकी निगाहों से उनके इरादों का उसे पता चल गया था।

समय बीतता गया, फिर बड़ा दिन आया। लॉरडेल ने अपनी पत्नी और लड़के के साथ आनन्दोत्सव मनाया। रात को उसने अपनी पत्नी से कहा, " प्रिये, कभी कभी तुम मुझे व्याकुल दिखलाई देती हो। जो मेरे साथ अन्याय हुआ है, उसको तुम अभी तक भूल नहीं पाई हो। आज तुम्हारे साथ जो मुझे सुख और शांति प्राप्त हुई उससे मेरे भावों और विचारों में एक बड़ा परिवर्तन हो गया है। प्रिये, अब जाता हूँ।"

उस रात को लूसी की आँखें हर्षाश्रु से प्रायः पूर्ण हो गई थीं।

२१

परिस्थिति में परिवर्तन

बड़े दिन को बीते तीन महीने हो गये। एक रोज सुबह लूसी बीनने का काम लिये वापस आ रही थी कि रास्ते में जिराल्ड रेडवर्न मिल गया। सामने खड़ा हो कर कहने लगा, "लूसी, आज तुम कितनी खूबसूरत मालूम हो रही हो। तुमसे मिले बहुत दिन हो गये।"

लूसी बच कर निकल जाना चाहती थी, पर यह देख कर कि गली में से कोई आ जा नहीं रहा है, उसने इसका हाथ पकड़ लिया और कहने लगा, "उस सिपाही से घबरा गई होगी, अब मेरे पास आ जाओ।"

"मेरा हाथ छोड़ दो!" लूसी ने गुस्से में कहा।

जिराल्ड मदान्ध होकर बोला, "आज इस तरह नहीं जाने दूँगा। बहुत दिनों से तुम मुझे जला रही हो। आज मैं तुमसे कुछ बातें किया चाहता हूँ।"

हाथ को झटके से छुड़ा कर लूसी जल्दी जल्दी अपने घर की ओर लपकी। घर पहुँच कर कमरा अन्दर से बन्द कर लिया—उसके स्वाभिमान को गहरी चोट लगी थी।

रुपया सब कुछ कर सकता है। देखते-देखते जिराल्ड

रेडवर्न को पल्टन में एक ओहदा मिल गया। सफल न होने से वह अपने दिल में सोचता कि उसका लूसी से ऐसा प्रेम नहीं था कि उसके साथ शादी कर लेता, यद्यपि वह यह भी जानता था कि इस तरह वह अपने को धोखा दे रहा था। वह डेविस पर नाखुश था कि उसने अपनी लड़की की शादी जालसाजी से इसके साथ तै की थी।

जिराल्ड के बहुत पता लगाने पर भी आज के पहले उसे यह नहीं मालूम हो पाया था कि लूसी कहाँ रहती है। प्रेम यद्यपि जाता रहा था, परन्तु उसकी जगह कामवासनाओं ने ले ली थी। आखों पर वासना के परदे पड़े हुए थे और वह ख्याल करने लगा था कि कोशिश करने पर उसे सफलता अवश्य मिलेगी।

परेड खत्म होने के बाद उसने सादे कपड़े पहने और लूसी के मकान को तरफ चल दिया। चुपके चुपके जीनों पर चढ़ा और जा कर दरवाजा खटखटाया। अन्दर से नियमानुसार लूसी ने कहा, "आइये।"

वह कमरे के अन्दर गया और दरवाजा बन्द कर बोला, "कहो मिसेस लॉस्डेल, बुरा न मानना, मैं तुमसे कुछ बातें किया चाहता हूँ।"

गुस्से से लूसी का चेहरा लाल हो गया और वह बोली, "जो मुझे कहना है, उसे भी अच्छी तरह सुन लो और समझ लो। मैं यह नहीं चाहती कि इस घर में शोरगुल मचे। अगर तुमने नहीं माना तो यही होगा कि मेरे पति के कानों तक अवश्य यह

पहुँचेगा। मैं उनके आने की राह देख रही हूँ। अगर वह आ गये तो तुम जानते हो कि तुम्हारा स्वागत कैसा होगा। तुम उनके अफसर हो; तुम उनसे बदला चुकाओगे। मैं साफ तुमसे कहे देती हूँ कि चाहे जो कुछ हो, मैं अपनी इज्जत पर धब्बा नहीं लगने दूँगी। अभी तक मैं अपने गुस्से को रोकती रही, परन्तु अब फिर कहती हूँ कि यहाँ से चले जाओ।"

जिराल्ड मीठी मीठी बातें कर रहा था और लूसी बराबर नाखुश हो कर कह रही थी, "यहाँ से निकल जाओ।"

अन्त में जिराल्ड "तेरा सौंदर्य्य अनुपम है!" कहते हुए आगे बढ़ा और उसके गले में हाथ डाल दिया। उसने शक्ति भर कोशिश कर अपने को छुड़ा लिया और दरवाजा खोल कर मदद के लिये जोर से चिल्लाने लगी। इतने ही में लाँस्डेल आगया और कमरे में आते ही समझ गया कि क्या नाटक खेला जा रहा था। उसने क्रोध से काँपते हुए जिराल्ड से कहा, "बस, यहाँ से चले जाओ, नहीं तो ठुकराते हुए जीने से नीचे गिरा दूँगा!"

जिराल्ड को अपने ओहदे का अभिमान था। तन कर बोला, "जानते हो, किससे बातें कर रहे हो!"

"अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं एक ऐसे व्यक्ति से बातें कर रहा हूँ जिसका न कोई सिद्धान्त है और न चरित्र।"

"अच्छी बात है!" कहता हुआ जिराल्ड चला गया।

उसके जाने के बाद लूसी अपने पति से कहने लगी, "पता नहीं यह कम्बख्त अब क्या करेगा।"

"जल्दी तो कुछ नहीं होगा," लॉस्डेल ने कहा, "अभी कुछ करने की हिम्मत खुद उसकी भी नहीं पड़ेगी—वह जानता है कि इसमें उसकी बातें भी तो खुलेंगी।"

लूसी ने शुरू से आखिर तक सब किस्सा कह सुनाया। वह अपने पति को शान्त रखने का प्रयत्न कर रही थी, परन्तु उसकी आँखों से क्रोध की ज्वालायें निकल रही थीं।

कई सप्ताह बीत गये परन्तु लॉस्डेल फिर प्रसन्नचित्त नहीं हुआ। एक रोज लूसी ने पूछा, "प्रिय, बात क्या है जो इतना उदास रहते हो। क्या कोई ऐसी बात है जो मुझसे कह नहीं सकते हो।"

लॉस्डेल ने कहा, "सहते सहते परेशान हो गया हूँ और अब सहने की ताकत भी नहीं रह गई है। जहाँ कहीं मुझे जिराल्ड मिलता है "कुत्ता" या "बदमाश" कहता है। मेरे हर एक काम में ग़ल्ती निकालता है। कहाँ तक गुस्से को दबाऊँ। ऐसा मालूम होता है कि मैं पागल हो जाऊँगा।"

लूसी समझाने लगी। प्रेम पूर्ण दृष्टि से देखते हुए उसने कहा, "तुम देवी हो, परन्तु तुम भी इन अपमानों को हमेशा नहीं बर-दाश्त कर सकती हो।"

कई हफ्ते गुजर गये। फौज में रोज नये अत्याचार का सामना लॉस्डेल को करना पड़ता था। वह और भी दुखी होता जाता था। पति और पत्नी एक दूसरे को एक दूसरे से अधिक दुखी पाते थे।

अंत में लॉस्डेल और लूसी ने यह निश्चित किया कि यहाँ से अब बोरिया बँधना उठाना चाहिये। लूसी को मालम था कि दूसरी दफे भागने का क्या परिणाम हो सकता है, परन्तु यह सोच कर उसका कलेजा मुँह को आ जाता था कि अगर यहाँ रहे तो इस दुख में इनकी जान पर बन आयेगी। दिन तय हो जाने पर लूसी ने कहा, "यह वही तारीख होगी जिसमें तीन साल पहले तुम भागे थे।"

"हाँ, तुमको खूब याद रही," लॉस्डेल ने सोच करके कहा, "महीना तो वही अगस्त का है और तारीखों में भी बहुत फर्क नहीं है—पहले चौबीस तारीख थी और अब की दफे बाईस है। क्या तुम्हें कुछ अशुभ भावनायें हैं?"

"जब तक मैं तुम्हारे साथ हूँ, मुझे कोई डर नहीं है।" लूसी ने विश्वास दिलाते हुए कहा।

सामान जहाज से भेजने का इंतिज़ाम कर दिया गया और लूसी अपने लड़के को लेकर नाव से नदी के उस पार पहुँच गई। वहीं शाम की परेड खत्म करके लॉस्डेल खिसक आया और कपड़े बदल कर घोड़ा गाड़ी में अपनी बीबी और बच्चे के साथ चल दिया। लंदन पहुँच कर उन्होंने फिस्बरी चौराहे पर एक मकान किराये पर लिया और उसी में रहने लगे।

२२

नई परिस्थिति

लाँस्डेल ने अपना नाम बदल कर राबिसन रख लिया था। उसने लड़कों के पढ़ाने का एक स्कूल खोला और लूसी हाथ से बीनने का काम करने लगी। दोनों को अच्छी आमदनी हो जाती थी। दिन सप्ताहों में, सप्ताह महीनों में, और महीने सालों में परिवर्तित हो गये। इस तरह तीन साल बीत गये और धीरे धीरे डर भी घटता गया, लेकिन लाँस्डेल अखबारों में पलटन का हाल जरूर पढ़ लेता था। अब उसकी पल्टन पोर्टस्मिथ से मैंचिस्टर भेजी गई थी। कर्नल विंढम अब भी उसका बड़ा अफसर था और जिराल्ड रेडवर्न अब कप्तान था।

तीन साल खत्म होने के बाद एक दिन लाँस्डेल किसी जरूरत से अपने एक विद्यार्थी के साथ किसी काम के लिये बाहर गया था। बड़े डाकखाने के पास उसे किसी की पहचानी हुई आवाज़ सुनाई दी। मुड़ कर देखा तो वेट्स नाई दिखलाई दिया। इसने सोचा कि अब की दफे दूसरी तरकीब से काम लेना पड़ेगा, सीधी उँगलियों से घी निकालने की कोशिश करना व्यर्थ है। वह चुप रहा। पर भय सब कुछ करा लेता है और फिर इतना बड़ा भय—लाँस्डेल ने यही तय किया कि पहले वह बोलेगा।

उसने कहा, "मैं ख्याल करता हूँ कि तुम मुझसे फिर बातें किया चाहते हो, लेकिन बातें यहाँ कैसे हो सकेंगी। इसमें तुम्हारा ही फायदा है कि यहाँ तुम मेरा नाम न लो।"

"आगे बढ़ो और मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।" बेट्स ने मुँह बना कर कहा।

लाँस्डेल डाकखाने के बाहर निकल आया और एक शराब की दूकान के सामने खड़ा हो गया। बेट्स बोला, "अब की दफे अपने घर ले चलो। वहीं पर सब बातें होंगी।

"जो तुम चाहते हो, वह नहीं होगा। तुम्हें मैं अपना घर नहीं दिखा सकता!" लाँस्डेल ने दृढ़ता से कहा।

"लेकिन जो तुम चाहते हो, वह भी नहीं होगा।" बेट्स ने भी उसी स्वर में जवाब दिया।

"अगर मैं तुम्हारा कहना न मानूँ तो...?" लाँस्डेल ने पूछा।

बेट्स ने पुलिस के कान्सटेबिल की ओर संकेत किया जो उधर से कहीं जा रहा था।

लाँस्डेल ने दुखी होकर कहा, "तुमसे और उम्मीद की ही क्या जा सकती है, लेकिन यह तो बतलाओ कि मैंने तुमको क्या नुकसान पहुँचाया है जो तुम मेरे खून के प्यासे हो रहे हो। तुमको घर पर कैसे ले चलूँ। तुम्हें देख कर मेरी पत्नी को बहुत दुख होगा। उसके साथ भी तुम्हारा पैशाचिक व्यवहार रहा है।"

बेट्स ने कठोर स्वर में कहा, "मुझे यहाँ खड़े खड़े बातें लड़ाना पसन्द नहीं है। मैंने कह दिया है कि मैं खुद तुम्हारे घर

पर चल कर देखूँगा कि तुम किस हालत में हो और मुझे क्या दे सकते हो। पहले तुमने मुझे बेवकूफ बना कर सिर्फ पचास ही गिन्नियाँ देकर टाल दिया था। यह भी न हुआ कि एक दो गिन्नियाँ और दे देते कि घर पहुँचने का खर्चा निकल जाता। अब की दफे उसकी कसर पूरी किया चाहता हूँ।"

"अपनी नीचता पर ध्यान नहीं देते हो।" लॉस्डेल ने तीखे स्वर में उत्तर दिया, "मुझसे ही रुपया लिया और मुझी को पकड़वा दिया।"

बेट्स कहने लगा, "अगर इस तरह की बातें करने से सड़क पर एक भीड़ जमा हो जाय तो मेरी खता नहीं है। मैं बराबर कह रहा हूँ कि यहाँ खड़े न रहो और आगे बढ़ते चलो। अगर फिर कुछ टेढ़ी-मेढ़ी बातें कीं तो अभी पुलिस से पकड़वा दूँगा।"

शराब की दूकान से एक कान्सटेबिल बाहर निकल रहा था। उसने सुन लिया और पूछा, "पुलिस क्या ?"

"कुछ नहीं, यों ही इनसे बातें कर रहा था।" बेट्स ने बात बना दी।

लॉस्डेल और भी डर गया और नाई को साथ लेकर चल दिया। वह रास्ते भर सब बातें अपने मतलब की करता रहा, "अगर अच्छी रकम तुम मुझे दे दो तो मैं कभी जबान न खोलूँ। मुझे बड़ा दुख हुआ था जब मैंने सुना कि तुमको कड़ी सजा मिली थी।"

लाँस्डेल ठहर गया और मुड़ कर उसने कहा, "अगर फिर ऐसी बातें कीं तो नतीजा चाहे जो कुछ हो, तुम अपने पैरों घर नहीं लौट पाओगे।"

बेट्स ने देखा कि उसकी भी कुशल इसी में है कि चुप रहे। उसने फिर रास्ते भर जबान नहीं खोली।

लाँस्डेल उसे लिये हुए मकान पहुँचा। कमरे में पहुँचते ही वह इस तरह से कुर्सी पर बैठ गया जैसे वही मकान का मालिक हो और बहुत ग़ौर से इधर-उधर देखने लगा। लाँस्डेल ने लूसी को थोड़ा अलग हटा कर धीमे स्वर में सब किस्सा कह सुनाया।

बेट्स बोला, "इस प्रकार कनफुस्कियाँ करना ठीक नहीं। जो कुछ कहना हो, मेरे सामने कहो।"

"अगर यहाँ भी असभ्यता से बातचीत की तो याद रक्खो, तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा।" लाँस्डेल ने गुस्से को बहुत रोक कर कहा, "मैं फौज से भाग आया हूँ या चाहे जो कुछ किया हो, लेकिन यहाँ इस मकान का मालिक मैं हूँ। कहो, कितना माँगते हो।"

लूसी डर गई और अपने पति को समझाने लगी कि दुष्ट को रुष्ट न करो।

कमरे में चारों तरफ निगाह दौड़ा कर हर एक सामान को अच्छी तरह देखते हुए बेट्स कहने लगा, "मकान में छ कमरे हैं। सामान भी है। चालीस पौंड से कम इसका सालाना किराया

न होगा। जब मकान पर इतना खर्च किया गया है तो बचत भी अच्छी होगी। तो अच्छा, दो सौ पौंड तुम मुझे दो और अपने को सुरक्षित समझो।"

वास्तव में कुल सौ पौंड इन लोगों के पास थे। लॉस्डेल सौ पौंड भी देने पर राज़ी नहीं था और बेट्स दो सौ पौंड से एक पैसा भी कम लेना पसन्द नहीं करता था। लॉस्डेल कहने लगा, "मैं तुम्हें दो हज़ार पौंड भी दे दूँ लेकिन तब भी उन बीस पौंडों के लिये तुम मुझे पकड़वा दोगे जिनके देने के लिये फ़ौज वालों ने अखबारों में इनाम प्रकाशित किया है।"

लॉस्डेल बिगड़ रहा था और लूसी समझा रही थी। कभी कभी बेट्स रूठ कर चलने के लिये तैयार हो जाता था। जब उसने देखा कि दो सौ पौंड की उम्मेद नहीं है तो अखीर में कहने लगा, "अच्छा, अगर दो सौ पौंड तुम्हारे पास नहीं हैं तो सौ पौंड अभी दे दो और बीस पौंड हर साल दे दिया करो।"

मामला तय हो गया। लूसी रूपया लेने दूसरे कमरे में चली गई। बेट्स ने तब कहा, "मामले की बात तो खत्म हो गई। अब गाँव की बड़ी मज़ेदार खबर तुम्हें सुनाऊँ। डेविस ने डाक्टर कालीसिंथ की दूसरी लड़की मिस किटी से शादी कर ली है। यह शादी बड़ी बेजोड़ है, बुड्ढा बहुत पछताता है...।"

अपनी पत्नी को आते देख लॉस्डेल ने उसे बीच ही में रोक कर कहा, "अब चुप हो जाओ, लूसी आ रही है।"

रुपया पा जाने पर वेट्स ने कहा, "तुमने मुझे शराब पीने के लिये भी नहीं पूछा।"

लाँस्डेल ने कहा, "कहीं रास्ते में पी लेना। दूसरे के रुपये से पीने में बड़ा लुत्फ आयेगा।"

वेट्स ने रुपये लिये और जबान न खोलने के झूठे वादे करता चलता बना।

लूसी ने जब अपने पिता का हाल सुना तो उसने कहा, "अगर मेरे पिता को इस शादी से आनन्द मिले तो मुझे हर्ष होगा। जब हम सब लोग दूसरी जगह पहुँच जायँगे और अगर तुम मुनासिब समझोगे तो मैं वहाँ से अपने पिता को खत लिखूंगी।"

लाँस्डेल और लूसी ने तय किया कि अब उन लोगों को यहाँ से भी कहीं और चले जाना चाहिये। बसा बसाया घर और लगी लगाई रोजी छोड़ने में किसे दुख नहीं होता, लेकिन मजबूरी थी।

सब इंतजाम ठीक हो जाने पर यह लोग चल दिये। दिल में डर लगा था कि कहीं पहले की तरह फिर चलने के समय आफत न आ जाय। लेकिन अब की दफे कुछ नहीं हुआ। डोवर से जहाज पर सवार हुए और दूसरे दिन फ्रांस के राज्य कैले में वे पहुँच गये।

२३

कैले

पहले दो तीन रोज लाँस्डेल सपरिवार एक होटल में ठहरा। वहीं से पता लगाया कि कौन सा काम उसे मिल सकता है। यह वह समय था जब फ्रांस का रोजगार बढ़ रहा था और लोगों को अंगरेजी सीखने की आवश्यकता हो रही थी। इंगलैंड के सैकड़ों खानदान वहाँ बस गये थे। लैस के बीनने का काम खूब जोरों से चलता था। लाँस्डेल ने एक छोटा सा कमरा किराये पर लिया। इसमें सब तरह की सुविधा थी। दोनों फिर संतुष्ट जीवन बिताने लगे। इसका डर करीब करीब जाता रहा था कि उसको वहाँ कोई ढूँढ निकालेगा। यहाँ भी अपना नाम राबिंसन ही रक्खा और यहाँ भी वही पढ़ाने का काम करने लगा। सब जगहों से ज्यादा उसे अपने काम में यहाँ सफलता हुई—अच्छी आमदनी होने लगी।

थोड़े दिन बाद लूसी ने अपने पति से पूछा कि क्या अब वह अपने पिता को पत्र लिख सकती है। और क्या इसकी आवश्यकता है कि वह न लिखे कि कहाँ से खत भेज रही है। उसने यह भी कहा कि अगर जरूरत हो तो किसी दूसरे शहर से पत्र भेजे। लाँस्डेल की राय थी कि इतने डर और चिन्ता की कोई वजह नहीं है।

लूसी ने पत्र लिखा:—

मेरे प्यारे पिता,

बहुत दिनों के बाद आज आप को लिख रही हूँ। हम सब लोग यहाँ कैले में हैं और यह जान कर आप को हर्ष होगा कि मेरे पति के उद्योग से हम लोगों की आमदनी अच्छी है और हम सब सुखी हैं। सुनने में आया है कि आप ने अपना विवाह कर लिया है। इसके लिये बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि कि आप सुखी होंगे। माता जी से मेरा प्रणाम कह दीजियेगा। मुझे बड़ी आशा है कि मेरे पत्र का आप अवश्य उत्तर देंगे और उसमें दयालुता और स्नेह के ऐसे शब्द होंगे जिनसे मेरा हृदय आनन्द से भर जायगा। बड़ा दिन निकट है—यह वह समय है जब प्रेम के भावों से संसार भर जाता है। पिता जी मुझे अपने प्रेम से वंचित न रखियेगा। मैं आप को विश्वास दिलाती हूँ कि उनसे अच्छा पति मुझे मिल ही नहीं सकता था। वह मुझसे बहुत प्रेम करते हैं और बड़ी कृपा करते हैं। मुझे मिसेस राबिंसन के नाम से खत भेजियेगा।

आप से प्रेम करने वाली आप की पुत्री

लूसी

इस खत के भेजने के दो तीन दिन बाद लाँस्डेल ने सुना कि इंगलैंड का रहने वाला एक पुरुष अपनी स्त्री के साथ कैले में आया है। उसका नाम सीग्रेव है। उसके पास खाने तक को नहीं है और वह समय निकट है कि जब वह मकान

के बाहर निकाल दिया जायगा। लाँस्डेल और लूसी को दया आ गई और दोनों ने तुरंत यह निश्चय किया कि उन लोगों की मदद करनी चाहिये। दोनों चल दिये और बहुत मुश्किल से वह मकान ढूँढ पाये जिसमें दुखी पति और पत्नी रहते थे। बाहर का दरवाजा खटखटाने से एक औरत बाहर निकली। उसके कर्कश और विवाद शील स्वभाव से इस खबर की तसदीक़ होती थी कि अगर मकान का किराया जल्दी न चुका दिया गया तो मकान-मालिक उन लोगों को इस कड़े शीत में मकान के बाहर निकाल देगा। मकान के अन्दर बिल्कुल उजाला न था। कमरे का दरवाज़ा खटखटाने से एक जवान खूबसूरत स्त्री रोशनी ले आई। कपड़े उसके साधारण और मैले कुचैले थे।

"मैं खयाल करती हूँ कि आपही मिसेस सीग्रेव हैं।" लूसी ने अत्यन्त करुणा पूर्ण स्वर में पूछा।

"यह कौन है ऐन?" किसी ने बहुत कमज़ोर आवाज में कमरे के अन्दर से पूछा!

"क्या मिस्टर सीग्रेव बीमार हैं?" लूसी ने पूछा, "हम लोग इस लिए आये हैं कि आपकी हम लोग क्या सेवा कर सकते है?" फिर लाँस्डेल की तरफ़ इशारा करके, "यह मेरे पति हैं, यदि आप आज्ञा दें तो यह मिस्टर सीग्रेव से मिल लें।"

ऐन के बहुत खुशामद करने पर सीग्रेव ने मिलना स्वीकार किया। एक दूसरे को देख कर दोनों चकित हो गये। लाँस्डेल ने पहचाना कि यह कप्तान कर्टनी हैं और उसने भी पहचान लिया

कि यह लॉस्डेल है। कर्टनी के मुँह में जो कुछ आता था, वह बकता जाता था। लॉस्डेल चुप खड़ा था। उसकी समझ में नहीं आता था कि क्या कहे या क्या करे। आया था मदद करने और मिल रही थीं गालियाँ। वैसे ही शब्दों की बौछार वह अपनी पत्नी पर भी करता था। वह अत्यन्त दुखी थी—उसका दुख उस समय अपने लिये नहीं था; वह यही सोचती थी कि यह लोग जो दया करने आये हैं, उसके पति को वह कैसा अकृतज्ञ समझते होंगे। लॉस्डेल आगे बढ़ा और बहुत मधुर शब्दों में कर्टनी से बोला, "मैं जानता हूँ कि सामाजिक दृष्टि से आप की और मेरी स्थिति में अन्तर है, परन्तु विश्वास कीजिये कि मैं इस समय इस उद्देश से आया हूँ कि आपकी जो सेवा कर सकता हूँ, वह करूँ।"

इस नम्रता का भी जवाब उद्दण्डता से दिया गया। बार बार कर्टनी यही कहता था, "मैं इसे पकड़वा दूँगा, यह फौज से भाग आया है, यह बदमाश है।"

ज्यों ज्यों उसकी पत्नी खुशामद करती थी, त्यों त्यों वह और भी चिढ़ता था। ऐसा मालूम होता था कि कर्टनी का मस्तिष्क विकृत हो गया है। लॉस्डेल और लूसी ने इसकी बातों की कुछ परवाह नहीं की और बराबर उसकी पत्नी से पूछते रहे कि जो सहायता वह चाहे, उसके लिये वह लोग तैयार हैं।

"कृपा करके इनका असली नाम कर्टनी प्रकट न कीजिएगा" ऐन ने कहा, "यह अभिमानी बहुत हैं। इन्होंने इरादा कर लिया

है कि जब तक अच्छे दिन फिर न आ जायँ, तब तक अपना असली नाम छिपाये रहें।"

लॉस्डेल नीचे उतर आया और आठ पौंड देकर उसके मकान का सब किराया चुका दिया। बीमार की दवा और पथ्य के लिये भी अच्छी रक़म उसने दी। जब दोनों मकान के बाहर आये तब लूसी अपने पति का हाथ चूम कर बोली, "यह तो जानती थी कि तुम्हारे कितने उच्च और उदार विचार हैं, परन्तु आज की तुम्हारी उदारता ने दिखला दिया कि तुम धन्य हो। ईश्वर तुम्हारा भला करे।"

"तुम भी तो दया की देवी हो," लॉस्डेल ने गद्गद् होकर उत्तर दिया, "कर्तव्य पालन करने का इनाम संतुष्टता है।"

डाक्टर को सीग्रेव को देखने के लिये भेजवा कर दोनों घर लौट आये।

दूसरे रोज़ लॉस्डेल डाक्टर से हाल पूछने गया। उसने बतलाया कि बीमार के बचने की कोई आशा नहीं है। दुराचार से उसका शरीर इतना निर्बल हो गया है कि बीमारी के आक्रमण को सहन नहीं कर सकता। उसकी राय में प्रस्थान का समय निकट है। लॉस्डेल ने डाक्टर को फिर भेजा और कहा कि जो भी हो सकता हो उसे कर दीजिये और घर जा कर लूसी से कहा कि ऐन को सांत्वना देने की आवश्यकता है। तुम वहाँ चली जाओ।

लूसी ने वहाँ जाकर देखा कि कर्टनी में केवल कुछ साँसों की गणना बाकी है। बहुत समझाने-बुझाने पर भी ऐन उस कमरे से बाहर नहीं गई।

पति के पलंग पर झुकी हुई ऐन दुख से रो रही थी। कप्तान के गले में घड़घड़ाहट और भी बढ़ी और फिर घटते घटते बिल्कुल जाती रही। मौत ने अपना काम पूरा कर दिया। ऐन चिल्ला उठी, लड़खड़ाती हुई वहाँ से हटी और जब तक कि लूसी आगे बढ़ कर उसे सँभाले, वह एक कोच पर गिर पड़ी—वह भी इस संसार से चलती बनी।

लाँस्डेल ने अपने खर्च से कफन और दफन का इंतिज़ाम करवा दिया। दोनों का एक ही साथ भूमोत्सर्ग हुआ। डाक्टर की बाकी फीस भी दे दी गई। लाँस्डेल ने इंग्लैंड के प्रतिनिधि को इत्तिला करवा दी कि कर्टनी और उनकी पत्नी के रिश्तेदारों को पता लग जाय।

२४

पत्र

लॉस्डेल और लूसी पर बहुत दिनों तक कर्टनी और ऐन की मृत्यु का असर बना रहा। बड़ा दिन आया और निकल गया। अब लूसी को संदेह हो रहा था कि उसका पिता उसके पत्र का उत्तर देगा या नहीं। उसे आश्चर्य जनक प्रसन्नता हुई, जब एक रोज उसके पास एक खत आया। यह खत मिसेस राबिंसन के नाम से था। लूसी ने जल्दी से खत खोला। यह उसकी सौतेली माँ का था। उसमें लिखा था :—

पैरिस होटल, डोवर
दिसम्बर २९, १८३४

प्रिय लूसी,

इस तरह सम्बोधित करने की क्या तुम मुझे आज्ञा दोगी। तुम्हारे पिता को तुम्हारा खत मिला और अब उनका यह ख्याल है कि तुम्हारे साथ उनका व्यवहार कठोर रहा है। मैं अपनी तारीफ नहीं करती हूँ, लेकिन तुमसे यह कहना अवश्य चाहती हूँ कि जब से मैं इस घर में आई हूँ, तब से मैंने बराबर यह कोशिश की है कि उनके और तुम्हारे बीच जो संशय पैदा हो गये हैं, वह

मिट जायँ। इसमें मुझे सफलता भी हुई है। यदि तुम्हारा पता उनको मालूम होता तो इसके बहुत पहले ही वह तुमको पत्र भेज चुके होते। उन्होंने केवल तुम्हीं को नहीं, वरन् मिस्टर लाँस्डेल को भी क्षमा कर दिया है। तुम्हारे ख़त से उन्हें यह जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम्हारे साथ तुम्हारे पति का व्यवहार प्रेममय है। मैं यह पत्र डोवर से भेज रही हूँ। इधर थोड़े दिनों से तुम्हारे पिता की तबियत अच्छी नहीं रहती थी। इससे मुझे और उनके मित्रों को बड़ी चिन्ता रही। यद्यपि तुम्हारे पिता को यह मालूम नहीं है कि उनकी तबियत इतनी खराब है, तब भी वह बराबर सोचा करते हैं कि उनके जीवन का अन्त अब बहुत दूर नहीं है।

तुम्हारे पिता की बहुत इच्छा थी कि वह कैले जाकर तुम लोगों से मिले और वैसी ही मेरी भी प्रबल इच्छा थी कि तुम दोनों को एक दूसरे के गले मिला कर अपने आँसुओं से दिल धोते देख लूँ। तीन रोज़ हुए जब हम सब घर से चले थे और कल रात को यहाँ, डोवर, पहुँचे। यात्रा की थकान से तुम्हारे पिता का स्वास्थ्य और भी अधिक खराब हो गया है। डक्टर की राय है कि कोई घबराने की बात नहीं है। अब उनको यही लौ लगी हुई है कि मरने के पहले वह तुम्हें और तुम्हारे पति को देख लें। परन्तु वे स्वयं इस समय जल-यात्रा करने से मजबूर हैं। मेरा आग्रहपूर्वक यही कहना है कि चाहे एक ही दिन के लिये हो, तुम दोनों आकर उन्हें देख लो। अभी थोड़ी ही देर हुई जब तुम्हारे पिता कह रहे थे कि जब तक तुम दोनों को वह नहीं देख

लेंगे, उन्हें शान्ति नहीं मिलेगी। ऐसी हालत में मुझे विश्वास है कि आप मेरे कहने को स्वीकार करेंगी।

तुम्हारी प्रेम करने वाली
कैथरीन डेविस

लूसी ने खत पढ़ कर अपने पति को दिखलाया। वह खत पढ़ रहा था और लूसी बहुत गौर से उसका चेहरा देख कर प्रसन्न हो रही थी। जब वह पढ़ चुका तब लूसी ने पूछा, "तुमको कुछ संदेह तो नहीं है। यह तो नहीं है कि कुछ का कुछ सामने आजाय।"

"मुझे अब किसी भय की आशंका नहीं है," लॉस्डेल ने उत्तर दिया, "यदि होती तब भी ऐसे समय में सिवा उसका सामना करने के और क्या करता। तुम्हारे पिता बीमार हैं और उनकी यह अन्तिम इच्छा मालूम होती है कि हम दोनों को अपने प्रस्थान के पहले देख लें। दूसरी बात भय न होने की यह भी है कि जिस पल्टन में मैं था, वह मैंचिस्टर में है—डोवर से मीलों दूर। फिर हम लोगों को वहाँ कौन जानता है।"

लूसी ने पूछा, "फ्रेडी भी चलेगा।"

"जरूर। वह जहाज़ पर बहुत खुश होगा।" लॉस्डेल ने जवाब दिया।

सब तय्यारियाँ उसी रोज़ हो गईं और दूसरे दिन तीनों चल दिये। मौसम अच्छा था। जहाज़ पर कोई तकलीफ नहीं हुई। जहाज सुबह डोवर पहुँचा। लॉस्डेल और लूसी डेविस

को देखने के लिये उत्सुक थे। फ्रेडी को हर एक चीज़ नई मालूम होती थी। वह कूदता फाँदता बाप के सामने चल रहा था। जैसे ही आखिरी जीने पर लाँस्डेल ने पैर रक्खा तो किसी ने उसके कंधे पर हाथ रक्खा और कहा, "तुम मेरी क़ैद में हो।"

लूसी की यह इच्छा हो रही थी कि वह चिल्ला कर रो दे, परन्तु इस डर से कि चारों तरफ भीड़ लग जायगी और उसके पति को और भी लज्जित होना पड़ेगा, वह चुप रही; परन्तु उसकी आहें उसके कलेजे को जलाये देती थीं। मुसाफिर आने जाने में इतने व्यस्त थे कि किसी को पता न चला कि क्या हुआ। लाँस्डेल ने कांस्टेबिल से कहा, "मैं तुम्हें इनाम दूँगा अगर लोगों के सामने मुझे हथकड़ी पहना कर मेरी बे-आबरूई न करो।"

रुपया का जादू चल गया और कान्सटेबिल ने मान लिया। एक हाथ वह पकड़े हुए था और दूसरे से लूसी लिपटी हुई थी। लड़का कभी माता और कभी पिता की ओर देखता था। उसे दुखी, चिंतित और आकुलित देख कर इन दोनों के हृदय फटे जाते थे।

इतने में दो कांस्टेबिल और आये और कहा, "हुक्म मिला है कि इसके हथकड़ी डाल दो—यह खिसक जाने वाला आदमी है।"

"किसका हुक्म?" लाँस्डेल ने पूछा, "यहाँ सामने क्यों नहीं है वह—कायर!"

लूसी अपने पति के गले से लिपट गई और शान्तिग्रहण करने के लिये प्रार्थना करने लगी।

"शान्ति !" लॉस्डेल ने यह शब्द दोहरा दिया, "तूफान से कहती हो कि शान्त रहो। प्रिये, मैं तुम्हें दुखी नहीं देख सकता हूँ। तुम्हारे दुखों का जब ध्यान आता है, तब हृदय को वह चोट लगती है कि तिलमिला उठता हूँ।"

दस गिन्नियाँ देने से लॉस्डेल को हथकड़ी नहीं पहनाई गई। उसने कांस्टेबिलों से पूछा कि क्या वह अपनी पत्नी से थोड़ी देर बातें कर सकता है। मुँह मीठा हो चुका था—उन लोगों ने मान लिया। उसने लूसी से कहा, "देखो, यह मेरी इच्छा भी है कि कल तुम लड़के को लेकर कैले चली जाओ और वहाँ हम लोगों का जो कुछ माल असबाब है, उसे बेच कर मैंचिस्टर आना। इस काम में तुम्हें दो चार रोज़ लग जायँगे। इसी बीच मुझ पर जो गुजरना है, वह गुज़र जायेगा।

लूसी ने रोते हुए कहा, "जो कहोगे, वही करूँगी।"

दोनों फूट फूट कर रोये और एक दूसरे से विदा हुए।

घोड़ा गाड़ी लाई गई उसमें लॉस्डेल बैठाला गया और उसी के साथ कांस्टेबिल भी बैठे। दरवाजा बन्द होने के कुछ ही देर पहले एक और आदमी गाड़ी के पास आया—लैंप की रोशनी चेहरे पर पड़ी; यह वही बेट्स नाई था। वह गाड़ी के अन्दर आने से डरता था। उसने कांस्टेबिलों से पूछा कि कैदी के नज़दीक बैठने में उसे कुछ हानि तो नहीं पहुँचेगी।

"नहीं, इन्होंने वादा कर लिया है कि वह शांतिपूर्वक रहेंगे।" एक कांस्टेबिल ने जवाब दिया।

बेट्स गाड़ी में बैठा और तब तक ज़बान नहीं खोली, जब तक कि गाड़ी दूर नहीं निकल गई। उसके बाद कहने लगा, "कैसी होशियारी से सब काम हुआ।"

लाँस्डेल को इस समय ऐसा गुस्सा आ रहा था कि इस दुष्ट का खून पी ले। उसने अपने को सँभाला और पूछा, "तुम अपने से बातें कर रहे हो या मुझ से ?"

"मैं उसी से बातें कर रहा हूँ जो सुन रहा हो।" बेट्स ने उत्तर दिया, "लाँस्डेल, यह तो तुम भी मानोगे कि तुम इसी योग्य थे।"

लाँस्डेल ने कांस्टेबिलों की ओर देख कर कहा, "जब मैंने शान्त रहने का वादा किया था, तब यह समझता था कि मेरी शांति भंग करने के कारण नहीं उपस्थित किये जायँगे।"

एक कांस्टेबिल ने बेट्स से चुप रहने के लिये कहा।

"अच्छा, मैं उससे बातें नहीं करूँगा," बेट्स ने जवाब दिया।

२५

अपमान की छाप

गिरफ़्तार होने के तीन दिन बाद लांस्डेल को कॉंस्टेबिलों और बेट्स की निगरानी में मैंचिस्टर लाया गया। पहले की तरह काली कोठरी में रक्खा गया और पहले ही की तरह उसे अदालत ने दोषी ठहराया और फिर पाँच सौ कोड़े लगाये जाने का दंड दिया। साथ ही यह भी हुक्म हुआ कि इसे दाग़ कर लोहे से एक चिन्ह बना दिया जाय। कोड़ों की अपेक्षा तकलीफ़ इसमें कम थी परन्तु अपमान कहीं अधिक।

दूसरे रोज़ सज़ा दी गई। फिर पहले का सा दृश्य था—फ़ौज मौजूद थी, अफसर मौजूद थे, लैंगले कोड़े गिन रहा था और इशारा करता जा रहा था कि हाथ हलका न पड़ने पावे। पाँच सौ कोड़ों के साथ अबकी यह भी शर्त थी कि हर एक कोड़ा नौ से गुणा किया जायेगा। इस तरह लॉंस्डेल को चार हज़ार पांच सौ कोड़े लगाये गये। पहले के घाव तो भर आये थे और खाल दौड़ कर मज़बूत हो गई थी, लेकिन एक दफे की फटी हुई खाल वैसी नहीं हो पाती है—वही हाल मांसपेशियों का था; उनमें भी वह दृढ़ता नहीं रह गई थी जो प्राकृतिक होती है। अब की दफ़े खाल जल्दी फटी और मांस की धज्जियाँ पहले से जल्दी

उड़ गईं। इस दफे भी लॉंस्डेल के मुँह से आह नहीं निकली, वह बेहोश अस्पताल उठा लाया गया और दो महीनों के बाद वह उठने वाला हुआ।

अच्छे हो जाने पर साथियों ने सलाह दी कि वह कर्नल विंढम से दाग़ का चिन्ह न बनाये जाने की प्रार्थना करे। लॉंस्डेल ने धन्यवाद देते हुए कहा, "उनसे मुझे कृपा की आशा नहीं है और यदि होती भी तो उनसे याचना न करता। जिसे अपना दुश्मन समझता हूँ, उससे दया की भीख न मांगा!"

१५ मार्च सन् १९३५ को फिर फौज मैदान में खड़ी की गई और उसके सामने लॉंस्डेल लाया गया। कमर के ऊपर तक के कपड़े उतार दिये गये और बग़ल के दो इंच नीचे "डी" अक्षर खाल पर दाग़ दिया गया। "डी" उस शब्द का पहला अक्षर है जिसका अर्थ 'छोड़कर भागने वाला' है। सुइयों से इसमें कोयला पहुँचा दिया गया था। इसकी वजह से वह अक्षर हमेशा काला बना रहता था और दूर से दिखलाई देता था। जिसने चार हज़ार पांच सौ कोड़े खाये हों उसको इसमें क्या कष्ट मालूम होता, परन्तु इसमें अपमान अधिक था और इस वजह से लॉंस्डेल को आत्म वेदना अधिक हुई और वह लज्जा से गड़ गया। इसके छ रोज़ बाद जब फिर अस्पताल से लॉंस्डेल आया तो कर्नल विंढम ने उसे बुला भेजा और सम्बोधित कर बोला, "अब तुम फिर अपने काम पर वापस जा रहे हो। मैं अभी तुमको सचेत किये देता हूँ कि तुमको अपने चरित्र पर से धब्बा मिटाना है।" लैंगले की

तरफ देख कर कर्नल ने कहा, " क्या यह कभी अपना सुधार कर पाएगा ? "

लैंगले ने सर हिला कर संदेह प्रकट किया। कर्नल ने दूसरे अफसर से कहा, " स्काट, तुम इसे बताओ कि यहाँ यह क्यों बुलाया गया है।'"

स्काट ने कहा, "सुनो, तुम १५ मार्च १८२८ को फौज में भर्ती हुए थे और उसी साल २४ अगस्त को छोड़ कर भाग गये थे। इस हिसाब से तीन महीना और एक हफ्ता तुमने नौकरी की। १० जनवरी १८३० को तुम पकड़े गये और १८३२ के २२ अगस्त तक तुम यहाँ रहे। इस तरह साढ़े उन्नीस महीने हुए। फिर तुम छोड़ कर भागे और दिसम्बर ३१, १८३४ तक तुम भागे रहे, जब तक कि डोवर में पकड़े नहीं गये।"

"लैंगले," स्काट ने पूछा, "सब जोड़ कर कितने दिन की नौकरी हुई।"

लैंग्ले ने जवाब दिय, "पच्चीस महीने और दो हफ्ते।"

"या यों कहो, दो साल और छे हफ्ते।" विंढम बीच में बोल उठा।

स्काट ने फिर कहना शुरू किया, " तुम सात साल के लिये भरती हुये थे, जितने दिन तुम भागे रहे, वह नहीं जोड़े जा सकते और तुमको अभी चार साल और दो हफ्ते काम करना है। अच्छा, अब जाओ।"

वहाँ से आ कर लॉस्डेल वर्दी पहन परेड के लिये तैयार

हुआ। अब थोड़ी ही मेहनत करने से उसका दम फूलने लगता था। आज उसे बड़ी खुशी थी—आज उसकी बीवी और बच्चा कैले से आने वाले थे। शाम को उन लोगों के लिये वह मकान ढूँढ़ने गया। ढूँढ़ने से एक अच्छा छोटा मकान मिल गया। शाम को जो घोड़ा गाड़ी डोवर से आती थी, उसमें लूसी और उसका लड़का था। उतरते ही वह अपने पति के गले से लिपट गई—दोनों की जबानें बन्द थीं और नेत्र प्रवाहित थे। असबाब मकान पहुँचाया गया और लड़के को उछलता कूदता देखकर लॉस्डेल का हृदय खुशी से उछल कूद रहा था। अबकी दफे लॉस्डेल के चेहरे पर विषाद की ऐसी गहरी छाप थी जो पत्नी और पुत्र को पाकर भी नहीं मिटी। लूसी कैले में हाथ का काम करके अपना और लड़के का पालन पोषण करती थी। अधिक काम करने की वजह से उसकी तबियत खराब रहती थी।

दूसरे दिन पति और पत्नी में इस विषय पर बातचीत हुई कि अब क्या करना चाहिए। लॉस्डेल कहने लगा, "प्रिये, मेरा इरादा है कि डाकखाने के सब से बड़े अफ्सर को खत लिखूँ कि वेट्स ओकले के डाकखाने में सब के खत खोल कर पढ़ लेता है। अगर यह न करता होता तो उसे कैसे मालूम होता कि हम लोग कैले में हैं।"

"आह, वह प्राण[illegible]क पत्र!" लूसी की आँखों में आँसू आगये और कहने लगीं, "वह पत्र मैंने क्यों लिखा था।"

"इसमें तुम्हारा क्या दोष था।" लॉस्डेल ने समझाया, "हाँ,

जो कुछ मुझे कहना है, वह सुन लो। मुझे अब विना बेट्स से बदला लिये चैन नहीं पड़ेगी। जो कुछ उसने मेरे साथ किया है, उससे दिल में ऐसा जख़्म हो गया है जो समय भी नहीं भर सकता। बार बार यही सोचता हूँ कि मैंने इसका ऐसा क्या बिगाड़ा है जो मेरे पीछे इस तरह पड़ा है।"

"सिवा इसके और क्या कहूँ कि इसकी आत्मा दुष्ट है।" लूसी ने अपने पति को समझाते हुए कहा, "इसकी बदौलत हम लोगों ने कौन से दुख नहीं उठाया और क्या क्या मुसीबतें नहीं झेलीं। परन्तु मेरी विनय यही है कि बदला लेने का विचार छोड़ दीजिये। बड़ी आत्माओं में ऐसे विचारों के लिये स्थान नहीं होता।"

लॉंस्डेल की समझ में कोई बात नहीं आ रही थी। उसने प्रेम पूर्वक अपनी पत्नी से कहा कि वह उसे न रोके। लूसी चुप हो गई और लॉंस्डेल ने एक पत्र डाकख़ाने के बड़े हाकिम को बेट्स के ख़िलाफ़ लिखा और उसे बन्द करके खुद डाकख़ाने में छोड़ आया।

२६

मिस्टर रासर

डाकखाने के बड़े अफसर को ख़त भेजे हुये लॉन्स्डेल को दो हफ़्ते हो गये। एक रोज़ शाम को वेट्स अपने गाँव की चौपाल को गया। दिन भर काम से थक कर लोग वहाँ इकट्ठा हो जाते थे और इधर-उधर की गपशप से दिल बहलाया करते थे। आज उसको यह दिखलाना था कि गाँववालों के खिलाफ़ होने की वह परवाह नहीं करता। वह सोच रहा था कि गांव वालों ने मुझे अलग सा कर दिया है। मामला और आगे बढ़ने से अब रोकना चाहिये। आज ज़रा उनके दिमाग़ों को ठंढा करने की कोशिश करूँगा। वहाँ जाकर थोड़ी शराब पीऊँगा और देखूँगा कि वह क्या कहते हैं। मेरी तरह का आदमी दबाया नहीं जा सकता। अगर उन लोगों ने वकवास की तो दो एक के भेद खोल दूँगा और वह मुँह ताकते रह जायँगे कि यह बातें मुझे कहाँ से मालूम हुई हैं। इतने में चौपाल आ गई। वेट्स ने टोपी सम्हाली, कोट ठीक किया और बहुत शान से चौपाल के अन्दर गया। लोग पहले से बैठे या तो शराब पी रहे थे या सिगरेट और विविध विषयों पर बातें हो रही थीं। वहाँ आज एक और आदमी ठहरा था। उसका गिलास अक्सर खाली

दिखलाई देता था। इस वक्त वह समुद्रशोष बना हुआ था। शराब की दूकान के मलिक ने कहा, "आइये, मिस्टर बेट्स, आप तो यहाँ अपरिचित से हो गये हैं। आज आप को देख कर बड़ी खुशी हुई।"

"मुझे उम्मीद है कि औरों को भी खुशी हुई होगी।" बेट्स ने चारों तरफ निगाह दौड़ा कर कहा और मालिक दूकान से एक गिलास शराब देने की आज्ञा दी। वह भी वहाँ मौजूद था जिसके रुपये ग़ायब हो गये थे और अगर पहले दफे लाँस्डेल ने बेट्स की मदद न की होती तो यह न मालूम कहाँ पहुँच गया होता। बेट्स को देखते ही वह खाँसा-खखारा और लोगों को आखों से इशारा किया। जो एक नया आदमी वहाँ ठहरा हुआ था, उसने भी बेट्स को गौर से देखा। बेट्स ने मालिक दूकान से पूछा, "यह कौन है?"

उसने बतलाया कि वह मिडल्टन से आज ही आये हैं और यहीं ठहरे हैं। बेट्स अपना गिलास लेकर अपनी जगह पर आ बैठा और बोला, "आप लोग दूर दूर क्यों बैठे हैं। मैं समझता हूँ कि सब मेरे खिलाफ हैं।

दर्जी ने शुरू किया, "मिस्टर बेट्स के खिलाफ हमें ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिये। हमने इनके कपड़े बनाये थे और इन्होंने फौरन दाम दे दिये थे।"

बेट्स ने कहा, "सात साल हुए तब आप लोगों ने एक नाई को बुला कर गाँव में बसाया तो था, लेकिन उसे रख नहीं सके।

किसी का मेरे खिलाफ होना कोई सहज बात नहीं है। आप में से बहुत लोग दूसरी जगह जा करके बाल कटवाते हैं और आप ही में से बहुत लोग मजबूर होकर मेरे पास आते हैं। मैं यह अभिमान से कहता हूँ कि मेरे रोजगार पर कोई बुरा असर नहीं पड़ा है।"

मिस्टर शीपवास से न रहा गया। इन्होंने कहा "मैं नहीं जानता कि औरों को क्या कहना है, लेकिन मैं यह समझता हूँ कि शायद मिस्टर वेट्स को उस संदेह को मिटाने में हिचक न होगी जो उनकी तरफ से लोगों को है।"

"क्या संदेह है?" बेट्स ने ऐसे स्वर में कहा कि जैसे वह समझता ही न हो, यद्यपि वह फौरन समझ गया था कि किस तरफ इशारा था।

मिस्टर शीपवाश ने जवाब दिया, "मेरा मतलब यह है कि जो खत डाकखाने से आते-जाते हैं, उनको खोल कर तुम देखते हो।"

"यह बिल्कुल झूठ है।" बेट्स ने मेज पर हाथ पटक कर कहा, "कौन कहता है।"

"मैं कहता हूँ," मिस्टर ममरी, रोटी बेचने वाले ने कहा।

वेट्स ने बगैर हिचक और घबराहट के जवाब दिया, "अच्छा, यह वही पचास पौंड वाला मामला है। क्या मैंने एक ईमानदार की तरह तुम्हारा रुपया नहीं दे डाला? लेकिन हाँ, मुझे भी तो शक होता है कि क्या तुमने रुपया खत में रक्खा था?"

"तो रुपया फिर उस खत में आया कैसे ?" ममरी ने पूछा, "और इसके पहले ही कि मैं अपने बहनोई को रुपया भेजूँ, तुम गाँव में कनफुस्कियाँ करने लगे थे कि मैंने कर्ज़ लिया है। अगर तुम ख़त नहीं खोलते हो तो तुम्हें मालूम कैसे हुआ कि मैंने कर्ज़ लिया था ?"

बेट्स ने तिरस्कार से सर हिला कर जवाब दिया, "जो लोग अपने को अपनी हैसियत से ज्यादा दिखलाना चाहते हैं, उन सब का एक रोज़ नक़ली रङ्ग धुल ही जाता है।"

अब सभों ने अपनी अपनी शिकायतें शुरू कीं। वास्तव में सबके सब खुले थे और सब नाखुश थे। बेट्स ने हार नहीं मानी—चौमुखा जवाब देता रहा। यह हो ही रहा था कि कहीं से डेविस मुख़्तार आ गया। उसे देख कर सब लोग चुप हो गये और उसके लिये एक कुर्सी खाली कर दी गई। उसने चारों तरफ निगाह दौड़ाई और बेट्स को देख कर कहा, "तुम भी यहाँ हो !"

"ग़म ग़लत करने और थोड़ी शराब पीने चला आया था। यह भी देखना था कि जो लोग, आपकी कृपा मुझ पर होते हुए भी, मेरे खिलाफ हैं, वह क्या हमेशा खिलाफ रहेंगे ? इन लोगों ने मुझ पर कुछ दोष लगाये हैं, उन सब को एक साथ जवाब दूँगा।"

गाँव के लोगों में से एक ने बेट्स की तारीफ की और कहा, "शाबाश !"

बेट्स की हिम्मत और बढ़ गई। उसने कहा, "सब को एक साथ जवाब दूँगा।"

"ठहरो!" डेविस ने व्यंग्य पूर्ण भाव से कहा, "तुमको पहले मुझे जवाब देना होगा। मैं यह जानना चाहता हूँ मिस्टर बेट्स, कि तुमने इधर-उधर यह क्या खबर फैलाई है कि मेरी स्त्री ने कपड़े बनवाने वालों की बिलें बेबाक नहीं की हैं। यह ख़बर भी तुम्हारी फैलाई हुई है कि अगर वह जल्दी रुपया नहीं दे देंगीं तो दावे होंगे। मैंने अपनी स्त्री से पूछा था। उसने कहा कि ऐसे खत आए जुरूर थे, लेकिन उनको उसने जला दिया था और किसी से उनके बारे में कुछ नहीं कहा था। मिस्टर बेट्स अब यह बत- लाइये कि अगर यह आप का काम नहीं है तो किस का है?"

"मैंने यह सब मिडल्टन में सुना था।" बेट्स ने जवाब दिया।

"बिल्कुल झूठ!" डेविस ने सख़्त आवाज़ में कहा, "मैं आज ही हिसाब बेबाक करने मिडल्टन गया था। वहीं लोगों ने मुझसे कहा कि उन लोगों में से किसी ने भी इन हिसाबों के बारे में नहीं कहा था। उन लोगों ने यह भी कहा कि मेरी स्त्री के भेजे हुए ख़त जो उनको मिले थे, उनसे पता चलता था कि वह कहीं रास्ते में खोले गये थे। इस बात को ख़्याल करके कि तुमने पहले भी गड़बड़ किया है, मैं तुम्हें दोषी ठहराता हूँ।"

"मैं इनकार करता हूँ।" बेट्स ने जवाब दिया।

गाँव के बैठे हुए लोगों में से एक ने कहा, "इससे काम नहीं चलेगा, साफ़ सफ़ जवाब दो।"

डेविस ने फिर कहना शुरू किया, "मिस्टर बेट्स की बदौलत अब क्या छिपा है कि मेरी स्त्री की फ़जूलखर्ची की वजह से मेरा जीवन सुखी नहीं है। ऐसी बातें मुझे इस जगह नहीं करना चाहिये था, लेकिन उस भेद को छिपाने से क्या फ़ायदा जिसे सब जानते हैं। खैर, मैं आप लोगों से पूँछता हूँ कि क्या मिस्टर बेट्स के हाथ में डाकखाने का काम रहना चाहिये।"

एक ने अपनी यह राय प्रकट की कि एक छोटी सी कमेटी बना दी जाय जो इस मामले की जाँच करे। यह बात पूरी भी न होने पाई थी कि मालिक दूकान कमरे से बाहर दौड़ गया और बेट्स ने खिड़की का पर्दा हटा कर देखा और चकित होकर बोला, " यह तो सर आर्कीबाल्ड की गाड़ी है। इस वक्त दस बजे यहाँ क्या करने आये हैं।"

मिस्टर रासर अभी तक चुप बैठे थे। सर आर्कीवाल्ड का आना सुनकर जल्दी से अपने गिलास की शराब पीकर मुँह पोछ डाला और सिगरेट रख दी। इतने ही में मालिक दूकान, मिस्टर बुशेल, बाहर से वापस आया और इनसे कहा कि सर आर्कीवाल्ड आप से दूसरे कमरे में बातें किया चाहते हैं।

अब लोग आपस में पूछने लगे कि यह मिस्टर रासर कौन हैं। इनके बारे में किसी को कुछ नहीं मालूम था। लोगों ने मिस्टर डेविस से पूछा। इन्होंने कहा, " मैं इनके बारे में उतना

ही जानता हूँ जितना कि आप लोग। अगर इस गाँव में आबाद होने या सर आर्कीवाल्ड से जमीन लेकर खेती करने आये होते तो मुझे जरूर मालूम होता।"

"तो फिर यह हैं कौन ?"

मिस्टर जाडकिंस के इस सवाल का जवाब देने के पहले ही दरवाज़ा खुला और सर आर्कीवाल्ड और मिस्टर रासर ने प्रवेश किया। आप को देखते ही सब लोग उठ खड़े हुए। आप ने कहा, "बैठ जाइये," डेविस को देख कर सर आर्कीवाल्ड ने मुस्करा कर कहा, "मुझे ख्याल था कि आप यहाँ कभी नहीं आते हैं।"

"घर में सुखी नहीं हूँ" डेविस ने दुखी होकर कहा।

"यह और भी बुरा है।" सर आर्कीवाल्ड ने सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा। परन्तु जैसे ही बेट्स को देखा तो आखें चढ़ गईं और नाखुश होकर बोले, "मिस्टर बेट्स, तीन रोज हुए तब मेरे नाम लंदन से एक खत भेजा गया था। उसका पता इस गाँव के डाकखाने तक चलता है। उसमें पाँच पौंड का एक नोट था। उसका कुछ पता नहीं है कि किसने भेजा था। वह खत मुझे नहीं मिला। वह खत कहाँ है ?"

"खत !" बेट्स ने चकित होकर कहा, 'हुजूर की डाक रोज भेज दी जाती है। कल भी गई थी और आज भी। उसी में वह भी होगा।"

"नहीं था, मिस्टर बेट्स !" सर आर्कीवाल्ड ने कड़ी निगाहों

से देख कर कहा। वह निगाहें बेट्स के कलेजे को पार किये जाती थीं, "उस नोट का नम्बर २१७९५ था।"

"यह क्या ? यह नोट तो मेरे पास है।" दर्जी ने विस्मित हो कर कहा, "यह तो वही है जो बेट्स ने मुझे कपड़ों की सिलाई के बिल में दिया था।" उसने जेब से एक मैली नोट बुक निकाली, जिसके साथ कपड़ों के नमूने, नापने वाला फीता, रसीदें और बिलें—पूरा दफ़्तर निकल आया। फिर बेट्स की तरफ देख कर कहा, "इस नोट का भी नम्बर २१७९५ है। अगर यह चोरी का नोट है तो मेरे बनाये हुए कपड़े जो पहने हो, वापस कर दो।"

सर आर्कीवाल्ड ने मिस्टर रासर की तरफ देख कर कहा, "अब अपना काम कीजिये।"

मिस्टर रासर आगे बढ़े और गले के पास कमीज़ पकड़ कर कहा, "बेट्स, तुम मेरी क़ैद में हो।"

बेट्स गिड़गिड़ा कर कहने लगा, "सरकार, यह हुक्म न दें। मैं बरबाद हो जाऊँगा।"

"चुप रह!" सर आर्कीवाल्ड ने झिड़क कर कहा, "तू शैतान है।" और मुड़ कर मिस्टर रासर से कहा, "मेरी गाड़ी ले जाइये और इसे मिडल्टन की हवालात में बन्द कर आइये।"

मिस्टर रासर ने कहा, "अगर आप कहें तो इसकी तलाशी ले लूँ।" यह कह कर उन्होंने इसकी जेबों में हाथ डाल दिये और कुछ कागज बाहर निकाल लाये। उन्हीं में एक ख़त था जिसको देख कर बोले, "यह वही ख़त है जो मैंने आप को लंदन

से भेजा था। इस बदमाश की हिम्मत तो देखिये कि उसे जेब में रक्खे घूमता है। इसी में वह नोट था।"

सर आर्कीबाल्ड ने दरजी से कहा, "यह नोट मिस्टर रासर को दे दो। शहादत की यह एक मुख्य कड़ी होगी।"

"जो इस दुष्ट के मैंने कपड़े बनाये थे, उनके दाम कौन देगा?" दरजी ने पूछा।

"यह कौन जाने।" सर आर्कीबाल्ड ने नाराज़ होकर कहा।

मिस्टर रासर ने शराब पीने के दाम जल्दी से दिये और बेट्स को लेकर रवाना हो गये।

इन दोनों के चले जाने के बाद बहुत देर तक लोग बैठे रहे और यही बातें होती रहीं।

अदालत में मुकद्दमा हुआ। वह नोट डाकखाने के सब से बड़े अफसर का भेजा हुआ था। मिस्टर रासर पुलीस के मुहकमे के थे। उनकी शहादत हुई। गाँव में लोगों ने चन्दा इकट्ठा किया और दरजी भी अदालत गया। उसकी भी शहादत हुई। जुर्म पूरी तरह साबित हो गया। बेट्स को चौदह साल के लिये देश से निकाले जाने की सजा हुई।

देश से बाहर जाने के पहले जब बेट्स जेलखाने में था, तब उसे एक खत मिला। उसमें लिखा था :—

मैंचिस्टर, मई ६, १८३५]

"मैंने अखबारों में तुम्हारे मुकद्दमे का सब हाल पढ़ा है। मुझे तुमसे बदला चुकाना था और मैंने बदला ले लिया है। मैंने

ही डाकखाने के बड़े अफसर को इत्तिला दी थी कि तुम सब के खत खोलते हो और गड़बड़ करते हो। अब चौदह साल हथ-कड़ियाँ पहनना। अरे दुष्ट, तूने मेरे साथ क्या बुराई नहीं की है! तेरी ही वजह से मैंने वह दुख उठाया है और वह सजा भुगती है कि जिसे याद करके दिल दहल जाता है। मुझ पर जो गुजरना था, वह गुजर गया और तुझ पर जो गुजरने वाला है, वह अब शुरू होगा। जब सख्त गर्मियों में या खूब बरसते हुए पानी में काम कर रहे होगे और ऊपर से एक कठोर हृदय ओवर सियर के कोड़े पड़ रहे होंगे, तब तुझे ख्याल आयेगा कि अपने दुष्ट कर्मों का उचित फल मिल रहा है। तेरे लिये यही सजा मुनासिब थी।

फ्रेडरिफ लॉन्स्डेल

२७

मुख्तार की बीबी

नेट्स के मुकद्दमे के थोड़े ही दिनों बाद जिराल्ड रेडवर्न छुट्टी मनाने अपने घर आया। वही पुरानी चाल उसकी थी। वही शराब में मस्त रहना और वही चरित्र रहित जीवन। इसी उमर में चेहरे का रंग पीला पड़ गया था और शरीर निर्बल हो गया था। एक रोज माँ ने वर्दी पहना कर देखा तो खुश हो गई। प्रेम के आँखें नहीं होतीं—उसकी निगाह में जिराल्ड पहले से ज्यादा अब तन्दुरुस्त था। जिराल्ड के आने के दूसरे दिन उसकी माता और पिता आपस में बातें कर रहे थे। सर आर्कीबाल्ड ने अपनी पत्नी से पूछा कि उसकी जिराल्ड के बारे में क्या राय है?

"तुम्हारी बातों से तो मैं डर गई!" लेडी रेडवर्न ने कहा, कल जब मैंने उसे वर्दी पहनाई थी तब कितना रोबीला मालूम होता था। गालों पर सुर्खी जरूर कुछ कम है, लेकिन वह यहाँ थोड़े दिन के रहने से आ जायगी।"

"और घर से वापस जाते ही फिर जाती रहेगी!" सर आर्की ने कहा, "हम लोगों की आँखों पर परदे पड़े रहे जो अभी तक नहीं देख पाए कि जिराल्ड कुछ तन्दुरुस्त नहीं है। वह तन्दुरुस्ती और दौलत को इकसाँ चौपट करता है।"

"मुझे अफसोस है कि तुम उसके लिये ऐसी राय रखते हो।" लेडी रेडवर्न दुखी होकर कहने लगीं, "अकेला लड़का है और तुम्हारे पास बहुत रुपया है। अगर वह थोड़ा बेकार भी खर्च कर डालता है तो क्या बुरा करता है।"

"थोड़ा नहीं, बहुत रुपया फूँकता है!" सर आर्कीवाल्ड ने कहा, मेरी राय है कि इसको शादी कर देना चाहिये। तब शायद यह ठीक रास्ते पर आए।"

" तो क्या अभी से शादी कर दोगे ? " लेडी रेडवर्न ने पूछा, " पर वह शादी करने वाले आदमियों में से नहीं है। "

"अगर नहीं है तो बनना चाहिये," सर आर्कीवाल्ड ने कहा, "अट्ठाइस वर्ष का हुआ है। फिर शादी का और कौन सा वक्त आएगा। मौका अच्छा है। छ हफ्ते की छुट्टी में आया है, इसी बीच में शादी कर देनी चाहिये।"

लेडी रेडवर्न ने यह सुन कर कि लड़के की उमर अट्ठाईस साल की है, शीशे में उठ कर देखने लगीं कि कहीं दाँतों की पुरानी चमक और बालों की स्याही तो नहीं जाने लगी है। शायद शीशे की शहादत परितोषक नहीं थी—उन्होंने एक लम्बी सांस ली और फिर बैठ गईं। फिर इस विषय पर बातें होने लगीं कि पड़ोस के किस खानदान से शादी हो सकती है। कोई लड़की इस वजह से पसन्द नहीं आई कि किसीके बाल सुर्ख थे, किसी की नाक चपटी थी, किसी के बाप के पास दहेज देने को रुपया नहीं था, किसी को गाने बजाने से रुचि नहीं थी, और किसी के लिये लोगों को

अप्रकट में कुछ कहना था। आखीर में लेडी अडीला क्लाइव पसन्द आईं। तय हुआ कि दोनों माँ और बेटी यहाँ आने और दो चार रोज रहने के लिये निमंत्रित की जायँ। सर आर्कीवाल्ड ने कहा, "मैं जिराल्ड पर यह प्रकट कर दूँगा कि वह लेडी अडीला क्लाइव को प्रसन्न करे और तुम उसकी माँ से बातों-बातों में कह देना कि एक दूसरे के योग्य हैं। हाँ, जेन से यह बातें न कहना; नहीं तो पहले ही से वह गड़बड़ करना शुरू कर देंगी।"

"सर आर्कीवाल्ड, तुम्हारी बहन के स्वभाव से मैं चिढ़ सी गई हूँ।" लेडी रेडवर्न ने कहा।

सर आर्कीवाल्ड अपनी बहिन को बहुत चाहते थे। कहने लगे, "इसमें उनकी क्या खता है। उनकी तबियत नहीं अच्छी रहती, इस वजह से मिजाज कुछ चिड़चिड़ा हो गया है।"

निमंत्रण भेज दिया गया।

अपने मकान के सामने जिराल्ड रेडवर्न जो अब फौज में कप्तान के ओहदे पर था, टहल रहा था। सात साल पहले जब उसकी शादी लूसी से नहीं हो पाई थी, तब से वह डेविस से बोला तक नहीं था। संयोग वश डेविस आज मकान जाने के लिये उसी रास्ते से निकला। उसने टोपी उतार कर सलाम किया परन्तु ठहरा नहीं। "ठहरो डेविस, बहुत दिन हो गये, तब से हम लोगों ने एक बात भी नहीं की है।" जिराल्ड ने डेविस को रोक कर कहा।

डेविस ने कहा, "जब मैंने देखा कि आप मुझसे नाखुश हैं तो मैंने उचित नहीं समझा कि पहिले मैं बोलूँ।"

"या आत्म वेदना से पीड़ित हो।" जिराल्ड ने कड़ी चुटकी ली।

थोड़ी देर के लिये डेविस घबरा सा गया। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या जवाब दे, लेकिन बहुत जल्द सँभल गया और कहने लगा, "मालूम नहीं, मेरी आत्मा मुझे क्यों पीड़ित करती है।"

"क्यों शैतान, क्या मुझे मालूम नहीं है?" जिराल्ड गुस्से में आ गया और ये शब्द उसके मुँह से निकल पड़े, "आज इतने दिनों बाद मैंने तुमसे बोलने की कृपा की है। तू मुझे जाल में फँसाना चाहता था कि लूसी लेडी बन जाय और तू एक शरीफ और बड़ा आदमी कहलाने लगे। अगर ऐसा होता तो लूसी एक मामूली रंगरूट की बीवी न बनती।"

"बस, सरकार, बस!" डेविस ने गुस्से से भराई हुई आवाज में कहा, "मेरी चिन्ताओं को और न बढ़ाइये।"

"तो यह कहो कि तुम्हारा वैवाहिक जीवन सुखी नहीं है।" जिराल्ड ने कहा।

"सच तो यही है कि सुखी नहीं है," डेविस ने सखेद उत्तर दिया, "विवाह के पहले उसका कितना अच्छा स्वभाव था और अब तो वह शैतान की बच्ची मालूम होती है।"

डेविस के विषाद से जिराल्ड को आन्तरिक प्रसन्नता हुई,

परन्तु अपने भावों को छिपा कर बोला, "मैं तुमसे बहुत रोज़ नाख़ुश रहा हूँ। यह मेरा स्वभाव नहीं है कि किसी से कभी न बोलूँ। मैं अभी भूला नहीं हूँ कि मैं तुम्हारी शराब को पसन्द करता था और किस हँसी-ख़ुशी से शाम का वक्त तुम्हारे यहाँ कट जाता था।"

"अगर आप कभी मेरे घर पधारने की कृपा करें तो मैं अपना सौभाग्य समझूँगा।"

जिराल्ड ख़ुश हो गया और डेविस के साथ उसके मकान की तरफ चल दिया।

इस समय दोनों के विचारों में भिन्नता थी—जिराल्ड सोच रहा था कि इसे ख़ूब बेवक़ूफ़ बनाया है। मैं बहुत ख़ुश हूँगा जब मेरे ही सामने यह अपनी स्त्री द्वारा अपमानित किया जायगा।

डेविस सोच रहा था कि अगर मेरे घर में इसका आना-जाना किसी तरह बढ़ जाय तो यह ख़ुद ही शहद की मक्खी की तरह फँस जायगा और मुझे अपनी स्त्री से विवाहोच्छेद करने का मौक़ा मिल जायगा। इनको दोषी ठहराने से अदालत इनसे मुझे अच्छी रक़म दिलवायेगी।

जिराल्ड डेविस की बीवी को पहले ही से अच्छी तरह जानता था। इसकी गणना ख़ूबसूरत औरतों में थी। शादी के पहले जब यह मिस किटी कालीसिंथ थीं, तब जिराल्ड और इसकी बातचीत कहीं रास्ते में आते-जाते होती थी। सामाजिक दृष्टि से दोनों की स्थितियों में बहुत बड़ा अन्तर था और इस वजह से

दोनों का एक दूसरे के घर आना-जाना नहीं होता था। डेविस के साथ जिराल्ड उसके मकान पर पहुँचा। नौकरानी ने दरवाज़ा खोला। यह लूसी की दासी मार्था नहीं थी। लूसी के चले जाने के बाद उसने अपनी शादी कर ली थी और सुखी थी।

जिराल्ड ने हाथ मिलाया और कहा, "मिसेस डेविस, आपसे मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।"

"शुभागमन!" मिसेस डेविस मुस्कराते हुए बोलीं।

"कृपा करके बैठ तो जाइये," डेविस ने कहा, "मैं सायडर शराब ले आऊँ जिसे आप पसन्द करते थे।"

"सायडर क्यों?" मिसेस डेविस कहने लगीं, "घर में और अच्छी शराबें हैं। अलमारी में बिस्किट भी होंगी।"

"धन्यवाद। सायडर ठीक है। मैं इस वक्त वही पसन्द करूँगा," जिराल्ड ने जवाब दिया।

डेविस शराब लेने के बहाने कमरे से बाहर चला गया। यहाँ दिल खोलकर बातें होने लगीं। विषय था डेविस की शिकायतें। जिराल्ड उसके सौंदर्य्य की प्रशंसा करता जाता था और साथ ही साथ उसकी यह भी कोशिश थी कि पति और पत्नी की वैमनस्यता और भी बढ़ जाय। जिराल्ड ने कहा, "अगर आप नापसन्द न करें तो मैं कभी कभी शाम को यहाँ चला आया करूँ।"

"क्या मैंने आपको विश्वास नहीं दिलाया है कि इस मकान के दरवाजे हमेशा आपके लिये खुले हैं।" किटी ने मुस्करा कर

भावपूर्ण दृष्टि से इनकी ओर देखा, "मिस्टर डेविस दो तीन महीनों से गाँव में जो चौपाल है, वहीं चले जाते हैं और देहातियों के साथ बैठ कर शराब पीते हैं। मैं यहाँ अकेली रह जाती हूँ।" कुछ ठहर कर फिर कहने लगी, "मेरी माँ, बहिनें और कभी कभी आप भी रात का खाना खाने यहाँ आते हैं और मेरे मिलने वाले भी कभी कभी आ जाते हैं। इसपर मिस्टर डेविस बिगड़ जाया करते हैं और कहते हैं कि बहुत खर्चा होता है। उनकी ऐसी ही बेतुकी बातें रहती हैं।"

"यह बातें बेशक बेतुकी हैं।" जिराल्ड ने हाँ में हाँ मिला कर पूछा, "क्या तुम इसी तरह साफ साफ कह देती हो?"

"जो मुझे कहना होता है, मैं साफ साफ कह देती हूँ, चाहे आप भी बैठे हों।" किटी अपनी हिम्मत दिखलाने के लिये जोर से बोली।

डेविस पाँच मिनट से पर्दे के पीछे छिपा यह सब सुन रहा था। अब साइडर लेकर सामने आया। किटी ने जो कहा था, उसका समर्थन करने के लिये अपने पति को एक डाँट बताई और पूछा, "शराब लाने में इतनी देर क्यों हुई?"

डेविस ने जवाब दिया, "कुंजी ढूढ़ने में देर लग गई थी।"

"तो फिर कुंजी क्यों खो देते हो? अच्छी तरह से क्यों नहीं रखते।" किटी ने फिर तीखे स्वर में कहा।

जिराल्ड ने शराब पी, डेविस ने दिखावे की वजह से वहीं बैठा रहना मुनासिब समझा। जिराल्ड जब जाने लगा तब उसने

मिसेस डेविस से हाथ मिलाया, जिसमें वह हल्का दबाव था जो अप्रकट भावों को भी प्रकट कर देता है। डेविस से भी हाथ मिलाया और चला गया।

जिराल्ड अपने दिल में सोच रहा था कि अब बदला लेने का अच्छा मौक़ा हाथ आया है—मियाँ और बीबी को खूब लड़ा दूँगा और डेविस ने जो अपने कानों सुना था, उससे वह सोच रहा था कि अवश्य उसे अपने अनुसंधान में सफलता होगी।

लेडी अड़ीला और उसकी माँ, काउन्टेस वर्टन को आये दो एक दिन हो गये थे। जिराल्ड ने पहले भी अड़ीला को देखा था। तब वह केवल १७ साल की लड़की थी। अब वह २० साल की खूबसूरत जवान औरत हो गई थी। तब वह खिलती हुई कली थी, अब खिला हुआ फूल। देखते ही वह जिराल्ड की आखों में समा गई। इस प्रभाव को देखकर जिराल्ड के माता और पिता ने एक दूसरे की तरफ़ देखा और अड़ीला की माँ भी ताड़ गई कि इन लोगों के दिमाग़ में इस समय क्या भाव थे। जेन भी समझ गई कि मामला क्या है और उसके सिकुड़े और मुरझाये हुए चेहरे पर जिस भाव की झलक थी वह सुखकर नहीं थी। अड़ीला में सौंदर्य्य था और जिराल्ड में दुराचारिता।

२८

फूफी जेन

जब से अड़ीला आई तब से जिराल्ड अपने समय का ज्यादा हिस्सा उसी के साथ बिताता था—जहाँ वह बैठती वहीं बैठता, जब टहलने जाती, तब उसी के साथ टहलने जाता, जब वह घोड़ा गाड़ी पर जाती, तब खुद साथ साथ घोड़े पर जाता। इसकी बातों से अड़ीला को अभी तक इसके चरित्र के वास्तविक रंग का पता न चला। एक हफ़्ते के बाद अड़ीला की माँ की कुछ तबियत खराब हो गई और वह अपने कमरे के बाहर कई रोज़ तक नहीं आई। अड़ीला अपनी माँ से बहुत मुहब्बत करती थी। वह भी वहीं उनकी देखभाल में रहने लगी। जराल्ड अब क्या करता, उसे अपने माँ बाप और फूफी के साथ बैठना पसन्द नहीं था। उसने एक रोज़ यह सोचा कि चल कर मिसेस डेविस से थोड़ी देर तक बातें कर आवें। वहाँ गया और दरवाज़ा खटखटाने पर नौकरानी बाहर आई। उससे मालूम हुआ कि मिस्टर डेविस मकान पर मौजूद नहीं हैं। मिसेस डेविस हैं। वह कमरे में गया। मिसेस डेविस एक उपन्यास पढ़ रही थीं। कुछ बोलीं नहीं, मिलाने के लिये सिर्फ हाथ बढ़ा दिया।

"क्यों, यह क्या मामला है?" जिराल्ड ने पूछा, "क्या नाख़ुश हो गई हो?"

"नाख़ुश क्यों होती?" मिसेस डेविस ने जवाब दिया।

"तो फिर बात क्या है?" जिराल्ड ने पूछा।

"बात कुछ भी नहीं, मुझमें भी अभिमान की उतनी ही मात्रा है, जितनी और स्त्रियों में होती है।" मिसेस डेविस ने चिढ़ कर कहा।

जिराल्ड ने कहा, "शायद इस वजह से खफा होगी कि छ सात रोज़ से मैं आ नहीं पाया।"

मिसेस डेविस कहने लगीं, "मकान में मेहमान ठहरे हुए हैं। उन्हीं के आदर सत्कार से फ़ुर्सत नहीं मिलती होगी, वहीं जाइये।"

"किटी, तुम तो सुनती ही नहीं।"

"किटी किसे कहते हो?" मिसेस डेविस ने बिगड़ कर कहा, "तीन चार साल पहले जब मेरी शादी नहीं हुई थी, तब मुझे इस नाम से लोग पुकारते थे। अब मैं एक ब्याही औरत हूँ। यह याद दिलाने के लिये क्षमा चाहती हूँ कि मुझे मिसेस डेविस कह कर सम्बोधित किया कीजिये।"

"किटी कहने के लिये तुमसे इजाज़त माँग ली थी।" जिराल्ड ने कहा।

"पहले दोस्त समझ कर इजाज़त दे दी थी, लेकिन अब

मालूम होता है कि जब आप को कोई काम नहीं होता, तब यहाँ दिल बहलाने के लिये चले आते हैं।"

बहुत मनाने पर मिसेस डेविसकी निगाहें सीधी हुईं और फिर वही हँसी मज़ाक की बातें होने लगीं। बातें करते करते जिराल्ड ने कहा, "मुझे कप्तान जिराल्ड नहीं, खाली जिराल्ड कहा करो।"

मिसेस डेविस ने हँसते हुए जवाब दिया, "अच्छा, जिराल्ड कहा करूँगी।"

"और अगर प्रिय जिराल्ड कहो तो मुझे और भी पसन्द आएगा।"

"अगर कह दिया तो मुझे क्या ख्याल करोगे।" मिसेस डेविस ने पूछा।

"अगर कहा तो वही समझूँगा जो इस कहने के अर्थ होते हैं।" जिराल्ड ने मुस्कराते हुए कहा।

"लेकिन मेरा मतलब वह नहीं है।" मिसेस डेविस कहने लगीं।

११ बजे रात तक बैठे बातें कीं। जिराल्ड पति और पत्नी को लड़ाया चाहता था और इसी ओर उसकी कोशिश थी। किटी जिराल्ड को यह दिखलाना चाहती थी कि घर की मालकिन वह थी और डेविस उसके हाथ का कठपुतला। इतने में किसी ने बाहर से दरवाजा खटखटाया। किटी ने कहा, "लो, आ गये।

परदे के पीछे छिप जाओ और देखो, किस तरह से आड़े हाथों लेती हूँ।"

जिराल्ड जैसे ही परदे के पीछे छिपा कि डेविस झूमते झामते कमरे में पहुँचा। उसे देखते ही किटी बरस पड़ी, "अफसोस, कैसी हालत में आये हो। तुम्हें शर्म नहीं मालूम होती। मैंने कई दफा कहा है कि ऐसी हालत में मेरे सामने न आया करो। कैसे घृणित हो!"

"बस, काफी हो चुका," डेविस ने लड़खड़ाती हुई जबान से कहा, "अब सोने चलो।"

"मैं तुम्हारा हुक्म मानने के लिये नहीं हूँ।" किटी ने गरज कर कहा, "तुम खुद यहाँ से चले जाओ। इस काबिल नहीं हो कि खड़े हो सको।

"सीधी तरह से कोठे पर चलो।" डेविस ने उस आवाज में कहा जिससे मालूम होता था कि आज यह भी अकड़ा हुआ है।

किटी को तो आज जिराल्ड को यह दिखलाना था कि गृह युद्ध में जीत उसके हाथ रहती है। वह कैसे दबती! उसने बिगड़ कर जवाब दिया, "इस तरह मुझ पर जुल्म करने का तुम्हें कोई हक़ नहीं है। आज मैं दिखला दूँगी कि इस घर की मैं मालकिन हूँ।"

"तो फिर आज मैं भी दिखला दूँगा कि मालिक मैं हूँ और तुम्हें मेरा हुक्म मानना पड़ेगा।"

डेविस ने वह शब्द इस दृढ़ता से कहे थे कि किटी समझ

गई कि आज के युद्ध में सफलता प्राप्त करना कोई सहज काम नहीं था।

किटी एक वजह से और भयभीत थी। वह डर रही थी कि कहीं ऐसा न हो कि उसका पति जिराल्ड को परदे के पीछे छिपा देख ले। उसके जान में जान आई जब वह बत्ती लेकर कोठे पर जाने लगी। उसने पूछा, "आ रहे हो?"

डेविस ने कहा, "अभी आ रहा हूँ। नौकरानी बत्तियाँ बुझा देगी।"

जिराल्ड सुन रहा था, किटी जल्दी हार कैसे मानती! फिर तड़प कर अपने पति से कहा, "कोठे पर आओ, तुम्हें अच्छी तरह सिखलाऊँगी कि मुझसे किस तरह का बर्ताव करना चाहिये।"

डेविस कुछ नहीं बोला और पीछे पीछे ज़ीना चढ़ता गया।

जिराल्ड ने परदे के पीछे से बाहर निकल कर नौकरानी से कहा, "देख, अपने मालिक से कुछ नहीं कहना।"

उसने जवाब दिया, "मैं देखती सुनती सभी हूँ, लेकिन बोलती सिर्फ उतना ही हूँ जितने के बग़ैर काम नहीं चलता।"

जिराल्ड ख़ुश हो गया और समझ गया कि रुपया इसका मुँह और भी बन्द रख सकेगा। नौकरानी ने फाटक खोल दिया और यह बाहर चला आया। रास्ते में यही सोचता रहा कि चालाक डेविस मुझे सात साल पहले फँसा कर अपनी लड़की

से शादी कराये देता था—मैं कैसा बाल बाल बच गया। अब इससे बदला लूँगा।

जिराल्ड घर पहुँचा तो रात के बारह बज चुके थे। जब कमरे के पास से निकला तो देखा कि पिता ऊँघ ऊँघ कर एक अखबार पढ़ रहे हैं, माँ कोच पर लेटी हुई जग रही हैं और फूफी जेन जरा हट कर कुरसी पर बैठी हाथ का कुछ काम रही हैं। जिराल्ड के पैरों की आवाज सुन कर उसकी माता ने पूछा, "इतनी रात तक कहाँ थे।"

"जरा मिस्टर आर्डेंस से मिलने चला गया था।" जिराल्ड ने उत्तर दिया।

"तो वह तुमसे मिल कर बहुत खुश हुए होंगे?" जेन ने पूछा।

"बहुत!" जिराल्ड ने कहा।

जेन आँख मुँह सिकोड़ कर बोलीं, "मिस्टर आर्डेंस सर्वव्यापी हैं। वह शाम से यहीं थे, अभी अभी गये हैं।"

बनावटी हँसी हँसते हुए जिराल्ड ने कहा, "अच्छा, यह मेरा अनुमान ही होगा कि मैं वहाँ गया था, इन सब बातों से आपको क्या मतलब? मैं अब लड़का नहीं हूँ।"

"नहीं, नहीं, लड़के नहीं हो—मनुष्य रूप धारी एक पुतले हो।" जेन ने व्यंग्य के स्वर में कहा।

"तुम देखने में बदसूरत और मिजाज की कडुई हो!" झल्ला कर वह कमरे के बाहर चला गया।

सर आर्कीबाल्ड बहुत नाखुश हुए और कहने लगे कि जिराल्ड को इस तरह बातें नहीं करना चाहिये था। लेडी रेडवर्न ने लड़के का पक्ष लिया और बोलीं कि फूफी जेन को भी सवालों का पुल नहीं बाँध देना चाहिये था। अब वह लड़का नहीं है।

जेन ने जवाब दिया, "सवाल करना तुम्हीं ने पहले शुरू किया था। जैसा बर्ताव जिराल्ड ने अभी मेरे साथ किया, उसकी मुझे परवा नहीं है, क्योंकि उसकी शिक्षा उसी ढंग की हुई है।" यह कह कर वह कमरे के बाहर चली गईं।

लेडी अडोला को अब यह पता चल गया था कि जिराल्ड की मंशा क्या थी। तब से वह ऐसे मौके कम आने देती थी कि यह दोनों अकेले साथ हों। पहली बात तो यह थी कि वह एक दूसरे से प्रेम करती थी। दूसरी वजह यह थी कि वह जिराल्ड को नापसन्द करती थी। जहाँ कहीं अब वह जिराल्ड के साथ अकेली हो जाती थी, फौरन वहाँ से हट जाती थी।

दो चार रोज़ के बाद जब वह फिर किटी से मिलने गया तो अपना प्रेम प्रदर्शित करने में उसने कुछ और आगे बढ़ना चाहा, परन्तु किटी ने उसे दृढ़ता से रोक दिया। यह नहीं कि उसे आमोद प्रमोद पसंद नहीं थे, परन्तु बात वास्तव में यह थी कि वह समझ बूझ कर कदम आगे बढ़ाया चाहती थी।

एक रोज़ जेन कमरे में अकेली बैठी थी। इत्तिफ़ाक से जिराल्ड वहाँ जा पड़ा और उन्हें देख कर उल्टे पैरों वापस

आना चाहता था कि उन्होंने कहा, "ठहर जाओ, तुमसे कुछ बातें अडीला के संबंध में कहनी है।"

जिराल्ड बैठ गया। पूछा, "क्या बात है ?"

जेन कहने लगीं, "तुम लेडी अडीला की तरफ बहुत झुके हुए हो, लेकिन यकीन करो कि वह दूसरे से प्रेम करती है। डेढ़ साल पहले लार्ड और लेडी स्टैंस्फील्ड अपने लड़कों और भतीजों के साथ अडीला की माँ से मिलने आये थे। शायद तुम इन लोगों को नहीं जानते हो। लार्ड स्टैंस्फील्ड वैसे ही घमंडी और हठी हैं जैसे तुम्हारे बाप और लेडी स्टैंस्फील्ड वैसी ही हल्की और ओछी हैं जैसे तुम्हारी माँ—हाँ, तुम्हारी माँ से वह बुड्ढी और बदसूरत ज्यादा हैं। उनका लड़का वैसे ही ओछा और बुद्धिहीन है जैसे तुम हो। अडीला से लार्ड और लेडी स्टैंस्फील्ड अपने लड़के से शादी किया चाहती थीं, लेकिन अडीला का उनके भतीजे रेजीनाल्ड हर्बर्ट से प्रेम हो गया। वह बहुत ही खूबसूरत, चरित्रवान और अपने सिद्धान्तों का पक्का है।"

"आप को यह सब कैसे मालूम हुआ ?" जिराल्ड ने पूछा।

"मैं उसी समय की बात कहती हूँ जब कि इसकी इधर-उधर चर्चा हो रही थी।"

"बचपन के प्रेम बहुत दिनों तक नहीं ठहरते हैं।" जिराल्ड ने कहा।

"और तो मैं नहीं जानतीं, लेकिन यह मुझे मालूम है कि

अडीला की निगाहों के सामने हर्बर्ट की तस्वीर हमेशा रहती है।" जेन ने कहा।

जिराल्ड कमरे के बाहर चला गया और जीने पर से नीचे उतर रहा था कि इतने में उसकी माँ मिल गईं। अपनी माँ को दूसरे कमरे में ले जा कर उसने वह सब हाल कह सुनाया जो उसकी फूफी ने कहा था। उसकी मां ने कहा कि यह सब झूठ है। उसने फिर कहा; "जाओ, अडीला और उसकी माँ टहल रहीं हैं। तुम्हें आते देख माँ चली जावेगी और तुमको बातें करने का मौका मिल जाएगा। अडीला की माँ ने उससे सब कह दिया है। तुम देखोगे कि वह तुम्हारी बात मानती है।"

इसी वक्त सर आर्कीबाल्ड हाथ में अखबार लिये हुए कमरे में आये और कहने लगे, "पुलिस के अफ़सर बेट्स को जेलखाने से पोर्टस्मिथ लिये जा रहे थे जब कि वह किसी तरह भाग गया।" अखबार दिखा कर वह बोले, "इसमें सब हाल दिया है। ऐसा बदमाश आदमी मैंने अपनी उम्र में कभी नहीं देखा।"

इस समय जिराल्ड की तबीयत और जगह थी। उसको इससे कोई मतलब नहीं था कि बेट्स भाग गया था।

जहाँ अडीला और उसकी माँ टहल रही थीं, वहाँ जिराल्ड भी गया। थोड़ी देर टहलने के बाद मां थक जाने का बहाना करके मकान को वापस आ गई और दोनों को टहलने के लिए अकेला छोड़ दिया।

एक जगह से डेविस का मकान दिखलाई देता था। अडीला ने पूछा, "यह किसका मकान है ?"

जिराल्ड ने उत्तर दिया, "यह हम लोगों के मुख़्तार का मकान है। कैसा उसमें परिवर्तन आ गया है। पहले उसमें सब वही आदतें थीं जो एक शरीफ़ आदमी में होती हैं। जब से उसने दूसरी शादी की है, बिल्कुल बिगड़ गया है। रोज़ गाँव में शराब पीने जाता है और बहुत पी जाता है। उसकी बीवी गाँव के डाक्टर की लड़की है। उसका भी कुछ अजीब ढंग है। देखने में तो कुछ ऐसी बुरी नहीं है, लेकिन उसका भड़कीले कपड़े पहनना मुझे पसन्द नहीं है।

आखिरी शब्द इस वजह से कहे गये थे कि अडीला समझ ले कि वह सच्चरित्रता की मूर्ति है।

अडीला ने कहा, "मुझे उम्मीद है कि डेविस के विषय में आप अपने पिता से कुछ नहीं कहेंगे, क्योंकि संभव है कि घर के सुखों के अभाव में बाहर थोड़ी देर के लिए वह अपना दिल बहलाने चला जाता हो।"

"नहीं कहूँगा," जिराल्ड ने उत्तर दिया, "ऐसी आपकी कौन सी इच्छा है जिसे पूरी करने के लिये मैं तैयार नहीं हूँ।"

अडीला समझ गई कि जिराल्ड की मीठी मीठी बातों का क्या मतलब था।

उधर से किटी आती दिखलाई दी। ऐसे भड़कीले कपड़े पहने थी जो समयानुकूल न थे—कोई भी आक्षेप कर सकता

था। जिराल्ड की समझ में नहीं आता था कि क्या करे—अगर कुछ भी न बोले तो यह डर था कि कहीं यह नाखुश न हो जाय और अगर बोले तो यह डर था कि अड़ीला के ऊपर शायद बुरा असर पड़े। यह विचार जिराल्ड के दिमाग में आ जा रहे थे कि किटी स्वयं आगे बढ़ी और हाथ मिला कर पूछा, "कप्तान रेडवर्न, मिजाज तो अच्छा है। मुझे भी लेडी साहेबा से मिलवा दीजिये। मैंने आपकी बड़ी तारीफ सुनी है। कप्तान रेडवर्न, मुझे जरूर मिलवा दीजिये।"

जिराल्ड ने एक दूसरे का नाम बतला दिया और दोनों ने हाथ मिलाये।

जब मिसेस डेविस चली गईं तब अडीला को संदेह हुआ कि यह क्या बात है कि मिसेस डेविस जिराल्ड से इस हेल मेल से बोल रही थीं। जिराल्ड ताड़ गया और उस असर को मिटाने के लिये बोला, "यह लोग देहाती हैं। यह नहीं जानते कि किससे किस तरह बातें करनी चाहिये। बाप के पुराने नौकर हैं, इसी वजह से मैं भी तरह दे जाता हूँ।"

बात बिगड़ चुकी थी।

कहीं से घूमते-घामते गाँव के पादरी मिस्टर आर्डेन आ गये। वह लेडी अडीला को जानते थे। इधर-उधर की दो एक बातें करने के बाद उससे कहने लगे, "आप ने देखा, कैसे भड़कीले कपड़े पहने एक औरत इधर से गई है। इसका पति जो कमाता है, वह यह कपड़ों में उड़ाती है।"

जिराल्ड इन बातों से परेशान हो रहा था। उसने बात काट कर कहा, "आप भी तो मेरे मकान की तरफ चल रहे हैं ?"

पादरी साहब किसकी सुनने वाले थे। वह मिसेस डेविस के कपड़ों पर ही आक्षेपों की बौछार किये जा रहे थे। उन्हें लेडी अडीला को यह दिखलाना था कि ऐसे पवित्र विचारों का पादरी शायद ही कहीं हो।

अडीला ने कहा, "अभी कप्तान रेडबर्न कह रहे थे कि मिस्टर और मिसेस डेविस अच्छे आदमियों में से हैं।"

"अच्छे आदमी—निस्सन्देह !" पादरी ने चिढ़ कर जवाब दिया, "पति तो शराब पीता है और इनके कपड़े तो आपने देख ही लिये।"

अडीला का संदेह अब और भी बढ़ गया था। बहुत मुश्किल से पादरी साहब ने साथ छोड़ा और जिराल्ड और अडीला घर पहुँची। रास्ते भर दोनों ने दो ही चार बातें कीं और वह भी मामूली।

मकान पहुँचने पर अडीला अपने कमरे में चली गई। वहीं उसकी माँ भी आ गई और अडीला ने सब हाल कह सुनाया। माँ समझाने लगी कि यह कोई बात नहीं है—संभव है, उसका संदेह निर्मूल हो। फिर आशा प्रकट की, "शादी हो जाने पर जिराल्ड सुधर जायगा।"

जब उसकी माँ चली गई तो अडीला फूट फूट कर रोने लगी। उसके हृदय में रेजीनाल्ड हर्बर्ट की तस्वीर खिंच गई।

२६

प्रेम पत्र

शाम को जिराल्ड रेडवर्न मुख्तार के मकान पर गया। वह किटी को समझाया चाहता था कि जब दूसरे दफे वह उसे लेडी अडीला के साथ देखे तो उससे बात-चीत न करे। वहाँ पहुँचने पर नौकरानी से मालूम हुआ कि मिसेस डेविस कमरे में अकेली हैं। मिसेस डेविस जिराल्ड से नाखुश थीं कि जब वह अडीला के साथ टहल रहा था तब उसने इनसे हिल मिल कर बातें नहीं की थीं। इसके मिथ्याभिमान और गर्व को गहरी चोट पहुँची थी। मुँह फुलाये बैठी थीं। कमरे में पहुँच कर जिराल्ड ने कहा, "बिलकुल वही हुआ जो मैं ख्याल करता था। क्यों निगाहें बदली हुई हैं?"

आज मिसेस डेविस अपने पूर्ण शृङ्गार में थीं—बालों के सँवारने में विशेष ध्यान दिया गया था, अपने सब जेवर पहने हुए थीं और अच्छे से अच्छे कपड़े जो उनके पास थे। वह चिढ़ कर बोलीं, "वाह, कितनी ढिठाई है! अगर आज भी लेडी साहबा के साथ टहलते होते तो बात करना तो दूर रहा, शायद निगाह उठा कर भी न देखते!"

"आज कैसी बहकी बहकी बातें करती हो ?" जिराल्ड कहने लगा।

जिराल्ड तारीफें करता जाता था और वह चिढ़ कर कहती जाती थी, "चुप भी रहिये।"

जिराल्ड ने बालों को छू कर कहा, "कितने खूबसूरत बाल हैं और कितनी अच्छी तरह से सँवारे गये हैं।"

"इस तरह की बातें करने में शर्म नहीं आती ! अभी थोड़ी ही देर पहले कैसी रुखाई दिखाई थी।" किटी ने पूर्ण हाव-भाव कहा।

"अब उसका जिक्र न करो," जिराल्ड ने शरमाते हुए कहा।

जिराल्ड माफ़ी माँग रहे थे और किटी कह रही थी कि यह सब झूठो खुशामद और चापलूसी है।

खिंचाव ढीला पड़ा। जिराल्ड यह कहते हुए, "इसका मुझे प्रमाण मिलना चाहिये कि तुमने मुझे क्षमा कर दिया है।" उठा और किटी को गले से लगा लिया।

दोनों आनन्द में निमग्न थे कि दरवाजा खुला और नौकरानी किसी ज़रूरी काम से कमरे में आई। मिसेस डेविस लपक कर एक कुर्सी पर बैठ गईं और जिराल्ड सर खुजलाने लगा। अब जिस तरह से वह सँभल कर बैठो हुई थी, उससे नाटक के उस दृश्य का अनुमान भी नहीं किया जा सकता, जिस पर कि अभी परदा गिरा था। नौकरानी के चले जाने पर मिसेस डेविस ने नाखुश हो कर कहा, "वाहियात !"

"वह कहीं कुछ नहीं कहेगी," जिराल्ड ने समझाया, "उस रात मुझे परदों के पीछे देख कर इसे ताज्जुब जरूर हुआ होगा।"

किटी कहने लगी, "अच्छा होता अगर वह न देख पाती।"

इसके बाद डेविस के सम्बन्ध में बातें होने लगीं। उसकी बुराई करके यह मिसेस डेविस को चिढ़ा रहे थे। वह चिढ़ी थी ही, और भी चिढ़ती जाती थी। थोड़ी देर बाद वह व्याकुलित होकर कहने लगी, "मेरी इच्छा है कि मेरा पति ऐसा हो जिसकी इज्जत मैं कर पाती और मुझे यों अकेला छोड़ कर शाम को न चला जाया करता। इच्छा इच्छा ही रह गई।"

जिराल्ड ने पूछा, "यह कैसी बातें कर रही हो।"

मिसेस डेविस ने फौरन जवाब दिया, "मैंने बड़ी बेवकूफी की। नौकरानी क्या ख्याल करती होगी। मेरी आबरू अब उसके हाथ में है। क्या आप मेरा कहना मानेंगे?"

"तुम्हारे लिये मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ।" जिराल्ड बहुत जल्दी बोल उठा।

कुर्सी से उठ कर वह बोली, "कृपा कर आप इस वक्त यहाँ से चले जायँ और दिन में आया करें, जब लोग इधर-उधर होते हैं। मैं बहुत आगे बढ़ गई हूँ लेकिन ईश्वर की कृपा से इतना आगे नहीं बढ़ी हूँ कि पीछे न हट सकूँ।"

जिराल्ड ने डेविस की कुछ बुराई की। उस पर उसने कहा, "कुछ हो, वह मेरे पति हैं, मैं उस गड्ढे के किनारे खड़ी हूँ

जिसमें गिर कर फिर कहीं की नहीं रह जाऊँगी। आप जाने की कृपा करें।"

जिराल्ड ने जब देखा कि वह हँसी नहीं कर रही है और इसी में खुश होगी कि वह चला जाय तो कहा, "तुम्हारी एक कृपा मैं चाहता हूँ। कुछ चीजें तुम्हारे लिये कल मैं भेजूँगा। उन्हें स्वीकार कर लेना। मिडल्टन से जब घोड़ा गाड़ी आती है उस वक्त अपनी नौकरानी को वहाँ भेज देना, जहाँ गाड़ी रुकती है। तुम्हारे नाम एक पार्सल होगा। उसे वह ले आये। अब मैं नहीं आया करूँगा। अगर तुमको कोई जरूरत हो तो मेरे नाम मेरे मकान पर खत भेजवा देना। जाने के पहले तुम्हारे हाथों का चुँबन किया चाहता हूँ।"

मिसेस डेविस कुछ ऐसी घबराई हुई थीं कि वह यही ज़िद करती रही कि आप जाँय। उसने कहा, "अब ऐसी ग़लती कभी नहीं होगी कि जब कभी आप और लेडी अडीला टहल रहे हों तब मैं आप के सामने पड़ूँ। आप को यहाँ आने के लिये भी मैं अब उत्साहित नहीं करूँगी।"

रास्ते भर जिराल्ड यही सोचता रहा कि जो कुछ उसने अभी अभी देखा था, वह केवल हाव-भाव थे या उनमें कुछ वास्तविकता भी थी। दूसरे रोज़ उसने खाने के वक्त सुबह अपने बाप और माँ से कहा कि वह मिडल्टन जायगा। वहाँ उसने कुछ रेशमी कपड़े, एक बहुमूल्य दुशाला और दस्ताने खरीदे और

पार्सल बँधवा कर उसे घोड़ा गाड़ी से मिसेस डेविस के नाम भेजवा दिया। खुद दोपहर तक मकान आ गया।

शाम को जिराल्ड ने लेडी अडीला से टहलने चलने के लिये कहा। वह इनकार ही करने वाली थी कि उसकी माँ ने जाने का इशारा कर दिया। जाने को तो साथ चली गई, लेकिन रास्ते भर चिन्तित रही और बहुत मामूली बातें हुईं। अगर जिराल्ड बातें करता भी था तो वह सिर्फ हाँ या नहीं में जवाब दे देती थी।

पन्द्रह दिन हो गये थे। जिराल्ड किटी से मिलने नहीं गया। किटी सोचती थी कि यद्यपि वह उनके साथ बहुत आगे बढ़ गई थी, जो नामुनासिब था, लेकिन इसमें क्या हरज है कि अगर कभी कभी वह आ कर बातें कर जाया करें। वह यह भी सोचती थी कि उनका प्रेम अवश्य मुझसे ही है। दुनियाँ के दिखावे के लिये वे अडीला से शादी करने वाले हैं। जिराल्ड को बुलाने के लिये कुछ इरादा पक्का सा हो गया। जब उसको ख्याल आया कि उनकी छुट्टी के दिन क़रीब क़रीब पूरे हो आये हैं और थोड़े दिन में वह चले जायँगे तो उसने जिराल्ड के नाम खत लिखा और अपनी दासी के हाथ भिजवा दिया। जबानी जवाब लेकर आई कि कप्तान जिराल्ड आज रात को ७ और ८ बजे के बीच में आवेंगे। किटी जानती थी कि उसका खत भेजना ठीक नहीं हुआ, परन्तु जो कुछ होना था, हो गया; वह जिराल्ड के आने का इंतजार करने लगी।

जिराल्ड नियत समय पर आ गया। रुकावटें मिट गईं और फिर दिल खुल गये। किटी ने पूछा, "न मालूम आप मुझे क्या समझे होंगे जब मेरा खत मिला होगा।"

"खत पा कर मुझे जो खुशी हुई, वह कह नहीं सकता! जिराल्ड ने जवाब दिया।

"अच्छा, यह कहो, तुम्हें मेरी कभी याद आती है?" किटी ने पूछा।

"यह सवाल कैसा?" जिराल्ड कहने लगा, "तुम्हारे हुक्म पर दौड़ते आना क्या याद करने का सुबूत नहीं है।"

किटी ने हँसते हुए कहा, "मैं जानती हूँ कि तुम मुझे थोड़ा पसन्द करते हो, लेकिन लेडी अडीला को बहुत चाहते हो।"

"उससे शादी किया चाहता हूँ।" जिराल्ड ने जवाब दिया, "शादी करना एक बात है और प्रेम करना दूसरी। अगर तुम्हारी शादी न हो गई होती तो तुमसे शादी करता। तुम कितनी खूबसूरत हो।"

बार बार अपनी प्रशंसा सुन कर किटी फूली नहीं समाती थी। जिराल्ड को स्वतंत्रता मिलती जाती थी। उसने हठ करके किटी को गले लगा लिया। इशारों से तो हाँ निकला और मुँह से "नहीं"। फिर वही अड़चन और फिर वही आफत - यह पूछने के लिये दासी कमरे में आई कि क्या खाना ठीक किया जाय। उसने इस तरह से यह पूछा जैसे कुछ अनुचित बात न देखा हो। मिसेस डेविस चिल्ला कर हट गईं और जिराल्ड कुछ

ऐसा हतप्रभ हुआ कि थोड़ी देर तक मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। उसने पाँच गिन्नियाँ दासी को देकर कहा कि अपनी जबान रोके रहे। मिसेस डेविस कोठे पर चली गईं और दासी से कहला भेजा कि जिराल्ड से जाने के लिये प्रार्थना करे। जिराल्ड अपने दिल में यह कहता हुआ चला गया कि किटी उस पर आशिक है। अगर वह बुलाएगी भी तो अब वह नहीं आएगा। यही उसकी सज़ा होगी।

३०

सबेरे का खाना

दूसरे दिन घर के सब लोग और मेहमान खाना खा रहे थे कि इतने में पादरी आर्डेस के आने की नौकर ने सूचना दी। सर अर्कीवाल्ड की आज्ञा से वह अन्दर बुला लिये गये। सर आर्कीवाल्ड ने पूछा, "कोई नई ख़बर है।"

"गाँव भर में सनसनी फैली हुई है।" पादरी ने जवाब दिया, "मुझे कुछ ताज्जुब नहीं हुआ। मैं समझता था कि ऐसी बातों का यही परिणाम होगा।"

सर आर्कीवाल्ड ने पूछा, "बात क्या है, पहले यह तो कहिए ?"

"कुछ नहीं, सिर्फ यही कि आप के मुख़्तार मिस्टर डेविस ने कल रात को अपनी पत्नी को घर से बाहर निकाल दिया।"

यह सुनते ही जिराल्ड के हाथ से चम्मच छूट कर नीचे गिर पड़ा, वह इतना घबरा गया था। किसी ने उसकी तरफ विशेष ध्यान नहीं दिया। थोड़ी देर बाद सर आर्कीवाल्ड ने पूछा, "घर से बाहर निकाल दिया ! बात क्या हुई ?"

लेडी रेडवर्न ने कहा, "रात को घर से बाहर निकाले जाने में बड़ी तकलीफ़ हुई होगी। भीगे पैरों रात को इधर-उधर घूमने से बाई की तकलीफ़ हो जाती है।"

पादरी ने फिर कहना आरम्भ किया, "आप यह समझी होंगी कि रात भर वह इधर-उधर घूमती फिरती रही—नहीं, वह सीधे अपने बाप के घर चली गई और वहीं है।

कुछ बातें डेविस के सम्बन्ध में हुईं कि वह आज कल शराब बहुत पीने लगा है और फिर इस पर सोचा जाने लगा कि अपनी स्त्री को घर से बाहर क्यों निकाल दिया। मिस्टर आर्डेंस भी कोई सन्तोष-जनक उत्तर न दे सके। उन्होंने कहा, "उसके बाप को मुझसे बुला कर सलाह लेना चाहिये था। वह शायद इस मामले को छिपा देना चाहता है।"

दरवाज़ा फिर खुला और नौकर ने एक मोहर किया हुआ लिफ़ाफ़ा सर आर्कीबाल्ड के हाथ में दिया। लिफ़ाफ़ा देखते ही उन्होंने कहा, "यह डेविस की लिखावट है। इससे कुछ हाल मालूम होगा।"

वह लिफाफा खोल कर पढ़ने लगे।

जिराल्ड ने जब से यह सुना कि डेविस ने अपनी स्त्री को घर से निकाल दिया है तब से वह बहुत परेशान था। इस समय उसका दिल यही कह रहा था कि सब आफत किटी पर उसी की बदौलत आई थी। उसको संदेह नहीं था कि यह सब नौक-रानी की करतूत थी। वह चिंतित नेत्रों से बाप की तरफ देख रहा था और वह खत पढ़ रहे थे।

"यह क्या, डेविस ने इस्तीफा दे दिया!" सर आर्कीबाल्ड ने चकित होकर सब की तरफ देखा।

"पढ़ो, क्या लिखा है?" जेन ने कहा

सर आर्कीबाल्ड पढ़ने लगे, "सरकार, परिस्थितियों से मजबूर होकर उस जगह से इस्तीफा दे रहा हूँ जिस पर बहुत दिनों तक काम करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त रहा है। मुझे एक जरूरी काम से मिडल्टन जाना है, वहाँ कुछ दिन मुझे लग जायँगे। इस वजह से प्रार्थना करता हूँ कि मेरी जगह दूसरा इंतजाम कर दिया जाय। मैं अब काम नहीं कर सकूँगा। मैंने इसका पहले ही इंतिजाम कर दिया है कि जितनी जल्दी हो सके, मेरा असबाब मकान से हटा दिया जाय, ताकि मेरी जगह पर आने वाले के लिये मकान तैयार मिले।

आपका आज्ञाकारी
पीटर डेविस

"उसका हिसाब सब ठीक है न?" लेडी रेडवर्न ने पूछा, "कुछ समझ में नहीं आता है।"

"बिल्कुल ठीक है, अभी कल ही उसकी जाँच की थी।"

"थोड़े दिनों में मालूम ही हो जायगा," "जेन कहने लगीं, "इस अखबार में लिखा है कि बेचारे फर्डीनेंड स्टैंफोल्ड की मृत्यु होगई है और अब उस बड़ी जायदाद का उत्तराधिकारी रेजीनाल्ड हर्वर्ट है।"

यह सुनते ही अडीला के चेहरे पर भिन्न भिन्न प्रकार के रंग आते जाते रहे। आखों में आँसू आगये—यह आँसू आशा और अपने प्रेमी के प्रति प्रेम के थे। इन भावों को अडीला की

माँ ताड़ गई। कहने लगी कि अडीला की तबियत अच्छी नहीं है और अपने साथ उसे कमरे में लेती गईं। जिराल्ड उठ कर खिड़की के पास खड़ा हो गया, जैसे वह बाहर कुछ देख रहा हो; लेकिन इस समय उसका ध्यान मिसेस डेविस की तरफ था। उसने अपनी टोपी और छड़ी उठाई और गाँव को चला गया। वहाँ दूकान पर शराब पी और इधर-उधर की बातें कर पता लगाना चाहा कि किस बात पर मिस्टर और मिसेस डेविस की अनबन हुई; लेकिन कुछ पता नहीं चला। जिराल्ड वापस चला आया। जब मकान पहुँचा तब उसकी माँ रास्ते में मिल गईं। अलग कमरे में बुला कर उसने कहा, "तुम घबराओ नहीं, सब बातें ठीक हैं। अडीला की माँ कहती थीं कि कोई अड़चन नहीं पड़ेगी, अगर एक बात का उत्तर तुम संतोषजनक दे पाए। वह यह कि उन लोगों को कुछ शक हो गया है कि मिस्टर और मिसेस डेविस के मामले में तुम्हारा कुछ हाथ है।"

"इस शैतान डेविस से मुझे क्या मतलब है?" जिराल्ड दिखावे का गुस्सा प्रकट करते हुए बोला।

"यही तो मैं भी कहती हूँ," लेडी रेडवर्न ने कहा, "लेकिन तुमने देखा था कि तुम्हारी फूफी किन निगाहों से तुम्हारी तरफ देख रही थीं।"

"मैं उनसे घृणा करता हूँ।" जिराल्ड कहने लगा।

"मैं तुमसे भी ज्यादा घृणा करती हूँ," लेडी रेडवर्न ने जवाब दिया, "अगर अखबार में पढ़ कर वह यह न कहतीं कि रेजी-

नाल्ड हर्बर्ट अब जायदाद के मालिक हैं तो अडीला को इसका पता ही न चलता।"

जिराल्ड ने पूछा, "क्या यह उचित नहीं होगा कि मैं अडीला से बातें करूँ?"

"नहीं, यह काम मेरे ऊपर छोड़ दो," लेडी रेडवर्न विश्वास दिला कर चली गईं।

जिराल्ड समझता था कि लेडी अडीला आज हवा खाने बाहर नहीं जायँगी, इस वजह से घोड़े पर सवारी करने चला गया और जल्दी ही वापस आया। आज रात को खाना खाने के बाद जल्दी ही जल्दी सब अपने अपने कमरों में चले गये—हर एक को कुछ न कुछ सोचना था।

सुबह खाने पर जब सब बैठे थे तब एक खत लेकर नौकर आया और सर आर्कीवाल्ड के सामने रख कर चला गया। उन्होंने कहा, "यह जिराल्ड के नाम है। लिखावट तो फ्लीसवेल वकील की है।"

वह खत उलट पुलट कर देख रहे थे जैसे पत्र के खोलने की उनकी इच्छा हो। "मुझे कुछ भी ख्याल नहीं आता है कि फ्लीसवेल का क्या काम मुझसे हो सकता है।" जिराल्ड ने सगर्व चारों तरफ सर उठा कर देखा।

यह बात ज़रूर थी कि फिजूल खर्च होने पर भी उस पर कर्ज़ नहीं था। बाप से हर महीने अच्छी रकम उसे मिल जाती थी।

"मुझे खत दीजिये; देखूँ, क्या लिखा है?" जेन ने अपने

भाई से खत लेकर भतीजे की तरफ बढ़ाते हुए कहा, "कहो तो मैं ही पढ़ दूँ।"

"आप ही पढ़ दीजिये, मुझे कोई एतराज़ नहीं है," जिराल्ड ने जवाब दिया।

वह पढ़ने लगी :—

नं० ७ हाई स्ट्रीट मिडल्टन
जून १४, १८२५,

महाशय, मिस्टर पीटर डेविस ने आदेश दिया है कि आप के खिलाफ अदालत में मुक़दमा दायर करूँ कि आपने उनकी स्त्री को उनके रास्ते से हटाया है। आप कृपा करके अपने वकील का नाम लिख भेजें जिसके पास समन भेजा जाय।

आपका आज्ञाकारी
फ्रैंसिस फ्लीसवेल

मालूम होता था जैसे सब की चेतना जाती रही हो—सब चित्रवत बैठे थे। थोड़ी देर इस तरह बैठे रहने के बाद अडीला की माँ उठी और उसका हाथ पकड़ कर उठा ले गई और कहा, "हम लोगों को जल्दी ही यहाँ से चलने की तैयारी करनी चाहिये।"

सर आर्कीवाल्ड उठे। अपनी बहिन के हाथ से खत खींच लिया और कहा, "यह तुम्हारे ही द्रोह का फल है।"

जेन ने कहा, "मैं क्या करूँ। जिराल्ड ही ने पढ़ने को कहा था।"

लेडी रेडवर्न जब सचेत हुईं, तब यह ख्याल हुआ कि अडीला की माँ के पीछे दौड़ कर कुछ कहें सुनें, जिराल्ड को बुरा-भला कहें, जेन की आखें निकाल लें और पति को दो चार सुना दें; लेकिन मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला और वे बैठी रह गईं।

जिराल्ड ने दुखी होकर कहा, "लेडी अडीला मेरे हाथ से जाती रही।"

उसे शायद ऐसा पश्चात्ताप अपनी जिन्दगी में पहले कभी नहीं हुआ था।

३१

शराब पीने का स्थान

अब जरा हम लाँस्डेल को देखें जिसे मैंचेस्टर में छोड़ा था। लूसी जानती ही थी कि उसके पति ने बेट्स को खत लिखा है। उसका यह ख़्याल था कि इसके बाद उसको शांति प्राप्त होगी, जैसा कि बदला लेने के बाद प्रायः सन्तोष सा हो जाता है। लाँस्डेल को भी सन्तोष हुआ, परन्तु पीठ पर कोड़ों के निशान और सब से ज्यादा दाग़ कर बनाया हुआ चिन्ह कांटे की तरह उसके दिल में चुभा करता। दाग़े जाने का हाल उसने लूसी से भी नहीं बतलाया था। जब उसने अखबारों में पढ़ा कि बेट्स भाग गया तब से उसे कुछ अनिष्ट की आशंका होने लगी थी और वह अधिक दुखित और चिंतित दिखाई देता था। लूसी के पूछने पर वह बात टाल देता था। लूसी चुप हो जाती थी। उसका ख्याल था कि पलटन में शायद इन पर और लोगों से ज्यादा सख़्ती की जाती होगी।

जब से लूसी मैंचेस्टर आई थी, तब से फिर हाथ का काम करके अच्छा कमा लेती थी और जीवन आर्थिक चिंताओं से रहित हो चला था। लाँस्डेल दुःखित होने पर भी शराब पीने वाले स्थान के नज़दीक तक नहीं जाता था। परन्तु अब उसके भावों

में परिवर्तन हो गया था। अपने लड़के को पढ़ाते-पढ़ाते वह चौंक सा पड़ता था और कमरे में परेशान होकर टहलने लगता था। लूसी समझाने लगती और अपने प्रति उसका अगाध प्रेम देख कर इसे फिर शान्ति मिल जाती थी।

एक रोज़ लाँस्डेल को परेड के पहले मकान आना पड़ा। वह कुछ भूल गया था और उसका ले जाना ज़रूरी था। यहाँ आ करके देखा कि लूसी बेहोश पड़ी है। उसको पहले ख्याल यह हुआ कि वह केवल कुछ देर की मेहमान है, परन्तु जिस स्त्री के मकान में किराये पर लूसी ठहरी हुई थी, उसने कहा कि होश आ रहा है। लाँस्डेल ने खुद भी देखा कि चेतनता बढ़ रही है। वह पागल सा हो गया और लूसी के पास आकर पूछने लगा, "प्रिये, तुम्हें क्या हो गया है, कहो तो?"

"मैं समझती हूँ कि इनकी यह हालत इस खत की बदौलत हुई है जो मेज़ पर पड़ा है।" मालकिन मकान ने कहा।

"हाँ पापा, जैसे ही माँ ने यह खत पढ़ा, बेहोश होकर गिर पड़ी!" लड़का सजल नेत्रों से बाप की ओर देख कर रोने लगा।

लाँस्डेल ने तेजी से खत उठाया। यह बेट्स का खत लूसी के नाम था:—

मिसेस लाँस्डेल, तुम्हारे पति ने मुझे देश से निकलने के लिये जो कुछ वह कर सकता था, किया; लेकिन उन्हें सफलता नहीं हुई। उनका खत मुझे क़ैदखाने में मिला था। मैं इसका बदला लूँगा—उम्र भर उनका पीछा नहीं छोड़ूँगा। यह शायद तुमसे

नहीं कहा होगा—उनसे कहो, जरा वह चिन्ह तो तुम्हें दिखलावें जो दाग़ करके बनाया गया है।

तुम्हारे पति का हमेशा के लिये दुश्मन
बेट्स

पुनश्च,

उनसे कह देना कि इस पर खुश न हों कि लंदन में मुझे वह ढूँढ लेंगे जहाँ से मैं यह खत भेज रहा हूँ।"

इस खत को पढ़ कर लॉस्डेल के मुँह से एक अन्तर्दाहिनी आह निकल गई और आत्मवेदना से वह इतना पीड़ित हो गया कि अगर बेट्स उस समय कमरे में होता तो उसका खून ही पी जाता। उसको अफसोस इस बात का था कि लूसी को जिस दुख और दर्द से बचाने के लिये उसने अपने लज्जायुक्त चिन्ह का हाल नहीं कहा था, वह उस पर प्रकट हो गया और उसकी वजह से उसको वह आघात पहुँचा जिससे वह बेहोश हो गई। होश आते ही वह उठ कर अपने पति के गले से लग गई और उसे सांत्वना देने लगी। "लूसी!" लॉस्डेल ने इतने धीमे स्वर में कहा कि लड़का न सुन पावे, "क्या मेरे ऐसा अपमानित पुरुष तुम्हारे जैसे शुद्ध प्रेम के योग्य हो सकता है?"

"यह क्या कहते हो, यह कैसे शब्द हैं?" लूसी ने साहस और दृढ़ता से कहा, "क्या यह संभव है कि मेरा प्रेम कभी कम पड़ जाय। ईश्वर के लिये अब मुझसे ऐसी बातें न करना। क्यों, आज परेड पर नहीं गये।"

"हाँ, जाता हूँ। अब कोई फिर यह न कहे कि परेड छोड़ कर भाग आया हूँ।" कह कर लॉस्डेल एक दम कमरे के बाहर चला गया। देर हो गई थी, लेकिन इतनी नहीं कि वर्दी पहन कर वह पहुँच न सके।

क़वायद करने में वह बिल्कुल एक मशीन की तरह काम कर रहा था। वह चेतना रहित था—उसका इसे कुछ ज्ञान नहीं था कि कब पैर उठता था और कब हाथ। परेड खत्म हो जाने पर कई साथियों ने कहा, "आज तुम कैसी कवायद कर रहे थे। पैर कैसे पड़ रहे थे। बड़ी खैरियत हुई कि लैंगले देख नहीं पाया। वैसे ही तुमसे बहुत खुश है न! न मालूम आज और क्या बकता झकता।"

"तो क्या तुम समझते हो कि मैं शराब पिये हुए था।" लॉस्डेल ज़रा गर्म होकर बोला।

"खैर, शराब पीने में क्या हर्ज। अपने दुखों और चिंताओं से थोड़ी देर के लिये छुट्टी पाने की ग़रज़ से सभी पीते हैं।" साथी कहने लगे।

लॉस्डेल पूछता जाता था कि क्या शराब से चिन्ता कम हो जाती है। और सब साथी दुखों की केवल यही दवा बतला रहे थे। लॉस्डेल की चिंताएँ उसे पागल बनाये हुए थीं और उसके दिमाग़ की वह हालत थी कि अपनी फिक्रों से बचने के लिये वह सब कुछ करने को तैयार था। उसने अपने साथियों से कहा,

"आओ, चलो आज तुम लोगों के साथ शराब पीकर देखूँ कि क्या मुझे भी आराम मिलता है।"

वहाँ जाकर उसने सब साथियों को पिलाया और एक गिलास खुद भी पिया। शराब गले के नीचे उतरते ही उसे इतनी आत्म ग्लानि हुई कि दाम देकर वह अपने घर की तरफ लपकता हुआ चल दिया। लूसी बैठी बीनने का काम कर रही थी और उसी जगह लड़का बैठा हुआ था। लाँस्डेल ने कहा, "प्रिय लूसी, मैं शराब की दूकान पर गया था और पी भी है। मैं पागल था, मुझे कुछ सूझ नहीं पड़ा। अब कभी ऐसा नहीं करूँगा। आशा है कि तुम मुझे धिक्कारोगी नहीं।"

लूसी की आँखों में आँसू तो भर आये, लेकिन पति की तरफ प्रेम पूर्ण दृष्टि से देख कर उसके हाथ को सहलाने लगी।

३२

गली में

जिराल्ड फौज को वापस न जाता अगर मजबूरी न होती। गाँव भर में यह खबर फैल गई थी कि अडीला ने इन्हें स्वीकार नहीं किया है। अब चारों तरफ कनफुस्कियाँ होती थीं। घर वाले भी नाखुश से थे और जिराल्ड भी खुद लज्जित था। यह सोच कर कि यहाँ से दूर चले जाने में उसकी तबियत बहल जायगी और वहाँ उसकी तरफ उगलियाँ नहीं उठेंगी, शरमाया और चिढ़ा हुआ जिराल्ड फिर फौज को वापस आया। उसक ख़्याल बिल्कुल ग़लत था—यहाँ भी सब लोग यह किस्सा जानते थे और उसकी हँसी उड़ाते थे।

एक रोज़ नशे में चूर लैंगले अपनी बैरक को लौट रहा था। रास्ते में जिराल्ड से उसकी मुलाकात हो गई। उसे किसी पर गुस्सा उतारने की ज़रूरत थी। उसने इसको डाँट कर पूछा, "क्या बहुत ज़्यादा शराब पी गये हो ?"

उसने गिड़गिड़ा कर खुशामद करते हुए कहा, "मैं आपके ऐसे अच्छे अफसर से झूँठ नहीं बोलूँगा। मैं फौरन अपनी ग़लती मान लेता अगर मैं पिये होता।"

"खैर, अच्छा अफसर तो मैं क्या, लेकिन लैंगले अच्छा आदमी है।" गुनगुनाता हुआ जिराल्ड चला गया।

अपनी प्रशंसा सुन कर जिराल्ड खुश हो गया और बहुत संतोष से सिगार पीता हुआ मैंचेस्टर की सड़कों पर टहलने लगा।

लैंगले शराब तो ज्यादा पिये हुए था ही, लेकिन अब जब झूठ बोल कर खटका निकल गया तो नशे ने जोर किया। वह अपनी बैरक के जीनों पर चढ़ने लगा और पैर लड़खड़ाने से नीचे जोर से आ गिरा। उस वक्त लूसी के पास से लाँस्डेल वापस आया था और अपने कमरे में कोठे पर जा रहा था। उसने लैंगले को गिरते देख लिया और जा कर उठाया। लैंगले के पैर काम नहीं देते थे, लेकिन लाँस्डेल, जिससे वह हमेशा चिढ़ता था, के सामने अपने को इस हालत में पाकर वह अत्यन्त लज्जित हुआ और उसे छिपाने के लिये डाँट कर पूछा, "लाँस्डेल, तुम शराब पी रहे थे।"

"नहीं, मैंने नहीं पी है।" लाँस्डेल बिगड़ कर बोला।

"यह न कहो कि तुमने नहीं पी है। तुम खड़े नहीं हो पाते हो।" लैंगले ने गुस्से में आकर कहा, "तुम्हारा चेहरा तमतमाया हुआ है, आँखें लाल हैं और तुम्हारे मुँह से शराब की बदबू आती है।"

"इसमें क्या शक है।" लाँस्डेल ने व्यंग्य पूर्ण शब्दों में कहा।

लैंगले इस तीव्र कटाक्ष को समझ गया और कठोर शब्दों का प्रयोग करने लगा। लाँस्डेल ने डपट कर कहा, "अगर अब एक भी शब्द मुँह से ऐसा निकला तो अभी मालूम हो जाएगा कि नशे का उतार कैसे होता है?

जिराल्ड सड़कों पर बेकार इधर-उधर घूम रहा था। उसने दूर से एक स्त्री के सुडौल शरीर के आकार को देखा। लूसी अपने पति को पहुँचाने आई थी और अब घर लौटी जा रही थी। वग़ैर पहचाने हुए उसने पीछा किया और लूसी ने भी अपने कदम बढ़ाये। जिराल्ड जब नज़दीक पहुँच गया तो उसने पहचान लिया। यद्यपि मुखाकृति चिंता युक्त थी तथापि उसका प्राकृतिक सौंदर्य्य खिले हुये फूल के समान था। रास्ता रोक कर जिराल्ड ने कहा, "मिसेस लाँस्डेल, आज आप से बहुत दिनों के बाद मुलाक़ात हुई।"

लूसी थोड़ी देर के लिये भौंचक्की सी हो गई, लेकिन जल्दी से सँभल कर बोली, "बड़ी कृपा होगी यदि आप मुझे निकल जाने दें।"

"यह कैसी बेतुकी बातें!" जिराल्ड ने उन्मत्त होकर कहा, "तुम मुझसे दुश्मनी तो नहीं मानती हो।"

लूसी का लड़का फ्रेडरिक माँ के हाथ से लिपटा हुआ था। लूसी आगे बढ़ी और जिराल्ड की हिम्मत न पड़ी कि उसको रोकता। लूसी अपने लड़के को खींचती हुई जल्दी-जल्दी चली जा रही थी। थोड़ी दूर चलने पर लड़के ने कहा, "मां, लाल कोट पहने हुए वह आदमी हम लोगों का पीछा करता चला आ रहा है।" लूसी और भी तेज चलने लगी। थक गई थी और अब पीछे से जूतों की आवाज़ भी नहीं सुनाई देती थी। वह ज़रा ठिठक गई, लड़के ने पूछा, "मां, क्या बात है?"

लूसी जवाब देने भी न पाई थी कि जिराल्ड नज़दीक आ गया और उसके कान के पास धीरे से कहा, "लड़का कुछ नहीं बोलेगा, मैं उसे खिलौना ख़रीद दूँगा।"

लूसी क्रोधित होकर बोली, "किसी निस्सहाय स्त्री के साथ ऐसा वर्ताव करना कोई बहादुरी का काम नहीं है।"

जिराल्ड की आँखें बन्द सी थीं, उसे इस समय उचित और अनुचित कुछ भी नहीं दिखलाई देता था। उसने कहा, "इस जगह अँधियारा है। तुम्हारा चीखना चिल्लाना कोई भी नहीं सुन पाएगा।"

लूसी अपने चरित्र पर यह आक्षेप सहन न कर पाई और तमक कर बोली, "तुम्हारी यह मजाल कि मेरे लड़के के सामने मुझे इस तरह अपमानित करो।"

जिराल्ड भयभीत हुआ और ख्याल किया कि यद्यपि उस समय सड़क पर सन्नाटा था, तब भी सम्भव था कि लूसी की मदद के लिये पुकारने पर लोग जमा हो जाँय। वह यह कहता चला गया कि इसका मज़ा दूसरा कोई चखेगा।

वह अपने विचारों में डूबा हुआ था कि इतने में किसी ने पीछे से उसका हाथ पकड़ा। कप्तान जिराल्ड रेडवर्न में साहस की बड़ी कमी थी। बजाय इस के कि अपनी तलवार पर हाथ जाय वह भागा चाहता था कि इतने में हाथ पकड़ने वाले ने कहा, "डरो नहीं, मैंने सब सुन लिया है और मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ।"

"क्या सब सुन लिया है।" जिराल्ड ने पूछा ?

"वही जो तुम्हारे और मिसेस लॉस्डेल के बीच बातें हुई हैं। मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ। तुम उन्हें चाहते हो और मैं रुपया चाहता हूँ।"

जिराल्ड ने कहा, "मैं तब तक रुपया नहीं दूँगा, जब तक कि काम नहीं हो जायगा।"

"अच्छा, यही सही। मेरे मकान तक चलिये। यहाँ से बहुत दूर नहीं है।"

इस आदमी के पीछे जिराल्ड चल दिया। यह अपने दिल में डर रहा था कि यह आदमी उसे कहाँ ले जायगा। वह समझ गया और घूम कर कहा, "कप्तान रेडवर्न, आप डरते क्यों हैं। मैं आपका क्या मुकाबिला कर सकता हूँ, जब कि आपकी पेटी से तलवार लटक रही है। आप मेरे टुकड़े टुकड़े कर सकते हैं।"

जिस मकान में यह लोग पहुँचे, उसमें न कोई असबाब था न कोई सामान। यहाँ तक कि रोशनी भी नहीं थी। जब बत्ती जलाई गई तो उस आदमी की शक्ल को देख कर रेडवर्न को घृणा सी हो गई। उसकी शक्ल ऐसी थी कि यही तबियत चाहती थी कि मुँह फेर ले। कपड़े मोटे और मैले थे और बाल बहुत बढ़े हुए; वह बिल्कुल पिशाच स्वरूप था। जिराल्ड ने पूछा, "पहले यह तो बताओ कि तुम हो कौन ?"

"अब तुम और हम अक्सर मिलेंगे, इस वजह से कोई नाम होना चाहिये जिससे तुम मुझे पुकार सको। अच्छा, मुझे स्मिथ

कहा करो," उस आदमी ने जवाब दिया, "मैं तुमसे बैठने के लिये कहता, लेकिन यहाँ है क्या जिस पर बैठोगे।" फिर वह कहने लगा, "अगर तुमको खत मिले कि अमुक स्थान में मिसेस लाँस्डेल हैं तो आने में तुम्हें हिचक तो नहीं होगी।"

"ज़रा भी नहीं," जिराल्ड ने खुश होकर जवाब दिया।

"मुझे रुपये की जरूरत होगी," स्मिथ ने कहा, "पहले उस मकान के मालिक को रुपया देना होगा। नहीं तो वह हमारा कहना क्यों मानेगा।"

यह कह कर उसने हाथ फैलाया। जिराल्ड ने रुपया दिया और मकान के बाहर निकल आया। नहीं मालूम क्यों उसको यह सन्देह हो गया था कि कहीं वह जाल में तो नहीं फँस गया है।

३३

गारद का कमरा

दूसरे रोज लॉंस्डेल की नौकरी पड़ी और वह लूसी से मिलने न जा सका। इस वजह से उसे नहीं मालूम था कि किस तरह जिराल्ड ने उसे एक रात पहले अपमानित किया था। लैंगले दूसरे रोज सुबह जब जगा तो यह ख्याल हुआ कि कहीं लॉंस्डेल लोगों से कह न दे कि रात को वह किस हालत में था। उसको यह नहीं याद था कि रेडवर्न उसे नशे में चूर देख चुका था। लॉंस्डेल यह समझता था कि उसी से उसके अफसर कौन बहुत खुश हैं कि यह उम्मीद की जाती कि उसकी सुनी जायगी। लॉंस्डेल चुप रहा। लैंगले अपने दिल में कहता था, "यह जरूर सब से कहता अगर इसको यकीन होता कि कोई इसकी बात मानेगा। मैं उसके चुप रहने के लिये कृतज्ञ नहीं हूँ।" एहसान तो दूर रहा, लैंगले इस बात से लॉंस्डेल पर नाखुश था कि उसने उसे नशे की हालत में देखा था। उसने लॉंस्डेल को बुरा भला कहने के लिये मौका ढूँढ़ निकाला। कठोर और असभ्य शब्द सुन कर लॉंस्डेल तिलमिला तो गया, परन्तु यह सोच कर कि बीबी और बच्चे की क्या दशा होगी, वह चुप रहा।

शाम को लाँस्डेल और उसके साथी इकट्ठा हुए और पीने की तय पाई। शराब तेज थी और एक गिलास पीते ही लाँस्डेल के तमाम बदन में बिजली दौड़ गई। विचारों के पर जमे और वे ऊँचे उड़ने लगे। पहले उसने यह ख्याल किया कि जब लैंगले ने उसे बुरा भला कहा था तो वह क्यों चुप रहा—फिर उत्तेजना बढ़ी और सोचने लगा कि उसे उसके कठोर व्यवहार का मजा चखा देना चाहिये था। विचारों की गति अब दूसरी ओर हुई। वह सोचने लगा कि इसमें हरज क्या है, अगर दिल खुश करने के लिये वह थोड़ी सी शाम को पी लेता है। लूसी उससे प्रेम करती है और वह उससे प्रेम करता है लेकिन, उसके लिये यह ठीक नहीं होगा अगर वह कुछ एतराज करे। यही समझ कर उसने आत्मा को शांति दी जो उसे शराब पीने की वजह से व्याकुल कर रही थी। तीसरा गिलास भी खत्म हुआ।

उस रात को किसी वजह से प्रथा के प्रतिकूल कप्तान जिराल्ड रेडबर्न और लैंगले दोनों गारद के कमरे में आये और रंगरूटों से कहने लगे, "थोड़ी शराब पीकर दिल खुश कर लेने में कुछ हर्ज नहीं है, लेकिन जिस तरह से बोतलें और प्याले यहाँ दिखलाई पड़ते हैं, उससे मालूम होता है कि दूकान-भर की सब शराब पी डाली गई है।"

कप्तान साहब खुद इतने नशे में थे कि सीधा खड़ा होना मुश्किल था।

"लैंगले, इधर आओ!" जिराल्ड ने हुक्म देते हुए कहा, "और

सब की जाँच करो कि कौन कौन नशे में हैं ?" फिर एक की तरफ देख कर बोला, "अच्छा, तुम कौन हो और तुम्हारा नाम क्या है ? क्या तुम्हारा ही नाम लाँस्डेल है ? लैंगले, क्या यह बहुत नशे में नहीं है ?"

"बहुत नशे में है !" लैंगले ने हाँ में हाँ मिला दिया।

जिराल्ड ने लांस्डेल को डपट कर कहा कि वह और लोगों से अलग खड़ा हो। इस वर्ताव से लाँस्डेल के बदन में आग लग गई। उसके अलग खड़े होने पर उसके चेहरे के सामने बत्ती लाने का हुक्म हुआ। चेहरे को गौर से देख कर जिराल्ड बोला, "लैंगले, क्या यह नशे में नहीं है ?"

सवाल खत्म नहीं होने पाया कि जवाब में "हाँ" कह दिया गया।

लाँस्डेल बराबर यह कह रहा था कि शराब उसने पी जरूर है, लेकिन इतनी हरगिज़ नहीं पी है कि नशे में कहा जा सके। नम्रता एक तरफ थी, कठोरता दूसरी तरफ। विनय एक तरफ, उद्दंडता दूसरी तरफ। सत्यता एक तरफ, असत्यता दूसरी तरफ—जितना लाँस्डेल अपने को निर्दोषी प्रमाणित करने की कोशिश करता था, उतना ही या उससे दुगना जिराल्ड नाखुश हो कर गालियाँ बकता था।

"लैंगले, क्या इसको कभी कोई सजा मिली है ?" जिराल्ड ने इस ढंग से यह सब बातें पूँछी कि जैसे उसे कुछ मालूम ही न हो।

"कई दफे का सजा पाया हुआ है।" लैंगले ने जवाब दिया "दो दफे कोड़े पड़े और दाग भी दिया गया है।"

"तो फिर ऐसा बदमाश है कि रास्ते पर लाया नहीं जा सकता!" जिराल्ड कड़क कर बोला, "यह कैद में है!" यह कह कर जिराल्ड और लैंगले चले गये।

इस बेकार अपमान से लॉंस्डेल के हृदय पर ऐसा आघात पहुँचा कि वह कलेजा थाम कर रह गया। थोड़ी देर के बाद कमरे में टहलने लगा, जैसे जख्मी शेर कठघर में टहलता हो। उसका सर सीने पर झुका हुआ था, जैसे किन्हीं विचारों के बोझ से सर न उठाने पाता हो। सब साथी इस अन्यायपूर्ण वर्ताव किये जाने से नाखुश थे और आहिस्ता आहिस्ता जिराल्ड और लैंगले की कड़ी आलोचना बहुत देर तक होती रही।

दूसरे रोज लॉंस्डेल ने लूसी को एक खत भेजा। उसमें यह लिखा कि वह कैद में है और इस वजह से आज क्या कई दिनों तक उससे मिलने के लिये नहीं आ सकेगा। उसमें इस बात का जिक्र नहीं किया कि कैद किये जाने की वजह क्या थी। उसने मना कर दिया था कि वह उससे मिलने न आये। वह जानता था कि उसके शराब पीने से लूसी को दुख है। यह खबर पाते ही लूसी एक टोकरी में फल मेवे और भी खाने का सामान लेकर अपने लड़के के साथ बैरक में आई। मिलने पर लॉंस्डेल ने कुछ छिपाया नहीं और कह दिया कि कल भी उसने शराब पी थी। लूसी को पसन्द तो नहीं आया, लेकिन यह समझ कर कि

थोड़ी देर के लिये उन्हें चिन्ताओं से छुट्टी मिल जाती है, उसने कुछ नहीं कहा। लाँस्डेल समझ गया कि उसके दिमाग में क्या ख्याल आ रहा होगा और कहा, "कभी कभी मैं पागल सा हो जाता हूँ और उसी पागलपन का एक काम यह भी है कि शराब पी लेता हूँ। मुझ पर तरस खाओ।"

"तरस खाओ, यह क्या कहते हो! मुझे तुमसे वह प्रेम है जो कभी बदल नहीं सकता।" लूसी ने प्रेमपूर्ण और मधुर शब्दों में कहा, "तुम्हारी चिन्तायें और तुम्हारे दुख, मेरी चिन्तायें और मेरे दुख हैं। अगर उन्हें मैं नहीं समझूँगी तो कौन समझेगा। उदास क्यों होते हो?"

इन शब्दों से लाँस्डेल को बहुत संतोष हुआ। लड़का बैरक में कूदा कूदा घूम रहा था और उसके माता और पिता उसे देख कर खुश हो रहे थे।

लाँस्डेल ने लूसी से यह भी कहा कि बैरक भर में यह खबर फैली हुई है कि जब जिराल्ड छुट्टी पर घर में था, तब उसने मिसेस डेविस को भगा ले जाने की कोशिश की थी। इससे लूसी को लज्जा और खेद दोनों हुए।

लूसी जाने लगी तो टोकरी की सब चीजें दिखला कर कहा, "इन्हें यहीं छोड़े जाती हूँ; और जिस चीज़ की जरूरत हो, कहला भेजना।" फिर करुणापूर्ण नेत्रों से देख कर कहने लगी, "यह वादा करो कि चाहे जो कोई तुमसे छेड़-छाड़ करे, तुम अपने को सँभाले रहोगे।"

"कोशिश तो हमेशा यही करता हूँ," कहते हुए लाँस्डेल ने वादा किया कि अपने को वह काबू में रक्खेगा। "दो एक दिन में फिर हम दोनों एक दूसरे के साथ हो जाँयगे।"

लूसी ने पूछा, "क्यों, खफा तो नहीं हुए कि तुम्हारे मना करने पर भी मैं तुमसे मिलने चली आई?"

अपने प्रति इतना गहरा प्रेम देखकर लाँस्डेल की आँखों में खुशी के आँसू भर आये। वह मुस्करा कर कहने लगा, "यह क्या कहती हो, मैंने मना इसलिए किया था कि रास्ते में फिर तुम्हें कोई परेशान न करे।"

लूसी विदा होकर घर लौट आई।

रात को साढ़े नौ बजे होंगे। लड़का सो चुका था और लूसी कमरे में अकेले बैठी थी। किसी ने बाहर से दरवाज़ा खटखटाया। लूसी ने अन्दर आने को कहा। एक औरत आई। उसने पूछा, "क्या मैं मिसेस लाँस्डेल, मिस्टर डेविस की लड़की से बातें कर रही हूँ?"

"हाँ," उत्तर मिलने पर उसने कहा, "तुम्हारे पिता इसी शहर में हैं। वह तुम्हें देखने और क्षमा करने के लिये यहाँ आये थे। बीमार पहले ही से थे। राह की असुविधाओं और कठिनाइयों ने उन्हें पलंग पर लिटा दिया है। उनके उठने की अब कोई उम्मीद नहीं है। वह मेरे घर में ठहरे हुये हैं। मुझे तुम्हारे घर का पता मालूम नहीं था। आज जान पाई। तुम्हें उनकी

बीमारी की खबर देने और अगर चलना चाहो तो साथ ले चलने के लिए मैं आई हूँ।"

लूसी बहुत दुःखित हुई और अपने पिता के कठोर व्यवहार पर ध्यान न देकर चलने पर राजी हो गई। अन्तिम समय में पिता की सेवा करने की इच्छा इतनी प्रबल हुई कि वह उसके साथ चल दी।

३४

जाल

लड़के और बीबी के चले जाने के बाद लाँस्डेल की पागलों ऐसी हालत हो गई—कभी यह ख़्याल करता था कि लूसी से उसने झिड़क कर बातें कीं और यह याद आते ही वह लज्जित हो उठता; कभी यह सोचता था कि उसने क्यों नहीं साफ़ उससे कह दिया था कि शाम को ग़म ग़लत करने के लिये वह पिया करेगा; इसमें डरने की कौन सी बात थी। कभी लूसी के अगाध प्रेम को याद कर वह रोने लगता और कभी यह याद करते ही कि उसका दो दफ़े बसा-बसाया घर किस तरह से उजड़ गया, उसकी आँखों से मारे गुस्से के चिनगारियाँ निकलने लगतीं। इसी हालत में नमालूम कितनी देर वह रहा। जब सोने के लिये क़रीब दस बजे वह कपड़े उतार रहा था, तब किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। वह बाहर आया। नौकर ने कहा कि कोई आदमी उससे मिलने आया है और इतनी जल्दी का काम बतलाता है कि जिसमें एक मिनट की भी देर न करनी चाहिये। यह खत उसने दिया है। लाँस्डेल ने खत खोला। उसमें लिखा हुआ था :—

"तुम्हारी स्त्री के खिलाफ एक षड़यन्त्र रचा गया है। वह धोखा देकर अपने घर से एक जगह बुलाई गई है। तुम्हें अब घर दौड़ कर जाने की जरूरत नहीं है—वहाँ तुमको तुम्हारी स्त्री नहीं मिलेगी। अगर तुम मेरे साथ आओ तो मैं तुमको उसी जगह ले चलूँगा जहाँ तुम्हारी स्त्री गई है। मैं तुम्हारे बैरक से पचास कदम हट कर मिलूँगा, अगर तुम खत के देखते ही बाहर आ जाओ।"

तुम्हारा

मित्र।

लॉस्डेल ताबड़तोड़ जीने के नीचे पहुँच गया और बैरक से बाहर निकल आया। उसने अंधियाले में एक आदमी को टहलते देखा और उसके नजदीक जा कर पूछा, "क्या आप ही हैं जिन्होंने मेरे पास खत भेजा था। मेरा नाम लॉस्डेल है।"

"मेरे साथ आओ," उस आदमी ने जवाब दिया।

लॉस्डेल उसके साथ हो लिया। उसको इस वक्त कुछ ख्याल नहीं था कि वह कहाँ जा रहा था और किधर जा रहा था। ख्याल था तो यही कि किसी तरह वह लूसी की मदद कर सके। वह आदमी आगे बढ़ता चला जा रहा था। मालूम होता था कि रास्ता कभी खत्म ही नहीं होगा। एक मकान के कोठे पर से बहुत धीमी रोशनी आ रही थी। वह आदमी ठहर गया और इस तरह खड़ा हुआ कि उसका चेहरा अंधियाले में छिपा रहे और बोला, "मिस्टर लॉस्डेल, तुम्हें हिम्मत से काम लेना है और बहुत

जल्दी करना है। दरवाजा खटखटाओ। एक औरत बाहर निक-लेगी। अगर तुम पूछोगे कि क्या तुम्हारी बीवी की हुलिया की कोई औरत मकान में है तो वह इनकार करेगी। उसकी बात न मानना। मकान में घुस जाना और कोठे पर चढ़ जाना, जहाँ यह रोशनी दिखाई पड़ती है। अगर कमरे का दरवाजा बन्द हो तो लात मार कर खोल देना। तुम्हें खुद मालूम हो जायगा कि एक मिनट की देर भी नामुनासिब थी।" यह कह कर उस आदमी ने अपनी राह ली।

लॉस्डेल ने वैसा ही किया, जैसा कि उससे कहा गया था। उसने दरवाजा खटखटाया। एक औरत बाहर निकली। उसने यह समझा होगा कि कोई रोज का आने वाला होगा, लेकिन लॉस्डेल को फौज की वर्दी में देख कर वह विस्मित हो गई। कपड़े अच्छे पहने हुए थी, यद्यपि सूरत शक्ल से ऊँचे दरजे की नहीं मालूम होती थी। वह औरत गुस्सा दिखा कर बोली, "आप कौन हैं जो एक शरीफ आदमी के घर रात को ऐसे वक्त में आये हैं।"

लॉस्डेल को जवाब देने की कहाँ मोहलत थी, वह मकान में घुस पड़ा। औरत "मदद" "मदद" चिल्लाने लगी। लॉस्डेल ने इस जोर से धक्का दिया कि वह जमीन पर गिर पड़ी और थोड़ी देर के लिये बेहोश सी हो गई। लॉस्डेल दौड़ता हुआ जीने पर चढ़ गया। दरवाजा अन्दर से बन्द था। उसने जोर से धक्का देकर खोल लिया। उसे देखते ही लूसी दौड़ कर इसके गले से लिपट गई। उसी कमरे में जिराल्ड था।

उसने लॉन्सडेल से कहा, "दूर रहो, नहीं तो बुरा होगा!" यह कह कर उसने तलवार निकाली और वार किया! लॉन्सडेल ने तलवार हाथ से झटका देकर छीन ली और एक घूसा ऐसा मुँह पर मारा कि जिराल्ड बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा!

"लूसी आओ, लूसी आओ!" कहते हुए लॉन्सडेल उसे सहारा देकर जीने पर से नीचे उतार लाया और घर की तरफ दोनों चल दिये। किसी के मुँह से एक बात भी नहीं निकली। दोनों के गले खुश्क थे, जैसे कि धूल फाँकी हो। दोनों घर पहुँचे। लड़का सो रहा था! लूसी अपने पति के गले से लग कर अपनी बीती सुनाने लगी! पहले यह बतलाया कि वह किस धोखे में फँसाइ गई थी, किस तरह एक औरत इस घर में ले गई, जब वह कमरे में पहुँची तब बिस्तर खाली था जिस पर कि वह अपने बाप को पड़े हुए देखने की उम्मीद करती थी। तब उसे शक हुआ। उसने जब मुड़ कर देखा तो कमरे में वह अकेली थी। दरवाज़ा खोलने की सब कोशिशें बेकार गईं। वह थक कर बैठ गई और कोई दस ही मिनट गुज़रे होंगे कि जिराल्ड आ गया। वह मनाने और फुसलाने लगा। जब उसने देखा कि बातों से काम नहीं चलेगा तो हर तरह की धमकी दी और कहा कि अगर नहीं मानेगी तो इसका बदला वह उसके पति से लेगा। नाटक का यह दृश्य हो ही रहा था कि लॉन्सडेल कमरे में पहुँच गया।

लॉन्सडेल ने अपना वृतान्त कह सुनाया और वह ख़त दिखलाया जिसकी वजह से लूसी की आबरू बची थी। जब

लूसी को कुछ शान्ति हुई तब उसे यह भय हुआ कि उसका पति क़ैद में था और नियत समय के पहले बैरक से बाहर आने की वजह से उसे क्या सजा मिलेगी। उसने दीन नेत्रों से अपने पति की ओर देखा। वह समझ गया और उसे समझाने लगा, "अबकी दफ़े सजा का डर मुझे नहीं है। दो दफे मैं अपराधी था और इस दफ़े अपराध दूसरे पक्ष में है। यदि इस देश का न्याय, जिसका बहुत बड़ा अभिमान हम लोगों को है, केवल एक प्रहसन नहीं है तो शैतान रेडबर्न को भुगतना पड़ेगा। मैं अब जाता हूँ।"

लॉंस्डेल ने बैरक पहुँच कर नौकर से पूछा, "क्या कर्नल बिंढ़म से मुलाक़ात हो सकती है?"

नौकर ने जा करके इत्तिला की और अपने साथ अन्दर बुला ले गया।

"क्यों लॉंस्डेल, क्या है?" कर्नल ने नाखुश हो कर पूछा।

लॉंस्डेल ने भर्राई हुई आवाज में कहा, "मैं आपके पास न्याय की याचना करने आया हूँ। अगर यहाँ कुछ आशा न हो तो कहीं दूसरी जगह जाकर विनय करूँ।"

"जो तुम्हें कहना हो वह कहो, धमकी देने से काम नहीं चलेगा।" कर्नल ने और भी ज्यादा नाखुश हो कर कहा।

लॉंस्डेल नम्रता पूर्वक कहने लगा, "अगर मेरे मुँह से कुछ ऐसे शब्द निकल गये हों जिन्हें मुझे नहीं कहना चाहिये था तो सानुरोध क्षमा प्रार्थी हूँ। मेरे साथ जो अन्याय किया गया, उससे

ऐसी हालत में हो गया हूँ कि मैं नहीं जानता कि मेरे मुँह से क्या निकल रहा है।"

लॉस्डेल ने अपना हाल कहना शुरू किया और वह खत भी उन्हें देखने को दे दिया जो उसे मिला था। बीच-बीच में कर्नल थोड़ी थोड़ी डाँट भी बतलाते जाते थे। लॉस्डेल को न्याय की आशा घटती जाती थी, परन्तु वह यह ख्याल ही नहीं कर पाता था कि यदि उसके मामले में न्याय नहीं हुआ तो शायद ही कोई अवसर ऐसा होगा जब न्याय किया जा सकता है। लॉस्डेल हाल कहते कहते उत्तेजित हो जाता था, इस पर एक दफे कर्नल ने कहा, "अगर इस तरह से मुझसे बातें करोगे तो क़ैद कर दिये जाओगे।"

लॉस्डेल की नाउम्मीदी बढ़ती जाती थी, तथापि विनय पूर्वक कहता ही गया, "न्याय कीजिये, मेरी बीबी मेरे लिये सब कुछ है। जिस तरह मैं उससे प्रेम करता हूँ और जिस तरह वह मुझसे प्रेम करती है, यह मेरा और उसी का हृदय जानता है। यह उसकी इज्जत और आबरू का सवाल है।"

"इस कविता से मुझे कोई मतलब नहीं। जो कुछ कहना हो, वह कहो।" इज्जत और आबरू का नाम सुन कर कर्नल ने जिस तरह तिरस्कार से मुँह बनाया, उससे लॉस्डेल को मार्मिक चोट पहुँची। कर्नल ने फिर कहा, "लॉस्डेल, मैं इस मामले को, रफा-दफ़ा कर सकता हूँ।"

"मैं न्याय की याचना करता हूँ, रफा-दफा करना नहीं।" लाँस्डेल गुस्से में आकर बोल उठा।

"देखो, जरा समझ के बातें करो" कर्नल ने समझाते हुए कहा, "इससें और होगा क्या ? कप्तान रेडवर्न यही कहेगा कि तुम्हारी औरत अपनी खुशी से उस मकान में उनसे मिलने आई थी और जो औरत उसे वहाँ ले गई थी वह कप्तान रेडवर्न की गवाही देगी। उसी की बात मानी भी जायगी। इससे यही अच्छा है कि इस मामले में कुछ न किया जाय।"

अपनी स्त्री के चरित्र पर आक्षेप सुन कर लाँस्डेल के हृदय पर एक गहरी चोट लगी। वह कहने लगा, "मेरी बीबी पवित्रता की देवी है।"

"शायद ऐसा ही हो," कर्नल ने व्यङ्ग में उत्तर दिया और एक काग़ज के टुकड़े को मोमबत्ती से जला कर अपनी सिगरेट सुलगाई। फिर कहा, "तुम क़ैद में थे, तुम बैरक के बाहर कैसे जा सकते थे। तुमने भी तो क़ानून के खिलाफ़ काम किया है।"

लाँस्डेल की वह हालत थी कि आँखें खुली होने पर भी उसे कुछ देख नहीं पड़ता था और कान बन्द न होने पर भी कुछ सुनाई नहीं देता था। उसे उस समय न्याय की धुन थी, जिसकी उम्मेद घटती जा रही थी। उसने निर्भीकता से उत्तर दिया, "चाहे मैं दस हज़ार तालों की कोठरी में बन्द होता, लेकिन अपनी बीवी को बचाने के लिये जरूर पहुँच जाता।"

आखिरकार जब उसे कर्नल से कोई उम्मीद बाक़ी नहीं रह गई तो उसने कहा, "मेरा ख़त वापस कर दीजिये।"

"ज़रूर," कह कर उसने मेज़ पर के कागज़ उलट पलटे, जेबों में हाथ डाले, कहीं पता नहीं चला। बनावटी खेद प्रकट करते हुए कहा, "धोखे में कैसी बेवकूफी हुई कि उसे जला कर मैंने अपनी सिगरेट सुलगाई। मुझे बहुत अफ़सोस है।"

लॉन्स्डेल कमरे के बाहर चुपचाप निकल आया और नीचे नौकर से पूछा, "क्या मेरे आने के पहले कप्तान रेडवर्न कर्नल से मिलने आये थे?"

उसने कहा, "मेरा नाम न बतलाना। बहुत देर पहले के आये हुए हैं और वहीं हैं।" मामला खुल गया।

लॉन्स्डेल के चले जाने के बाद कर्नल के कमरे में पीछे का दरवाज़ा खुला और जिराल्ड बाहर निकला। उसने कर्नल से कहा, "आपने बड़ी खूबसूरती से मामले को निपटा दिया—और जिस हिकमत से खत को जला दिया, उसकी तारीफ़ तो हो ही नहीं सकती।"

कर्नल ने जिराल्ड से कहा, "यह समझ में नहीं आता कि तुम्हारे साथ क्यों धोखा किया गया।"

"यही तो मैं भी नहीं समझ पाता हूँ," जिराल्ड ने जवाब दिया।

यह पहले तय हो चुका था कि कर्नल विंढम को कप्तान

जिराल्ड एक हज़ार गिन्नियाँ कर्ज़ देंगे। विंढम ने कहा, "यह मामला तो तय हो चुका है, अब रुपये का इंतजाम कर दो।"

जिराल्ड ने कहा, "पाँच सौ गिन्नियाँ बैंक में मौजूद हैं। कल चेक लिख दूँगा और एक ऐसा किस्सा गढ़ कर बाप को लिखूंगा कि बाकी पाँच सौ गिन्नियाँ भी दो एक दिन में आ जायँगी।"

कर्नल विंढम जिराल्ड से खुश नहीं था, लेकिन लॉंस्डेल की बात आज सुनने से उसे आर्थिक संकटों से छुटकारा मिल गया था। साथ ही पोर्टस्मिथ में उसका कहना न मानने का बदला लूसी से भी उसने चुका लिया था।

३५

क्रूरता

उस रात को लॉंस्डेल को नींद नहीं आई। उसका हृदय गहरी चोट खाये हुए था और विचार दिमाग में विद्रोह मचाये हुये थे। न्याय नहीं हुआ और अन्यायी का पक्ष लेने वाले बहुत थे। उसके दुख की सीमा न थी कि उल्टे उसी को बीबी के चरित्र पर कर्नल ने संदेह किया था। दूसरा दुख उसे यह था कि अब कहीं से आशा नहीं रह गई थी कि उसके साथ न्याय होगा। सबसे बड़ी उसके रास्ते की रुकावट यह थी कि अगर वह कुछ करता भी तो उसी की बीबी पर और आक्षेप होते। ऐसी दशा में किसको नींद आती? जब लूसी ने यह सुना कि उसके सम्बन्ध में कर्नल ने क्या कहा तो वह दुखी हुई और बहुत रोई, परन्तु उसे यही सन्तोष था कि उसके पति को इन अपवादों पर जरा भी विश्वास नहीं था। अब वह क़ैदी नहीं था और लूसी से बराबर मिलने आता था।

लॉंस्डेल को अब शराब पीने की आदत पड़ गई थी। अपने लिये शराब की अब वह ऐसी आवश्यकता समझता था कि जिसके बग़ैर उसकी बसर नहीं हो सकती थी। उसकी गंध छिपाने के लिये उसको तरकीबें करनी पड़ती थीं, लूसी से झूठ

बोलना पड़ता था। नशा उतर जाने पर उसको खेद और दुख होता था, लेकिन शाम होते ही उसके इरादों में कमज़ोरी आ जाती थी और दूकान की तरफ़ कदम उठने लगते थे। एक बुरी आदत दूसरी बुरी आदत को साथ लाई—अब वह सिगरेट भी पीने लगा। कभी कभी घर पहुँचने में देर हो जाती और कभी कभी तो सारी रात शराबखाने में ही ख़त्म हो जाती थी।

लूसी सब समझती थी और यथार्थता को न देखने के लिये आखें बन्द किये हुए थी। वह आश्वासन दे दे कर अपने दिल को समझाती थी कि यह केवल उसकी आँखों का भ्रम है कि उसे उसका पति नशे में मालूम होता है। कुशल यही है कि एक दफ़े संदेह उत्पन्न न हो जाय, नहीं तो फिर चाहे आँखें खुली रहें या बन्द, यह अपना काम करता जायगा। लाँस्डेल के झूठे वादे और बहाने लूसी को और भी तकलीफ़ देते थे। सबसे कठिन सवाल रुपये का था। आमदनी का रास्ता एक ही था—लूसी की मेह-नत और मशक्कत। उसी पर लड़के का लालन-पालन, घर के सब ख़र्चे, शाम को पति के लिये अच्छे से अच्छा खाने का इंतिजाम और कभी कभी होने वाली लाँस्डेल की माँग पूरी होती थी। छः महीने बन गये और बीत गये, लाँस्डेल में कोई सुधार नहीं हुआ—बरबादी का रास्ता बहुत ढालू है। काम करते करते अब कभी कभी लूसी के हाथ से कपड़ा गिर पड़ता था और आँखों से आँसू बहने लगते थे।

जिस पलटन में लाँस्डेल था, उसकी बदली अब मिडल्टन को

हुई। जो ओकले से चार ही छ मील पर था। उस जिले के मज-दूरों में अशान्ति फैली हुई थी। जब यह ख़बर लाँस्डेल को मालूम हुई तो उसने लूसी से कहा। वह खुश हो गई—गाँव की पूरी तस्वीर आँखों के सामने खिंच गई, 'तसव्वर में जो खिंच जाये उसे तस्वीर कहते हैं'। उसे गाँव की गलियाँ, गिरजा, वह सुहा-वनी छोटी नदी और वह बाग़ जहाँ उसने अपने पति से आजन्म उसी की रहने की प्रतिज्ञा की थी, सब याद आ गया। 'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'—शायद हम भारतवासियों को छोड़कर और सब अपने देश को 'घर' कहते हैं। लाँस्डेल ने कहा, "अच्छा तो यह होता कि तुम लड़के को लेकर पहले चली जातीं और मेरे पहुँचने तक मकान वग़ैरः का इन्तिज़ाम ठीक कर लेतीं।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा हो।" लूसी ने कुछ बहुत खुश होकर नहीं कहा। उसको याद आगया कि पहले उसके पति की यह ख़्वाहिश रहती थी कि वह पहले पहुँच जाय और अपनी बीबी और बच्चे के लिये खुद इंतिज़ाम ठीक कर रक्खे।

"तुम्हारे पास रुपया कितना है?" लाँस्डेल ने कुछ इस आवाज़ से पूछा कि लूसी दुखी हो गई।

अपने को सँभाल कर उसने कहा, "एक पौंड सोने के सिक्के हैं। पाँच पौंड मेरी मज़दूरी का जमा है। कुछ मज़दूरी अभी मिलनी बाकी है और कुछ आने बेग में हैं—सब मिला कर करीब सात पौंड हैं।"

"सात पौंड, बस ! जब हम लोग कैले से आये थे, तब साठ पौंड थे !" लाँस्डेल ने जरा अनखना कर पूछा ।

लूसी अपनी हार्दिक वेदना को छिपाकर कहने लगी, "मैं लड़के को लेकर गाड़ी के बाहर बैठ जाऊँगी और मिडल्टन में कोई छोटा मकान ले लूँगी । वहाँ काम करके गुजर बसर भर को कमा ही लूँगी । यहाँ किसी का कुछ देना नहीं है, सिवा एक हफ्ते के मकान के किराये के ।"

"यह तो सब है, लेकिन इतना रुपया इतनी जल्दी कैसे खर्च हुआ ?" लाँस्डेल ने फिर वैसे ही पूछा ।

"प्रिय पति," बहुत मुश्किल से आँसुओं को रोक कर लूसी ने जवाब दिया, " मैं जानती हूँ कि जब हम लोग कैले से आये थे, तब साठ पौंड था । एक पैसा भी बेकार नहीं खर्च किया गया है । एक एक दमड़ी का हिसाब लिखा हुआ है ।"

"लाओ, हिसाब देखें ।" लाँस्डेल ने रुखाई से कहा ।

लूसी ने उठ कर हिसाब की किताब उसके हाथ में दे दी । बहुत रोकने पर भी एक आँसू किताब पर टपक ही पड़ा, जिसे उसने जल्दी से रुमाल से पोछ डाला । लाँस्डेल कुछ लज्जित होकर बोला, "लूसी, मेरा मतलब यह नहीं था कि कोई ऐसी बात कहूँ कि जिससे तुमको दुख हो ; लेकिन रुपया तुम्हारे पास रहता है और तुम ही बतला सकती हो कि कैसे खर्च हुआ ।" हिसाब देखते देखते लाँस्डेल ने कहा, "अच्छा, इतना रुपया खाने में खर्च हुआ है ।"

अब लूसी की आँखों में आँसू की झड़ी लग गई थी। उसने व्यथित स्वर में कहा, "और सब बरदाश्त कर सकती हूँ, यह नहीं। मुझे अफसोस है कि तुमने यह कहा! जो खाना मैंने और लड़के ने खाया है, वह मामूली से मामूली होता था। हाँ, शाम को तुम्हारे लिये जरूर अच्छे खाने का इंतिजाम कर देती थी।"

"जो कुछ मुझे मिल जाता था, वहीं मैं खा लेता था। मैं नहीं जानता था कि यह खाना सब रुपया खा जायगा। मैंने कभी नहीं कहा कि मेरे लिये ऐसा खाना बनाया जाया करे। आज तुमको क्या हो गया है जो रो रो कर एक तमाशा कर रही हो?"

लड़का पूछने लगा, "माँ को क्यों डाटते हो?"

उस पर भी एक बौछार हो गई। लूसी ने कहा, "यह सब रुपया तुम ले जाओ और मेरे पास जो छोटे-मोटे जेवर है, उसे बेच कर मैं काम चला लूँगी।"

"मेरी घड़ी भी तो है," लाँस्डेल गुनगुना गया, "सब चीजें बिक जाने पर न मालूम कैसी हालत हो" कहते हुए उसने एक गिनी उठा कर जेब में रख ली।

लूसी ने प्रेम और नम्रता से कहा, "अभी तुम्हारी पलटन तीन रोज तक रवाना नहीं होगी, तब तक हम लोग यहीं रहें।" यह कह कर उसने अपने पति की तरफ बड़े प्रेम से देखा।

"मेरी समझ में यही अच्छा होगा कि तुम कल ही चली जाओ या फिर परसों जिससे मेरे पहुँचने के पहले वहाँ मकान का इंतिजाम करके आराम से ठहर सको।"

"अगर तुम यही पसन्द करते हो तो मैं कल ही चली जाऊँगी।" लूसी ने कहा, "तो आज शाम को हम लोगों के साथ रहो।"

लॉंस्डेल कुछ झेंपते हुए बोला, "कर्नल ने यह हुक्म दे दिया है कि छ बजे के बाद कोई बैरक से बाहर न रहे। देखो, साढ़े पाँच हो चुका है।" कहता हुआ वह उठा और लूसी तथा लड़के को प्यार करके चला गया।

कर्नल का कोई ऐसा हुक्म नहीं था। जाने की जल्दी इस वजह से थी कि साथी शराबखाने में रास्ता देखते होंगे।

उसके चले जाने के बाद लूसी अवाक सी रह गई। आज यह पहला मौक़ा था कि लॉंस्डेल का बर्ताव उसके प्रति प्रेम शून्य था।

३६

मिडल्टन

लॉंस्डेल के चले जाते ही अपने लड़के को साथ लेकर लूसी लेने-देने का काम निबटाने बाहर चली गई। उसने सिपाहियों को सात बजे शाम को भी इधर-उधर आते जाते देखा। उसका संदेह और भी पुष्ट हो गया कि उसके पति ने यह बात सच नहीं कही थी कि कर्नल का अब यह हुक्म है कि छ बजे के बाद बैरक के बाहर कोई सिपाही न जाया करे। लड़के को सुला कर लूसी ने सब तैय्यारियाँ कर लीं और दूसरे ही रोज सवेरे वह रवाना हो गई। जहाँ कुछ ही दिन रहो, वहाँ से चलने में आखें भर आती हैं—यहाँ तो उसको रहते रहते पंद्रह महीने हो गये थे। साथ ही साथ यह भी याद आयी कि यहाँ किन किन मुसीबतों का सामना करना पड़ा था और किस तरह से आबरू बची थी और इससे कहीं ज्यादा यह याद आ रही थी कि जब यहाँ पहुँची थी, तब उसके पति का प्रेम उससे कैसा था और अब कैसा है। यह सब याद आने से लूसी दुःखित हो गई। चौबीस घन्टे बाद वह लड़के को लिए हुए मिडल्टन पहुँची। जब वह वहाँ पहुँची तो कुछ रात हो आई थी। वह अपने सब कपड़े लड़के को ओढ़ाये और पहिनाये थी और खुद सर्दी से काँप रही थी—मालूम होता था कि जैसे सर्दी हड्डियों में घुसी जा रही

हो। एक होटल खुला दिखलाई दिया और वह वहीं जा कर ठहरी। बहुत देर के बाद उस कमरे में आग जलाने का इन्तिजाम हुआ और उससे भी ज्यादा देर में हाथ मुँह धोने के लिये गर्म पानी मिला। जलपान करने के बाद वह लड़के को लेकर मकान ढूँढ़ने निकली। ग़रीब आदमियों के मुहल्ले में वह मकान चाहती थी, जहाँ किराया कम हो। बहुत ढूँढ़ने से एक छोटा मकान मिल गया—किराया कम था, लेकिन काम का था। उसे उसने ले लिया। मिडल्टन की सड़कें और चौराहे उसको उस समय की याद दिला रहे थे, जब जिराल्ड रेडवर्न से शादी न करने की वजह से उसे होटल से भागना पड़ा था।

वह होटल को वापस आ रही थी कि एक मोड़ घूमते ही उसने अपने पिता को देखा और दौड़ कर उसने उसका हाथ पकड़ लिया। आँखों में आँसू भर कर वह बोली, "पिता, क्या मुझे माफ नहीं करोगे ?"

डेविस एक दो कदम पीछे हट कर बोला, "कभी नहीं।" फिर नाखुशी की आवाज में कहा, "सालों पहले मैंने तुमको एक मौका पोर्टस्मिथ में दिया था कि सोच लो, तुम्हारी ज़िद का क्या नतीजा होगा ; लेकिन तुम्हारी आँखें नहीं खुलीं। अगर मेरा कहा माना होता तो एक बड़े घर में तुम होतीं—आज देख रहा हूँ कि किस हालत में हो—पीली पड़ गई हो, चेहरा उतरा हुआ है। मेरी तरफ सर उठा कर देखो और भला कहो तो कि तुम सुखी हो !"

लूसी उठी, लेकिन इस डर से कि कहीं गिर न पड़े, एक दीवार के बल खड़ी हो गई। उसका लड़का कभी उसका मुँह देखता था और कभी उसका जिसको उसकी माँ बाप कहती थी।

डेविस फिर कहने लगा, "मुझे मालूम है कि वह पलटन जिसमें तुम्हारा पति है, यहाँ आ रही है और अभी थोड़े दिन मुझे यहाँ रहना पड़ेगा। देखो, उससे कह देना कि जब कभी मुझसे मुलाकात हो जाय तो मेरे नजदीक न आवे; नहीं तो कुत्ते की तरह उसे अपने पास से भगा दूँगा और तुम भी, लूसी, जब दूसरी दफे मुझसे मिलना तो इस तरह पास से निकल जाना जैसे कोई किसी बे पहिचाने के पास से निकल जाता है।" यह कह कर डेविस चला गया।

लूसी बहुत दुःखित हुई। एक तो इस बात से कि उसके पिता ने एक भी शब्द क्षमा या प्रेम का मुँह से नहीं निकाला, दूसरे यह देख कर कि वह स्वयं चिंतित और व्याकुल था। डेविस ने अपनी तन्दुरुस्ती शराब को भेंट कर दी थी। रोती हुई लूसी घर पहुँची। वहाँ के लोगों के पास लड़के को छोड़ कर वह बाजार सौदा लेने गई। एक दूकान पर वह तरकारी खरीद रही थी कि एक और औरत आगई। उससे और दूकानदार से बातें होने लगीं। औरत ने पूछा, "क्या मुकद्दमा जरूर चलेगा?"

"जरूर चलेगा," दूकानदार ने जवाब दिया, "कहा जाता है कि दो हजार पौंड माँगे जाते हैं। दोनों पक्ष दूसरे को अपराधी और अपने को निर्दोषी प्रमाणित करने में कसर नहीं उठा रक्खेंगे।"

फिर दोनों डेविस पर आक्षेप करने लगे। लूसी को सौदा मिल गया था और वह जल्दी से दूकान के बाहर निकल आई। पिता चाहे जैसा हो, उसकी बुराई संतान से नहीं सुनी जाती।

दूसरे रोज़ लूसी ने वही बीनने का काम मिलने की कोशिश की और मिल भी गया। वह वहाँ जाकर बैरक में अपने मकान का पता दे आई कि उसके पति के आने पर उसे मालूम हो जाय कि मकान कहाँ है।

अदालत खुलते ही जिराल्ड और किटी का मुकद्दमा पेश हुआ। दोनों तरफ के वकीलों ने अच्छी तैयारी की थी। न सर आर्कीबाल्ड और न जिराल्ड ही अदालत में मौजूद थे। उस जिले भर में इस खानदान का बड़ा नाम था। डेविस भी स्वयं अदालत में नहीं था, वह एक दूकान में बैठा शराब पी रहा था। उसका वकील बराबर उसे खबर भेजता जाता था कि मुकद्दमा कैसे चल रहा है। किटी की दासी की गवाही हुई और जो कुछ उसने देखा या सुना था, वह सब कह सुनाया। वह इससे बिलकुल इनकार कर गई थी कि जिराल्ड ने उसको कभी कुछ दिया था। दूसरी शहादत उस दूकानदार की हुई जिसकी दूकान से जिराल्ड ने रेशमी कपड़े, दुशाला और दस्ताने लेकर किटी के लिये भेजने की आज्ञा दी थी। और भी दूकानदारों ने शहादतें दीं कि उन्होंने मिसेस डेविस को उधार कपड़ा दिया था और बिलें भेजी थीं और जब मुकद्दमा चलाने की धमकी दी तो मिस्टर डेविस ने आ कर रुपया बेबाक किया और कहा कि मिसेस डेविस को माल

उधार न दिया जाया करे और उनकी फजूल खर्ची की खुद शिका-
यतें की। बहस शुरू हुई—वादी के वकील ने अपने पक्ष का
समर्थन करने के लिये सब कुछ कहा और उसका उत्तर प्रतिवादी
के वकील ने दिया।

मुकद्दमे में तमाम दिन लग गया। ६ बजे शाम को जज ने
जूरी से राय माँगी। यह लोग दूसरे कमरे में उठ गये और घन्टे
भर तक आपस में सलाह करके बाहर आये। जज ने अपनी राय
कही—वादी को पन्द्रह सौ पौंड दिलाये गये।

३७

राजनैतिक सभा

जिस जिले में अब लॉंस्डेल की पलटन आई थी, उसमें राज-नैतिक अशान्ति फैली हुई थी। लोग क्षुधा से पीड़ित थे, सभायें करते थे और निर्भीकता से भाषण देते थे। अधिकारी वर्ग चिढ़ता था। राजनैतिक अशान्ति अगर होती तो शायद दब जाती, लेकिन पेट की अशान्ति को किसने कब दबा पाया है। इसी को दबाने के लिये पलटन यहाँ मँगाई गई थी।

जब से पलटन यहाँ आई थी, कर्नल विंढम को कोई ऐसा मौक़ा नहीं पड़ा था कि गोलियाँ चलवाते। आपने स्थानीय जज को लिख दिया था कि जब कोई जरूरत पड़े तो उन्हें इत्तिला दी जाय, फौज तैयार रहेगी। अवसर खोजने वाले को अवसर मिल जाता है—एक बड़ी सभा होने वाली थी और अधिकारी वर्ग उसे रोकना चाहते थे। इसके रोकने का सब इंतिजाम छिपे छिपे कर लिया गया था। कावेन्ट्री से घुड़सवार सेना भी मँगा ली गई थी। लॉंस्डेल वाली पलटन एक रविवार को जब परेड और गिरजे के बाद लौटी तो एक बड़े मैदान में खड़ी की गई और उसे कर्नल विंढम ने ये बातें बतलाईं, "ख़याल किया जाता है कि वह लोग शहर के बाहर एक सभा करने वाले हैं। इसका मतलब

अशान्ति फैलाना है। कहा तो यह जाता है कि वह लोग अपनी तकलीफों के दूर करने के लिये गवर्नमेंट को एक दरख़्वास्त देंगे, लेकिन सवाल तो यह है कि कोई तकलीफ हो भी तो। यह सब जालसाज़ी है। वह लूट मार कर शांति प्रिय लोगों को धमकाया चाहते हैं। मेरे सिपाहियो, अपनी बैरकों में तैयार रहना। बहुत मुमकिन है कि तुम्हारी मदद की जरूरत पड़े और अगर पड़े तो अपने कर्तव्य का पालन करना। मुझे उम्मीद है कि तुम लोगो में से किसी के दिमाग़ में वह हवा नहीं समाई है जो अशांति फैलाने वालों के दिमागों में है। यह भी मैं साफ़ कहे देता हूँ कि अगर कोई भी उस हवा में है तो कोड़ों की कड़ी मार उस हवा को निकाल देगी।"

पलटन बैरक को वापस आई और रात भाले, बर्छियों और संगीनों के साफ करने में बीती।

लॉंस्डेल को अपने हथियारों के साफ करने में बड़ा दुख हो रहा था। बार बार उसे ख़्याल आता था कि इनसे कल ख़ून बहाने का काम लिया जायगा—वही ख़ून जो प्रत्येक जीवधारी के जीवन का आधार है। निहत्थों पर आक्रमण करना क्या कोई बहादुरी है? "क्या करूँ?" लॉंस्डेल फिर अपने दिल में कहने लगा, "अगर अपने हथियार तेज न करूँ तो बग़ावत का अपराधी ठहराया जाऊँगा और अवश्य प्राण-दण्ड की सजा दी जायगी। अगर यही हुआ तो बीबी और लड़के को किसके भरोसे छोड़ जाऊँगा।"

उसके हृदय में यह भावना उठ रही थी कि इतने में लैंगले आ

गया और ताड़ गया कि उसके विचार क्या है, क्योंकि वह अपने हथियार साफ नहीं कर रहा था। उसने दस पाँच सख़्त बातें सुना कर कहा, "अगर तुमने कल बदमाशों पर हमला करने में कमी की तो तुम्हारे लिये अच्छा नहीं होगा। मैं तुम पर निगाह रक्खूँगा।"

उसके चले जाने के बाद लॉन्स्डेल को अपने हथियार तेज़ करने पड़े।

दूसरे रोज़ सभा हुई। हर एक गाँव क्या, हर एक घर का कोई न कोई आदमी आया था। यह सब दरिद्र नारायण के प्रतिनिधि थे, न किसी के पास खाने को था, न ठीक कपड़े। किसी के भी पास कोई अस्त्र या शस्त्र नहीं था—शारीरिक बल दिखलाने या कोई बात क़ानून के खिलाफ करने का ख्याल तक भी किसी को नहीं था। औरतें भी आई थीं जो सभा के बाहर गोद में बच्चे लिये हुए खड़ी थीं। उनके मलिन मुख और दीन नेत्र उनकी हीन दशा के सूचक थे।

सभापति चुनने के बाद कार्यवाही शुरू हुई। हर एक व्याख्यान दाता दुख-दर्द की कहानी सुना रहा था। जिनके दिल की जगह पर दिल था, वह आँसू बहा रहे थे और आहें भर रहे थे।

लोगों का ख्याल यह था कि फ़ौज उसी समय हस्तक्षेप करेगी, जब कि सभा में कुछ गड़बड़ होगी। परन्तु इसकी सम्भावना नहीं थी—गड़बड़ क्या होता? एक दफे कुछ लोग उत्तेजित भी हो

गये थे, परन्तु सभापति के समझाने बुझाने पर फिर शान्ति स्थापित हो गई थी। फौज आगे बढ़ती चली आ रही थी, तब भी लोग यही समझते रहे कि नजदीक आ कर वह रुक जायगी। लोग भय से काँप उठे, जब ये प्राणघातक शब्द सुने, "हमला करो!"। सिपाही संगीनों से वार करने लगे, घोड़-सवारों के घोड़े लोगों के ऊपर चढ़ा दिये गये। चारों ही तरफ चीत्कार मचा हुआ था। कुछ ही मिनटों में जब मैदान साफ हो गया, तब हत्या-कांड रुका। पचीस तीस आदमी घायल हुए थे और इतने ही मर गये थे। उनमें से पाँच छ औरतें थीं, दो के गोद में बच्चे थे। पहले लोग भागे, फिर बीबी और बचों की याद ने हिम्मत बँधा दी और फिर लौट आये। बहुतों की आशंकायें यथार्थ थीं। जिनके लिये जीते थे और जिनके लिये सब मुसीबतें और आफतें उठाते थे, वही आज दुनियाँ में नहीं थे।

इच्छा न होते हुए भी लॉस्डेल को इस हत्याकांड में भाग लेना पड़ा था। अगर जरा भी कमी करता तो अपनी जान पर बन आती। फिक्र कुछ अपने जान की ज्यादा नहीं थी, फिक्र थी बीबी और बच्चे की। रात को खूब शराब पीने से सर में दर्द और अपने देश वासियों की हत्या करने से दिल में दुख था। वह दौड़ता हुआ अपने घर गया और लूसी के कमरे में पहुँचते ही बोला, "रुपया है?"

"रुपया, प्रिय फ्रेडरिक, आज कैसे हो? तुमने लड़के की तरफ भी निगाह उठा कर नहीं देखा।" लूसी ने नम्रता पूर्वक कहा।

"हाँ-हाँ, रुपया, लाओ, जल्दी लाओ। क्या मेरी तरफ आखें निकाल कर घूर रही हो, तुम नहीं जानती हो कि कैसी आग बदन में लगी हुई है। मैं कत्ल के हत्याकांड की याद करके पागल हुआ जा रहा हूँ।"

लाँस्डेल की इस उद्दंडता से लूसी को ऐसा दुख हुआ कि वह बेहोश हो गई। जब तक लाँस्डेल बढ़ कर उसे सँभाले, वह जमीन पर गिर पड़ी। मुँह पर पानी छिड़कने से होश आ गया और लाँस्डेल की तरफ प्रवाहित नेत्रों से देख कर पूछने लगी, "क्या घन्टा भर भी नहीं ठहरोगे?"

लाँस्डेल को इस वक्त शराब की प्यास थी। घर में कैसे रुकता। इधर उधर की बातें बना कर वह चला गया और जो कुछ घर में रुपया था, वह भी सब लेता गया।

लूसी रोने लगी और सोचने लगी कि अपने लिए तो कोई फिक्र नहीं लेकिन चिंता लड़के की है। उसे क्या खिला कर जिलायेगी।

३८

पतन

वक्त गुजरता गया—हफ्ते महीने हो गये और १८३६ खत्म होने को आ गया। लॉंस्डेल की शराब पीने की आदत बढ़ती गई और क़िस्मत भी साथ छोड़ती गई। लूसी के दुगनी मेहनत करने पर भी अब काम नहीं चलता और काम चलता भी कैसे? जो रुपया मिलता था, उसका बड़ा हिस्सा लॉंस्डेल की नजर हो जाता था। लूसी उससे झूठ नहीं बोलती थी। जब वह पूछता था कि उसके पास कितना रुपया है तो वह, बग़ैर इसका ख्याल किये हुये कि लड़का और वह खुद किस तरह गुजर बसर करेंगे, साफ बतला देती थी। वह सब रुपया लेकर चलता होता था। ज्यादा शराब पीने की वजह से कई दफे फौज में सजायें भी मिलीं थीं, परन्तु अब लज्जा ने उसका साथ छोड़ दिया था और वह स्वयं कहता था कि वह अब सुधार के परे है।

कभी कभी वह उस रास्ते में बैठा रहता था, जिधर से लूसी घर आती थी। जो मजदूरी के पैसे लेकर वह लौटती थी, उसे रास्ते ही में ले लेता था। वह रोटी वाले की दूकान से उधार रोटी ला कर रोते हुए बच्चे को खिलाती थी।

जहाँ से लूसी को काम मिलता था, वहाँ दो पौंड जमा करना पड़ा था। उसे माँगने के लिये कई दफे लॉस्डेल वहाँ गया, लेकिन उन लोगों ने देने से इनकार किया। अब लूसी से वह रुपया माँगने आया—रुपया था कहाँ जो देती। वह वका-झका, सख्त सुख्त कहा, धमकी दी—लेकिन इनका असर तब ही होता है, जब रुपया हो। हालत यह हो गई थी कि उधार पर बच्चे का पालन-पोषण निर्भर था। जेवर सब एक एक कर हाथ से निकल गये थे। सिद्धान्त और सभ्यता, सब शराब के प्याले में डूब चुके थे और वह अब केवल शराबी और स्वार्थी था। जब लूसी कुछ न दे सकी तो उसके मुँह पर एक तमाचा रसीद किया। लूसी बैठ गई; उसे यह विश्वास ही नहीं होता था कि उसके पति ने उसे मारा है। लॉस्डेल उठ कर कमरे से चला गया। इस समय उसे पश्चात्ताप था—पश्चात्ताप! पश्चात्ताप केवल शुद्ध आत्मा को होता है। डंक का असर उस शरीर पर क्या होगा जो मृतक हो चुका हो। पतित आत्मा पर पश्चात्ताप का प्रभाव नहीं पड़ता। एक तो दो दफे कोड़ों की सजा और उस पर शराब के इतने ज्यादा इस्तेमाल ने लॉस्डेल की तनदुरुस्ती को चौपट कर दिया था। अब कभी कभी उसके मुँह से खून आ जाता था और सीने में दर्द हुआ करता था।

एक रोज रास्ते में लूसी ने सुना था कि सब काम छोड़ कर उसका पिता अब "अंगूर की पुत्री" (शराब) का उपासक बन गया है और कावेंट्री में एक मकान लेकर वहीं रहता है और उसके

घर का सब इंतिजाम उसकी दासी करती है। १५०० पौंड जो उसको मानहानि के लिये दिलाये गये थे, उनके भी पर जमने लगे थे। लूसी ने अपने बाप को खत लिखा कि वह उनकी क्षमा चाहती है, मदद नहीं। ऐसे भी पत्र का कोई उत्तर नहीं मिला। लूसी और भी दुखी हुई। शायद दुखी दुख का ही भागी समझा जाता है।

बड़ा दिन आ गया। लूसी ने बड़ी मुश्किल से दो तीन रुपये बचाये थे कि उस रोज अपने पति को वह अच्छा खाना खिलाएगी। शाम को जब वह आया तब पूछने पर लूसी ने कह दिया कि साढ़े तीन रुपया के करीब उसके पास हैं और यह भी कहा कि उस दिन वह उसके साथ खाना खाने के लिये किसी होटल में जायगी।

लॉस्डेल दिखावे की मोहब्बत से कहने लगा, "कैसे ले चलूँ तुम्हें और बच्चे को। उधर से अकेले वापस होना पड़ेगा। रास्ते में बदमाशों की भीड़ लगी रहती है। रुपया दो, खाना ले आऊँ और यहीं बैठ कर हम सब खाँय।"

लूसी ने रुपये दे दिये। लॉस्डेल ने सात रोज तक फिर घर का मुँह नहीं देखा और जब आया तो यह किस्सा गढ़ लाया कि रास्ते में बदमाशों ने उसे लूट लिया था।

एक रोज लॉस्डेल इस बात पर लूसी से जिद करने लगा कि वह रुपया निकाल कर उसे दे दे, जो काम मिलने के लिये जमा किया था। लूसी का प्रेम उस पर अब भी वैसा ही था, पर वह

इस पर राजी नहीं हुई; क्योंकि वह यह सोचती थी कि बच्चा भूखों मर जायगा अगर कोई भी सहारा चार पैसे का कहीं से न रहा। फिर वही गुस्सा, फिर वही डाँट-डपट और फिर वही मार-पीट। लूसी बेहोश हो गई और लॉन्स्डेल वह अधूरा काम उठा कर चलता हुआ जो लूसी बनाने के लिये लाई थी। जब उसे होश आया तो लड़के ने कहा, "पिता सब चीजें ले गये।"

"कौन सब चीजें?" लूसी ने पूछा।

लड़के ने रो कर कहा, "जो काम तुम बनाती थीं।"

यह सुन कर लूसी के कलेजे में एक तीर सा चुभ गया।

दूसरे रोज़ वह काम देने वालों के यहाँ गई और फिर काम माँगा। उन लोगों ने कहा, "तुमने रुपया निकाल लिया है और जब तक फिर रुपया जमा नहीं करोगी, काम नहीं दिया जायगा।

लूसी दंग रह गई—लॉन्स्डेल ने उसके जाली दस्तखत बना कर रुपया निकाल लिया था। उन लोगों ने कहा, "अपने शराबी पति से कह देना कि यहाँ आकर द्वंद न मचाया करे।"

लूसी यही सोचती हुई घर लौट रही थी कि आज रात को लड़के को क्या खिलायेगी। उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया।

३९

अधः पतन

सुबह से शाम तक लूसी दूकान-दूकान घूमा करती थी कि कहीं काम मिल जाय, लेकिन कहीं से कोई उम्मीद नहीं होती थी। यह बात नहीं थी कि किसी को उसके काम से कोई शिकायत हो, लेकिन सवाल था रुपया जमा करने का और इसी का कोई इंतिज़ाम नहीं हो पाता था। यह ठीक था कि बहुत लोग उसे जानते थे। जिस गाँव (ओकले) में वह पैदा हुई थी, वह यहाँ से थोड़ी ही दूर पर था, वहाँ उसके बाप ने बहुत दिनों तक सर आर्कीवाल्ड रेडवर्न की मुख़ारी की थी, और यह भी ठीक था कि लोगों को उससे जवानी सहानुभूति थी, परन्तु मधुर से मधुर शब्द भी यथार्थ की कठोर सख़्ती को नहीं मुलायम कर सकते! रोटियाँ कमाने का कोई उपाय नहीं दिखलाई देता था। लोग उस पर विश्वास रखते थे और उसे सच्चरित्र समझते थे, लेकिन काम देने के पहले रुपया जमा करवा लेने का अपना सिद्धान्त बतलाते थे। आधुनिक समय में सिद्धान्त से विमुख न होने का सभ्य बहाना है। अब लूसी को कहीं कोई चीज़ उधार भी नहीं मिलती थी—संसार के सब अवगुण हों, परन्तु रुपया हो तो सब को ढँक देगा और अगर संसार के सब गुण हों और रुपया न हो तो वह

भी उँगलियाँ उठायेंगे जिन्हें रास्ता नहीं चल आता है। संसार स्वार्थसेवी है और रुपया उसका महादेव है।

लूसी के और उसके लड़के के कपड़ों से अब वास्तविक दशा का पता चलता था। दिन अब बेकारी और ग़रीबी में गुज़रते थे। पहले रुपया गया, फिर जेवर गये और अब कपड़ों की बारी आई, यद्यपि शीत ज़ोरों का पड़ रहा था। लूसी ने आत्मघात करने के के लिये कई दफ़े सोचा, लेकिन लड़के की याद आते ही इरादा छोड़ देना पड़ता था। लाँस्डेल ने एक हफ़्ते से सूरत नहीं दिखलाई थी और जब एक दिन दोपहर को आया भी तो वही क्रोध और लज्जाविहीन बर्ताव था। लूसी ने आद्योपांत दुख दर्द की कहानी सुना दी। लाँस्डेल के चेहरे पर क्षणिक पश्चात्ताप की झलक दिखलाई दी और कहा, "अपने बाप के पास चली जाओ। वह आजकल अच्छी हालत में है।"

लूसी ने बतलाया कि उसने खत लिखा था, जिसका कोई जवाब नहीं आया।

लाँस्डेल का स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया था, ऐंठ कर बोला, "मैं नहीं जानता कि तुम क्या करो। मुझे रुपये की ज़रूरत थी—मैं तुम्हारे दस्तखत बना कर रुपया ले आया। इसमें क्या हर्ज है। क्यों बेकार आँसू बहा रही हो!"

रोते रोते लूसी की हिचकियाँ बँधी हुई थीं। जब कुछ आँसू रुके तो उसने कहा, "कैसे न रोऊँ। रुपया निकालते समय क्या तुम्हें ख्याल नहीं आया कि तुम लड़के के मुँह से सूखी रोटियाँ

छीन रहे हो। वह तो, खैर जो कुछ हुआ सो हुआ, अब यह तो बतलाओ कि बसर कैसे हो।"

लॉस्डेल केवल नाम मात्र के लिये मनुष्य कहला सकता था। उसमें अब कोई ऐसी बात नहीं थी जिससे मनुष्यता का बोध होता। उत्तर मिला, "अगर इस तरह की बातें मुझसे करोगी तो मैं चला जाऊँगा और जाने के पहले जबान लड़ाने का मजा चखा दूँगा जो हमेशा याद रहेगी।"

लड़का कुछ कहने लगा, उसे डाँटा और मारने दौड़ा। लूसी ने उसे गोद में उठा लिया और कहने लगी, "बस, बहुत हो चुका। यह मैं नहीं देख सकती हूँ।"

वह झिझका और ठिठका, फिर दरवाजा खोल कर चला गया। लॉस्डेल इस समय पागल सा था—वह लज्जित भी था, उसे पश्चात्ताप भी था और सब से बड़ी इस वक्त की जरूरत यह थी कि कहीं कर्ज से ही शराब मिल जाय। साथियों ने इसके मत्थे पी थी, लेकिन इसकी जरूरत पर अब इसे कोई पिलाने वाला नहीं था। यह सर झुकाये हुए इधर-उधर शराब पीने वाली जगहों के सामने से होकर निकल रहा था कि उधर से लैंगले आ गया और दोनों में मुठ-भेड़ हो गई। उसने डाँट कर कहा, "क्या अब दिन में ही पीना शुरू कर दिया। तुमसे ज्यादा शराब पीने वाला शैतान इस पलटन में कोई और नहीं है।"

ज्यों ज्यों लॉस्डेल कहता था कि वह पिये हुए नहीं है, त्यों त्यों लैंगले को और शक होता जाता था। कहा सुनी और बढ़ी और

लाँस्डेल ने कहा, "तुम तो रात को मैंचेस्टर में एक बार गिर तक पड़े थे और मैंने ही उठाया था, क्या वह दिन भूल गया ?"

अपनी ग़लती कौन सुनना चाहता है और फिर मातहत के मुँह से ! लैंगले और बिगड़ गया और अब दोनों में गाली गलौज होने लगी। कहीं से जिराल्ड भी आ गया। उसने कहा, "लैंगले, यह बदमाश भिखमंगा तुम से जबान लड़ा रहा है ?"

यह सुनते ही लाँस्डेल मारे ग़ुस्से के अपने को सँभाल नहीं सका और एक घूसा जिराल्ड के मुँह पर ऐसा मारा कि वह गिरते गिरते बचा। "इसे पकड़ो, इसने मुझे मारा है। पकड़ कर इसे बैरक में ले चलो।" कप्तान जिराल्ड ने हुक्म दिया।

"अकेले तुम क्या, दस-पाँच भी इस वक्त मेरे सामने नहीं आ सकते।" इस वक्त लाँस्डेल उस हालत में था, जब परिणाम पर निगाह नहीं होती।

लैंगले उसे पकड़ने के लिये आगे दौड़ा। लाँस्डेल ने संगीन निकाल ली और धर-पकड़ में वह लैंगले के हाथ में चुभ गई। रास्ता चलने वाले इकट्ठा हो गये थे और कुछ सिपाही भी आ गये थे। लैंगले ने उनसे कहा, "इसे फौरन पकड़ लो।"

अब लाँस्डेल की समझ में आया कि उसने क्या किया। बीबी और बच्चे की सूरत सामने आ गई। उसने संगीन डाल दी और सर पकड़ कर बोला, "हे ईश्वर, मैंने क्या किया ?"

लोग पकड़ कर उसे बैरक में ले गये। वहाँ वह कैद कर लिया गया।

लूसी काम की खोज में मकान से निकली थी। बार बार वह दूकानों के सामने चक्कर लगाती थी और काम देने के लिये सब से प्रार्थना करती थी और हर जगह जवाब में 'नहीं' सुनाई देता था। टूटता हुआ दिल और टूट रहा था और नाउम्मीदी हद पर पहुँच गई थी। जब वह दुखी घर लौटी जा रही थी, तब अच्छे कपड़े पहने एक औरत दिखलाई दी। जब लूसी नजदीक आई तब पहचान लिया और कहा, "अरे मार्था, तुमसे मिल कर बड़ी खुशी हुई।"

यह वही पुरानी लूसी की दासी थी। इसकी शादी एक किसान के साथ हुई थी जिसका नाम सिल्वेन था। मार्था के दो बच्चे थे और उसकी आर्थिक दशा अच्छी थी। इसका मकान मिडल्टन से बीस मील और ओकले से दस मील पर था। लूसी को देख कर वह दुखी हुई और हाल पूछने लगी। लूसी को यह पसन्द नहीं था कि अपने पति की शिकायत करे, लेकिन चेहरा हाल बतला रहा था। उसने कहा, "मैं अपने पति के साथ यहाँ कुछ सौदा खरीदने आई थी। वह अपने एक दोस्त के यहाँ मेरा इंतिजार कर रहे होंगे। मुझे जल्दी जाना है। मैं घर पहुँचते ही तुमको खत लिखूँगी। उसके जवाब में तुम अपने घर का पता लिख देना। मैं यहाँ अक्सर आया करती हूँ। जब जब यहाँ आऊँगी, तब तब तुमसे मिलने जरूर आया करूँगी। यह कभी नहीं भूलूँगी कि तुम मुझ पर बड़ी कृपा करती थीं।"

वह बातें करती जाती थी और दुशाले के नीचे जेब से रुपया

निकाल रही थी। रुपया निकाल कर उसने लूसी के हाथ में थमा दिया और खुद जल्दी चली गई। उसे डर था कि कहीं लूसी वापस न कर दे।

लूसी ने रोटी वाले की दूकान पर जाकर रुपया भुनाया और रोटी खरीदने लगी। रोटी वाला उसे पहचानता था। उसकी जबान से निकल गया, "बेचारी नहीं जानती है।"

लूसी ने सुन लिया और सवाल पर सवाल करने लगी। उस बेचारे को कहना पड़ा कि उसके पति पर क्या नई मुसीबत आई है।

लूसी कलेजा पकड़ कर कराहने लगी। वह किसी तरह घर लौटी और पलँग पर पड़ गई। परिणाम पर नजर डालने से उसका दिल बैठा जाता था। उसके दुखों का प्याला अब भर ही नहीं गया था, वरन् छलक रहा था।

४०

रेडवर्न के मकान में

इससे पहले के परिच्छेद में लिखी हुई घटना को घटित हुए दस रोज हो गये। एक रोज जिराल्ड अपने घर गया। बैठने वाले कमरे में उसके माता, पिता और फूफी बैठे हुए थे। इधर-उधर की बातें करने के बाद उसके पिता ने पूछा, "फौजी अदालत ने लॉस्डेल को क्या सजा दी ?"

जिराल्ड ने कहा, "उस निकम्मे के दिन इस संसार में अब इने गिने रह गये हैं।"

जेन बीच में बोल उठती थी, यह तो उनकी पुरानी आदत थी; परन्तु आज बातें करने का ढंग दूसरा था, जिससे सर आर्कीबाल्ड को बहुत आश्चर्य्य हो रहा था। लेडी रेडवर्न ने कहा, "न जानें क्यों जिराल्ड से इनकी दुश्मनी है।"

जिराल्ड ने गढ़ा गढ़ाया किस्सा कह सुनाया जिसमें सब दोष लॉस्डेल के मत्थे मढ़ा गया था। अन्त में जिराल्ड ने कहा, "लँगले की कसम पर अदालत ने विश्वास किया जैसा कि करना चाहिये था। उस बदमाश की बात को कौन मानता।"

"हाँ, उस बेचारे की कौन सुनता—लँगले की कसम और तुम्हारा उसे प्रमाणित करना, वाह-वाह !—जेन ने यह शब्द

इस ढंग से कहा था कि जिससे प्रकट होता था कि कहने वाली अत्यन्त दुखी है।

यह कह कर जेन जिराल्ड की तरफ देखने लगी। मालूम होता था कि निगाहें कलेजे के पार हुई जाती हैं। लेडी रेडवर्न ने जेन से कहा, "इस तरह जिराल्ड की तरफ न घूरिये।"

जेन ने सुनी को अनसुनी करके फिर जिराल्ड से पूछा, "तो अपनी हदभर तुमने उसका वध करवाने की कोशिश की है।"

"वध, इसके क्या माने हैं ?" जिराल्ड चिढ़ कर बोला।

"इसके वही माने हैं जो मेरे शब्द प्रकट कर रहे हैं" जेन आज जिस तरह बातें कर रही थी, उससे सब को ताज्जुब हो रहा था।

जिराल्ड ने फिर हाल बतलाना शुरू किया। जब वह कह रहा था कि बड़ी कुशल हुई कि संगीन लैंगले के हाथ ही में लगी तो जेन से न रहा गया और वह बोल उठीं, "अफसोस तो यही है कि उसका कलेजा नहीं छिदा।

जिराल्ड ने अपने पिता से कहा, "मुझे डर है कि यह आज कुछ मेरे साथ बुराई किया चाहती हैं।"

सर अर्कीबाल्ड अपनी बहन को समझाने लगे। ज्यों ज्यों वह समझाते जाते थे, त्यों त्यों उनका बकना झकना बढ़ता जाता था। वह बकती गई, "तुम क्या जानो, कोई क्या जाने। यहाँ कोई नहीं जानता है—हाँ एक जानता है जो यहाँ से दूर नहीं रहता है।"

इन अनमिल बातों से अब किसी को कुछ संदेह नहीं था कि जेन के दिमाग़ ने उनका साथ छोड़ दिया था। इतने में पादरी मिस्टर आर्डन आये और उन्हें देख कर जेन फिर बकने लगीं, "क्या तुम मेरे भेद जानते हो या नहीं जानते हो?"

लोग एक दूसरे का मुँह ताकते रहे।

लेडी रेडवर्न फिर पूछने लगीं और जिराल्ड ने हाल बतलाना शुरू किया। जहाँ उसके मुँह से यह निकला कि लाँस्डेल को फाँसी की सज़ा दिये जाने का हुक्म हुआ है कि जेन चिल्ला उठीं और बेहोश होकर गिर पड़ीं। पहले सब का यही ख्याल हुआ कि वह चल बसीं, लेकिन ग़ौर से देखने पर मालूम हुआ कि यदि यही हालत उनकी रही तो वह वक्त दूर नहीं है। जेन को उठा कर लोग उनके कमरे में ले गये और पलँग पर लिटा दिया। उनका पीला चेहरा देख कर सर अर्कीबाल्ड घबरा गये और नौकर को हुक्म दिया कि जल्दी जाकर डाक्टर कालीसिंथ को बुला ला। लेडी रेडवर्न ने कहा, "क्या जो कुछ हो चुका है, उसके बाद भी उसे बुलाते हो?"

"फिर और क्या हो?" सर आर्कीबाल्ड ने उत्तर दिया।

वह घर भर में सब से ज्यादा जेन से स्नेह करते थे। यह हुक्म देकर जो उन्होंने मुड़ कर देखा तो पादरी वहीं अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ था और उसका भी चेहरा उतर गया था। वह अत्यन्त चिंतित दिखलाई देता था।

डाक्टर के आने पर नौकर उन्हें कमरे में लेकर आया। वहाँ

इन अनमिल बातों से अब किसी को कुछ संदेह नहीं था कि जेन के दिमाग़ ने उनका साथ छोड़ दिया था। इतने में पादरी मिस्टर आर्डन आये और उन्हें देख कर जेन फिर बकने लगीं, "क्या तुम मेरे भेद जानते हो या नहीं जानते हो ?"

लोग एक दूसरे का मुँह ताकते रहे।

लेडी रेडवर्न फिर पूछने लगीं और जिराल्ड ने हाल बतलाना शुरू किया। जहाँ उसके मुँह से यह निकला कि लॉस्डेल को फाँसी की सज़ा दिये जाने का हुक्म हुआ है कि जेन चिल्ला उठीं और बेहोश होकर गिर पड़ीं। पहले सब का यही ख्याल हुआ कि वह चल बसीं, लेकिन ग़ौर से देखने पर मालूम हुआ कि यदि यही हालत उनकी रही तो वह वक्त दूर नहीं है। जेन को उठा कर लोग उनके कमरे में ले गये और पलँग पर लिटा दिया। उनका पीला चेहरा देख कर सर अर्कीबाल्ड घबरा गये और नौकर को हुक्म दिया कि जल्दी जाकर डाक्टर कालीसिंथ को बुला ला। लेडी रेडवर्न ने कहा, "क्या जो कुछ हो चुका है, उसके बाद भी उसे बुलाते हो ?"

"फिर और क्या हो ?" सर आर्कीबाल्ड ने उत्तर दिया।

वह घर भर में सब से ज्यादा जेन से स्नेह करते थे। यह हुक्म देकर जो उन्होंने मुड़ कर देखा तो पादरी वहीं अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ था और उसका भी चेहरा उतर गया था। वह अत्यन्त चिंतित दिखलाई देता था।

डाक्टर के आने पर नौकर उन्हें कमरे में लेकर आया। वहाँ

कहा, "कप्तान जिराल्ड, बैठने के कमरे में चलिये, मुझे कुछ कहना है।"

"क्या तुमने मुझे अपना मातहत समझा है कि इस तरह हुक्म देते हो ?" जिराल्ड ने नाखुश होकर कहा।

"जो कुछ मुझे कहना है, उसे सुन लीजिये। आप ही के खानदान की आबरू का सवाल है।" डाक्टर ने कहा और फिर उसी तरह एक एक जीना गिनते हुए कोठे पर चढ़ आया।

४१

भेद खुला

सर आर्कीबाल्ड और पादरी मिस्टर आर्डेन बैठे बातें कर रहे थे। वहीं लेडी रेडबर्न भी बैठी थीं। कप्तान रेडबर्न और डाक्टर ने कमरे में प्रवेश किया। मुड़ कर देखते ही पादरी को डाक्टर के चेहरे से उसके आन्तरिक भावों का पता चल गया। डाक्टर के बैठते ही पादरी ने उसके कान में कहा, "ईश्वर के लिये दया करो।"

डाक्टर ने इसका जवाब ऐसी अवाज में दिया कि सब लोग सुन लें। उसने कहा, "यह मेरा दोष नहीं होगा, यदि वह बात इस कमरे के बाहर फैले जिसे मैं कहने जा रहा हूँ।"

पादरी का चेहरा इतना उतर गया था कि जैसे उसे प्राण-दण्ड देने की आज्ञा दी गई हो। वह बाहर जाने के लिये दरवाज़े की तरफ झपटा। डाक्टर ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहने लगा, "आप जा कहाँ रहे हैं? आप को यहीं ठहरना होगा और प्रमाणित करना होगा कि जो मैं कहने जा रहा हूँ, वह ठीक है।"

पादरी चुप कुरसी पर बैठ गया।

"जो मुझे कहना है, उसमें घुमाव-फिराव की कोई जरूरत नहीं।" डाक्टर कहने लगा, "सीधे-सादे तरीके से थोड़े शब्दों में मैं कहे देता हूँ।"

यह सुनते ही सब अपनी अपनी कुर्सी डाक्टर के नजदीक बढ़ा लाये।

डाक्टर ने शुरू किया, "जो मैं कहने जा रहा हूँ, वह करीब इकतीस वर्ष की बात है। जब डाक्टरी पास करके मैं इस गाँव में आया था, तब एक दूसरे डाक्टर का काम जोरों से चल रहा था। बहुत कोशिश करने पर भी काम नहीं मिलता था। जो कुछ थोड़ा बहुत रुपया पास था, वह भी खर्च हो गया और वे दिन आ गये थे, जब यह ख्याल होने लगा था कि अब भूखों मरना भाग्य में बदा है। एक रात को जब मेरी बीमार स्त्री सोने चली गई, नौकरानी भी जा चुकी थी, तब मेरे कमरे की घंटी बजी और मैंने जो दरवाजा खोला तो देखा कि एक आदमी खड़ा है जो अत्यन्त चिन्तित और व्याकुल है। मैंने उसे कमरे के अन्दर बुला लिया और पूछा कि मैं आप की क्या सेवा कर सकता हूँ। वह कहने लगा कि एक स्त्री बिना पत्नी हुए माता होने जा रही है और उसे मेरी सहायता की आवश्यकता है। आने वाले ने यह भी कहा कि मेरी फीस पन्द्रह सौ गिनी होगी अगर कुछ शर्तें मैं मान लूँ। पन्द्रह सौ गिन्नियाँ उस समय मेरे लिये कुबेर के खजाने के बराबर थीं। मैंने शर्तें पूछीं। उसने कहा कि मेरी आँखें बन्द करके मुझे ले जाया जायगा, जिससे मुझे जगह का पता न चले। मैंने शर्त मान ली और पहले ही मुझे आधी फीस दे दी गई। मैं मारे खुशी के उछल पड़ा और कोठे पर दौड़ता हुआ गया और अपनी बीबी को जगा कर सब हाल

सुनाया। मेरी आँखें एक बड़े रूमाल से बाँधी गई और मेरा साथी मुझे बाहर ले आया। हम दोनों उसी की गाड़ी में बैठ कर रवाना हो गये। वह खुद गाड़ी हाँक रहा था। उसने कहा कि हाथों को अपने घुटनों पर रक्खे रहो जिसमें वह देख सके कि मैं आँखों पर की पट्टी खिसका कर देखने की कोशिश तो नहीं कर रहा हूँ।"

डाक्टर कुछ दम लेने के बाद फिर कहने लगा, "क़रीब आधे घन्टे के बाद एक जगह गाड़ी रुकी और मैं सहारा देकर उतारा गया। सम्भवतः यह मेरी इच्छा थी कि मैं जानूँ कि मैं कहाँ हूँ। मैं ज़मीन पर इस तरह पैर रख रहा था कि यदि उस ज़मीन पर मुझे फिर चलना पड़े तो मैं पहचान लूँ। जिन फाटकों और दरवाजों से होकर मैं निकलता था उनकी याद अब भी मुझे है। कमरे में पहुँचते ही मेरी आँखों पर बँधी हुई पट्टी खोल दी गई और जो मेरे साथ आया था, वह कमरे के बाहर निकल गया था। बाहर से दरवाजा बन्द था। जाने के पहले उसने पलँग पर लेटी हुई औरत से कनफुस्कियाँ की थी। पट्टी हटाये जाने के पहले उसने मुझसे पूछा था कि क्या बग़ैर पट्टी हटाये मैं कुछ मदद नहीं कर सकूँगा? आँखों पर पट्टी बाँधे हुए मैं क्या कर सकता था और यही मैंने कह भी दिया। जब मैंने पट्टी हटाई तो देखा कि मैं एक खूब सजे हुये कमरे में हूँ और जिसे देखने आया था वह बुर्के से मुँह छिपाये एक पलँग पर लेटी हुई है। जो एक औरत उसके पास खड़ी थी, उसका भी चेहरा छिपा हुआ था। मेरे पहुँचने के थोड़ी देर बाद ही लड़का अच्छी तरह पैदा हो गया। लड़का बहुत खूब-

सूरत और तन्दुरुस्त था। जो दूसरी औरत कमरे में थी, उसने मेरी आँखों पर फिर पट्टी बाँध दी और दरवाजा खोल कर मुझे उसी आदमी के सिपुर्द कर दिया, जो मुझे लाया था। उसने मुझे गिरजे वाली गली में उतार दिया, जहाँ से हम लोग चले थे। मेरी पट्टी फिर खोल दी और बाकी आधी फीस दे दी और मैं अपने मकान वापस आगया।"

थोड़ी देर ठहर कर फिर जरा ऊँची आवाज में डाक्टर कहने लगा, "इस भेद को इक्तीस वर्ष तक जितना छिपाये रहने की जरूरत थी, उतनी जरूरत आज उसे प्रकट करने की है। यह वही मकान है, जहाँ मैं आया था। वह मिस रेडवर्न थीं जिनको मैं देखने आया था। यह वही कमरा है जिसमें अब वह हैं।" पादरी की तरफ उँगली उठा कर बोला, "यह वही आदमी है जो मुझे लाया था।"

डाक्टर कहता गया, "मिस्टर आर्डेन, तुम कहते हो कि तुम पर दया करूँ? क्यों, किसके लिये भेद छिपाऊँ। तुमको और तुम्हारी बीबी को बहुत गरूर हो गया है—हम लोगों से बोलना नापसन्द है, और आप, सर आर्कीबाल्ड और लेडी रेडवर्न, आप लोगों की शान का तो कहना ही क्या। किस नीची निगाह से आप लोग हम गरीब आदमियों को देखते हो जैसे हम लोग कीड़े मकोड़े हैं। आपके खानदान ने मेरे खानदान को हमेशा तुच्छ दृष्टि से देखा है। आपने (जिराल्ड को सम्बोधित करके) तो मेरी लड़की का भविष्य इस तरह बिगाड़ा है कि वह कहीं की भी नहीं

रह गई है। आह! अपने बच्चों में सबसे ज्यादा मैं उसीको चाहता था। आज तुम सब के ग़रूर के चूर होने का दिन है।"

"अभी और सुनना बाकी है, वह भी सुन लीजिये," डाक्टर ने फिर कहना शुरू किया, "मिस रेडवर्न का लड़का और आपका भी मिस्टर आर्डेन, फ्रेडरिक लॉस्डेल है जिसे फांसी का हुक्म हुआ है।"

मिस्टर आर्डेन के मुँह से सिवा इसके कुछ नहीं निकला कि डाक्टर जो कहते हैं, वह ठीक है।

सर आर्कीबाल्ड और उनकी बहिन के पिता तब ही मर गये थे, जब यह लोग जवान थे। मिस रेडवर्न बहुत खूबसूरत थीं। जब सर आर्कीबाल्ड कहीं बाहर चले जाते थे, तब मिस्टर आर्डेन को और स्वतंत्रता पूर्वक आने का मौक़ा मिलता था। दोनो जवान थे परिणाम जो होना था वही हुआ। जब रंग में भङ्ग होने का डर हुआ तो तरकीबें सोची जाने लगीं। मिस रेडवर्न ने अपनी हालत को ऐसी अच्छी तरह से छिपाया था कि किसी को पता न चला। किसी काम से तीन महीने के लिये सर आर्कीबाल्ड लंदन जाने वाले थे। बिल्कुल चलने के वक्त उनकी बहिन ने कुछ बहाना करके जाने से इनकार कर दिया था। सर आर्कीबाल्ड चले गये। अब मकान बिलकुल खाली था। उस दिन आने पर जब नौकरानियाँ रात को चली गईं तो मिस्टर आर्डेन डाक्टर कालीसिंथ को बुला लाये। 'आरत काह करै न कुकर्मा,' उसने रुपयों की लालच से सब शर्तें मंजूर कर लीं। जो दूसरी

औरत कमरे में मौजूद थी, वह मिसेस ग्रांट थी, जिनकी झोपड़ी आग लग जाने से जल गई थी। उनसे पहले ही से तय हो गया था कि वह बच्चे का लालन-पालन करेगी। पैदा होते ही वह बच्चे को ले गई और दूसरे दिन जब फिर नौकरानियाँ आईं तब किसी को कुछ पता नहीं चला। लड़के का नाम फ्रेडरिक लॉंस्डेल रक्खा गया। ऐसे लड़कों से पिता का कोई स्नेह नहीं होता, लेकिन माता सब बच्चों से इकसां प्रेम करती है। लॉंस्डेल ज्यों ज्यों बड़ा होता था, उतनी ही चिढ़ मिस्टर आर्डेन की उससे बढ़ती जाती थी। मिसेस ग्रान्ट उससे अपने पुत्र की तरह प्रेम करती थी। जब वह जल कर मर गई, तब मिस रेडवर्न और पादरी को संतोष हुआ कि अब भेद के प्रकट होने की संभावना नहीं रह गई है। जब लॉंस्डेल कमाने योग्य हुआ तो अपनी ही माँ के भाई की रियासत में मजदूरी करने लगा। वाह री आत्म दैर्बल्यता ! मि० आर्डेन ने सैकड़ों दफे उसकी बुराई उसकी माँ के सामने, सर आर्कीवाल्ड, उनकी पत्नी और पुत्र को खुश करने के लिये की थी।

इस अपमान जनित घटना के बाद मिस रेडवर्न को प्रेम शब्द से चिढ़ हो गई थी और उनकी आँखे ऐसी खुल गई थीं कि उनमें वैराग्य सा आ गया था। मिजाज चिड़चिड़ा हो गया था।

डाक्टर का किस्सा सुन कर और उसे मिस्टर आर्डेन द्वारा प्रमाणित हो जाने पर सर आर्कीवाल्ड ने अपनी स्त्री से कहा, "तुम जेन के कमरे में जाओ ! सब दासियों को वहाँ से हटा दो

और जैसे ही उनको होश आवे उनसे कहना कि मेरे किये जो कुछ होगा, वह लॉस्डेल के बचाने के लिये करूँगा।"

लेडी रेडवर्न ने यह बात जल्दी मान ली। वह सोचती थी कि यह खबर फैलने से उनके मायके की बदनामी होगी।

मिस्टर आर्डेन आँखे नीची किये हुए उठे और लड़खड़ाते हुए कमरे का दरवाजा खोल कर बाहर चले गये।

जिराल्ड से सर आर्कीबाल्ड ने पूछा, "हुक्म के कितने दिन बाद फाँसी होती है?"

जिराल्ड ने जवाब दिया, "हुक्म मंजूरी के लिये कल ही लंदन भेज दिया गया होगा। शुक्रवार तक शायद जवाब आ जाय। शनिवार तक फाँसी होगी।"

"आज मंगलवार है," सर आर्कीबाल्ड दुखी होकर कहने लगे, तुम अभी कर्नल विंढम के पास जाओ और उनसे कहो कि माफी के लिये लंदन किसी खास आदमी के हाथ फ़ौरन ख़त भेजें। तुम्हारी बात मानेंगे। उन्होंने तुमसे अभी कर्ज लिया है और फिर भी माली हालत सुधरी नहीं है। मैं अभी लंदन जाता हूँ और वहाँ मैं भी माफी की कोशिश करूँगा। शुक्रवार को तुम यहीं मिलना। ईश्वर के सामने उस कठोर व्यवहार का हम लोगों को जवाब देना है जो हम लोगों ने लॉस्डेल के साथ किया है। जाओ, अभी मिडल्टन जाओ।"

थोड़ी ही देर बाद सर आर्कीबाल्ड लंदन के लिये रवाना हो गये।

४९

कैदी

जिस कोठरी में लॉंस्डेल बन्द था, वह ऐसी मज़बूत बनी हुई थी कि उससे निकल कर भाग जाने की आशा करना असंभव को सम्भव बनाने की व्यर्थ चेष्टा करना था। आज बुधवार था। वह आत्म वेदना से पीड़ित था। उसे बार बार यही ख़्याल आता था कि उसने किस निष्ठुरता और निर्दयता से अपनी स्त्री के साथ बर्ताव किया था, जिसने उस पर सब कुछ निछावर कर दिया था। उसने उसके लिये क्या नहीं सहा था। यही सब बातें याद कर लॉंस्डेल के बदन में वह आग लगी हुई थी कि जिसे सात समुद्रों का भी पानी नहीं बुझा सकता था। इतने में उस कोठरी का दरवाजा खुला और लूसी और उसके लड़के ने अन्दर प्रवेश किया। दरवाजा फिर बाहर से बन्द कर लिया गया। यह शब्दों के सामर्थ्य के बाहर है कि उस दृश्य को चित्रित कर सकें— एक तरफ पश्चात्ताप पीड़ित पति, दूसरी तरफ परिताप पीड़ित पत्नी और तीसरी तरफ दुखित पुत्र। लूसी और लॉंस्डेल रोते हुए एक दूसरे के गले से लिपट गये। थोड़ी देर के लिये दोनों उस आनन्द में निमग्न हो गये जिस पर हमेशा के लिये यवनिका पतन होने जा रही थी। यह याद आते ही लूसी ने उसके सामने घुटनों

पर झुककर उसके हाथ को चूम कर आँखों से लगाया और प्रेम से उसको शांति देने लगी।

जितना ही वह अपने आँसुओं को पीकर उसे समझाती थी, उतना ही लॉन्स्डेल आत्म वेदना से व्यथित होता जाता था। वह लूसी को जमीन से उठाकर बार बार उससे क्षमा माँगता था। लूसी क्या क्षमा करती। अपने पति के व्यवहार से दुःखित तो वह अवश्य हो जाती थी, परन्तु कभी भी द्वेष उसके हृदय में नहीं आया था—वह सदैव उसके हृदय मंदिर का आराध्य देव रहा था। लॉन्स्डेल के क्षमा माँगने से लूसी और दुःखित हो जाती थी और फूट-फूट कर रोने लगती थी। दोनों एक दूसरे के गले मिलते थे, दोनों रोते थे, और दोनों एक दूसरे को समझाते थे। लॉन्स्डेल जानता था कि उसके बाद लूसी बहुत दिन जिन्दा नहीं रहेगी, बस यह ख्याल आते ही वह लड़के को गले से लगाकर ऐसा रोता था कि पत्थर भी पसीज जाता। यही सोचता था कि इसकी कौन परवरिश करेगा और इसकी न मालूम क्या हालत होगी। "हे ईश्वर, मेरे बाद यह दोनों क्या करेंगे!" ये शब्द लॉन्स्डेल के मुँह से निकल जाते थे।

"यह न सोचो," लूसी रो कर कहने लगती थी, "जिस तरह तुम्हें शांति मिले, वह सब करने के लिये मैं तैयार हूँ।"

कोठरी का दरवाजा खुला और मिलने वाले बाहर कर दिये गये। लॉन्स्डेल फिर अकेला रह गया।

गुरुवार को फिर लूसी और उसका लड़का मिलने आया। फिर वही हृदय विदारक दृश्य उपस्थित हो गया।

शुक्रवार आया और प्रथानुसार लॉस्डेल को सूचित कर दिया गया कि जो सजा उसे दी गई थी, उसकी मंजूरी आ गई है। यह लॉस्डेल को खबर नहीं थी कि किसी ने उसे प्राणदण्ड से बचाने की कोशिश भी की है। लिखा अवश्य गया था, लेकिन मंजूरी का खत उधर से आ रहा था, जब माफी का प्रार्थना पत्र इधर से जा रहा था। आज जैसे ही लूसी ने कोठरी में पैर रक्खा और पीछे का दरवाजा बन्द हुआ तो दोनों एक दूसरे के गले से लिपट गये और ऐसा लिपटे कि दोनों को मालूम नहीं हुआ कि इस तरह कितनी देर तक खड़े रहे। आज दोनों में से किसी को बोलने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। पहले लॉस्डेल कुछ सँभला और लूसी के सामने घुटने टेक कर कहने लगा, "मैं इतना लज्जित और दुखित हूँ कि तुम्हारे सामने आँखें नहीं उठतीं। तुम्हारी तबियत उदार है, मैं जानता हूँ और उसी उदारता के नाम पर तुमसे विनय करता हूँ कि जो अनुचित व्यवहार मैंने किया है, उसे भूल जाओ और मुझ ऐसे दुष्ट को क्षमा कर दो। तुम्हारी क्षमा लेकर दुनियाँ से विदा होने में मुझे वह शान्ति और सन्तोष मिलेगा जो कह नहीं सकता।"

लूसी अपने पति के गले से लिपट गई और ऐसा रोई कि यद्यपि जबान बन्द थी, तथापि आँखों ने क्षमा के आगे बहुत कुछ दे दिया था। आज किसको कोई क्या समझाता। समझाने-

बुझाने, संतोष, सांत्वना और शान्ति—इन सबका आधार आशा है और वही आज नहीं थी।

लूसी के विदा होने का समय आ गया था और जिस दुख और दर्द, अनुताप और पश्चात्ताप से दोनों मिले होंगे, वह उन्हीं के दिल जानते होंगे।

४३

क्लाइव हाल

अठारह महीने हो गये। लेडी अडीला और उसकी माँ जिराल्ड के माता और पिता की मेहमान थीं। जब से रेजीनाल्ड हर्बर्ट अपने चाचा लार्ड स्टैंस्फील्ड का उत्तराधिकारी हुआ था, तब से अडीला की माँ उसके सिवा और किसी के साथ सादी करने के लिये नहीं कहती थीं। अडीला भी हर्बर्ट से प्रेम करती थी। लेकिन यह बात उसकी समझ में नहीं आती थी कि हर्बर्ट रेजीनाल्ड बहुत दिनों से क्यों नहीं आया। रोज सुबह अडीला यही कहती थी कि आज जरूर आवेंगे और रोज निराश होना पड़ता था। अपने को धोखा देने का नाम प्रेम है।

अडीला की माँ रोज गौर से अखबार पढ़ती थी कि हर्बर्ट का कोई पता मालूम हो। अडीला से ज्यादा उसकी माँ चिंतित थी। अडीला हर्बर्ट का प्रेम चाहती थी, परन्तु उसकी माता की निगाह हर्बर्ट की दौलत पर थी। इस वजह से उसका सन्देह बराबर यही रहता था कि कहीं वह किसी और से शादी न कर ले। स्वार्थ सेवियों को कब शान्ति मिली है। अडीला के भाई को उसकी माँ ने खत लिखा कि हर्बर्ट का हाल लिखता रहे। उसके पत्र से मालूम हुआ था कि उसने गवर्नमेंट की नौकरी छोड़ दी है और

अपने चाचा और चाची के पास रहता है। अडीला से उसका अब भी वसा ही प्रेम है। इससे काउन्टेस (अडीला की माँ) को कुछ संतोष हुआ।

जो घटना इस अंक में अंकित की जाने वाली है, वह उसी रोज घटित हुई थी, जिस रोज लूसी अन्तिम वार अपने पति से जेलखाने में मिली थी। उस रोज दोपहर को बाहर घूमने जाने के लिये मौसम ठीक नहीं था। अडीला कपड़े पहन कर उस कमरे में चली गई जिसमें उसके घर की देख भाल करने वाली रहती थी। इसका नाम मिसेस ब्राउन था। थोड़ी देर बैठ कर मिसेस ब्राउन किसी काम से नीचे चली गई और अडीला वहीं बैठी सिलाई का काम करती रही। इतने में पीछे से वह आवाज़ सुनाई दी, जिसके सुनने के लिये कान तरस रहे थे। हर्बर्ट कहने लगा, "अडीला, मुझे बगैर इत्तिला कराये आने के लिये माफ़ करना।"

अडीला अवाक् हो गई और एक टक निगाह से उसकी ओर देखने लगी। आँखें स्वागत कर रही थीं। हर्बर्ट फिर कहने लगा, "अगर मुझ पर नाखुश होना है तो मिसेस ब्राउन पर नाखुश हो। वही मुझे इस दरवाजे तक पहुँचा गई हैं।"

यह कहने के बाद उसने अडीला का हाथ पकड़ कर उठाया। अडीला का शर्म से सर झुक गया। थोड़ी देर के बाद उसने कहा, "वहीं चलो, जहाँ माँ हैं।"

हर्बर्ट ने जवाब दिया, "मैं पहले वहीं गया था, लेकिन वह कमरे में नहीं थीं।"

थोड़ी देर तक दोनों बातें करते रहे—एक तरफ से जबान काम देती थी और दूसरी तरफ से आँखें। हर्बट ने बतलाया कि इतने दिन किस बेकली से काटे थे। अगर आने का मौका मिलता तो क्या उसी के दर्शन के लिये न आता जिसकी मूर्ति आँखों के सामने हमेशा रही है। हर्बर्ट के चाचा और चाची इससे सहमत थे कि उसकी शादी अडीला से हो जाय। प्रथानुसार हर्बर्ट ने लेडी अडीला के साथ शादी करने का प्रस्ताव उसकी माँ से किया और उन्होंने फौरन स्वीकार कर लिया।

अपने चाचा के मकान से मिडल्टन तक हर्बर्ट घोड़ा गाड़ी से आया था और वहीं रात को होटल में ठहर गया। दूसरे दिन एक घोड़ा किराये पर लेकर क्लाइव हाल को अडीला से मिलने आया। असबाब वग़ैरा सब वहीं होटल में छोड़ दिया था।

प्रेमालाप में बहुत देर लग गई। जहाँ ठहरा था वहाँ जाना जरूरी था। उसने विदा माँगी और यह वादा किया कि सुबह खाना खाने आवेगा।

अँधियाले की वजह से घोड़ा बहुत तेज़ नहीं जा रहा था। उसने देखा कि सड़क के नज़दीक कोई काली चीज़ है और थोड़ा और आगे बढ़ने से उसने पहचाना कि कोई आदमी है जो उधर ही जा रहा था जिधर क्लाइव हाल है। हर्बर्ट को तरस आ गया। उसने कहा, "रात बहुत ठंढी है। तुम्हारे कपड़े फटे हुए हैं और न पैर में जूते हैं। तुम बड़ी तकलीफ में मालूम होते हो। ठहरो, मैं तुम्हारी मदद करूँगा।"

धन्यवाद तो उसने अजीब आवाज में दे दिया, लेकिन ठहरा नहीं, चलता गया।

हर्बर्ट ने पुकार कर कहा, "ठहरते क्यों नहीं हो। लो, यह लो।"

हर्बर्ट ने कुछ रुपये जेब से निकाल कर दिये और उसने ले कर फिर उसी आवाज में धन्यवाद दिया और अपना रास्ता पकड़ा। हर्बर्ट को ताज्जुब जरूर हुआ, लेकिन यह बात मिडल्टन पहुँचने पर भूल गई।

जैसा वादा किया था, हर्बर्ट दूसरे रोज सुबह खाना खाने क्लाइव हाल गया। सब लोग खाना खा रहे थे। इतने में नौकर ने आ कर कहा, "नौकरों के मकान के बाद ही एक आदमी पड़ा हुआ मर रहा है। वह बहुत बुरी तरह जख्मी हुआ है। उसकी हालत बहुत खराब है।"

काउन्टेस ने हुक्म दिया कि उसे बचाने के लिये जो कुछ किया जा सकता हो, वह किया जाय। हर्बर्ट को पहली रात वाली बात याद आ गई और उसने कहा, "मैं जाकर सब इन्तिजाम किये देता हूँ।"

हर्बर्ट ने जाकर उसे बरांडी पिलवाई, कपड़े बदलवाये और उसे कम्मल ओढ़वा कर विस्तर पर सुलवा दिया। घोड़े पर एक आदमी भेजा गया कि नज़दीक के गाँव से डाक्टर को बुला लावे। मरहम पट्टी की गई। वह आदमी जिन्दा तो था, लेकिन होश में नहीं था। यह सब इन्तिजाम हो जाने पर हर्बर्ट कमरे के

बाहर जाने ही वाला था कि नौकर ने एक लिफ़ाफे की तरफ इशारा किया जो उस आदमी की जेब से गिर पड़ा था। कुछ रुपये भी थे। रुपये वही होंगे जो हर्वर्ट ने दिये थे। हर्वर्ट ने लिफाफा खोला। उस पर "सरकारी काम" छपा हुआ था और यह खत कर्नल विंढम के नाम था। मोहर टूटी हुइ थी। हर्वर्ट ने पढ़ा। इसमें लाँस्डेल को फाँसी की सजा से माफी दी गई थी। "फौरन मेरा घोड़ा तैयार करो।" हर्वर्ट ने यह हुक्म दिया।

आज शनिवार था। हर्वर्ट ने मिडल्टन में सुना था कि उसी रोज एक सिपाही को फाँसी दी जायगी।

उसने दो चार शब्दों में काउन्टेस और अडीला से सब हाल जल्दी जल्दी कह दिया और जैसे ही घोड़ा आया, फौरन उस पर सवार होकर रवाना हो गया। १० बजे थे। पैंतालीस मिनट का मौक़ा था।

४४

ईश्वरीय दण्ड

शनिवार को सुबह सात बजे फौज का एक दूसरा अफसर स्काट कर्नल विंढम से मिलने गया और पूछा कि क्या कोई खबर आई है। कर्नल ने कहा, " नहीं।"

स्काट ने कहा, "सर आर्कीवाल्ड लाँस्डेल को फाँसी से बचाने के लिये कोशिश कर रहें हैं और अभी मकान से कप्तान जिराल्ड वापस नहीं आये हैं। उनके पिता कह गये थे कि उनके आने तक वह वहीं मकान पर उनका इन्तजार करें।" फिर स्काट ने पूछा, "आपने तो माफी के लिये सिफारिश की है।"

" हाँ," कर्नल ने कहा ; लेकिन यह नहीं बतलाया कि तब तक दस्तखत नहीं किये थे, जब तक जिराल्ड ने एक हजार गिनी का कर्ज देने का वादा नहीं कर लिया था।

फौज में प्राणदण्ड गोली मार कर दिया जाता था, वही प्रथा अब भी है। वक्त गुजरता जाता था और माफी का हुक्म नहीं आया था। सजा देने का सब इंतजाम ठीक कर दिया गया। पलटन आकर खड़ी हुई—इतना सन्नाटा था कि अगर सुई जमीन पर गिरती तो उसकी आवाज सुनाई देती। लाँस्डेल क़ैदखाने से बाहर लाया गया। निराश होते ही कुछ साहस आ जाता है। आज उसे देख कर कोई भी नहीं कह सकता था कि जैसे वह

फाँसी की सजा पाने जा रहा है। वह मैदान के बीच गया और साथियों को सम्बोधित कर कहने लगा, "तुम्हारे सामने आज वह खड़ा है जिसकी आँखें अभी हमेशा के लिये बन्द होने जा रही हैं, जिसका दिल अभी हमेशा के लिये काम छोड़ देगा और यह शरीर एक मिट्टी का ढेर हो जायगा। संसार की अदालत ने मुझे दोषी ठहराया है, अब थोड़ी ही देर में उस अदालत का फैसला सुनूँगा जो न्यायाधीश कहलाता है। जो अपराध मैंने किये हैं, उन्हें वह जानता है। मैं तुम सब को विश्वास दिलाता हूँ कि जो शहादत मेरे खिलाफ कप्तान जिराल्ड और लैंगले ने दी है, वह झूठी है। इस पर और कुछ नहीं कहूँगा। मेरी बीबी ने, जो सच्चरित्रता की देवी है, (यह कहते लाँस्डेल का गला भर आया और आँखों से आँसू निकलने लगे, लेकिन जल्दी ही अपने को उसने सँभाल लिया) मुझे माफ कर दिया और उसी की माफी की मुझे परवाह थी। मैं अब मौत का बहादुरी से सामना करने को तैयार हूँ।"

यह कह कर अपनी जगह पर वापस आते समय उस बक्स के सामने थोड़ी देर खड़ा हो गया जो उसके मृतक शरीर को ले जाने के लिये लाया गया था। उसने लाल कोट उतार कर जमीन पर फेंक दिया और घुटनों के बल हो ईश्वर की प्रार्थना करने लगा। एक सिपाही ने आकर आँखों पर पट्टी बाँधी और कान में कहने लगा, "लाँस्डेल, मुझे माफ करना, मुझे यह काम करना पड़ता है।"

लॉँस्डेल ने जवाब दिया, "इसमें तुम्हारा क्या दोष है।"

इशारा किया गया। चौदह बन्दूकें उठीं और चलीं और लॉँस्डेल हाथ उठा कर जमीन पर गिर पड़ा। गोलियों से शरीर चलनी हो गया था, परन्तु कोई भी गोली प्राण घातक नहीं हुई थी—जान बाकी थी। फिर हुक्म दिया गया और एक सिपाही ने नजदीक आकर सर में गोली मार कर काम तमाम कर दिया।

इतने ही में एक आदमी घोड़े पर सवार सरपट दौड़ता हुआ वहाँ पहुँचा। यह हर्बर्ट था। कर्नल विंढम आगे बढ़े। हुक्म नामा पढ़ा—हाथ मल कर रह गये—खत के पहुँचने के पहले ही सब कुछ हो चुका था।

मौत दूसरी ओर भी अपना काम कर रही थी। जो फाटक हर्बर्ट के आने के लिये खोला गया था, उसी फाटक से कुछ आदमी एक लाश लिये हुए बैरक की तरफ जा रहे थे। कर्नल विंढम, अन्य अफसर और हर्बर्ट उधर से निकले। पूछने से लोगों ने लाश जमीन पर रख दी। चेहरे पर से कपड़ा हटाया गया तो लोगों को खेद और आश्चर्य्य हुआ—यह कप्तान रेडवर्न की लाश थी। बड़ा भयानक दृश्य था। उनके म्यान में तलवार नहीं थी। सर के एक हिस्से में ऐसी चोटें पड़ी थीं कि वह पिचक गया था। चेहरा ऐसा बिगड़ गया था कि पहचानने में दिक्कत होती थी। जेबें खाली थीं, एक घड़ी बच गई थी जो अन्दर की जेब में थी। लाश जो लाये थे, उनसे पूछने से मालूम हुआ कि मिडल्टन से दो मील की दूरी पर यह लोग अपने खेतों में काम करते थे।

आम रास्ता जो ओकले को जाता है, उससे और इनके खेतों के बीच में मैले पानी से भरी एक खाई है। इन मजदूरों में से एक ने खाईं के बाहर एक हाथ निकलते देखा। वह देखने गये तो जिराल्ड रेडवर्न की लाश दिखलाई दी।

यह किस्सा सुनने के बाद कर्नल विंढम ने हर्वर्ट से पूछा कि उनको सरकारी हुक्म नामा कैसे मिला था। उन्होंने अपनी दास्तान सुनाई। अब यह बिल्कुल साफ हो गया कि वह भयानक सूरत का आदमी जिसे हर्वर्ट क्लाइव हाल में छोड़ आया था, वही जिराल्ड का घातक था। मालूम होता है कि सर आर्कीवाल्ड रात ही को लंदन से वापस आ गये थे और जिराल्ड उसी वक्त हुक्मनामा लेकर मिडल्टन के लिये चल दिया होगा। घातक ने इन्हें वध कर वह क्षमा पत्र ले लिया और इस तरह जिराल्ड की जान लेकर लाँस्डेल की फाँसी का कारण बना।

जिराल्ड अपने बाप के घोड़े पर सवार होकर मिडल्टन के लिये रवाना हुआ था। सर आर्कीवाल्ड का दिल बैठ गया और अशुभ आशंकायें होने लगीं जब घोड़ा दूसरे दिन अस्तबल के पास चरता दिखलाई दिया। जीन पीठ पर बँधी हुई थी और एक रकाब टूटी हुई थी। सर आर्कीवाल्ड को डर था कि कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि जिराल्ड घोड़े पर से गिर गया हो और ठीक समय से क्षमा पत्र लेकर न पहुँचे। वह खुद भागते हुए घोड़े पर आये और यहाँ एक तरफ लाँस्डेल और दूसरी तरफ जिराल्ड की लाश देख कर चिल्ला उठे, "आह, यह ईश्वरीय

दण्ड है !" कहते हुए घोड़े की पीठ पर मूर्छित हो गये। वे जमीन पर सर के बल गिर पड़ते अगर लोगों ने हाथों में लेकर उतार न लिया होता।

४५

विधवा और अनाथ बालक

लाँस्डेल के फाँसी की सजा पाने का जो समय नियत था, उसके बहुत पहले से लूसी अपने लड़के के साथ अपने कमरे में घुटने के बल झुकी प्रार्थना कर रही थी कि ईश्वर उसके पति को शांति प्रदान करे। नियत समय निकल जाने पर उसने अपने लड़के को गले से इस तरह लगाया कि जैसे उसे कोई छीन रहा हो। लूसी इतनी दुःखित थी कि उस आग को आँसू भी नहीं बुझा सकते थे, और आँसू थे भी कहाँ? वह भी तो बड़े दुखों में साथ छोड़ देते हैं। दुनियाँ उसके लिये अन्धकारमय थी। उसकी यही इच्छा हो रही थी कि जहाँ उसका पति गया है, वहाँ वह भी चली जाय; परन्तु उसका लड़का एक कठोर प्रेरणा थी जो याद दिला रही थी कि सब कुछ सहन करके भी इसके लिये जीना है। लूसी ने काले कपड़े निकाले, एक लड़के को पहना दिया और दूसरा खुद पहन लिया और यह प्रतिज्ञा कर ली कि आज से वह हमेशा इसी वेष में रहेगी।

इतने ही में किसी ने बाहर से दरवाजा खटखटाया। लूसी ने समझा कि मार्था होगी। ऐसे ही अवसरों पर मित्रों की आवश्यकता होती है। लूसी ने किसी तरह उठ कर दरवाजा

खोला। वह सर आर्कीवाल्ड को देख कर चकित हो गई। सर आर्कीवाल्ड कुरसी पर बैठ कर भर्राई हुई आवाज में कहने लगे, "तुम इस वक्त अपने सामने उस आदमी को देख रही हो जिसका दिल टूटा हुआ है और जिसका अब दुनियाँ से कोई सरोकार नहीं रह गया है। जिराल्ड एक ही लड़का था। वह मारा गया। न मालूम मैं क्यों जिंदा हूँ। मुझे एक कर्तव्य का पालन करना था और इसी वजह से आया हूँ। मेरा यह कहना है कि जो होना था सो हो गया—तुम्हारे, हमारे, दोनों के दिल टूटे हुए हैं। तुमने जवान पति खोया है और मैंने जवान पुत्र। कृपा कर तुम यह मान लो कि मेरे घर चलो और आराम से वहाँ रहो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि तुम्हें किसी बात की तकलीफ नहीं होगी।"

इन बातों का लूसी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा; मालूम होता था कि जैसे उसने कुछ सुना ही नहीं। वह एकटक एक तरफ देखती रही।

सर आर्कीवाल्ड के साथ हर्बर्ट भी था। वह कहने लगा, "मिसेस लॉस्डेल, आप मुझे नहीं जानती हैं; परन्तु जो कुछ थोड़ा बहुत मैं आपके सम्बन्ध में जानता हूँ और जो कुछ आपका दुःखित चेहरा बतला रहा है, उससे प्रकट होता है कि आप पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा है। मैं भी यही कहने आया हूँ कि आप मेरे मकान पर चलें और जो कुछ हम लोगों के किये होगा, उससे आपको अपना दुख भुलाने और आराम से रहने में मदद

देंगे। मैं लार्ड स्टैंसफील्ड का भतीजा हूँ और अब उनका उत्तराधिकारी हूँ। इन बातों के कहने का मौक़ा नहीं है, लेकिन कहने का मतलब यह है कि आप कहीं यह न समझें कि मैं कोई ऐसा आदमी हूँ जो आपको धोखा देने आया है। क्लाइव हाल की लेडी अड़ीला से मेरी शादी होने जा रही है। वहीं आपको और आपके लड़के को ले जाने वाला हूँ।"

सच्ची सहानुभूति में अपूर्व शक्ति है—इन शब्दों का प्रभाव लूसी पर पड़ा और वह समझ गई कि ईश्वर ने कृपा कर एक मदद करने वाले को भेजा है।

लूसी अपनी कुर्सी से उठी और सर आर्कीवाल्ड से कहने लगी, "जलने की तकलीफ वही जानता है जो खुद कभी जला हो। आप दुखी हैं इस वजह से कोई बात ऐसी नहीं कहना चाहती हूँ जिससे आपको अधिक दुख हो। बस, यही कहूँगी कि आपकी रोटियाँ खिला कर अपने लड़के को जिन्दा रखने की अपेक्षा उसे भूख से तड़प तड़प कर मर जाना मैं देख सकूँगी। आपकी रोटियाँ मेरे पति और उसके पिता के खून में डूबी हुई हैं।"

लूसी ने फिर हर्बर्ट को सम्बोधित करके कहा, "मिस्टर हर्बर्ट, मुझ विधवा और अनाथ पुत्र का धन्यवाद स्वीकार कीजिये। आपकी उदारता और दया के बदले में और मेरे पास क्या है जो भेंट करूँ। ईश्वर आपका भला करें कि आपको हम लोगों पर तरस आयी। मैं चलूँगी जहाँ आप चलने की आज्ञा देंगे—परन्तु आज और कल नहीं।"

"बहुत अच्छा, परसों ग्यारह बजे दोपहर को आपको और लड़के को लिवाने के लिये मैं गाड़ी भेजूँगा।"

सर आर्कीबाल्ड अपने मकान लौट गये और हर्बर्ट क्लाइव हाल चला गया। जब काउन्टेस और अडीला से उसने लूसी के यहाँ आ कर रहने का हाल बतलाया तो दोनों बहुत खुश हुईं। कहने लगीं कि वही आदमी है जो दूसरे के काम आवे। वहाँ एक कॉस्टेबिल को देख कर हर्बर्ट ने पूछा, "बीमार आदमी मर गया या अच्छा है?"

"मरता कैसे, गले में तो फाँसी का फँदा पड़ना बदा है।" तिलंगे ने जवाब दिया।

हर्बर्ट ने फिर पूछा, "अपने अपराधों को स्वीकार किया?"

"स्वीकार किया, उस पर तो उसे बड़ा अभिमान है।" तिलंगा कहने लगा।

"अच्छा, यह कौन है?" हर्बर्ट ने सवाल किया।

"वही बेट्स ओकले का नाई है।"

४६

बेट्स

यह तो पाठकों को मालूम ही है कि बेट्स को देश निकाले की सजा हुई थी और यह भी मालूम है कि जहाज पर पहुँचने के पहले ही वह जेलखाने से भाग गया था। अब उसके सामने स्वभावतः एक सवाल था कि वह कौन सी तरकीब करे जिससे पहचाना न जा सके। उसने तेजाब से अपने चेहरे को जला कर ऐसा भयानक बना लिया था कि कोई भी उसे पहचान नहीं सकता था। एक आँख भी फूट गई थी। मैंचेस्टर पहुँचते ही उसे कोई ऐसी जगह की तलाश हुई जहाँ वह छिप कर रह सके। जैसों को तैसे मिल जाते हैं—उसे भी वह लोग मिल गये जो दुनियाँ भर के छँटे बदमाश थे। बेट्स के दिल में वह खत खटक रहा था जो लाँस्डेल ने उसे लिखा था और उसे यह याद था कि लूसी के खत में उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि वह उसके पति का सदैव जानी दुश्मन रहेगा। उसी ने जिराल्ड की मदद करने का वादा किया था, उसी ने तरकीब बतला कर लूसी को उस घर में पहुँचवाया था और फिर उसी ने लाँस्डेल को खबर दी थी। उसका अभिप्राय यह था कि लूसी को चरित्र भ्रष्टा पाकर दोनों में तलवारें चल जाँयगी और दोनों वहीं खत्म हो जाँयगे। जिराल्ड

से भी तो यह खुश नहीं था। सर आर्कीवाल्ड ही ने तो बेट्स पर मुकद्दमा चलवाया था। बेट्स असफल मनोरथ हुआ। इसके पहिले ही कि लूसी की आबरू जाय लॉस्डेल वहाँ पहुँच गया था और खून बहने का मौका नहीं आया।

अखबारों से उसे मालूम हो गया था कि लॉस्डेल को फाँसी की सजा का हुक्म हुआ है और इससे उसे पैशाचिक प्रसन्नता हुई थी। उसे विश्वास था कि उसे कोई नहीं पहचान सकेगा और इसी वजह से उसकी हिम्मत मिडल्टन आने की पड़ी थी। जब वह करीब पहुँचने के था, तब देखा कि एक आदमी घोड़े पर सवार आहिस्ता आहिस्ता जा रहा है। रात उजियाली थी, बेट्स ने फौरन पहचान लिया कि जिराल्ड रेडवर्न है। बदला लेने का इरादा फौरन कर लिया। वह घोड़े की तरफ झपटा। घोड़ा इसकी भयानक सूरत देख कर डर गया। वह बिचक गया और एक रकाब इसी में टूट गई। जिराल्ड घोड़े से नीचे गिर पड़ा और घोड़ा भाग गया। बेट्स ने उस पर हमला किया। जिराल्ड ने तलवार निकाली और इसे अच्छी तरह जख्मी किया। मौक़ा पाकर इसने लपक कर तलवार पकड़ ली और कब्जे से मत्थे पर ऐसी ठोकर दी कि जिराल्ड बेहोश होकर गिर पड़ा। बस उसी कब्जे से जिराल्ड के सर पर उसने इतने वार किये कि सर पिचक गया। जब देखा कि जान नहीं रही तो उसकी जेबें ढूँढने लगा। उसमें एक लिफाफा मिला। उसको खोल कर पढ़ने से मालूम हुआ कि यह लॉस्डेल के लिये क्षमा पत्र था। शैतान को फिर

बदले की सूझी और वह लिफाफा लेकर क्लाइव हाल की तरफ चला गया। तलवार और जिराल्ड की लाश को खाई में फेंक दिया। क्लाइव हाल के नजदीक पहुँच कर नौकरों के मकान के बाहर लेट कर सो गया। खून बहुत बह जाने की वजह से कमजोरी आ गई थी। फिर वह ऐसा सोया कि सवेरे तक होश में नहीं आया।

४७

उपसंहार

डेविस को अब दुनियाँ की खबर नहीं थी—अब केवल मतलब था बोतल से। लॉर्डेल के मरने की खबर कई दिनों के बाद उसके कानों तक पहुँची। उसे अफसोस क्या होता, एक तो लूसी से नाख़ुश ही था, दूसरे आत्मा इतनी पतित हो चुकी थी और बोतल का इतना बड़ा प्रभाव था कि उसे दीन और दुनियाँ से मतलब नहीं था। जो उसकी दासी थी, उसका उस पर अब पूर्ण प्रभाव था—वह बिकने के लिये तैयार थी और यह उसका खरीदार था। उसने डेविस से अपने नाम वसीयत करने को कहा, लेकिन उसने फिर यह सोचा कि कहीं यह बदल न दे। उसने यह सलाह बतलाई कि सब बेचबाच कर रुपया जमा करलो और एक बक्स में यहीं रख लो। यही हुआ और दो एक दिन के बाद वही बक्स लेकर वह चलती बनी और पकड़ी गई। उसे जेलखाना हुआ और वहाँ उसने यह कह दिया कि जिराल्ड पर झूठा मुकद्दमा चलाया गया था। उसने यह भी कहा कि डेविस ने झूठी कसम खाई थी। यह खबर डाक्टर कालीसिंथ के कानों तक पहुँची। वह ओकले छोड़ कर अब कावेन्ट्री में काम करता था। भेद छिपाये रखने के

लिये सर आर्कीबाल्ड ने उसे पाँच हज़ार पौंड दिये थे। डाक्टर ने मुकद्दमा चलाया, डेविस को जेलखाना हुआ। उसे बहुत बीमार सुन कर लूसी वहाँ गई और जिससे वह इतना नाखुश था, उसी की गोद में संसार से विदा हुआ!

दासी जेल खाने से छूटने पर चरित्रभ्रष्टा हो गई।

मिस रेडबर्न (जेन) बहुत दिनों के बाद बीमारी से उठीं। तब रफ़ा रफ़ा उनसे लॉस्डेल के फांसी पाने का हाल कहा गया। दुखी तो बहुत हुईं, लेकिन जिसको जिन्दगी में न अपनाया, उसे तब अपनाने की इच्छा हुई जब दुनिया से प्रस्थान करने का दिन आ गया था। यह जान कर कि भाई और भावज को सब हाल मालूम हो गया था, वह कमरे के बाहर नहीं आती थीं और मिस्टर आर्डेन के सामने तो कभी नहीं पड़ती थीं।

मिस्टर आर्डेन वहीं ओकले ही में रहे। यद्यपि यह समझते थे कि लोग उनके चरित्र पर आक्षेप करते हैं, परन्तु आप अपने को आदर्श पुरुष समझते थे।

रेजीनाल्ड हर्बर्ट की शादी अडीला से हो गई। दोनों का दाम्पत्य प्रेमपूर्ण और आनन्दमय था।

सर आर्कीबाल्ड थोड़े ही दिन जिन्दा रह कर मर गये। कर्नल विंढम को अपनी फिज़ूल खर्ची की वजह से नौकरी छोड़नी पड़ी। लैंगले को कर्ज न दे पाने की वजह से जेलखाना हो गया।

लूसी पर क्लाइव हाल में सब लोग बड़ी दया रखते थे। डेविस के मरते ही उसकी जायदाद और मकान की मालिक लूसी हुई।

लॉर्सडेल की मृत्यु से लूसी के हृदय को वह धक्का लगा कि वह सँभल न सकी। बीमार पड़ी। क्लाइव हाल के लोगों ने बड़ी देख भाल की, परन्तु कुछ हो न सका और उसका शरीरांत हो गया। वह लॉर्सडेल की क़ब्र के पास दफ़न की गई। दो ही साल बाद उसका लड़का भी इस संसार से चल बसा और उसके माता और पिता की क़ब्र के पास ही उसकी भी क़ब्र बनी।